

असाधारगा EXTRAORDINARY

भाग II—सण्ड 3—उप-खण्ड (i) PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित PUBLISHED BY AUTHORITY

tio 55] No. 55] नई बिल्ली, शनिवार, फरवरी 14, 1981/माघ 25, 1902

NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 14, 1981/MAGHA 25, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ सख्या दो जाती है जिससे कि यह जलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compliation

नौबहन भ्रौर परिबहन मंद्रालय (परिवहन पक्ष)

अधिस्चनाए

नई दिल्ली, 14 फरवरी, 1981

सा०का०मि०६5(म्) -भारत सरकार के राजपत्र (ग्रमाधारण भाग II, खण्ड 3, उप-खण्ड (1) दिनाक 28 मार्च 1980 में मग्रेजी में प्रकाशित ग्रिधसूचनाए स० जी०एस०ग्रार० 155(ई) से 156(ई) नथा जी०एस०ग्रार०159 (ई) व167(ई) का हिन्दी ग्रनुवाद निम्न प्रकार हैं --

ग्रधिसूचना

नई दिल्ली, 10 फरवरी, 1981

सा०का०नि० 155 (भ)—केन्द्रीय सरकार, महापत्तन न्यास मधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 28 के साथ पठित उसकी धारा 126 द्वारा प्रदत्त शक्तियो का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित विनियम बनाती है, श्रथीत् —

- 1 सिक्षप्त नाम श्रौर प्रारम ——(1) इन विनियमों का सिक्षप्त नाम नव मगलीर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण के लिए श्रियमों का भनुदान) विनियम, 1980 है।
- (2) ये 1 अप्रैल 1980 मे प्रवृत होगे । 2 परिभाषाए ---इन विनियमो मे जब तक कि नदर्भ से अन्त्रमा अपेकित न हो,

- (क) "श्रधिनियम" से महापत्तन न्यास श्रधिनियम, 1963(1963 का 38) श्रभित्रेत है,
- (ख) "बोर्ड" से नव मगलौर पत्तन त्यास के लिए प्रिधिनियम के श्रधीन गठित त्यासी बोर्ड ध्रभिप्रेत है ,
- (ग) ''ग्रष्टयक्ष'' मे बोर्ड का मध्यक मिनिश्रेत हैं,
- (घ) "उपाध्यक्त" मे बोर्ड का उपाध्यक्ष श्रभिप्रेक्ट हैं ;
- (इ) "कर्मचारी" से बोई का कर्मचारी प्रभिन्नेत है,
- (च) ''सरकार'' से केन्द्रीय सरकार भ्रभिप्रेत है ;
- (छ) "विभाग का घ्रध्यक्ष" से वह पद घ्रभिप्रेत हैं जिसका पदधारी घ्रधिनियम के प्रयोजन के लिए उक्त घ्रधिनियम की धारा 24 की उपधारा (2) के घ्रधीन उस रूप में केन्द्रीय सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट किया जाए ।
- (ज) ''विधिक मलाहकार'' से समय-समय पर नियुक्त बोर्ड का विधिक सलाहकार भ्रभिप्रेत है ,
- (भ) 'स्थायी कर्मचारी' ग्रीर 'श्रस्थायी कर्मचारी' का वही अर्थ होगा जो नव मगलीर पत्तन न्यास नर्मचारी (भर्ती ज्येष्ठता ग्रीर प्रोन्नति) विनियम, 1980 में उनका है ;

(165)

- (अ) "निम्न श्रेतन कर्मचारी" से ऐसा कर्मचारी प्रभिन्नेत है, जिसका वेतन, जिसके ध्रन्तर्गत स्थानापन्न वेतन, मंहगाई बेनन, व्यक्तिक वेतन और त्रिशेष वेतन है, प्रति मास 500 रुपये से श्रधिक नहीं है।
- पाक्षता :---गृह निर्माण ग्रियम का ग्रनुदान कर्मचारियों के निम्नलिखित प्रवर्गी को किया जा सकेगा, ग्रर्थात् :---]
 - (क) बोर्ड के स्थायी कर्मचारी ;
 - (ख) बोर्ड के ऐसे कर्मचारी जो ऊपर के प्रवर्ग (क) के प्रधीन नहीं प्राते हैं और जिन्होंने कम से कम दम वर्ष निरन्तर मेवा की है परन्तु यह तब जब कि मंजूरीकर्ता प्राधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि उनके बोर्ड की सेवा में कम से कम तब तक बने रहने की संभावना है जब तक उस गृह का, जिसके लिए ध्रम्मिम मंजूर किया गया है, निर्माण नहीं हो जाता है या बोर्ड को बंधक नहीं कर दिया जाता है।
 - टिप्पण:--ऐसे मामलों में, जहां पित और परनी दोनों बोर्ड के कर्मचारी हैं और अग्रिम के अनुदान के लिए पान्न हैं यह उनमें मे केवल एक को अनुक्रेय होगा ।
- अग्निम के अनुदान की गर्तें:—अग्निम के अनुदान के किसी आवेदन में निम्नलिखित गर्ते पूरी होनी चाहिएं, अर्थात्:—
 - (क) (i) किसी गृह के मामले में निर्माण/ऋष किए जाने वाले गृह या फ्लैट की लागत निवासीय प्लाट की लागत को निकाल कर कर्मचारी के वेतन के 75 गुना मे या 1,25,000 रुपए से, इसमें मे जो भी कम हो, प्रधिक नहीं होगी;
 - (ii) भ्रावेदक ने किसी भन्य प्राधिकारी या निकाय, जैसे कि पुनर्वास विभाग या केन्द्रीय या राज्य भ्रावास स्कीम से इस प्रयोजन के लिए, कोई उधार या श्रिप्रिम न लिया हो;
 - (iii) निम्न बेतन कर्मचारी के मामले में निर्माण/ क्रय किए जाने वाले प्रस्तावित गृह/पलैट की लागत (भूमि/पलैट के विकय/पट्टा विलेख में यथावर्णित भूमि की लागत को निकालकर) 50,000 रुपये में श्रीधिक नहीं होगी भले ही वह उनके मासिक बेतन के 75 गुना से श्रीधिक हो;
 - (iv) जहा आवेदक द्वारा पहले ही लिया गया उधार या अग्निम आदि इन विनियमों के अधीन अनुजेय रकम से अधिक नहीं है, वहां वह इस अधिनियम के अधीन अग्निम के लिए आवेदन इस मर्न के अधीन रहते हुए कर सकता है कि वह बकाया उधार या अग्निम को (उस पर ब्याज सहित,

- यदि कोई हो) एक मृक्त राणि में पूर्वोक्त प्राधि-कार या निकाय को प्रतिसंदल करने का वजन देता है।
- (ख) ऐसे मामलो में जहां कोई कर्मचारी इन विनियमों के प्रधीन कोई प्रश्रिम लेने के प्रतिरिक्त गृह/ निवासीय/फ्लैट के सिन्नमिण/प्रजंन के सम्बन्ध में प्रपती भविष्य निधि लेखे में प्रन्तिम रूप से रकम निकालता है (या जिकाली है) इन विनियमों के प्रधीन मंजूर प्रश्रिम प्रौर भविष्य निधि से निकाली गई कुल रकम का योग मासिक वेतन प्रादि के 75 गुना से या 1,25,000 रुपये से, इसमें से जो भी कम हो, श्रौर निम्न वेतन कर्मचारियों की बाबत 50,000 रुपये से, उनके 75 मास के वेतन पर प्रयान न देते हुए, श्रिधक नहीं होना चाहिए ।
- (ग) न तो आवेदक के, न आवेदक के पित/पत्नी या अवयस्क संतान के स्वामित्व में कोई गृह होना चाहिए, किन्तु यह शर्त बोर्ड द्वारा आपवादिक पिरिस्थितियों में शिथिल की जा सकती है उदाहरणार्थ यदि आवेदक या आवेदक की पत्नी/पित/अवयस्क संतान किसी ग्राम में गृह का स्वामी है और आवेदक किसी नगर में बमना चाहता है, या जहां आवेदक अन्य नातेदारों आदि के साथ संयुक्त रूप से गृह का स्वामी है और वह अपने लिए किसी पृथक गृह का निर्माण करना याहता है।
- (घ) सिर्झिमत या ऋय किए जाने वाले गृह का फर्झी क्षेत्रफल 22 वर्ग मीटर मे कम नहीं होना चाहिए।
- टिप्पण:—इस भीर अन्य विनियमों तथा इन विनियमों से उपाबद्ध बंधक के प्रक्पों के प्रयोजनों के लिए जब तक कि संदर्भ से अन्यया भ्रपेक्षित न हो गृह शब्द के अन्तर्गत कोई फ्लैट भी है।
- 5. प्रयोजन जिनके लिए प्रिप्रिम प्रनुदत्त किया जा सकेगा:
 प्रिप्रिम निम्नलिखित के लिए प्रनुदत्त किया जा सकेगा:
 - (क) या तो कर्तव्य के स्थान पर या उस स्थान पर, जहां कर्मचारी मेवा निवृत्ति के पण्चात् बसने की प्रस्थापना करता है किसी नए गृह का सिन्नर्माण (जिसके अन्तर्गत उस प्रयोजन के लिए भूमि के किसी उपयुक्त प्लाट का अर्जन) या पहले से ही निर्मित गृह या प्लैट का क्रय करना। पहले मे निर्मित गृह या प्लैट का क्रय करने के लिए अग्रिम के लिए किसी आवेदन पर भी विचार किया जा सकेगा। अग्रिम की अधिकतम रक्षम, जो अनुदस्त की जा सकती है, पहले से ही निर्मित गृह या प्लैट की वास्तिवक लागत या मासिक वेतन के 75 गुना या 70,000 रुपये इसमें

जो भी सबसे कम हो, होगी। निम्न वेतन कर्म-चारियों के मामले में गृहों का सिन्नमीण/गृहों/ फ्लैटों के क्य (भूमि की लागत को निकालकर) की कुल लागत 50,000 रुपयों से अधिक नहीं होगी यद्यपि वह 75 मास के वेतन से अधिक हो।

(ख) संबन्धित कर्मचारी के या उसकी पत्नी/उसके पति के साथ संयुक्त रूप से स्वामित्वाधीन किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि:—

गृह में निवास स्थान की वृद्धिः

परन्तु भूमि को छोड़कर विद्यमान संरचना की श्रीर प्रस्थापित वृद्धि श्रीर विस्तारों की कुल लागत उसके मासिक वेतन के 75 गुना या 1,25,000 रुपये इसमें से जो भी कम हो, से श्रधिक नहीं होगी। निम्न वेतन कर्मचारियों के मामलों में भूमि को छोड़कर विद्यमान संरचना की श्रीर प्रस्थापित वृद्धि श्रीर विस्तार की कुल लागत 50,000 रुपये से श्रधिक नहीं होनी चाहिये यद्यपि वह कर्मचारी के वेतन के 75 गुना से श्रधिक हो।

(ग) विनियम (4)(क) में विनिर्दिष्ट किसी प्राधिकारी या निकाय से लिए गये उद्यार या किसी श्रप्रिम का प्रति-संदाय:

परन्तु इस विनियम के खण्ड (ग) के ग्रधीन ग्रग्रिम का अनुदान उस दशा में नहीं किया जायेगा यदि गृह पर सनिर्माण पहले ही प्रारंभ कर दिया गया है ।

- 6. ग्रग्निम की रकम :—(क) किसी कर्मचारी को उसकी संपूर्ण सेवा के दौरान इन विनियमों के ग्रधीन एक ग्रग्निम से ग्रधिक मंज्र नहीं किया जायेगा।
- (ख) किसी ग्रावेदक को उसके मासिक वेतन के, जिसके ग्रन्तगंत स्थानापन्न वेतन (वहां के सिवाय जहां वह छुट्टी के कारण हुई रिक्ति में लिया गया है) महंगाई वेतन, वैयिक्तिक वेतन ग्रीर विशेष वेतन है किन्तु प्रतिनियुक्ति पद की ग्रत्य या नियत श्रविध में लिया गया वेतन इसमें सिमालित नहीं है, 75 गुने के बराबर रकम से ग्रधिक रकम श्रनुदत्त नहीं की जा सकेगी । श्रीर यह विनियम 5(क) के ग्रधीन ग्राने वाले मामलों में श्रिधिकतम 70,000 रूपये, विनियम 5(ख) के ग्रधीन ग्राने वाले मामलों में ग्रिधिकतम 25,000 रूपये तक सीमित होगी।
- (ग) मंजूर किये जाने वाले अग्रिम की वास्तविक रकम, आवेदित अग्रिम को त्यायोचित ठहराने के लिये आवेदकों द्वारा दिये गये रेखांकों, ब्यौरेवार विनिर्देशों, प्राक्कलनों के आधार पर पत्तन न्यास के मुख्य इंजीनियर द्वारा श्रवधारित की जायेगी और उपर विनिर्देख्ट रकम सीमा के भीतर सिनमें एण की प्राक्कलित लागत तक सीमित होगी। यह और कि अग्रिस की रकम उस रकम तक सीमित होगी, जिसे कोई कर्मचारी उसे लागू सेवा नियमों के अनुसार भागत: अपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्त उपदान से और भागत: अपनी

अधिवर्षिता की तारीख के पूर्व अपने वेतन से सुविधापूर्ण मासिक कौतियों द्वारा प्रतिसदत्त कर सकता है।

- (घ) अग्रिम की मासिक किस्तों की वसूली बोर्डे द्वारा अग्रिम की मंजूरी की तारीख से एक वर्ष के अवसान के पश्चात की जायेगी ।
- (ङ) किसी कर्मचारी के बेतन के 33 प्रतिशत तक संगणित किस्त उसकी संदाय क्षमता के भीतर मानी जायेगी।
- 7 संवितरण श्रौर प्रतिभूति :— (1) भागतः भूमि का क्रय करने के लिये श्रौर भागतः एक मंजिलें नये गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की बृद्धि करने के लिये श्रोभित श्रिष्म निम्नलिखित रूप में संदत्त किया जायेगा .—
 - (i) मंजूर अग्निम के 20 प्रतिशत से अनिधक रकम श्रायेदक को भूमि के ऐसे विकसित फ्लंट का कय करने के लिये; जिस पर उधार की प्राति की तारीख से तुरन्त संनिर्माण प्रारंभ किया जा सकता है, भ्रावेदक द्वारा भ्रग्निम के प्रति संदाय के लिये विहित प्ररूप मे एक करार निष्पादित किये जाने पर संदेय होगी। ऐसे सभी मामलों में, जिनमें अग्रिम का भाग भूमि का ऋय करने के लिये दिया गया है उस तारीख से दो मास के भीतर, जिसको उपर्युक्त 20 प्रतिशत रकम निकाली गई है या ऐसे अतिरिक्त समय के भीतर जो ग्रध्यक्ष इस निमित्त ग्रनुज्ञात करे भूमि का कया किया जाना चाहिये ग्रौर उसकी बाबत विक्रय-विलेख निरीक्षण के लिये भ्रध्यक्ष को पेश किया जाना चाहिये जिसके न हो सकने पर श्रावेदक बोर्ड को संपूर्ण रकम, उस पर **ब्याज** सहित, तुरन्त वापस करने के लिये दायी होगा।
 - (ii) श्रप्रिम के श्रितिशेष के 30 प्रतिशत के बराबर रकम श्रावेदक को, उसके द्वारा ऋय की गई भूमि को उस पर निर्मित गृह के साथ बोर्ड के पक्ष मे उसके द्वारा बन्धक किये जाने पर, जहां ऐसा बन्धक भूमि के विकय के निबन्धनों द्वारा श्रनुज्ञात है, संदेय होगी, । ऐसे मामलों में, जहां विकय के निबन्धन जब तक भूमि पर गृह बना न दिया जाये, केता में हक निहित नहीं करते हैं, श्रावेदक बोर्ड के साथ एक करार विहित प्ररूप में निष्पादित करेगा जिसमें वह जैसे ही गृह का निर्माण कर दिया जाता है श्रीर संपत्ति में पूर्ण हक हो जाता है, भूमि को उस पर निर्मित किये जाने के लिये गृह के साथ बन्धक करने का करार करेगा।
 - (iii) अग्रिम की मंजूर रकम में से भूमि के क्रय के लिये दी गई किस्त की कटौती करने के पश्चात् अविशष्ट रकम के 40 प्रतिशत के बराबर रकम तब संदेय होगी जब गृह का सन्निर्माण कुर्सी की उचाई तक पहुंच गया हो।

- (iv) मंजूर श्रम्भिम का श्रितिशेष तब संदेय होगा जब गृह का सन्निर्माण छत की ऊंचाई तक पहंच गया हो।
- (2) केवल एक मंजिले नये गृह का सन्निर्माण या किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि करने के लिये अपेक्षित श्रिप्रम निम्नलिखित रूप में संदत्त किया जायेगा :—
 - (i) मंजूर ग्रग्निम के 40 प्रतिशत के बराबर रकम श्रावेदक को, उसके द्वारा ऋय की गई भूमि को, उस पर निर्मित किये जाने वाले गृह के साथ, बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा बन्धक किये जाने पर, जहां ऐसा बन्धक भूमि के विक्रय के निबन्धनों द्वारा अनुज्ञात है संदेय होगी । ऐसे मामलों में जहां विक्रय के निबन्धन जब तक भूमि पर गृह बना न दिया जाये केता में हक निहित नहीं करते हैं ग्रावेदक बोर्ड के साथ एक करार विहित प्ररूप में निष्पादित करेगा जिसमें वह जैसे ही गृह का निर्माण कर दिया जाता है उस पर ग्रौर संपत्ति में हक पूर्ण हो जाता है, भूमि को उस पर निर्मित किये जाने वाले गृह सहित बन्धक करने का करार करेगा ।
 - (ii) मंजूर अग्निम के 40 प्रतिशत से अनिधिक भीर रकम तब संदेय होगी, जब गृह कुर्सी की ऊंचाई तक पहुंच गया हो।
 - (iii) मंजूर श्रम्भिम का 20 प्रतिशत श्रतिशेष तब संदेय होगा जब गृह छत की ऊंचाई तक पहुच गया हो ।
- (3) भागतः भूमि का ऋय करने के लिये ग्राँर भागतः दो मंजिले नये गृह का संनिर्माण या किसी विद्यमान गृह में आवास स्थान की वृद्धि करने के लिये अपेक्षित ग्रग्रिम निम्नलिखित रूप में संदत्त किया जायेगा ।
 - (i) मंजूर अग्रिम के 15 प्रतिशत से अनिधक रकम ग्रावेदक को भूमि ऐसे विकसित फ्लेट का ऋय करने के लिए जिस पर उधार की प्राप्ति की तारीख से तुरन्त संनिर्माण प्रारंभ किया जा सकता है, भ्रावेदक द्वारा श्रम्भिम के प्रतिसंदाय के लिये विहित प्ररूप में करार निष्पादित किये जाने पर संदेय होगी। ऐसे सभी मामले, जिनमें श्रग्रिम का भाग भूमि का ऋय करने के लिये दिया गया है, उस तारीख से दो मास के भीतर जिसको उपरोक्त 15 प्रतिशत रकम ली गई हो या ऐसे अतिरिक्त समय के भीतर जो ग्रध्यक्ष इस निमित्त भनुज्ञात करे भूमि का ऋय किया जाना चाहिये श्रीर उसकी बाबत विकय-विलेख निरीक्षण के लिये ग्रध्यक्ष को प्रस्तुत किया जाना चाहिये जिसके न हो सकने पर म्रावेदक बोर्ड की संपूर्ण रकम उस पर ब्याज सहित, तुरन्त वापस करने के लिये दायी होगा ।

- (ii) अग्रिम के अतिशेष के 25 प्रतिशत के बराबर रकम आवेदक को उसके द्वारा ऋय की गई भूमि को उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह के साथ, बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा बंधक किए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विकय निबन्धनों द्वारा अनुज्ञात है, संदेय होगी। ऐसे मामलों में, जहां ऐसा बन्धक अनुज्ञात नहीं है, विनियम 7 के उपविनियम (1) के खण्ड (ii) में अन्तर्विष्ट उपबन्ध लागू होगा।
- (iii) अप्रिम की मंजूर रकम मे से, भृमि के क्रय के लिए दी गई किस्त की कटौती करने के पश्चात् अविशिष्ट रकम के 30 प्रतिशत के बराबर रकम तब संदेय होगी जब गृह का सिन्नमीण कुर्सी की ऊंचाई तक पहुंच गया हो ।
- (iv) अग्रिम की मंज़्र रकम में से, भूमि के क्रय के लिए दी गई किस्त की कटौती करने के पश्चात् अविशिष्ट रकम के 25 प्रतिशत से अनिधिक और रकम तब संदेय होगी जब पहली मंजिल की छन डाल दी गई हो।
- (v) मंजूर ग्रम्भिम का ग्रनिशेष तब सदेय होगा जब दूसरी मंजिल की छत डाल दी गई हो ।
- (4) केवल दो मंजिले नए गृह के सिन्नमीण या किसी विद्यमान गृह में ग्रावास स्थान की वृद्धि के लिए ग्रापेक्षित ग्राग्रम निम्नलिखित रूप में संदत्त किया जाएगा, ग्रार्थात्:—
 - (i) मंजूर किए गए स्रिप्रिम के 25 प्रतिश्रत के बराबर रकम स्रावेदक को, उसके द्वारा क्रय की गई भूमि को उस पर निर्मित किए जाने वाले गृह के साथ बोर्ड के पक्ष मे उसके द्वारा बंधक किए जाने पर, जहां ऐसा बंधक भूमि के विक्रय के निबन्धनों द्वारा सनुज्ञात है, संदेय होगी। ऐसे मामलों में, जहां ऐसा बन्धक स्रनुज्ञात नहीं है, विनियम 7 के उपविनियम (2) के खण्ड (i) में स्नतिंबस्ट उपवन्ध लागू होगा।
 - (ii) मंजूर किए गए प्रिप्रिम के 30 प्रतिशत से ग्रन• धिक ग्रौर रकम तब संदेय होगी जब गृह कुर्सी तक पहुंच गया हो ।
 - (iii) मंजूर ग्रग्निम के 25 प्रतिशत से धनिधक ग्रौर रकम तब संदेय होगी जब पहली मंजिल की छत डाल दी गई हो।
 - (iv) मंजूर अग्रिम की अवशिष्ट 25 प्रतिशत रकम तब संदेय होगी जब दूसरी मंजिल की छत डाल् दी गई हो ।
- (5) पहले से निर्मित गृह का ऋय करम क' लिए अपेक्षित अग्रिम निम्नलिखित रूप में संदत्त किया जार्धुना:—

अध्यक्ष आवेदक द्वारा अपेक्षित और उसे अनुश्रेय संपूर्ण रकम का संदाय आवेदक द्वारा उधार के प्रति-संदाय के लिए विहित प्ररूप मे एक करार निष्पादित किए जाने पर एक मुक्त मंजूर कर सकता है । गृह का अर्जन अग्निम के निकाले जाने के तीन मास के भीतर पूर्ण किया जाना चाहिए और गृह बोर्ड को बंधक किया जाना चाहिए, जिसके न हो सकने पर अग्निम उस पर ब्याज सहित, जब तक कि उस समय सीमा का विस्तार अध्यक्ष द्वारा अनुज्ञात नहीं कर दिया जाता है, बोर्ड को तुरन्त वापस किया जाएगा।

अध्यक्ष आवेदक द्वारा अपेक्षित और उसे अनुजेय संपूर्ण रकम का संदाय आवेदक द्वारा उद्यार के प्रति सदाय के लिए विहित प्ररूप में एक करार निष्पादित किए जाने पर एक मुक्त मंजूर कर सकता है। गृह का अर्जन अधिम के निकाले जाने के तीन मास के भीतर पूर्ण किया जाना चाहिए और गृह बोर्ड को बंधक किया जाना चाहिए, जिसके न हो सकने पर अधिम, उस पर ब्याज सहित, जब तक कि उस समय सीमा का विस्तार अध्यक्ष द्वारा अनुजात नहीं कर दिया जाता है, बोर्ड को तुरन्त वापस किया जाएगा।

- (6) नए फ्लैट का कय/सिन्नर्माण करने के लिए भपेक्षित अग्रिम निम्नलिखित रूप में संदत्त किया जाएगा :---
 - (क) म्रध्यक्ष मावेदक द्वारा मपेक्षित मौर उसे मनुज्ञेय रकम के संदाय की मंज्री स्रावेदक द्वारा विहित प्ररूप में एक करार निष्पादित किए जाने पर ग्रीर ग्राधार के प्रतिसंदाय के लिए नीचे के उप-विनियम (ख)(2) में अन्तर्विष्ट उपबन्धो का पालन करने पर दे सकेगा । रकम या तो एक मक्त या ग्रध्यक्ष के विवेक पर उपयुक्त किस्तो मे संवितरित की जा सकेगी। भ्रावेदक द्वारा इस प्रकार निकाली गई रकम या इस प्रकार निकाली गई किस्त/किस्तों को उसी प्रयोजन के लिए जिसके लिए वह निकाली गई है, अग्रिम या किस्त/किस्तो के निकाले जाने के एक मास के भीतर उपयोग में लाया जाएगा जिसके न हो सकने पर इस प्रकार संवितरित ग्रग्रिम या ग्रग्रिम का भाग, उस पर ब्याज सहित, जब तक कि उस समय सीमा का विस्तार भ्रध्यक्ष द्वारा विनिदिष्ट रूप में मंजूर नहीं कर दिया जाता है, बोर्ड को तुरन्त वापस किया जाएगा।
 - (ख) (1) उनके द्वारा ऊपर के खण्ड (क) मे निर्दिष्ट करार/बंधक विलेख निष्पादित किए जाने के ग्रांतिरक्त निम्नलिखित तीन प्रवर्गों के ग्रांवेदकों से मंजूर श्रिग्रम या उसके किसी भाग को उन्हें वास्तव में संवितरित किए जाने के पूर्व, बोर्ड के किसी ग्रनुमोदित स्थायी कर्मचारी की प्रतिभृति विहित प्ररूप मे देने की भी श्रोपेक्षा की जाएगी, श्रर्थात् :--
 - (i) ऐसे सभी ग्रावेदक, जो बोर्ड के स्थामी कर्मचारी नहीं हैं।

- (ii) ऐसे सभी आवेदक, जो किसी अग्निम के अनुदान के लिए आवेदन की तारीख के पश्चात् 18 मास की अवधि के भीतर सेवा से निवृत्त होने वाले हैं।
- (iii) ऐसे सभी आवेदक, जो बोर्ड के स्थायी कर्मचारी नही है किन्तु जो ऊपर के खण्ड (ii) की परिधि मे नही आते है यदि वे पूर्व निर्मित गृह का क्रय करने के लिए अग्रिम की अपेक्षा करते हैं।
- (ख) (2) फ्लैटों के संनिर्माण के लिए या पहले से सिर्मित फ्लैटों का क्रय करने के लिए ग्रावेदको, ऊपर के खण्ड (क) ग्रीर (ख) (1) मे अन्तिबिट उपबन्धों का अनुपालन करने के ग्रातिरिक्त, जब भी वह भूमि, जिस पर फ्लैट बने हो भूमि के स्वामी द्वारा अग्रिम के प्रतिसंदाय के लिए प्रतिभृति के रूप मे बोर्ड के पक्ष में बन्धक नहीं की गई है साधारण विक्तीय नियमों के संग्रह के नियम 274 के ग्राधीन यथा-ग्राधिकथित पर्याप्त संपाध्विक प्रतिभूति ग्रध्यक्ष के समाधानप्रद रूप मे देनी चाहिए।
- टिप्पण (1):—प्रतिभू का दायित्व सिर्मित/ऋय किए गए गृह के बोर्ड को बन्धक रहने तक या श्रिप्रिम का उन पर देय ब्याज महित, बोर्ड को प्रतिसंदाय किए जाने तक, उसमें से जो भी पहले हो, जारी रहेगा।
- (2) अग्रिम का उस प्रयोजन से भिन्न जिसके लिए वह मंजूर किया गया है किसी अन्य प्रयोजन के लिए उपयोग कर्मचारी को संगत आचरण विनियमों के अधीन या कर्मचारी को लागू सेवा के किन्ही अन्य विनियमों के अधीन उपर्युक्त अमुआसिनक कार्यवाही के दायित्वाधीन बनाएगा। उससे, उसके द्वारा लिया गया संपूर्ण अग्रिम, उस पर उद्भूत ब्याज सहित, इन विनियमों के विनियम 8 के अनुसार तुरन्त बोर्ड को वापस करने के लिए भी अपेक्षा की जा सकेगी।
- (3) विनियम 7 के उपविनियम (1) (i) और (3) (i) मे निर्दिष्ट भूमि के विकसित प्लाट की बाबत विक्रय विलेख प्रस्तुत करने की श्रविध में विस्तार ग्रध्यक्ष द्वारा ग्रपना यह समाधान करने के पश्चात् किया जा सकेगा कि श्रावेदक ने भूमि की लागत या तो पहले ही सदस्त कर दी है या तुरन्त सदाय किए जाने को सभावना है; कि समय सीमा का विस्तार उसे भूमि के लिए हक/पट्टाधृित ग्रधिकार ग्रजिंत करने में समर्थ बनाएगा: और कि उसकी गृह निर्माण करने का पूर्ण ग्रावय है और वह श्रिप्रम की प्रथम किस्त के निकाले जाने की तारीख के पण्चात् 18 माम में या ऐसी ग्रविध में, जिस तक गृह को पूर्ण किए जाने के समय का विस्तार विनियम 9 के उपविनियम (क) के खंड (ii) के ग्रिधीन किया गया है, गृह का सिन्तमणि पूर्ण करने की स्थित में होगा।

8 ब्याज.—-इन बिनियमों के अधीन अनुद्दत अप्रिम के सदाय की तारीख मे, साधारण ब्याज लगेगा। ब्याज को रकम प्रतिमास की अतिम तारीख को बकाया अतिशेष पर सगिणत अग्रेर जैता मनय-समय पर, बोर्ड द्वारा नियुत्त किया जाए होगो किन्तु केन्द्रोग सरकार द्वारा, सनग-समय पर अग्रेर कर्मचारियों के लिए वैमे हो अप्रिमों के लिए प्रमारित दर से कम नहीं होगी।

9 सन्तिर्माण अनुरक्षण आदि:--(क) यथास्थिति, गृह का सिनर्माण या किसी विद्यमान गृह मे निवास स्थान मे बृद्धि:--

- (i) उस अनुमोदिन रेखांक और विनिर्देशों के ठीक-ठीक अनुरूप की जाएगी जिसके आधार पर अग्निम की रकम सगणिन और मजूर को गई है। रेखाक और विनिर्देशों में कोई अन्तर बोर्ड को पूर्व सहमाते के बिना नहीं किया जाना चाहिए। कर्मचारी जब वह कुर्सी/छत को ऊंवाई तक पहुंचने पर अनुजेय रकम के लिए आवेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि सन्तिर्माण कुर्सी/छत को ऊवाई तक वास्तव में पहुंच गया है और पहले निकाली गई रकम गृह के सन्तिर्माण में वास्तव में उपयोग में लगाई गई है। अध्यक्ष, यदि आवश्यक हो, प्रमाण-पत्नों की सत्यता के सत्यापन के लिए जाच किए जाने की व्यवस्था कर सकेगा।
- (ii) उस तारीख से, जिसको प्रियम की प्रथम किस्त संबंधित कर्मचारी को सदत्त की गई है, 18 मास के भीतर पूरी को जाएगी। ऐसा न करने पर कर्मचारी उसे भ्रियम दी गई संपूर्ण रकम (उस पर ऊपर के विनियम 8 के अनुसार मंगणित ब्याज सहित) एक मुक्त वापस करने का दायी होगा। समय सीमा मे किसी विस्तार की अनुज्ञा अध्यक्ष द्वारा एक वर्ष के लिए और बोर्ड द्वारा दीर्घतर अवधि के लिए उन मामलों मे दी जा सकेगी जहा कार्य मे विलम्ब कर्मचारी के नियंत्रण के बाहर की परिस्थितियो के कारण हुआ है। सन्निर्माण के पूरा होने की तारीख की रिपोर्ट अध्यक्ष को अवलब की जानी चाहिए।
- (ख) यथास्थिति, गृह के पूर्ण होने या क्रय किए जाने परः—
 - (i) सबिधत कर्मचारी गृह का बीमा, ग्रयने स्वयं ही के खर्चे पर, भारत के जीवन बीमा निगम के साथ या किसी रिजिस्ट्रीकृत साधारण बीमा करनी के साथ ऐसी राशि के लिए तुरन्त कराएगा जो ग्रिप्रम की रकम से कम न हो ग्रीर उमे श्रिगन, बाढ़ ग्रीर बिजनी गिरने के कारण हानि के बिरुद्ध तब तक इस प्रकार बीमाकृत कराए रखेगा

- जब तक कि अग्निम, ब्याज सहित, बोर्ड को पूर्णतः प्रतिसदत्त नही कर दिया जाता है और पालिसी को बोर्ड के पास निक्षित्त रखेगा,
- (ii) प्रीमियम नियमित रूप से सदत्त किया जाना चाहिए ग्रौर प्रीमियम को रसीद समुचित प्राधि-कारी उदाहरणार्थ ग्रध्यक्ष द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए प्रस्तुत की जानी चाहिए,
- (iii) कर्मचारी की स्रोर से स्रग्नि, बाढ़ स्रौर बिजली गिरने के विरुद्ध बीमा कराने में असफलता पर बोर्ड के लिए सबिधत कर्मचारी के खर्चे पर उक्त गृह का बीमा कराना स्रौर प्रीमियम की रकम को स्रिम्मिम को बकाया रकम में जोड़ना विधि सम्मत होगा किन्तु बाध्यताकारी नहीं होगा स्रौर कर्मचारी जब तक रकम बोर्ड को प्रतिसंदत्त नहीं कर दी जाती है उस पर ब्याज की चालू दरपर ब्याज का संदाय करने के लिए बैसे हो दायी होगा मानो प्रीमियम की रकम उपरोक्त स्रिम्म के भाग के रूप में स्रिमम दी गई थी।
- (iV) अध्यक्ष विधिक सलाहकार एव मुख्य लेखा अधिकारी अग्रिम निकालने वाले कर्मचारी से उस बीमाकर्ता के लिए जिसके साथ गृह का बीमा किया
 गया है (प्ररूप स० 8 में यथाविहित) एक
 पत्र पश्चात्वर्ती को यह तथ्य सूचित करने के लिए
 अभिप्राप्त करेगा कि बोर्ड ली गई बीमा पालिसी
 मे हितबद्ध है अध्यक्ष/वित्तीय सलाहकार एवं
 मुख्य लेखा अधिकारी वह पत्न, बीमाकर्ता को
 अग्रेषित करेगा और उमको अभिस्वीकृति प्राप्त
 करेगा। वार्षिक अधार पर प्रभावी बीमा के
 मामले मे यह प्रक्रिया प्रतिवर्ष तब तक दुहराई
 जानी चाहिए जब तक अग्रिम की संपूर्ण रकम बोर्ड
 को प्रतिसदत्त नहीं कर दी जातो है।
- (ग) गृह को सबंधित कर्मचारी का ग्राने स्वयं के खर्चे पर श्रच्छी मरम्मत की हात्रत में रखना चाहिए। वह उसे सभी वल्लंगमो से मुक्त रखेगा ग्रौर जब तक ग्रिग्रम बोर्ड का पूर्णतः प्रतिसंदत्त नहीं कर दिया जाता है सभी नगरगालिक ग्रौर भन्य स्थानोय रेट ग्रौर कर नियमित रूप से संदत्त करता रहेगा।
- (घ) गृह के पूर्ण होने के पश्चात् उसके वार्षिक निरीक्षण अध्यक्ष के अनुदेश के अधीन किसी प्राधिकृत अधिकारी द्वारा यह सुनिश्चित करने के लिए किए जा सकेंगे कि जब तक अग्रिम का पूर्ण रूप से प्रतिसदाय नहीं कर दिया जाता है। उसे अच्छी मरम्मत की दशा में रखा जाता है। संबधित कर्मचारी इस प्रयोजन के लिए अनिहित अधिकारी (अधिकारियो) द्वारा ऐसे निरीक्षण करने के लिए आवश्यक मुविधाए देगा।

टिप्पण:— मिथ्या प्रमाणपत देना संबंधित कर्मवारी की, उसे लागू सेवा के विनियमों के ग्रधीन ग्रनुशासनिक कार्यवाही के लिए दायी बनाएगा। उससे, उसके द्वारा निकाले गए संपूर्ण ग्रप्रिम को उस पर उद्धभृत व्याज सहित इन विनियमों के विनियम 8 के ग्रनुसार बोर्ड को नुरन्न वापस करने की ग्रपेक्षा भी की जा सकेगी।

10. श्रप्रिम का प्रतिसंदाय:—(क) इन विनियमों के अधीन किसी कर्मचारी को अनुदत्त, अग्रिम, उन पर ब्याज सहित 20 वर्ष से अनिधक अविध के भीतर मासिक किस्तों में पूर्णतः प्रतिसंदत्त किया जाएगा। प्रथमतः अग्रिम की वसूली 180 मासिक किस्तों से अनिधक में की जाएगी और तब ब्याज 60 मासिक किस्तों से अनिधक में वसूल किया जाएगा।

टिप्पणः—(1) मासिक रूप से वसूल की जाने वाली रकम पूर्ण रुपयों में नियत की जाएगी, सिवाय ग्रंतिम किस्त के मामले में, जब श्रवशिष्ट ग्रतिशेष, जिसमें रुपए का कोई भाग सम्मिलित है, वसूल किया जाएगा।

- (2) भागतः भूमि का ऋय करने के लिए और मानतः सिन्निर्माण के लिए अनुदत्त अग्निम की वसूली गृह के पूर्ण होने के पश्चात्वर्ती मास के वेतन से या उस तारीख के पश्चात् के जिसको भूमि का ऋय करने के लिए किस्त कर्मचारी को संदत्त की जाती है 24वें मास के वेतन में से, इसमें से जो भी पूर्ववर्ती हो प्रारंभ होगी। किसी नए गृह के सिन्निर्माण के लिए या किसी विद्यमान गृह में निवासस्थान की वृद्धि के लिए अनुदत्त अग्निम की वसूली गृह के पृण् होने के पश्चात्वर्ती मास के वेतन से या उस तारीख के पश्चात् के, जिसको कर्मचारी को अग्निम की प्रथम किस्त संदत्त की जाती है, 18वें मास के वेतन से इसमें जो भी पूर्ववर्ती हो, प्रारंभ होगी। पहले ही निर्मित गृह का ऋय करने के लिए, लिए गए किसी अग्निम के मामले में वसूली उस मास के पश्चात्वर्ती मास के वेतन से प्रारंभ होगी जिसमें अग्निम लिया गया है!
- (3) कर्मचारी यदि वह ऐसा करना चाहे, तो रकम का संदाय किसी लघुतर अवधि में कर सकता है। किसी भी दशा में संपूर्ण अग्निम उस तारीख के पूर्व, जिसको वे सेवा निवृत्त होने वाले हों, पूर्णतः (उन पर ब्याज सहित) प्रतिसंदत्त किया जाना चाहिए।
- (4) किसी ऐसे कर्मचारी को, जो अग्रिम के अनुदान के लिए आवेदन की तारीख से बीस वर्ष के भीतर सेवा निवृत्त होने वाला है और जो उसे लागू सेवा विनियमों के अधीन किसी उपदान या मृत्यु और सेवा-निवृत्ति उपदान के अनुदान के लिए पात हों असम्यक कष्ट से बचने के लिए, यक्ष उसे, उसकी सेवा की बची हुई अविधि के दौरान जनक मासिक किस्तों में (किस्तों की रकम उससे कम ्ैगी जो बीस वर्ष की अविध के भीतर प्रतिसंदाय के पर निकासी गई है) अग्रिम का, ब्याज सिहत प्रति- े की अनुजा दे मकेगा परन्तु यह तब जब कि वह 'र और बन्धक विलेख-प्ररूप में इस प्रभाव का

कोई उपयुक्त खण्ड सम्मिलित क्ये जाने के लिये सहमक्त है कि बोर्ड उक्त अग्निम का अतिष्ठेष, ब्याज महित, जो उसके सेवा-निवृत्ति या सेवानिवृत्ति के पूर्व मृत्यु के समय असंदत्त रह गया है उसके संपूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से जा उसे मजूर किया जाए, वसूल करने के लिए हकदार होगा।

- (5) यदि कर्मचारी बोर्ड को दिए गए अग्निम ग्रितिशेष उसकी सेवा निवृद्धि की तारीख के पूर्व प्रतिमंदत्त नहीं करता है तो बोर्ड तत्पश्चात् किसी समय बंधक की प्रतिभूति को प्रवृद्ध करने के लिए और दिए गए अग्निम के अतिशेष को, ब्याज और वसूली की लागत सहिन, गृह का विक्रय करके या ऐसी अन्य रीति से, जो विधि के अधीन अनुज्ञेय हो, वसूल कर सकता है।
- (ख) ग्रग्निम की बसूली, यथास्थिति, ग्रध्यक्ष या संबंधित वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखाग्रधिकारी द्वारा संबंधित कर्मचारी के मासिक वेतन/छुट्टी वेतन/निर्वाह भस्ता बिलों के माध्यम से की जाएगी/वसूली ग्रध्यक्ष की पूर्व सहमित के सिवाय विधारित या रोकी नहीं जाएगी। कर्मचारी के लंबे निलंबन पर होने के कारण संदेय निर्वाह भत्ता में कमी कर दिए जाने की दशा में वसूली में ग्रध्यक्ष द्वारा, यदि ग्रावश्यक समझा जाए, उपरोक्त रूप मे कमी की जा सकेगी।
- (ग) यदि कोई कर्मचारी अग्रिम का पूर्ण रूप से प्रति-संदाय किए जाने के पूर्व सामान्य सेवा निवृत्ति/म्रिधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रह जाता है यदि उसकी मृत्यु हो जाती है तो अग्निम की संपूर्ण बकाया रकम बोर्ड को तुरन्त संदेय हो जाएगी किन्तु बोर्ड ग्रसम्यक कष्ट वाले मामलो में, यथास्थिति, संबंधित कर्मचारी, उसके हित उत्तराधिकारी को या विनियम 7(ख) के ग्रन्तर्गत स्राने वाले मामले मे प्रतिभूत्रों को, यदि उस समय तक गृह पूरा नहीं किया गया है, ग्रीर/या बोर्ड को बंधक नहीं किया गया है बकाया रकम को, विनियम 8 के ग्रन्सार संगणित उन पर •याज सहित, उपयुक्त किस्तो में प्रतिसंदत्त करने के लिए ग्रन्जा दे सकेगा। किसी भी कारण से ब्रग्निम के प्रतिसंदाय के लिए (यथास्थिति) संबंधित कर्मचारी या उसके उत्तरा-धिकारियों की ग्रोर से कोई ग्रसफलता बोर्ड को बंधक को प्रवृत्त करने के लिए ग्रौर बकाया रकम की वसूली करने के लिए ऐसी अन्य कार्यवाही करने के लिए, जो अनुज्ञेय हो, हकदार बनाएगी।
- (घ) बोर्ड को बन्धक की गई संपत्ति, ग्रग्निम की, उन पर ब्याज सहित, बोर्ड को पूर्ण रूप से प्रतिसंदाय कर दिए जाने के पश्चात् संबंधित कर्मचारी को (या यथास्थिति उसके हित उत्तराधिकारियो को) विहित प्ररूप में प्रतिहस्तांतरित की जाएगी।
- 11. आविदमो पर कार्यवाही करने की प्रक्रिया:---(क) आविदन कर्मचारी द्वारा अध्यक्ष को विहित प्ररूप में (दो प्रतियों

- में) उचित प्रणाली के माध्यम से दिया जाना चाहिए। ग्रावेदन के साथ निम्नालिखित दम्नावेज भी होंगी, ग्रायान्:—
 - (1) ग्रावेदन करने के समय ग्रावेदक के या ग्रावेदक की पत्नी/ग्रवयस्क संतान के स्वामित्वाधीन यदि कोई गृह/संपति हो, उसकी बाबन घीषणा:---
 - (2) यदि श्रम्भिम किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि के लिए अपेक्षित है तो विक्रय विलेख की साथ ही ऐमी अन्य दस्तावेजों की, यदि कोई हों, एक अनुप्रमाणित प्रति जो यह सिद्ध करती हों कि आवेदक प्रश्नगत संपत्ति में अविवाद्य हक रखता है। स्थान रेखांक भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
 - (3) ऐसे मामलों में, जहां आवेदक का भूमि पर कब्जा है और वे उस पर नए गृह का निर्माण करना चाहते हैं वहां विक्रय विलेख की एक प्रति या उस भूमि पर, जिस पर गृह निर्माण किए जाने की प्रस्थापना है, आवेदक के स्पष्ट हक रखने का अन्य सब्त, स्थल रेखांक के साथ/यदि वह भूमि पट्टाधृति हो तो पट्टा विलेख की एक अनुप्रमाणित प्रति भी उपाबद्ध की जानी चाहिए।
 - (4) ऐसे मामलों में जहां श्रावेदक भूमि का क्रय करना चाहता है, प्लाट के विक्रेता के इस प्रभाव के पत्न की एक श्रनुप्रमाणित प्रति कि व्यवस्थापन श्रीर कीमत के संदाय किए जाने के श्रधीन रहते हुए वह उसके पत्न की तारीख से दो माम की श्रवधि के भीतर श्रावेदक को भूमि के स्पष्टतः सीमांकित विकसित प्लाट का रिक्त कब्जा हस्तां-तिरत करने की स्थिति में है, श्रग्रेषित की जा सकेगी।
 - (5) ऐसे मामलों में, जहां ब्रावेदक कोई फ्लैंट कथ करना चाहता है, फ्लैंट के विकेता से इस प्रभाव के पत्न की एक अनुप्रमाणित प्रति कि व्यवस्थापन और कीमत का संदाय किए जाने के अधीन रहते हुए वह उसके पत्न की तारीख से दो मास की अवधि के भीतर आवेदक को स्पष्टतः सुभेदक फ्लैंट का रिक्त कब्जा हस्तांतरित करने की स्थिति में है, अग्नेषित की जा सकेगी।
- (ख) विभागों के ग्रध्यक्ष ग्रावेदनों की जांच करेंगे ग्रीर उसमें कथित तथ्यों ग्रादि की शुद्धता के बारे में ग्रपना समाधान करेंगे। वे ऊपर के उप विनियम (क) के ग्रनुपालन में दिए गए हक विलेखों, ग्रादि से यह भी सुनिश्चित करेंगे कि ग्रावेदक प्रश्नगत संपत्ति में स्पष्ट हक रखता है। यह करने के पश्चान् विभागों के ग्रध्यक्ष ग्रावेदनों को, ग्रपनी सिफारिशों के साथ, ग्रध्यक्ष को ग्रग्रेषित करेंगे।
- (ग) ग्रध्यक्ष का कार्यालय, निधि के उपलब्ध होने के ग्रधीन रहते हुए, ग्रावेदनों पर कार्यवाही करने के लिए ग्रिधिक कियत पूर्विकताग्रों, ग्रादि यदि कोई हों, के प्रति निर्देश से ग्रावेदनों की जांच करेगा।

- (घ) (1) अनुभोदन के पश्चात् नीचे के उपिविनियम (ङ) की परिधि में माने वाले गामलों में किसी प्रश्निम के अनुदान की प्रारूपिक मंजूरी प्रध्यक्ष द्वारा दी जाएगी, जो बोर्ड द्वारा अधिकथित प्रक्रिया के अनुसार विधि प्रधिकारियों और राजस्व तथा रिजस्ट्रीकरण प्राधिकारी से परामर्ण करके अपना यह समाधान करेगा कि आवेदक, विल्लंगमों और कुर्कियों में मुक्त रूप में संपत्ति पर वास्तव में स्पष्ट और विपण्य हक रखता है। अध्यक्ष विहित प्रारूपिकताओं का जैसे कि करार. बंधक विलेख प्रतिभूति बंध-पन्न आदि का निष्पादन करना (जहां आवश्यक हो, समुचित विधि प्राधिकारी से परामर्श करके) विहित प्ररूप में पूरा करने की ब्यवस्था करेगा और तब मंजूर अग्निम की समुचित रक्तम को आवेदक को संवितरित करने की प्राधिकृत करेगा।
- (2) जहां भूमि या पहले से निर्मित गृह का ऋय ग्रग्रिम की सहायता मे किए जाने का आशय है वहां अध्यक्ष अग्रिम का संदाय प्राधिकृत करने के पूर्व, संबंधित कर्मचारी से यह प्रमाणित करने की ग्रपेक्षा भी कर सकेगा कि ऋय के लिए बातचीत ग्रंतिम प्रक्रम में पहुंच गई है, ऋय की कीमतीं की मंजुर श्रग्रिम की रकम से कम होने की संभावना नहीं है श्रौर उसने श्रपना यह समाधान कर लिया है कि संव्यवहार उसे प्रश्नगत भूमि गृह के लिए स्रविवाद्यक हक श्रर्जित करने में समर्थ बनाएगा । ऐसे मामलों में विक्रय विलेख ग्रादि की परीक्षा ग्रध्यक्ष द्वारा (जहां ग्रावश्यक हो विधि ग्रीर भन्य प्राधिकारियों से परामर्श करके) यह सुनिश्चित करने के लिए सावधानी पूर्वक की जानी चाहिए कि संबंधित कर्मचारी ने प्रश्नगत संपत्ति में अविवासक हक, फुलैटों के मामलों में भूमि के प्लाट के लिए हक को अप-बर्जित करते हुए, वास्तव में भ्रजिंत कर लिया है। यह भी सत्यापित किया जाना चाहिए कि ऋय की गई भूमि/गृह का बाजार मृल्य मंजूर श्रग्रिम से कम नहीं है।
- (3) ग्रध्यक्ष किसी नए गृह का सिन्निर्माण करने या किसी विद्यमान गृह में निवास स्थान की वृद्धि करने के इच्छुक आवेदकों को रेखांकों के साथ ही विनिर्देशों धौर प्राक्कलनों की दो प्रतियां विहित प्ररूप में प्रस्तुत करने का अनुदेश देगा। रेखांकों को अध्यक्ष को प्रस्तुत किए जाने के पूर्व संबंधित नगरपालिका या अन्य स्थानीय निकाय द्वारा सम्यक रूप से अनुमोदित किया जाना चाहिए।
- (ङ) उपरोक्त उपविनियम (घ) (3) में निर्दिष्ट रेखांकों, विनिर्देशों श्रीर प्राक्कलनों को सस विषय पर पूर्ववर्ती पत्नाचारों के प्रित निर्देश से अध्यक्ष को निर्दिष्ट किया जाना चाहिए । अध्यक्ष, वित्तीय सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी से परामर्श करके इन सभी ब्यौरों की परीक्षा करने के पण्चात् अग्निम के अनुदान लिए प्रारूपिक मंजूरी देगा। अध्यक्ष उपरोक्त उपि. (घ) में स्पष्ट की गई सभी प्रारूपिकताओं का अनुपा करेगा और तब आवेदक को सन्निर्मण के अवोजन अग्निम की प्रथम किस्त का संवितरण प्राध्मिकृत के की श्रथम किस्त का संवितरण प्राध्मिकृत के की श्रथम किस्त का संवितरण प्राध्मिकृत के

बाले विनियम 9(क) में यथाविहित प्रमाणपतों के भौरे ऐसे अन्वेषण के. जो आवश्यक समझा जाए, प्राधार पर सीधे अध्यक्ष हारा शिधिकृत किया जा सकेगा । अग्निम की अंतिम किस्त के सिवतरण के पूर्व यह भी सत्यापित किया जाना चाहिए कि स्थल का विकास पूरा हो गया है (देखिए उपरोक्त विनियम 7)।

टिप्पण:—विनियम 11 के उपविनियम (घ) या (ङ) में यथाविहिन श्रियम की किसी किस्त का संवितरण प्राधि-इत करते समाय प्रध्यक्ष, इस प्रभाव का एक प्रमाणपत्र संलग्न करेगा कि उन अपेक्षित प्रारूपिकताओं का, जिनके अनुसरण में किस्त देय हो गई है, अनुपालन किया गया है।

- (च) श्रध्यक्ष, यह भी सुनिण्चित करेगा कि संबादहार/ गृष्ठ का सन्तिर्माण विनियमों में विहित श्रविध के भीतर पूरा हो गया है, श्रीर कि---
 - (1) विनियम 7 के उपविनियम (1) और (3) की परिधि में ग्राने वाले मामलों में (उन मामलों के सिवाय जिनमें विद्यमान गृहों में निवास-स्थान की वृद्धि ग्रन्तर्वेलित है विहित प्ररूप में करार, ग्राग्रम की प्रथम किस्त का संवितरण किए जाने के पूर्व मर्वोधित कर्मचारी द्वारा सम्यक रूप से निष्पादिस किया गया है श्रीर भूमि का क्रय किए जाने के पश्चात् विक्रय विलेख विहित रूप में निष्पादिस किया गया है श्रीर हस्तांतरण पत्नों को रजिस्ट्रार के कार्यालय में सम्यक रूप से रजिस्ट्रीहत किया गया है श्रीर रजिस्ट्रीहत विलेख भूमि के हक के मूल दस्तावेजों के साथ, ग्रध्यक्ष के पास ग्राग्रमों की द्वितीय किस्त के निकाले जाने के पूर्व निक्षिष्त किया गया है!
 - (2) विनियम 7 के उपविनियम (2) श्रीर (4) की परिधि में श्राने वाले मामलों में श्रीर विद्यमान गृह में निवास-स्थान की वृद्धि को श्रीर विद्यमान गृह वाले सभी मामलों में बंधक विलेख विहित प्ररूप में निष्पादित किया गया है श्रीर हस्तानरण पत्नों को रिजस्ट्रार के कार्यालय में रिजस्ट्रीकृत किया गया है तथा श्रीप्रम की प्रथम किस्त के निकाल जाने के पूर्व रिजस्ट्रीकृत विलेख को, भूमि/गृह के हक की मूल दस्तावेजों के माथ, श्रध्यक्ष के पास निक्षिष्त किया गया है।
 - (3) विनियम 7 के उपविनियम (5) की परिधि में श्राने वाले मामलों तथा उन मामलों में, जिनमें भूमि के विकय के निबन्धन, जब तक भूमि पर गृष्ठ बना न दिया जाए, कर्मचारी में हक निष्ठित नहीं करते हैं, विहित प्ररूप में करार मंजूर प्रश्निम या उसके किसी भाग के संवितरण के पूर्व, निष्पा- दित किया गया है और श्रध्यक्ष के पाम निक्षिप्त या गया है। गृष्ठ का कय करने पर तुरन्त गृष्ठ के बना लिए जाने पर कर्मचारी के पक्ष में

हक के निहित हो जाने के सुरन्त पश्चात् विहित प्ररूप में बंधक विलेख निष्पादित किया जाएगा और हस्तांतरण पत्नों को रिजस्ट्रार के कार्यालय में रिजस्ट्रीकृत किया जाएगा । रिजस्ट्रीकृत विलेख, भूमि/गृह के हक की मृल दस्तावेजों के साथ, ग्रध्यक्ष के पास, त्रिनियम ७ के उपविनियम (5) की परिधि में ग्राने वाले मामलों में ग्रिग्रिमों के निकाले जाने के तीन मास के भीतर ग्रौर इस उपविनियम के ग्रधीन ग्राने वाते ग्रन्य मामलों में कर्मचारी के पक्ष में हक के निहित हाने की तारीख के ग्रीर बंधक विलेख के रिजस्ट्रीकरण के लिए ग्रपेक्षित समय के तीन मास के भीतर निक्षिप्त किया जाएगा ।

- (4) विनियम 7 के उपविनियम (ख)(1) की परिधि में भ्राने वाले मामलो में, प्रतिभूति बन्धकपन्न मंजूर ग्रिग्रम या उसके किसी भाग का संवितरण किए जाने के पूर्व विहित प्ररूप मे श्रनुमोदित स्थायी कर्मवारी द्वारा दिए जाने हैं।
- (5) उपरोक्त सभी मामलों में, कर्मचारी बंधक विलेखों के निष्पादित किए जाने के पूर्व संपित के लिए अपने विषण्य हक को बोर्ड द्वारा विहित प्रक्रिया के अनुसार सिद्ध करता है। ऐसे सासलो में, जहां विक्रय के निबन्धन, जब तक भूमि पर गृह न बना लिया जाए, कर्मचारी के पक्ष में भूमि में क्रक निहित नहीं करने हैं करार के निष्पादित किए जाने के पूर्व यह सुनिष्चित किया जाएगा कि कर्मचारी गृह बना लेने पर सभी विल्लंगमो और कुर्कियों से मुक्त रूप में, स्पष्ट और विषण्य हक अर्जित करने की स्थित में होगा।
- (6) वन्धक विलेख (और बंधक से संपत्ति निर्माचित होने पर हस्तांतरण या प्रतिहस्तांतरण विलेख) भारतीय रजिस्ट्रीकरण ग्रेधिनियम, 1908 (1908 का 16) की धारा 23 की ग्रपेक्षा श्रनुसार उसके निष्पादित किए जाने की तारीख से चार मास के भीतर सम्यक रूप से रजिस्ट्रीकृत किया जाता है श्रीर इन उपवन्धों के श्रनुसरण में कर्मचारी द्वारा निक्षिप्त सभी दस्तावेजें बंधक से सपत्ति के निर्मोचित या प्रतिहस्तांतरित किए जाने तक सुरक्षित ग्रभिरक्षा में रखी जाती है (इन विनियमों में विहित प्रतिभूति बंधपत्नों श्रीर करारों के मामलों में र्जिस्ट्रीकरण श्रावश्यक नहीं हैं)।
- (7) गृह उसके कय के किए जाने/पूरे किए जाने पर तुरन्त उपरोक्त विनिधम 9(ख) में उपदर्शित गीति से बीमाकृत किया जाता है और प्रीमियम की रसीदे निर्धामत रूप से निरीक्षण के लिए प्रस्तुत की जाती हैं।

- (8) जब तक श्राप्तिम पूर्णतः प्रतिसंदल्त नहीं कर दिया जाता है गृह श्रष्टिश मरम्मत की हालत में रखा जाता है और श्रावश्यक बीमा प्रीमियम, नगर-पालिक रेट श्रौर कर नियमित रूप में संदल्त किए जाते हैं श्रौर श्रपेक्षित प्रमाणपद्म प्रतिवर्ष प्रस्तृत किए जाते हैं।
- (9) भिष्म के प्रतिसंदाय की किस्तों की मासिक वसूली शोध्य होने की तारीख से प्रारम्भ होती हैं ग्रीर तत्पण्चात् संबंधित कर्मचारी के मासिक बेतन/ छुट्टी बेतन/निर्वाह भत्ता बिलों से नियमित रूप से की जाती है।
- (10) ऐसे कर्मचारियों के मामलों में, जिनके, उनके धाबेदन की तारीख से भठारह मास के भीतर सेवा-निवृत्त होने की संभावना है। [विनियम 7(ख) देखें] उनके उपदान की रकम पर्याप्त होगी जिससे उसकी सेवा-निवृत्ति की तारीख के ठीक पूर्व उसके प्रति बकाया धाग्रम के अतिशेष को पूरा किया जा सके।
- (11) उपगत व्यय से म्रधिक निकाली गई कोई भी रकम, उस पर देय व्याज सहित, यदि कोई हो तुरन्त बोर्ड को संबंधित कर्मेचारी द्वारा प्रतिदक्त की जाती है।
- (12) बोर्ड को बंधक की गई संपत्ति, श्रग्निम श्रीर उस पर ब्याज का पूर्ण प्रतिसंदाय करने पर तुरन्त निमोचित या प्रतिहस्तांतरित की जाती है श्रौर बन्धक विलेख सम्यक रूप से रह् किया जाता है श्रौर संबंधित कर्मचारी को भूमि/संपत्ति के हक की मूल बस्ताबेजों सहित वापस किया जाता है।

(छ) व्यय और गृह को पूरा करने की प्रगति पर निगरानी रखने के लिए भध्यक्ष को समर्थ बनाने के लिए विभागों के श्रध्यक्ष तैमासिक विवरणियां जिनमें (i) इन विनियमों के श्रधीन उनके द्वारा उपगन व्यय के श्रांकड़े, (ii) उन कर्मचारियों की सूची, जिन्हें उस तैमासिक के दौरान गृह निर्माण श्रिप्रम की श्रंतिम किस्त संवितरित की गई थी, भनुमोदनों का प्रतिनिर्देश देने हुए, और (iii) पूरे किए गए गृहों की सूची दिशात करने हुए इस प्रकार भेजेगा जिससे वह उस त्रैमासिक के जिससे विवरणियां संबंधित है, पश्चात्वर्ती मास की 10 तारीख नक श्रध्यक्ष के पास पहुंच जाए। शून्य विवरणियां भेजने की श्रावश्यकता नहीं है।

हिष्पण :—दस्तावेजों पर प्रभार्य स्टाम्प शुल्क, यदि कोई हो, रजिस्ट्रीकरण फीस भौर श्रन्य व्यय जो विधिक श्रौर श्रन्य प्रारूपिकताश्रों को पूरा करने के लिए उपगत किए आएं, कर्मचारी द्वारा भ्रपने स्वयं के साधनों द्वारा निर्वहन किए जाएंगे।

गृहों के सन्तिर्माण ग्रादि के लिए बोर्ड के कर्मचारियों को श्रिप्रम के श्रनुदान विनियमित करने वाले नियमों के भ्रधीन विहित भ्रावेदन का प्रारूप।

- 1. (क) नाम (मोटे प्रक्षरों में)
 - (ख) पदाभिधान
 - (ग) वेतनमान
 - (घ) वर्तमान वेतन (भत्तों को छोड़कर किन्तु महगाई घेतन को, यदि कोई हो, सम्मिलित करते हुए)।
- 2. (क) वह विभाग या कार्यालय जहां नियुक्त किया गया है।
 - (ख) विभाग का ग्रध्यक्ष ।
 - (ग) वह कार्यालय जहाँ तैनात है।

अपया निम्नलिखित कथन करें:—

मया प्राप बोर्ड के स्थायी या जन्म की तारीख, सेवा-निवृत्ति की (क) म्रापका स्थायी पद, यदि क्या आपकी पत्नी/पति बोर्ड का अस्थायी कर्मचारी हैं श्रौर कोई हो, भौर संबंधित तारीख भौर भ्रगले जन्म दिन कर्मचारी है, यदि हां, तो बोर्ड के ग्रधीन की गई सेवा की कार्यालय भौर विभाग का पर ग्राय पवाभिधान उसका नाम ग्रवधि नाम ; भ्रादि दीजिए (ख) क्या भ्राप किसी राज्य/ केन्द्रीय सरकार के घधीन कोई स्थायी नियुक्ति धारण करते हैं, यदि हां, तो विशिष्टियां दीजिए। (2) (1)(3)(4)

| | | | 17: |
|---|---|--|--|
| ता कृपया निम्नलिखित कथन व | | ले ही किसी गृह की स्वामी है | ह [बिनियम 4 (ग) देखिए] यदि हा |
| वह स्थान जहा वह स्थित है सही पते के साथ | फर्गी क्षेत्रफल (वर्ग मीटर मे) | उसका (लगभग) मूख्याकन | यथास्थिति ग्रन्य गृह के स्वामित्य की या किसी विद्यमान गृह मे निवास-स्थानो की वृदि की वाछा के लिए कारण |
| (1) | (2) | (3) | (4) |
| प्रक्रम मे विनिर्दशा, प्र 5. (क) क्या ग्रापका | ाक्ष्यलना (सलग्न प्रारूप मे) श्रो । नए गृह के निर्माण के लिए अ | र रेखाको द्वारा, होगा। | 4 की प्रविष्टियों का समर्थन समुचित तो कृपया निम्नलिखित उपदर्शित करे |
| (विनियम 5 सिन्तिर्माण के लिए प्रस्थापित गृह | - ' | | उन वर्षों की सख्या जिनमे |
| का लगभग फर्शी क्षेत्रफल (वर्गमीटर मे) | भूमि की लागत निर्माण की | लागत योग भ्रपेक्षित भ्रां की रक | |
| (1) | (2) (3) | (4) | (6) |
| टि प्पणम्तभ 2 सं 4 की | प्रविष्टियो का समर्थन समृचित प्र | अपम मे विनिर्देशो, प्राक्कलनो (| (सलग्न प्ररूप मे) ग्रौर रेखाको द्वारा |
| होगा। (ख) क्या भूमि क | प्रापके कडजे में पहले से है <i>े य</i> | दि हा तो कृपया निम्नलिखिः | ा कथन करें। |
| • | | | त कथन करें। नगरपालिक या भ्रन्य स्थानीय प्राधिकारी का नाम (यदि काई हो) जिसकी भ्रिधिकारिता के भीतर वह स्थित है। |
| (ख) क्या भूमि क | क्या ध्राप वहा सेवा निवृत्ति के पश्चात् बसना चाहने हैं काई प्लाट ध्रापके कब्जे मे पहले जाने के लिए प्रस्थापित प्लाट का की ध्रनुप्रमाणित सस्य प्रतिलिपि | प्लाट का क्षेत्रफल (वर्गमीटर मे) से नही है तो श्राप कैसे, कब लगभग क्षेत्रफल (वर्गमीटर मे सलग्न करे कि व्यवस्थापन क | नगरपालिक या भन्य स्थानीय प्राधिकारी का नाम (यदि काई हो) जिसकी भूभिधकारिता के |
| (ख) क्या भूमि क उस ग्रहर या नगर का नाम जहा वह भव स्थित है (ग) यदि भूमि का है। श्रुजित किए क के एक ऐसे पत्न श्रधीन रहते हुए क् प्लाट का रिक्त क | क्या ध्राप वहा सेवा निवृत्ति के पश्चात् बसना चाहने हैं काई प्लाट ध्रापके कब्जे मे पहले जाने के लिए प्रस्थापित प्लाट का की ध्रनुप्रमाणित सत्य प्रतिलिपि वह धावेदन की तारीख से दो क्जा दे सकता है। | प्लाट का क्षेत्रफल (वर्गमीटर मे) से नही है तो श्राप कैसे, कत्र लगभग क्षेत्रफल (वर्गमीटर मे सलग्न करे कि व्यवस्थापन श्र मास की श्रवधि के भीतर भूमि | नगरपालिक या भ्रन्य स्थानीय प्राधिकारी का नाम (यदि काई हो) जिसकी भ्रिंभधिकारिता के भीतर वह स्थित है। श्रीर कहा उसे ग्राजित करना चाहते) कथित करे ग्रीर प्लाट के विकेता ग्रीर कीमत का सदाय किए जाने के |

⁻विद्यमान गृह का रेखांक भ्रावेदन के साथ होना चाहिए।

7 क्या ग्रापको पहले से निर्मित गृह का कय करने के लिए ग्रग्निम की अपेक्षा है? (क) (i) यदि हा, श्रीर यदि श्रापकी दृष्टि मे पहले से ही कोई गृह है ता कृपया निम्नलिखिन कथित करे ---

| गृह की ठीक स्थिति | गृह का फर्सी क्षेत्रफल (वर्ग मीटर मे) | गृह का कुर्मी क्षेत्र- फल (वर्ग- मीटर मे) | गृह की लगभग स्रायु | गृहं का नगरपालिक मूल्याकन | स्वामी का नाम ग्रौर पता | सदत्त की जान वाली लगभग कीमत | श्चपेक्षित श्रय्रिम की रकम | उन वर्षों की सख्या जिनमे स्रिप्रिम की ब्याज महिन प्रतिसदत्त किए जाने की प्रस्थापना है |
|----------------------|--|--|--------------------------|---------------------------------|-------------------------------|--------------------------------------|----------------------------------|---|
| | | | (4) | (5) | | | | / . \ |

(1) (2) (3) (4) (5) (6) (7) (8)

डिप्पण :—(i) श्रावेदन के साथ गृह का रेखाक होना चाहिए।

- (ii) क्या भ्रापने यह समाधान कर लिया है कि सब्थवहार गृह के लिए श्रापको भ्रविवाद्यक हक श्राजित करने में परिपत होगा।
- (ख) यदि भ्रापकी दृष्टि में पहले से ही कोई गृह नहीं है तो श्राप कैसे, कब भ्रौर कहा उसे भ्राजित करने की प्रस्थापना करते हैं ? निम्नलिखित उपर्दाशत करें :—

टिप्पण:— उपरोक्त मद 7 (क) के सामने विनिर्दिष्ट क्योंने इस मामले मे भी यथासभव शीघ्र दिए जाने चाहिएं श्रौर किसी भी दशा मे प्रश्निम की पूरी रक्षम निकाले जाने के पूर्व, दिए जाने चाहिएं।

8. क्या वह भूमि जिस पर गृह है या गृह का सिन्निर्माण किए जाने की प्रस्थापना है, स्वतन्न धृति (फी-होल्ड) या पट्टाधृत है यदि पट्टाधृत है तो निम्नलिखित कथित करे:—

| पट्टे की ग्र वधि | कितनी अवधि पहले ही व्यतीत हो चुकी है | क्या पट्टेकी शर्ते भूमि की बोर्डको वधक किए जानेकी अनुज्ञादेती है | प्लाट के लिए संदत्त प्रीमियम | ^{ष्} लाट का वार्षिक किराया |
|----------------------------|---|--|---------------------------------|--|
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) |

विष्पण:---पट्टा विक्रय विलेख की एक प्रति भावेदन के साथ होनी चाहिए।

- 9.(क) क्या भूमि/गृह के लिए भाषका हक निर्विवाद भौर विल्लगमो से मुक्त हैं?
- (ख) क्या भ्राप श्रपने हक के समर्थन मे, यदि श्रपेक्षित हो, मूल दस्ताबेज (बिकय या पट्टा विलेख) प्रस्तुत कर सकते है? यदि नहीं तो उसके लिए कारणो का कथन यह उपदिशित करते हुए करे कि श्राप कीन सा भ्रन्य दस्ताबेजी सबून, यदि कोई हो, भ्रपने दावे के समर्थन में दे सकते है?

[उपरोक्त विनियम 5(ख) श्रीर 7(क) देखिए]

(ग) क्या उस परिक्षेत्र मे जिसमे भूमि का प्लाट/गृह स्थित है, सडक, जल प्रदाय, जल निकास, मल निकास, मार्ग प्रकाण, भादि जैसी श्रावक्यक सेवाए है (कृपया स्थल रेखाक पूरे पते के माथ दे)।

- 10 यदि ग्राप इस ग्रावेदन की तारीख स 20 वर्ष के भीतर सेवा निवृत्त होने वाले हैं ग्राँर उपदान या मृत्यु एव सेवा-निवृत्ति उपदान के लिए पाव है तो क्या ग्राप करार प्ररूप/बधक विलेख मे एक घोषणा वेकर यह करार करते हैं कि बोर्ड ग्रापकी सेवा निवृत्ति या सेवा-निवृत्ति के पूर्व मृत्यु के समय ग्रसवत्त रह गए उक्त ग्रग्निम के ग्रतिशेष को, ब्याज सहित, उस संपूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्विष्ट भाग मे, से जो श्रापको मजूर किया जाए, वसूल करने के लिए हकदार होगा?
- 11 क्या विनियम 7 (ख) भाषके मामले मे लागू है यदि हा तो निम्नलिखित कथन करे ---
 - (i) ऐसे स्थायी कर्मचारी का, जो श्रापके रि भूति देने के लिए रजामद है, नाम, प् वेतनमान, कार्यालय/विभाग, श्रादि ।

| (ii) | वह | तारीख, | जिसको | प्रस्तावित | प्रतिभू | सेवानिवृत्ति |
|------|------|---------|-------|------------|---------|--------------|
| | होने | वाला है | 1 | | | |

12. यदि श्रापने गृह या किसी निवासीय प्लाट के मिल्तर्माण/ग्रजन के लिए ग्रपनी भविष्य निधि में पहले ही ग्रंनिम रूप में रकम निकाली है तो कृपया निकाली गई रकम की विणिष्टिया, निकालने की तारीख ग्रीर वह प्रयोजन, जिसके लिए ग्रब गृह निर्माण श्रग्रिम नियमों के ग्रधीन श्रपेक्षित रकम की ग्रपेक्षा है, दें।

घोषणाएं

- मैं मत्यनिष्ठा में यह घोषणा करता हूं कि ऊपर उपदक्षित विभिन्न पदों के उत्तर में मेरे द्वारा दी गई जान-कारी मेरी मर्वोत्तम जानकारी श्रोर विश्वास के श्रनुसार मही हैं।
- 2. मैंने गृह निर्माण श्रादि के लिए बोर्ड के कर्मचारियों को श्रिप्रमों के श्रनुदान को विनियमित करने वाले नियमों को पढ़ा है श्रीर उनमे दिए गए निबन्धनों श्रीर शर्नों का पालन करने के लिए सहमत हूं।
 - मैं प्रमाणित करता हूं कि——
 - *(i) मेरी पत्नी/मेरे पित बोर्ड के कर्मचारी नहीं है मेरी पत्नी/मेरे पित ने, जो बोर्ड की/का कर्मचारी है इन नियमों के अधीन अग्निम के लिए कोई आवेदन नहीं किया है और/या अभिप्राप्त नहीं किया है।
 - (ii) न तो मैंने, न मेरी पत्नी/पिति/श्रवयस्क संतान ने किसी गृह के श्रर्जन के लिए पहले किसी सरकारी स्रोत से (उदाहरणार्थ पुनर्जास विभाग या किसी केन्द्रीय या राज्य श्रावास स्कीम के श्रधीन) किसी उधार या श्रियम के लिए कोई श्रावेदन दिया है, श्रीर/या श्रीभंग्राप्त किया है या किसी गृह के श्रजन के संबंध में किसी भविष्य निधि से काई श्रीप्रम लिया है या श्रीप्रम स्प से रकम निकाली है (उपरोक्त मद 12 भी देखिए)

*क्षिकल्प (विकल्पो) को जो लागून हो काट दें।

(iii) गृह का सन्तिर्माण जिसके लिए श्रम्रिम के लिए ग्रावेदन दिया गया था, प्रारम्भ नही किया गया है।

| <mark>म्रावेद</mark> क | के | हस्ताक्षर | |
|------------------------|----|-----------|--|
|------------------------|----|-----------|--|

| पदाभिधान |
|--|
| विभाग/कार्यालय जिसमें |
| नियोजित है |
| (ग्रावेदक के विभाग के प्रधान द्वारा भरा जाए) |
| संक्यांकस्थान तारीख |
| श्रध्यक्ष को श्रग्नेषित |

- (1) मैने विनियमों के 11(ख) के श्रनुसार श्रावेदन की जांच की है श्रीर उनमें कथित तथ्यों श्रादि की शुद्धता के सम्बन्ध में श्रीपना समाधान कर लिया है श्रीर श्रावेदक को प्रश्नात संपत्ति का स्पष्ट हक है।
- (3) 'विनियम 4 (खा) के उपबन्धों को विशेष मामले के रूप में शिथिल किया जाए।
- (4) श्रावेदक को जिसकी श्रधिविधिता की तारीख़ को देय उपदान/मृत्यु-एवं-सेवा-निवृत्ति उपदान की रकम (ओ सेवा निवृत्ति की तारीख़ को श्रावेदक द्वारा गृह निर्माण श्रियम के लिए श्रावेदन देने के समय धारित नियुक्ति के श्राधार पर संगणित है)————— श्रावकलिन की गई है।
- (5) प्रमाणित किया जाता है कि मैं श्री(नाम ग्रीर पदाभिधान साफ श्रक्षरों में दें) **विभाग का श्रध्यक्ष हूं

**मुझे ऐसे आवेदन की जांच करने श्रीर सिफारिश करने के लिए विभाग के श्रध्यक्ष द्वारा सम्यक रूप से प्राधिकृत किया गया है।

| # | **हस्ताक्षर |
|---|---------------------|
| | पदाभिधान |
| | विभाग का नाम |

†यदि लागू न हो तो काट दें।

^{**}जो शब्द लागू न हो उसे काट दें।

^{***}हस्ताक्षर करने वाले श्रधिकारी का नाम भी उसके हस्ताक्षर के नीचे मोटे श्रक्षरों में उपदर्शित किया जाना चाहिए।

प्र€प सं∘ 1

| | _ | 11(क) देखिए | _ | | | |
|-----------|---|------------------|----------------|-------------------|------------------------|-------------|
| प्राप्तक | गृहो के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारियो को ग्र सनो ग्रौर क्यौरेवार विनिर्देशो की लागत की सक्षिप्ति | | ा के लिए (! | प्ररूप सं० 2 के | ब्यौरों पर ग्रा | धारित) मूल |
| | रक्स | – ঢ় ৹ | | | | |
| | नाम | _ | | | | |
| | पदाभिष्ठान —————— | - | | | | |
| | परिक्षेत्र भार पता जिसमे गृह के सन्निर्माण की प्रस्थापना है | - | | | | |
| मद सं० | उपशीर्ष र्धार कार्य की मदे | मावा या सख्या | दर | प्रति | रकम | योग |
| (1) | (2) | (3) | (4) | (5) | (6) | (7) |
| 1. f | मेट्टीका कार्य. | | | | | |
| | (नीव खांदने में मिर्ट्टा का कार्य ग्रौर ग्रिधिशेष मिर्ट्टा का व्ययन श्रादि) | | <u></u> | 1000 वर्ग मीटर | | |
| 2. 🔻 | क्तिट कार्यः | | | | | |
| य | ातो फर्ग के मीचे या नीव के लिए पत्थर या ईंटो की मिट्टी का उपयोग करते हुए सीमेन्ट या चूने के साथ ग्राधार कंकीट | | | 100 वर्ग मीटर | | |
| 3. | नमोसह प्रक्रिया | | | | | |
| | (कंकीट या प्रचुर मीमेन्ट गारा या विट्मिनिस्टिक- मिश्रण।) | , . | | | _ | |
| 4. | छत का कार्य: | | | | | |
| (| म्राह० सी० सी० ऐस बे स्टस या किसी मन्य प्रकार की उपयुक्त छत) | | | _ | | <u>-</u> |
| 5. স | बलित सीमेंट कंकीट | | | | | |
| 6. f | थ नाई | | | | | |
| (| ईट, पत्थर, कंकीट खण्ड, वीवास मादि) | | | | | |
| 7. 1 | हाल्ड कार्य | | | | | |

[दरबाजों प्रौर खिडकियों, छतों के लिए काष्ठ घटक माप (स्केन्टलिंग) ग्रादि के लिए]

8. इस्पात कार्य

(प्रवलन, सलग्नक, खिड़कियों की छड़ों गादि के सिए)

9. फर्स बनना

(कंकीट, पत्थर या मंगमरमर की चिपें ग्रादि)

| 1 | - | . ` |
|---|---|-----------|
| н | | L1 |
| | | |

पीछे का बरामदा दीवाल रखते हुए

गहरी दीवाल . .

:रों के बीच की माझी दीवाल

ो की धोर पी**छे की बब्ल्यू**० सी०

| 10. परिकपण | | | | - | |
|---|---|---|--------------------------------------|-----------------------|--------------------|
| 10: 4(244) | | | | | |
| (प्लास्टर करना, टीप फरना रग या चूना की पेँरि ग्रादि) । | टग | | | | |
| ा । प्रकीणं : | | | | | |
| (नैसे वरमाती जल के नल, ढलान, जेल, चूर्ले, खृटि पक्षों के लिए हक धादि) | या | | | | |
| 1 2. स्वष्छता संस्थापम | | | | | |
| (शौचालय, कनेक्शन, नल, मैनहोल, जलनिकास स्राप्ति | ₹) | rindi, gard | | | |
| 13. जल प्रवाय | | | | | |
| (टोंटिया, जल सीटर, जल टेंक, जी० ग्राई० नल ग्रावि | r) | | | | |
| 14. विजली : | | | | | |
| विजली के प्वाउन्ट, मीटर कनेक्शन, ला इनों ग्रादि) | | | | | |
| कुल लागत | | | | | سنده الرمي من بيطة |
| | ~ | ग्रार्थ | दिक के हस्ताक्ष | र्'' ' | |
| | | | | | |
| कागज पर टाइप किया जाना है भौ र सम् _{जि} | | विषय के साथ | सलग्न (कथ) | गनाह्। | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ड | प्रकप सं० 2 प्रिम के लिए ब | यौरेवार प्राक्क | लन। | | |
| | प्रकप सं० 2 प्रिम के लिए ब | यौरेवार प्राक्क | लन। | | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप 1 में दी गई मात्रास्रो को नाम —————— | प्रकल सं० 2 निग्रम के लिए व । समर्थन करने | यौरेवार प्राक्क के लिए क्यौरेव | लन। गर प्राक्कलन | | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई माताझो का नाम | प्रकप सं० 2 प्रिंगम के लिए ब ा समर्थन करने | यौरेवार प्राक्क के लिए क्यौरेव | लन। गर प्राक्कलन | | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई मालाओ को नाम ————— पदाभिद्यान ———— कार्यालय, जिससे संव | प्रकण सं० 2 मग्रिम के लिए व ा समर्थन करने | यौरेवार प्राक्क के लिए क्यौरेट | लन। गर प्राक्कलन | | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई माताझो का नाम | प्रकण सं० 2 मग्रिम के लिए व ा समर्थन करने | यौरेवार प्राक्क के लिए क्यौरेट | लन। गर प्राक्कलन | | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई मालाओ का नाम ———————————————————————————————————— | प्रकण सं० 2 मग्रिम के लिए व ा समर्थन करने | यौरेवार प्राक्क के लिए क्यौरेट | लन। गर प्राक्कलन | | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई मालाओ का नाम ———————————————————————————————————— | प्रकण सं० 2 मग्रिम के लिए व ा समर्थन करने | यौरेवार प्राक्क के लिए क्यौरेट | लन। गर प्राक्कलन | | माखा |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई मालाओ का नाम ———————————————————————————————————— | प्रकथ सं० 2 विश्वम के लिए व तिसमर्थन करने लग्न है | यौरेवार प्राक्का के लिख् क्यौरेट | लन। गर प्रावकलन माप | ाव) | मास्त्रा (7) |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई मालाओ को नाम ———————————————————————————————————— | प्रक्ष्य सं ० 2 विद्यास के लिए व त्रिम के लि | यौरेवार प्राक्का के लिए क्यौरेट ग | लन । गर प्रायकलन माप चौड़ाई | मत) ऊंचाई | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को है (प्ररूप ! में दी गई मात्राझो को नाम ——————————————————————————————————— | प्रकल्प सं ० 2 विद्यम के लिए व तिसमर्थन करने लग्न है जिसमें गृह निर्मा संख्या (3) | यौरेवार प्राक्का के लिए क्यौरेट ग | लन । गर प्रायकलन माप चौड़ाई | मत) ऊंचाई | |
| गृह के निर्माण के लिए बोर्ड के कर्मचारी को ह (प्ररूप ! में दी गई मालाओ को नाम ———————————————————————————————————— | प्रकथ सं० 2 विश्व के लिए व त्रिम के लिए व त्रिम के लिए व त्रिम के लिए व त्रिम के लिए व लिस में गृह निर्मा संख्या (3) | यौरेवार प्राक्का के लिए क्यौरेट ग | लन । गर प्रायकलन माप चौड़ाई | मत) ऊंचाई | |

19-1/2

20-1/2

12-1/2

3-3/4

1-1/2

1-1/2

1-1/2

1-1/2

1-1/2

2

1-1/2

44

62

56

11

| 1 | 2 | | | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|----------------|---|------------|-----------|-------------|---------|----------|---------|------|
| यथो <i>क्त</i> | · · न पार्श्वकी . | | | 1-1/2 | 4-3, 4 | 1 | 1-1/2 | 11 |
| सामने | की स्रोर पीछे क | ी सीड़ियां | | 2 | 4-1/2 | 1-1/2 | 1-1/2 | 7 |
| कुल ि | मेट्टीकाकार्य | • | • | | | <u>-</u> | | |
| सभी ग | गई मिट्टी की पुन नदों के लिए, जै गयाहै। | | सं० 1 में | - | <u></u> | | | -4-4 |
| चालू व | | • | • | | | | | |

ग्रावेदक के हस्ताक्षर ------नारीख -----

हिष्यण:--ऊपर की मद 1 के सामने स्तम्भ 3-7 में दी गई प्रिविष्टियां केवल यह स्पष्ट करने के लिए हैं कि संपूर्ण प्ररूप कैसे तैयार किया जाना है; उसे पृषक कागज पर टाइप किया जाना चाहिए धौर धावेदन के साथ समुचित प्रक्रम पर संलग्न किया जाना चाहिए।

(प्ररूपसं० 3)

(विनियम 7 देखिए)

जब सम्परित मुक्त घृति (फ्रीहोल्ड) है तब निष्पादित किए जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप

बंधककर्ता उस भूमि श्रीर/या गृह सम्पित्त श्रीर परिसर का, जिसका वर्णन इसमें श्रागे लिखी श्रनुसूची में किया गया है श्रीर जिसकी मीमाएं श्रधिक स्पष्टता के लिए इसमे संलग्न नक्शों में....रंग की रेखा से दिखाई गई हैं तथा जो इसके द्वारा हस्तांतरित श्रीर श्रंतरित किया गया श्रभिष्यक्त है, (जिसे इसमें इसके पश्चात् "उक्त बंधक सम्पित्त" कहा गया है) पूर्ण श्रीर एकमाव हिताधिकारी स्वामी है श्रीर वह उसके कब्जे में है श्रथवा वह श्रन्यथा उसका विधिपूर्वक श्रीर पर्याप्त रूप से हकदार है।

बंधककर्ता ने : : : रिपए के श्रग्निम के लिए बंधकदार को श्रावेदन किया है। बंधककर्ता ने यह श्रग्निम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए मांगा है:

*(1) भूमि का कय करने के लिए धौर उस पर गृह बनाने के लिए *(उक्त भूमि पर विश्वमान गृह में ब्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)

- *(2) उक्त भूमि पर गृह बनाने के लिए या *(उक्त भूमि पर बने गृह में घ्राचास स्थान का विस्तार करने के लिए)
- *(3) उक्त पहले बने गृह का क्रय करने के लिए। बंधकदार कुछ निबंधनों ग्रौर शर्ती पर ''' हपए की उक्त रकम बंधककर्ता को देने के लिए सहमत हो गया है।

उक्त अग्रिम की एक गर्त यह है कि बंधककर्ता को वाहिए कि वह इसमें आगे अनुसूची में वर्णित सम्पत्ति का बंधक करके उक्त अग्रिम के प्रतिसंदाय को और उन निबंधनों और गर्ती के सम्यक् अनुपालन को प्रतिभूत करे जो नय मंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण आदि के लिए अग्रिम का अनुदान) विनियम, 1980 में (जिसे इसमें इसके पश्चात् "उक्त विनियम" कहा गया है और इसके अन्त-गर्त जहां संदर्भ के अनुकूल है, तरसमय उसके संशोधन या उसके परिवर्धन भी हैं) दी हुई हैं।

ग्रीर बंधककार ने *(बंधककर्ता को ' ' ' ' रु०) (केवल ' ' ' ' रु०) का ग्रियम जो उतनी किस्तों में ग्रीर उस रीति में संदेय हो गा जो इसमें इसके पश्चात् बताई गई है, मंजूर कर दिया है।

बंधककर्ता को बंधकदार से उक्त प्रग्निम निम्नलिस्टि किस्तों में मिलना है :---

* · · · · नार्यासा के मुके हैं।

*जो लागूहो वह लिखिए ।

* रुपए इस विलेख के निष्पादन पर।

* रुपए तब जब बंधककर्ता, बंधकदार के
पक्ष में इस विलेख का निष्पादन करेगा।

*ओ लागू हो वह लिखिए

** · · · · · · · · ः रु९ गु तब जब गृह का निर्माण कुर्सी के स्तर पर पहुंचेगा।

यह करार निम्नलिखित का साक्षी है।

- (1) (क) उक्त विनियमों के ग्रनुसरण में ग्रौर उक्त विनियमों के उपबंधों के मनुसरण में बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त भग्निम के प्रतिफल स्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों ग्रौर शर्ती का सर्वेव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और रुपए (केवल प्राप्तिम का बंधकदार को प्रतिसंवाय ''''रुपए (केवल '''रुपए) की ***....मासिक किस्तों में बंधककर्ता के वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय
 कोको से करेगा। यह प्रतिसंदाय गृह पूरा होने के भगले मास, से इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। वैधककर्ता ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी येतन/निर्वाह भत्ते में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। उक्त भ्रमिम की पूरी रकम देने के पश्चात् बंधकर्ता उस पर देय व्याज का संदाय भी ' ' ' ' · · · * * * मासिक किस्तों में उस रीति में भीर उन निबंधनों पर करेगा जो उक्त विनियंमों में विनिर्दिष्ट हैं, परन्तु यह कि बंधक-कर्ता क्याज सहित अग्निम का पूरा प्रतिसंदाय उस तारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख को वह सेवा से निवृत्त*होने वाला/वाली* है। यदि वह ऐसा नहीं करेगा/करेगी तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इ.स प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय प्रिमिम की मोष रकम तथा इस पर ब्याज और उसकी वसूलीका **ख**र्च बंधक सम्परित का विकय करके या विधि के ग्रधीन ग्रनुक्षेय किसी भ्रन्य रीति से वसूल करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंवाय इससे कम भवधि के भीतर कर सकता है।
- (1) (ख) उक्त विनियमों के अनुसरण में श्रीर उक्त विनियमों के उपबन्धों के अनुसरण में बंधकदार द्वारा बंधक-कर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त अग्निम के प्रतिफल-स्वरूप बंधकर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबन्धमों श्रीर शर्तों का सर्वेव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और उपए (केवल उपए) के उक्त अग्निम 1332 G1/80—3

का बंधककार को प्रतिसंदाय '''''' दपए (केवल ·····क्पए)की····मासिक किस्सों में भ्रपने (बंधककर्ता के) वैतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय : : : : : केमास से या गृह पूरा होने के घ्रगले मास से, इनमें से जो भी पूबवंतर हो, प्रारंभ हो कर उसकी अधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा ग्रीर उसकी मधिवर्षिता की तारीख को बकाया श्रतिशेष, श्रग्रिम की तारीख से प्रतिसंदाय की तारीख तक ब्याज सहित उसके उपदान/ मृत्यु-एर्व-सेवा निवृह्ति उपदान में से बसूल किया जाएगा । बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक वंतन/छुट्टी वेतन में से तथा उसकी शेष रकम की जिसका, संदाय उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/ग्रधिवर्षिता की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती जैसा इसमें इसके पूर्व वर्णित है उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे ग्रीर उस समय देय ग्रकिम की शोप एकम तथा उस पर ब्याज और वसूली का खर्च बंधक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के अधीन अनुज्ञेय किसी अन्य रीति से वसूली करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता है।

(1) (ग) उक्त विनियमों के धनुसरण में घौर उक्त विनियमों के उपबन्धों के अनुसरण में बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त अग्रिम के प्रतिफल-स्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकवार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों भौर शतीं का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और ''रुपए (केवल : : : : रूपए) के जक्त मग्रिम का बंधकवार को प्रतिसंदाय '''' रूपए (केवल '''' रू०) की ' ' मासिक किस्तों में अपने (बंधककर्ता के) वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय ः ः ः के •••••मास से या गृह पूरा होने के घगले मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकवार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन से करने के लिए प्राधिकृत करता है भौर बंधककर्ता भग्निम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देय ब्याज का भी १० की · · · · · · मासिक किस्तों में संदाय प्रपनी अधिवर्षिता की तारीख तक करेगा तथा मग्रिम दी गई रकम पर मग्रिम की तारीख से उसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के व्याज की उस बाकी रकम का जो उसकी मधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, संदाय ग्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेदा निवृत्ति उपदान से करेगा भीर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक बेतन/छुट्टी वेतन में से तथा उस शेष रकम **यदि म्रग्रिम के संदाय का ढंग नियम 5 में बिहित ढंग से भिन्न

है तो तबनुसार इसकी भाषा में परिवर्तन कर विया जाएगा *** यह 180 से भ्रधिक नहीं होगा।

*** यह 60 से झिषक नहीं होगा।

की जिसका संदाय उसकी मृत्यु की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती प्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधकृत करता है। यदि उसकी मृत्यु की तारीख को कोई प्रतिशेष असंदरत रह जाता है तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय प्रग्रिम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज और यसूली का खर्च बंधक सम्पत्ति का विक्रय करके या विधि के प्रधीन अनुक्तेय किसी प्रन्य रीति से वसूल करे। बंधककर्ती इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम प्रविध के भीतर कर सकता है।

टिप्पण:—खंड (1) (क) ग्रौर (1) (ख) या (1) (ग) में से जो लागू हो उसे काट दीजिए।

(2) यदि बंधककर्ता प्रक्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि बंधककर्ता विवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा-निवृत्ति, श्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण सेवा में नहीं रहता है श्रथवा यदि श्रिप्रिम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि **यह उ**क्त विनियमों में विनिर्दिष्ट ग्रौर उनकी ग्रोर से श्रन् पालन किए जाने वाले किसी निबंधन, भर्त और प्रनुबंध का ग्रनुपालन नहीं करता है तो ऐसी दशा में श्रग्रिम का संपूर्ण मूलधन या उसका उतना भाग जो उस समय देय रहता **है भौर** जिसका संदाय नहीं किया गया है, भौर उस पर ******* प्रतिगत प्रनिवर्ष की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त श्रम्भि की पहली किस्त के विए जाने की तारीख से परिकल्पित किया जाएगा बंध हदार को, तुरन्त संदेय हो जाएगा । इसमें किसी बात के होते हुए भी, यदि बंधककर्ता धाग्रम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जितके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधक-दार, बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी अनुशासनिक कार्रवाई कर सकेगा जो बंधककर्ता को लागू सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त हो।

(3) उक्त विनियम के और अनुसरण में और उपर्युक्त प्रतिफल के लिए तथा उपर्युक्त ग्रग्निम के और उस पर क्याज के, जो उसके पक्ष्वात् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबन्धनों के ग्रधीन बंधकदार को देय हो, प्रतिसंदाय को प्रतिणत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को उक्त संपूर्ण बंधक सम्पत्ति जिसका पूरा बर्णन इसमें धागे लिखी अनुसूची में किया गया है, उस सम्पत्ति पर बंधककर्ता द्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों या तत्समय उस पर की सामग्री का उक्त बंधक सम्पत्ति से संबंधित सभी या किन्हीं प्रधिकारों, सुखाचारों धौर भनुलग्नकों सहित भनु-दान, इस्तांतरण, भंतरण भीर समनुदेशन करता है। बंधक-दार उक्त बंधक सम्पत्ति को उसके भनुलग्नों सहित, जिनके अन्तांत उक्त बंधक सम्पत्ति पर के सभी निर्माण भौर ऐसे भवन जो निर्मित किए गए हैं या इसके पश्चात् निर्मित किए

जाएं घथवा उस पर तरसमय रखी सामग्री भी है, सभी विलंगमों से मुक्त पूर्ण रूप से धारण करेगा ग्रीर उसका उपयोग करेगा। किन्तु यह इसमें ग्रागे दिए हुए मोचन संबंधी उपबन्ध के ग्रधीन होगा। इसके पक्षकारों के बीच यह करार किया जाता है ग्रीर घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता, बंधकदार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन भौर व्याज का ग्रीर ऐसी अन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधकर्का द्वारा बंधकदार को, उक्त विनियमों के निबंधनों ग्रीर शतों के ग्रधीन संदेय ग्रवधारित की जाए, सम्यक् रूप से संदाय इसमें दी हुई रीति से कर देगा जो बंधकदार इसके बाव किसी भी समय बंधककर्ता के ग्रनुरोध भौर खर्च पर, उक्त बंधक सम्पत्ति का प्रतिभंतरण ग्रीर प्रतिहस्तांतरण बंधकर्तांग्रों को उसके या उसके निदेशानुसार उपयोग के लिए कर देगा।

(4) इसके द्वारा ग्राभिक्यक्त रूप से यह करार किया जाता है भीर घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता भपनी श्रीर से की गई भौर इसमें दी हुई प्रसंविदाश्रों को भंग करता है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृह्ति/ग्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है, या यदि उन सभी रकमों के जो इस विलेख के भ्रधीन बंधकदार को संदेय हैं, भीर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि उक्त श्रग्रिम या उसका कोई भाग इस विलेख के ग्रघीन या भ्रन्यथा तुरन्त संदेय हो जाता है तो ऐसी दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक सम्पत्ति का या उसके किसी भाग का विकय न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या टुकड़ों में और या तो लोक नीलाम द्वारा या प्राइवेट संविदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका ऋय कर ले या विऋय की किसी संविदा को विखंडित कर दे श्रौर उसका पुनः विकय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो। उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिए, जो बंधक-द्वार ठीक समझे, सभी कार्य करे श्रौर हस्तांरण पत्नों का निष्पा-दन करे। यह घोषणा की जाती है कि विकथ किए गए परिसर या उसके किसी भाग के ऋय के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केता या केताओं ने क्रय धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त गक्ति के अनुसरण में किए गए किसी विकय से प्राप्त धन को बंधकवार न्यास के रूप में धारण करेगा। उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का संदाय किया जाएगा ग्रीर तब इस विलेख की प्रतिभूति पर सस्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संवाय किया जाएगा भीर यवि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ता को दे दिया आएगा।

- (5) बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करता है कि:—
 - (क) बंधककर्ता को इस बात का मण्छा मधिकार भौर विधिपूर्ण प्राधिकार है कि वह बंधक सम्परित का,

^{*}नियमों के प्रधीन प्रभावं क्याज की प्रसामान्य दर।

बंधकदार को भीर उसके उपयोग के लिए अनुदान, हस्तांतरण, भन्तरण भीर समनुदेशन पूर्वोक्त रीति में करे।

- (ख) बंधककर्ता गृह के निर्माण उक्त गृह में श्रावास स्थान में परिवर्धन का कार्य उस धनुमोदित नक्शे धौर उन विनिर्देशों के ध्रनुसार ही करेगा जिनके प्राधार पर उक्त भ्रम्भिम की संगणना की गई है भ्रौर वह मंजूर किया गया है, जब तक कि उससे विजलन की अनुज्ञा बंधकदार ने नहीं दे दी है। बंधककर्ता कुर्सी/छत पड़ने के स्तर पर श्रनुक्रीय श्रिप्रिम की किस्तों के लिए ग्रावेदन करते समय यह ध्रनुप्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्शे श्रौर प्राक्कलन के श्रनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं छौर यह कि निर्माण कार्य क्सी/छप्त पड़ने के स्तर पर पहुंच गया है ग्रीर मंजूर किए गए भग्रिम में से ली जा चुकी रकम का बस्तुतः उपयोग गृह के सन्निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्रों के सही ष्ट्रोने का सत्यापन करने के लिए स्वयं बंधकदार था उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की अनुमति देगा। यदि बंधककर्ता कोई मिथ्या प्रमाण पत्र देता है तो उसे बंधकदार को वह सम्पूर्ण धिप्रम जो उसे मिला है तथा उस पर० * प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से भ्याज तूरना देना होगा इसके श्रतिरिक्त बंधककर्ता के विरुद्ध उसको लागू सेवा के नियमों के ग्रधीन उपयुक्त ग्रनुशासनिक कार्रवाई भीकी जा सकेगी।
- (ग) बंधककर्ता गृह का निर्माण/उक्त गृह में ध्रावास स्थान में परिवर्धनं ' ' ' ** के घठारह मास के भीतर पूरा करेगा, जब तक कि बंधकदार ने इस कार्य के लिए लिखित रूप में समय म बढ़ा दिया हों । इसमें व्यतिक्रम होने पर बंधककर्ता को, उसे दी गई सम्पूर्ण रकम का धीर उक्त विनियमों के ब्रधीन परिकलित ब्याज का एक मुक्त प्रतिसंदाय तुरन्त करना होगा बंधककर्ता गृह पूरा होने की तारीख की सूचना बंधकदार को देगा श्रीर वह बंधकदार को इस श्रामय का एक प्रमाणपक्ष देगा कि श्रीम की पूरी रकम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।

टिप्पण: -- जब प्रिप्रिम पहले बने गृह के कय के लिए हैं या उस उधार के प्रतिसंदाय के लिए हैं जो श्रावेदक ने किसी गृह के निर्माण या क्रय के लिए सिया हैं तब खंड (ख) भीर (ग) लागू नहीं होंगे।

- (घ) बंधककर्ता भारतीय जीवत बीमा निगम में या किसी राष्ट्रीयकृत साधारण बीमा कम्पनी में उस गृह का ग्रपने खर्च पर उतनी रकम के लिए तुरन्त बीमा कराएगा जो उक्त प्रग्निम की रकम से कम न हो। वह उसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार को श्रग्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है, श्राग्नि बाह श्रीर तड़ित से हानि या नुकसान के विरुद्ध बीमाकृत रखेगा जैसा कि उक्त विनियमों में उपबंधित है, भीर बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देगा। वंधककर्ता समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमिथम नियमित रूप से देगा भीर जब उससे श्रपेक्षा की जाए, प्रीमियम की रसीदें बंधकदार के निरीक्षण के लिए पेश करेगा। यदि बंधककर्ता ग्रग्नि, बाट भीर तड़िल के विरुद्ध बीमा नहीं कराता है तो बंधकवार के लिए यह विधिपूर्ण, किन्तु श्राबद्धकर नहीं होगा कि वह उक्त गृह का बीमा बंधककर्ता के खर्च पर करा ले मौर प्रीमियम की रकम को अप्रिम की बकाया रकम में जोड़ ले। तब बंधककर्ता को उस पर ····प्रतिवर्ष की घर से क्याज देना होगा मानो प्रीमियम की एकम उसको उक्त प्राग्रिम के भाग के रूप में दी गई थी। वह ब्याज उसे उस समय तक देना होगा जब तक कि वह रकम बंधक-दार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी वसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभूति के ग्रन्तर्गत ग्राने वाली रकम हो। बंधककर्ता, जब भी उससे अपेक्षित हो, बंधकदार को एक पद्म देगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस गृह का बीमा कराया गया है। यह पत्र इसलिए होगा कि बंधकदार बीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंधक दार उस बीमा पालिसी में हितबब है।
- (क) बंधककर्ता उक्त गृह को ग्रापने खर्च पर ग्रच्छी मरम्मत की हालत में रखेगा श्रीर बंधक सम्पत्ति की बावत नगरपालिका के भीर श्रन्य सभी स्थानीय रेट कर, श्रीर श्रन्य सभी देनदारियां उस समय तक नियमित रूप से देगा जब तक कि बंधकदार को श्रिम पूरी तौर से चुका नही दिया जाता है। बंधकर्ता, बंधकदार को उक्त श्राशय का एक वार्षिक प्रमाणपन्न भी देगा।
- (च) बंधककर्ता, गृष्ठ पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिधितत करने के लिए कि गृष्ठ प्रथ्छी मरस्मत की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देगा जब तक कि भग्निम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।

नियम के अधीन प्रभार्य ब्याज की प्रसामान्य दर।
 ** वहां वह तारीख लिखिए जिस तारीख को भिग्निम की पहली किस्त बंधककर्ता को दी गई है।

- (छ) बंधककर्ता, ऐसी कोई रकम श्रीर उस पर देय ब्याज, यदि कोई है, बंधकदार को लौटाएगा जो श्रिम के मददे, उस व्यय के श्राधिक्य में ली गई है जिसके लिए श्रिग्रम मंजूर किया गया था।
- (ज) बंधककर्ता, बंधक सम्पत्ति को इस विलेख के जारी रहने के दौरान न तो भारित करेगा, न उस पर विल्लंगम सृजित करेगा, न उसका भ्रन्य संकामण करेगा भौर न उसका किसी अन्य प्रकार से व्ययन करेगा।
- (झ) इसमें किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हक होगा कि वह अग्रिम की शेष रकम और उस पर ब्याज, जिसका संदाय बंधककर्ता की सेवा निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है, तो उस समय तक नहीं किया गया है, बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से वसूल कर ले।

म्रमुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है।

इसके साक्ष्य स्वरूप इस पर उक्त बंधककर्ता

उक्त बंधककर्ता के (हस्ताक्षर)

| भ्रौर नवमंगलौर पत्तन न्यास के न्यासी |
|--|
| बोर्ड के लिए और उनकी ओर से |
| कार्यालय के श्री : : : : : : : : : : : : : : : : : : : |
| दिए हैं। |
| 1 |
| (प्रथम साक्षी का नाम, |
| पता और व्यवसाय) |
| 2 |
| (द्वितीय सोक्षी का नाम, |
| पता भ्रौर व्यवसाय) |
| की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। |

नवमंगलौर पत्तन न्यास के न्यासी बोर्ड के लिए भौर सकी भोर से तथा उसके निदेशानुसार कार्यासय के

हस्ताक्षर

(प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय)

1

2 (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

टिप्पण:- श्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्पशुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से संपर्क कर हों।

प्ररूप सं० उक

(विनियम 7 देखिए)

जब सम्पत्ति मुक्त घृति (फीहोल्ड) है ग्रौर संयुक्त रूप से पति ग्रौर पत्नी के नाम में घारित है तब निष्पादित किए जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो के श्री ••••• का पुत्र/पुत्री है श्रीर जो इस समयंमें ••••• कार्यालय में ••••• के रूप में नियोजित है तथा उसका पति/उसकी पत्नी ••••• (जिन्हें संयुक्त रूप से इसमें इसके पश्चात् "बन्धक-कर्ता'' कहा गया है और जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से भ्रपर्वीजत या उसके विरूद्ध नहीं है) इसके ग्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक, प्रशासक ग्रौर समनुदेशिती भी हैं, ग्रौर दूसरे पक्षकार के रूप में नव बंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड जिसे इसमें म्रागे "बंधकदार" कहा गया है म्रीर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से भ्रपर्वीजत उसके विरुद्ध नहीं है) (इसके अन्तर्गत उसके उत्तरवर्ती और समनुदेशिती भी हैं, ···· तारीख के बीच ग्राज को किया गया है।

बंधककर्ता उस भूमि भौर/या गृह संपत्ति भौर परिसर का, जिसका वर्णन इसमें आगे लिखी अनुसूची में किया गया है भौर जिसकी सीमाएं अधिक स्पष्टता के लिए, इससे संलग्न नक्शे में '''''''' को दिखाई गई हैं तथा जो इसके ढारा हस्तांतरित और अंतरित किया गया अभिन्यक्त है, (जिसे इसमें आगे "उक्त बंधक सम्पत्ति" कहा गया है) पूर्ण और एकमात हिताधिकारी स्वामी है भौर वह ससके कब्जे में है अथवा वह अन्यथा उसका विधिपूर्वक भौर पर्याप्त रूप से हकदार है।

| | बन | धव | क | र्ता | Ì | में | ₹ | ì | τ | ्व | 5 | 8 | प्री | ſ | | ٠ | • | • | ٠ | • | | | • | • | • • | • | • | • } | Ì |
|-------|----|-----|-----|------|---|-----|-----|---|---|----|---|---|------|---|---|-----|---|---|---|----|---|---|---|---|-----|---|---|-----|---|
| (জি | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| • • • | • | • • | • • | • | • | • | • • | • | • | ٠ | • | • | • | • | • | • ₹ | O | | (| वे | ą | ल | | • | ٠. | • | • | * • | • |

···· रुपए) के ग्रग्निम के लिए बंधक-र को ग्रावेदन किया है। ग्रावेदक बंधककर्ता ने यह ग्रग्निम स्निलिखित प्रयोजन के लिए मांगा है,

- ं (1) भूमि का ऋय करने के लिए श्रीर उस पर गृह बनाने के लिए या
- ं (उक्त भूमि पर विद्यमान गृह में भ्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
- * (2) उक्त भूमि पर गृह बनाने के लिए या उक्त भूमि पर बने गृह में भ्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए
- * (3) उक्त पहले बने मकात/फ्लैट का ऋय करने के लिए। बंधकदार कुछ निबंधनों भीर शतौं पर ''''' '''' रूपए की उक्त रक्तम प्रधान बंधककत्ती को देने के लिए सहमत हो गया है।

उक्त अग्रिम की एक गर्त यह है कि बंधककर्ता को वाहिए कि वे इसमें श्रागे श्रनुसची में वींगत सम्पत्ति का बुंधक कि उक्त श्रिम के प्रतिसंदाय को भौर उन निबंधनों श्रीर शतों के सम्यक श्रनुपालन को प्रतिभूत करे जो नवमंगलीर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृष्ठों के निर्माण श्रादि के लिए श्रिम का श्रनुदान) विनियम, 1980 में (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् "उक्त विनियम" कहा गया है श्रीर इसके श्रन्तगैत जहां संदर्भ के श्रनुकल हों, तत्समय प्रवृत्त उसके संशोधन या उसके परिवर्धन भी हैं) दी हुई हैं।

श्रीर बंधकदार ने---

ग्रावेदक बंधककर्ता को बंधकदार से उक्त ग्राग्निम निम्न-लिखित किस्तों में मिलना है:

*·····ः रुपए ····· भारीख को मिल चुके हैं।

******** रूपए तज जब बंधककर्ता, बंधकदार के पक्ष में इस विलेख का निष्पादन करेंगे।

**··· जब गृष्ट का निर्माण कुर्सी के स्तर पर पहुंचेगा।

- **・・・・・・・・・・・ हपए तब जब मकान का निर्माण छत के स्तर तक पहुंचेगा: परन्तु यह तब होगा जब कि बंधकदार का यह समाधान हो जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें मकान बनाया गया है, जल प्रदाय, सड़कों की प्रकाण व्यवस्था, सड़कों, नालियों धौर मलवहन जैसी सुविधान्नों की दृष्टि से पूरा हो गया है)।

यह करार निम्नलिखित का साक्षी है:

(i)(क) उक्त विनियमों के अनुसरण में धौर उक्त विनियमों के उपबन्धों के अनुसरण में बंधकदार द्वारा आवेदक बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त प्रग्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करते हैं कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबन्धनों श्रीर शतौ का सदैव सम्यक् रूप से श्रनुपालन करेंगे श्रीर · · · · · · · · मासिक किस्सों में श्रावेदक के बेसन में के नाम से ग्रथवा गृह पूरा होने के धगले मास के, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ मास से ग्रथवा गृह पूरा होने के भ्रगले मास के, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। **ग्रावेदक ऐसी** किस्तों की कटौती उसके मासिक वेसन/छुट्टी वेतन/निर्वाह भत्ते में से करने के लिए बंधकदार को प्राधि-कुल करता है। उक्त प्रग्रिम की पूरी रकम देने के पण्चात् ग्रावेदक बंधककर्ता उस पर देय व्याज का संवाय भी 🔧 ·····†ां सासिक किस्तों में उस रीति में श्रीर उन निबन्धनों पर करेगा जो उक्त विनियमों में विनि-र्दिष्ट हैं। परन्तु यह कि ग्रावेदक बंधककर्ता ब्याज सहित ग्रग्निम धन का पूरा प्रतिसंदाय उस तारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख को वह सेवा से निवृत्त होने वाला/वाली है। यदि यह ऐसा नहीं करेगा/करेगी तो अंधकदार को यह हक होगा कि यह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी

(i) (ख) उक्त विनियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों के उपवन्धों के अनुसरण में बंधकदार द्वारा आवेदक बंधककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त अग्रिम के प्रति-फलस्वरूप आवेदक/बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि आवेदक बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबन्धनों और गरीं का सबैव सम्यक रूप से अनुपालन

भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय ग्रग्रिम की गोष

रकम तथा उस पर व्याज गौर उसकी वसूली का खर्चबंधक

संपत्ति का विक्रय कर के या विधि के श्रधीन अनुज्ञेय किसी

भन्य रीति से वसूल करे। म्रावेदक बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम भवधि के भीतर कर सकता है।

*** यह 180 से श्रधिक नहीं होगी। ां यह 60 से श्रधिक नहीं होगी।

^{*} जो लागू हो वह लिखिए।

^{**} यदि श्रमिम के प्रतिसंदाय का ढंग विनियम में विहित ढंग से भिन्न है तो तदनुसार इसकी भाषा में परिवर्तन कर दिया जाएगा।

करेगा श्रीर " फपए (केवल · · · · · रुपए) की उक्त अग्रिम का वंधकदार को प्रति-···· रुपए) की ···· मासिक किस्तों में भ्रापने (श्रावेदक बंधककर्ता) के वेतन में से करेगा। यह से या गृह पूरा होने के श्रगले मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्भ होकर उसकी प्रधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा और उसकी प्रधिविधिता की तारीख को बकाया ग्रतिशेष ग्रिम की तारीख से प्रतिसंदाय की तारीख तक क्याज महित उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से वसूल किया जाएगा। क्रावेदक बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक वैतन/छट्टी बेतन/निर्वाह भत्ते में से तथा उस गोष रकम की जिसका संदाय उसकी मृख्यू/ सेवा नियत्ति प्रधिवर्षिता की तारीख तक नही किया गया है, वाटौती जैसा इसमें इसके पूर्व वर्णित है उसके उपदान/ मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी वसूनी नही हो पाती है तो बंधकदार को यह हम होगा कि वह बंधक को इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे छौर उस समय देय प्रिया की शेष रकम तथा उस पर व्याज धीर वसुली का खर्च, बंधक संपत्ति का विक्रय करके या विधि के भधीन अनुज्ञेय किसी अन्य रीति से वसूल करे। श्रावेदक बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम भवधि के भीतर कर सकता है।

(i)(ग) उक्त विनियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों के उपबन्धों के अनुसरण में बंधकवार द्वारा बंधक-कर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त अग्निम के प्रतिफल-स्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों श्रीर शतीं का मदैव सम्प्रक् रूप से अनुपालन करेगा और ••••••••••••••••••••••• (केवल •••••••••• ···· रपए) के उक्त श्रमिम का बंधकदार को प्रतिसंदाय ' ' ' ' ' ' ' ' ' ह० (केबल ' ' ' ' ... रुपए) की '''' मासिक किस्तों में भ्रपने (बंधककत्ता के) वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय मास से या गृह पूरा होने के भगले मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा / बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को ऐसी किस्तों की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन में से करने के लिए प्राधिकृत करता है श्रीर बंधककत्ती श्रीप्रम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात् उस पर देय ब्याज का भी ••••••मासिक किस्तों में संदाय भएनी भ्रधिवर्षिता की तारीख तक करेगा तया प्रियम दी गई रकम पर प्रियम की तारीख स उसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के ब्याज की उस वाकी रक्तम का, जो उसकी अधिवधिना की तारीला की बकाया रहती संदाय प्राप्ते उपदान/मृत्य एवं सेवानिवृत्ति उपदान से करगा

श्रीर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासि बेतन/छुट्टी वेतन में से नथा उस श्रेष रकम की जिसका संदर्ध उसकी मृत्यु की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौत उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने वे लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि उसकी मृत्य की तारीज कोई अधिशेष असंदत्त रह जाता है तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करें और उस समय देय अग्रिक की शेष रकम तथा उस पर ब्याज और वसूली का खर्च वंधक संपत्ति का विकय पर के या विधि के अधीन अनुकेष किसी प्रन्य रीति से वसून करें। बंधकवार्ती इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम धवधि के भीतर कर सकता है।

[टिप्पण:— खंड $(i)(\pi)$, $(i)(\pi)$ या $(i)(\pi)$ में में जो लागू न हो उसे काट दीफिए।]

(ii) यदि ब्रावेदक बंधककर्सा ध्रम्भिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि **धावेद**क बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा-निवृत्ति, अधिवर्षितः सं भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहला है अलवा यदि अग्रिम के पूरे संदाय के पूव उसकी मृत्यू हो जाती है या यदि धावेदक बंधककर्ता उक्त नियमों में विनिर्दिष्ट ग्रौर उसकी श्रोर से श्रनुपालन किए जाने वाले किसी निबंधन, शर्त भौर धनुबंध का धनुपालन नहीं करता है तो ऐसी दणा में श्रियम का सम्पूर्ण मूलधन या उसका उतना भाग, जो उस समय देय रहता है भीर जिसका संदाय नहीं किया गया है, श्रीर उस पर ' ' ' ' ' ' *प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज जो वंधकदार द्वारा उत्त-भग्रिम की पहली किस्त के दिए जाने की तारीख से परि-किल्पत किया जाएगा, बंधकदार को तुरन्त संदेश हो जाएगा । इसमें किसी बात के होते हुए भी, यदि प्रधान बंधककत्ती श्रिप्रम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधकदार प्रावेदक बंधककत्ता के विरुद्ध ऐसी भ्रन्णासनिक कार्रवाई कर सकेगा जो प्रधान बंधककर्ता को लाग सेवा के नियमों के प्रधीन उपयुक्त हो।

(iii) उक्त नियमों के अनुसरण मे और उपर्युक्त अनिकल के लिए तथा उपर्युक्त अप्रिम के और उस पर ब्याज के, जो उसके पण्चात् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबन्धनों के अधीन बंधकबार को देय हो, प्रतिसंदाय को प्रित्तभूत करने के लिए बंधककर्ता, इसके द्वारा बंधकदार को उक्त संपूर्ण बंधक सम्पत्ति जिसका पूरा वर्णन इसमें आगे लिखी अनुसूची में किया गया है उस सम्पत्ति पर बंधककर्ताओं द्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों अथवा तत्समय उस पर की सामग्री का उक्त बंधक संपत्ति से संबंधित सभी या किन्ही अधिकारों, सुखाचारों और अनुलग्नकों सहित् अभ्वदान, हस्तांतरण, अतरण भीर समनुदेशन करते हैं।

^{*}नियम के श्रधीन प्रभायं व्याज की प्रसामान्य दर।

धिकदार उक्त बंधक संपत्ति को, उसके अनुलग्नकों सहित जुनके घन्तर्गत उक्त बंधक सम्पत्ति पर के सभी निर्माण भौर **ऐसे भवन जो निर्मित किए गए हैं या इसके पश्चान् निर्मित** कए जाएं भथवा उस पर तरसमय रखी सामग्री भी है सभी जिल्लंगमों से युक्त पूर्ण रूप से धारण करेगा और उसका उपयोग करेगा। किन्तु यह इसमें भ्रागे दिए हुए मोचन तंबंधी उस उपबंध के प्रधीन होगा कि यदि बंधककत्ती, धिकदार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन श्रौर ब्याज हा भौर ऐसी श्रन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधक-र्**त्ताओं द्वारा** बंधकदार को उक्त नियम के निबंधन श्रीर ीतौ के ग्रधीन संदेय ग्रवधारित की जाए सम्यक् रूप से पंदाय इसमें दो हुई रीति से कर देंगे तो गंधकदार उसके बाद कसी भी समय बंधककर्ताभ्रों के श्रनुरोध भौर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिग्रंतरण श्रौर प्रतिहस्तांतरण बंधक-इसामों को उनके उपयोग के लिए या उनके निवेणानुसार उपयोग के लिए कर देगा।

(iv) इसके द्वारा ग्राभिव्यक्त रूप से यहकरार किया जाता है और घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता अपनी 🗐र से की गई ग्रौर इसमें दी हुई प्रसंविदाग्रों का भंग करते हैं या यदि भ्रावेदक बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से या निवृत्ति / ग्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है या यदि उन सभी रकमों के जो इस विशेख के मधीन बंधकदार को संदेय हैं, भौर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि उक्त प्रिप्ति या उसका कोई भाग इस विलेख के अधीन या प्रन्यथा तुरन्त संदेय हो जाता है तो ऐसी दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके -किसी भाग का विक्रय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या टुकड़ों में भौर यातो लोक नीलाम द्वारा या प्राइवेट संविदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका कय कर लेया विकय की किसी संविदाको विखण्डित कर दे भौर उसका पुनः विकथ कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो । उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिए, जो बंधकदार ठीक समझे सभी कार्य करे भ्रौर हस्तांतरण पत्नों का निष्पादन करे। यह घोषणा की जाती है कि विक्रय किए गए परिसर या उँसके किसी भाग के ऋय धन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि कैता/केताग्रों ने कय छन का ुभुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त गांक्ति के अनुसरण में किए गए किसी विकय से प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप में धारण करेगा । उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विक्रय पर हुए खर्च का संदाय किया जाएगा भीर तब इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय देय धन की भुकाने में या उसके लिए, धन का संदाय किया जाएगा श्रीर यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ता को वे दिया जाएगा ।

(v) बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करते हैं कि :—

- (क) बंधकनतियों को इस बात दा अन्छा प्रधिकार और विधिपूर्ण प्राधिकार है कि वे संपत्ति बंधक का, बंधकदार को और उसके उपयोग के लिए अनुदान, हस्तांतरण, अन्तरण और समनुदेशन उक्त रीति में करें।
- (ख) आवेदक बंधककर्ता गृह के निर्माण उक्त गृह में भावास स्थान में परिवर्धन का कार्य उस भनुमो-दित नक्शे भ्रौर उन विनिर्देशो के भ्रनुसार ही करेगा जिनके ग्राधार पर उक्त ग्रग्निम की संगणना की गई है श्रौर वह मंजुर किया गया है जब तक कि उससे विचलन की श्रनुज्ञा बंधकदार ने नहीं देदी है। भ्रावेदक बधककर्ता, कुर्सी/छत पडने के स्तर पर अनुज्ञेय अग्रिम की किस्तों के लिए आवेदन करते समय यह श्रनु-प्रभाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्शे भ्रीर प्रायकलन के अनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं श्रीर यह कि निर्माण कार्य कुर्सी/छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है स्रोर मंजुर किए गए श्रम्भिम में से ली जा चुकी रकम का वस्तुतः उपयोग गृह के सन्निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाण-पन्नों के सही होने का सत्यापन करने के लिए स्वयं बंधकदार को या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की श्रनुमति देगा/देगी। यदि बंधककर्ता कोई गिथ्या प्रमाण-पत्न देता है तो उसे बंधकदार को वह संपूर्ण ग्रग्निम, जो उसे मिला है तथा उस पर प्रतिगत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज तुरन्त देना होगा। इसके श्रतिरिक्त श्रावेदक बंधककर्ता के विरुद्ध उसको लागु सेवा के नियमों के श्रधीन उपयुक्त अनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी।

टिप्पण :—जब श्रम्भिम पहने बने गृह/फ्लैंट के क्रय के लिए है या उस उद्यार के प्रतिसंदाय के लिए है जो श्रावेदक ने किसी गृह/

नियम के श्रधीन प्रभायं ब्याज की प्रगमान्य दर। गियहां वह तारीख लिखिएं जिस नारीख को श्रियम की पहली किस्त बंधककर्ता को दी गई है। क्लैट के निर्माण या ऋय के लिए लिया है तब खण्ड (ख) ग्रीर (ग) लागू नहीं होंगे।

- (घ) बंधककर्ता भारतीय जीवन बीमा निगम में उस मकान पर तुरन्त भ्रपने खर्च पर बीमा उतनी रकम के लिए कराएंगे जो उक्त ग्रग्निम की रकम से कम न हो। वे उसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार को प्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है, अग्नि, बाढ़ और तद्गित से हानि या नुकसान, के विरुद्ध बीमाकृत रखेंगे जैसा कि जक्त विनियमों में उपबंधित है, श्रौर श्रीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देंगे। बंधककर्ता समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमियम नियमित रूप से देंगे भौर जब उनसे ध्रपेक्षा की जाए, प्रोमियम की रसीदें बंधकदार के निरीक्षण के लिए पेश करेंगे। यदि बंधककर्ता बाढ़ और तड़ित के विरुद्ध बीमा नहीं करते हैं तो बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण किन्तु भावद्वकर नहीं होगा कि वह उक्त गृह का बीमा बंधककर्ताधों के खर्च पर करा ले घीर प्रीमियम की रकम को धाग्रिम की बकाया रकम में जोड़ लें। तब भावेदक को उस पर '' प्रतिवर्ष की दर से ब्याज देना होगा मानो प्रीमियम की रकम उसको उक्त श्रमिम के भाग के रूप में दी गई थी। यह न्याज उसे उस समय तक देना होगा जब तक कि वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी वसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभृति के भन्तर्गत ग्राने वाली रकम हो । बंधककर्ता जब भी उनसे अपेक्षित हो, बंधकदार को एक पत्न देंगे जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस गृह का बीमा कराया गया है। यह पत्र इसलिए होगा कि बंधकदार बीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंधकदार उस बीमा पालिसी में हितबद्ध है।
- (ङ) बंधककर्ता उनत गृह को प्रपने खर्च पर प्रच्छी

 सरम्मत की हालत में रखेंगे भौर बंधक सम्पक्ति की
 बाबत नगरपालिका के भौर अस्य सभी स्थानीय रेट,
 कर और भन्य सभी देनदारियां उस समय तक
 नियमित रूप से देंगे जब तक कि बंधकदार को
 अग्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
 बंधककर्ता, बंधकदार को उन्ह भाग्य का एक
 वाधिक प्रमाण-पन्न भी देंगे।
- (च) बंधककर्ता, गृह पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिश्चित करने के लिए कि गृह प्रच्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देंगे जब तक कि प्रक्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।

- (छ) ग्रावेदक बंधककर्ता ऐसी कोई रकम भीर उस पर देय ब्याज यदि कोई है, बंधकदार को लौटाएगा जो श्रिप्रम के मद्दे, उस व्यय के ग्राधिक्य में ली गई है जिसके लिए ग्रिप्रम मंजूर किया गया था।
- (ज) बंधककर्ता, बंधक संपत्ति को इस विलेख के आरी रहने के दौरान न तो भारित करेंगे, न उस पर विल्लंगम सूजित करेंगे, न उसका प्रन्यसंकामण करेगे और न उसका किसी प्रन्य प्रकार से व्ययन करेंगे।
- (म) इसमें किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हक होगा कि वह अग्रिम की शेष रकम भीर उस पर क्याज जिसका संदाय आवेदक बंधककर्ता की सेथा निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्ष उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, भावेदक बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले संपूर्ण उपदान या मृत्यु एवं सेवा-निवृत्ति उपदान या उसके किसी विनिदिष्ट भाग में से यसूल कर ले।

भ्रनुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है—*
इसके साक्ष्य स्वरूप बंधककर्ताभ्रों ने इस पर भ्रपने हस्ताक्षर
कर दिए हैं?

| उक्त | बं धककर्ताभ्रों ' · · · · | ने |
|------|----------------------------------|---|
| | | (हस्ताक्षर) |
| 1. | | ं (प्रथम साक्षी का नाम, पता घौर व्यवसाय) |
| 2 | | ं (द्वितीय साक्षी का नाम, पता मौर व्यवसाय) |

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

इसके साध्य स्वरूप बोर्ड के लिए और उसकी भोर से तथा बोर्ड के श्रादेश और निदेश से कार्यालय के श्री

इस विलेख पर---

| | | (| हस्ताक्षर) |
|----|-------------------------|------|------------|
| Į. | ः (प्रथम साक्षी का | नाम, | पता भौर |
| | व्यवसाय) | | |
| 2. | ∵(द्वितीय साक्षी का | नाम, | पता श्रीर |
| | व्यवसाय) | | |

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

टिप्पण—श्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस बस्तावेज पर स्टाम्प शुक्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुक्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, अपनी राज्य सरकारों से सम्पर्क कर में।

^{*}हसे बंधककर्ता भरेंगे।

| [भाग 11 बण्ड 3(1)] |
|---|
| नवमंगलौर पत्तन न्यास बोर्ड के लिए धौर उनकी घोर से तथ उनके घादेण धौर निदेश से कि कार्यालय के धी |
| (1) · · · · · · · · · (प्रथम साक्षी का नाम, पता · · · · · · · · · श्रौर व्यवनाय) |
| हस्ताक्षर |
| (2)···· (द्विनीय साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवमाय) |
| की उनस्थिति में हस्ताक्षर किए । |
| प्ररूप सं० 4 |
| (विनियम 7 देखिए) |
| जब सम्पत्ति पट्टाधृत है तब निष्पादित किए जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप |
| यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री |
| ताराख के पट्ट द्वारा, जा जिस्सार श्रीर जा के बीच किया गया था, पट्टाकर्ता ने जिस्सा में स्थित सम्पत्ति का जिसका विस्तृत वर्णन इसमें ग्रागे लिखी श्रनुभूची में किया गया है, पट्टान्तरण किया कि श्रारंभ होने वाली जिस्सार किराए पर कि श्रारंभ होने वाली जिस्सार किराए पर कि श्रारंभ होने वाली कि श्राप्ती के लिए श्रीर इस बात के श्राधीन रहते हुए कि उसमें विणत प्रसंविदाशों श्रीर शर्ती का पालन श्रीर अनुपालन किया जाएगा, बंधककर्ता को किया है। |
| बंधककर्ता ने ः ः ः ः ः ः ः ह० (केवल ः ः ः ः ह०) |

के श्रग्रिम के लिए बंधकदार को श्रावेदन किया है बंधककर्ता ने यह अग्रिम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए मागा है :

st(1) भूमि का ऋष करने के लिए ग्रौर उस पर गृह

बटाने के लिए या * (उक्त भूमि पर विद्यमान गृह में

- (2) उक्त भूमि पर गृह बनाने के लिए या *(उन्त भूमि पर बने गृह में भ्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
- *(3) उक्त पहले बने गृह का ऋय करने के लिए । ं बंधकदार कुछ निबन्धनों स्रौर शर्ती पर ः ः ः ६५ए की उक्त रकम बंधककर्ता को देने के लिए सहमत हो गया है।

उक्त प्रग्रिम की एक शर्तयह है कि बंधककर्ताको चाहिए कि वह इसमें ग्रागे ग्रनुसूची में वर्णित सम्पक्ति का बंधक करके उक्त ग्रग्रिम के प्रतिसंदाय को ग्रौर उन सभी निबन्धनों ग्रौर शर्ती के सम्यक् भ्रनुपालन को प्रतिभूत करे जो नव मंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण, श्रादि के लिए श्रप्रिम का श्रनुदान) । विनियम, 1980 में (जिसे इसमें इसके पश्चात् ''उक्त विनियम'' कहा गया है श्रौर इसमें जहां संदर्भ के ग्रनुकल है, तत्समय प्रवृत्त उसके संशोधन या उसके परिवर्धन भी है) । दी हुई हैं।

म्रौर बंधकदार ने---

- *(1) बंधककर्ता को रुपए (केवल : : : रुपए) का अग्रिम जो उतनी किस्तों मे ग्रीर उस रीति में संदेय होगा जो इसमें इसके पश्चात् बताई गई हैं मंजूर कर दिया है।
- *(2) बंधककर्ता को · · · · · · · रुपए (केवल ं ं ं ं राष्ट्र का श्रित्रिम ं ं ं तारीख को ग्रौर उक्त विनियमों में उपबन्धित रीति में दे विया है तथा उस उधार का ब्याज सहित प्रतिसंदाय तथा उक्त विनियमों में दिये हुए निबन्धनों ग्रौर शर्तों का, जिनका उल्लेख इसमें इसके पश्चात् किया गया है, श्रमुपालन इसमें इसके पश्चात् दी हुई रीति से प्रतिभूत करा लिया है।

बंधककर्ता को बंधकदार से उक्त श्रग्रिम निम्नलिखित किस्तों में मिलना है :--

- (** तारीख को मिल चुके हैं । ** · · · · · · · रुपए तब जब बंधक-कर्ता, बंधकदार के पक्ष में इस विलेख का निष्पादन करेगा।
- अ∗∗・・・・・・・・・・・・・・・ स्पए तव जब गृह का निर्माण। कुर्मी के स्तर तक पहुंचेगा ।
- **.... स्पए तब जब गृह का निर्माण छत के स्तर तक पहुंचेगा, परन्तु यह तब होगा जब बंधकदार का यह समाधान हो जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें

^{*}जो लागू हो वह लिखिए।

^{**} टिप्पण यदि ग्रग्निम के संदाय का ढंग विनियम 5 में विहित ढंगसे भिन्न है तो तदनुभार इसकी भाषा में परिवर्तन कर दिया जाएगा।

मकान बनाया गया है, जलप्रदाय, सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालियां और मलदहन जैसी सुविधाओं की दृष्टि से पूरा हो गया है) ।

ष्रौर परिसर के पट्टाकर्ता में बंधक का अनुमोदन इस शर्त पर किया है कि यदि इसमें अन्तर्विष्ट शक्तियों के श्रधीन या अन्यया सम्पत्ति का विक्रय किया जाता है तो ऐसे विक्रय के खर्च के पण्चात् पहले उसे अनुपाजित वृद्धि में उसका हिम्मा दिया जायेगा जैसा कि उक्त पट्टे में उपबन्धित है।

यह करार निम्नलिखित का साक्षी है.

(i)(क) उका विनियमो के अनुसरण में भ्रीर उक्त विनियम के उपबन्धों के अन्भरण में बधकदार ह।रा बंधन-कर्ता को मंजूर किये गये/दिये गये उक्त प्रग्रिम के प्रतिफल-स्वरूप, बधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबन्धनो ग्रौर शर्ती का सदैव सम्यक् रूप से भ्रनुपालन करेगा श्रीर ' '' रुपए (केवल रुपए) के उक्त श्राग्रम का बधकदार के) वेतन में से करेगा । यह प्रतिसंदाय : · · · के · · · · · मास से प्रथवा गृह पूरा होने के ग्रगले मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारभ होगा । बधककर्ता ऐसी किस्तो की कटौती उनके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन/सिवहि भत्ते में में करने के लिये बधकदार को प्राधिकृत करता है । उवल श्रग्रिम की पूरी रकम देने के पश्चान् बधककर्ना उस पर देय ब्याज क, संदाय भी · · · · · · · • • · * मासिक किस्तों मे उस रीति मे और उन निबन्धनीपर करेगा जो उक्त विनियमो मे विनिर्दिष्ट है, परन्तु यह कि बधककर्ना ब्याज महिन अन्त्रिम का पूरा प्रतिनदाय उस तारीख से पूर्व करेगा जिस तारीख को वह सेवा से निवृत्त होने बाला/वाली है, यदि वह ऐमा नहीं करेगा/करेगी तो बन्धकदार को यह हुए होगा कि यह बन्धक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे धौर उन समय देय प्रग्रिम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज ग्रीर उसकी वसूली का खर्चे बन्धक सम्पत्ति का विक्रय करके या विधि के प्रधीन प्रनुकेश किसी प्रत्य रीति से वसूल करे। बन्धक कर्ती इस एकम का प्रतिसंदाय इसमे कम प्रविध के भीतर कर मकता है।

(i)(ख) उनन विनियमों के अनुसरण में श्रीर उक्त विनियम के उपबन्धों के अनुसरण में बन्धक दारा बन्धक कर्ता को मंत्रूर किए गए/दिए गए उक्त अग्रिम के प्रति-फलस्वरूप बन्धक कर्ता इसके द्वारा बन्धक दार से यह प्रसंविदा करता है कि बन्धक कर्ता उक्त विनियमों के सभी निबन्धनों श्रीर भनी का सदैव सस्यक रूप से अनुपालन करेगा श्रीर

उक्त प्रग्रिम का बन्धकदार को प्रतिसंदाय ' ' फपाग् (केवल ' फार्फ फपए) की ' मासिक किस्तो में, भ्रपने (बन्धककॉर्नाके) वेतन में से करेगा।यह प्रतिसंदाय ···· के ···· भाम से या गृह पूरा होने के श्रगले मास से, इन में से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्भ होकर उसकी प्रधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा श्रीर उसकी अधिवर्षिता की तारीख को बकाया अतिशेष, श्रिप्रम की तारीख में प्रतिसदाय की तारीख तक ब्याज सहित उसके उपदान /मृत्यु एव सेवा निवृत्ति उपदान मे मे वसूल किया जाएगा। बन्धककर्ता किस्तो की रकम की कटौती उसके मामिक वेतन/छट्टी वेतन/निर्वाह भत्ते में से तथा उसकी शेष रकम की जिसका संदाय उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/प्रधिवर्षिताकी तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती जमा इसमें इसके पूर्व विणित है उसके उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बन्धकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बन्धकदार को यह हक होगा कि वह बन्धक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय ग्रग्रिम की शेष रकम तथा उस पर ज्याज श्रौर वसूली का खर्च, बन्धक सम्पत्ति का बिक्रम करके या विधि के ग्रधीन ग्रनक्षेय किसी ग्रन्य रीति से बसूल करे। बन्धककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इसमे कम प्रवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण : [खण्ड (i) (a) श्रीर (i) (a) में में जो लाग न हो उसे काट दीजिए]

 $(i)(\eta)$ उक्त विनियमों के श्रनुसरण में श्रीर उक्त विनियम के उपबन्धों के अनुसरण में बन्धकदार द्वारा बन्धक-कर्ना को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त अग्रिम के प्रति-फलस्वस्प बन्धककर्ता इसके द्वारा बन्धकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बन्धककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबन्धनों ग्रीर णतों का सदैव सम्युक रूप से ग्रनुपालन करेगा ग्रीर · · · · · · · रूपए (केवल · · · · · रूपए) के उनस ग्रग्निम का बन्धकदार को प्रतिसंदाय ः ः ः स्पाप् रपए) की : भ।सिक विस्तो (केवल : : मे श्रपने (बन्धककर्ताके) वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदाय के मास से या गृह पूरा होने के ग्रगले मास से, इनमें से जो भी पूर्वनर हो, प्रारम्भ होगा। बन्धककर्ता इसके द्वारा बन्धकदार को ऐसी किस्तों की कटौती श्रपने मासिक वेतन/छुट्टी वेतन मे से करने के लिए प्राधिकृत करना है श्रीर बन्धकवर्ता श्रियम की पूरी रकम का संदाय करने के पण्चात् उस पर देथ ब्याज का भी ''' ' ह० ''' की '' मासिक किस्तो में सदाय अपनी अधिवर्षिता की तारीख तक करेगा तथा अग्रिम दी गई रकम पर श्रग्रिम की तारीख़ से उसके प्रितसंदाय की तारीख तक के ब्याज की उस बाकी रकम का जो उसकी ग्रिधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, यदाय ग्रपने उपदान/मृत्यु एव सवानिवृत्ति उपदान से करेगा ग्रीर बन्धककर्ता किस्तों की रकम की कटौती अपने भासिक वेतन/छट्टी बेतन

^{* 180} से श्रधिक नही होगी।

^{**} यह 60 से ऋधिक नही होगी।

में से तथा उस शेष रकम की, जिसका संदाय उसकी मृत्यु की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौती अपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि उसकी मृत्यु की तारीख को कोई प्रतिशेष असंदत्त रह जाता है तो वन्धकदार को यह हक होगा कि वह बन्धक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे और उस समय देय प्रियम की शेष रकम तथा उस पर ज्याज और वसूली का खर्च, वन्धक सम्पत्ति का विकय करके या विधि के प्रधीन अनुक्षेय किसी अन्य रीति से वसूल करे। बन्धकर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम अवधि के भीतर कर सकता है।

टिप्पण : खण्ड $(i)(\pi)$, (i) (ख) या (i) (ग) में से जो लागू न हो उसे काट दीजिए।

(ii) यदि बन्धककर्ता का अग्रिम उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजर किया गया है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से मेना निवृत्ति, अधिवर्षिना से भिन्न किसी कारण से सेता में नही रहता है अथवा यदि श्रप्रिम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि बन्धककर्ता उक्त विनियमों में विनिर्दिष्ट भीर उसकी भ्रोर से श्रनुपालन किए जाने वाने किसी नियन्धन, शर्त श्रीर अनुबन्ध का अनुपालन नही करता है तो ऐसी दशा में प्रग्रिम का संस्पूर्ण मूल धन या उसका उतना भाग जो उस समय देय रहता है भ्रोर जिसका संदाय नही किया गया है, भ्रीर उस पर ''' ** ** ** प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से ब्याज जो बन्धकदार द्वारा उक्त ग्रग्निम की पहली किस्त के दिए जाने की तारीख से परिकलित किया जाएगा, बन्धकदार को तूरन्त संदेय हो जाएगा। इसमें किसी बात के होते हुए भी, यदि बन्धक-कर्ता श्रमिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बन्धकदार बन्धककर्ता के विरुद्ध ऐसी अनुशामनिक कार्रवाई कर मकेगा जो बन्धककर्ता को लागू मेवा के नियमों के स्रधीन उपयुक्त हो।

(iii) उक्त विनियमों के श्रीर श्रनुसरण में श्रीर उपर्युक्त प्रितिकल के लिए तथा उपर्युक्त श्रिम के श्रीर उस पर ब्याज के जो उसके पश्चान् किसी समय या समयों पर इस के विलेख निबन्धनों के श्रयीन बन्धकदार को देय हो, प्रतिसंदाय को प्रतिभूत करने के लिए बन्धककर्ता इसके द्वारा बन्धकदार को नारीख ' ' ' ' के उक्त पट्टे में समाविष्य उक्त सम्पत्ति का जिसका पूरा वर्णन इसमें श्रागे लिखी श्रनुसूची में किया गया है। उक्त सम्पत्ति पर (जिसे इसमें इसके पश्चान् सम्पत्ति कहा गया है) बन्धककर्ता द्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों श्रथवा तत्समय उस पर रखी सामग्री का उक्त बन्धक सम्पत्ति से सम्बन्धित सभी या किन्ही श्रिधकारों, मुखाचारों, श्रीर श्रनुलग्नकों सहित श्रनुदान, हम्नातरण श्रन्तरण श्रीर समनुदेशन पट्टेचार द्वारा की गई प्रसविदाशां श्रीर इसमें श्रन्तर्विष्ट शतों के श्रधीन रहते हुए करता है। बन्धकदार उपत बन्धक सम्पत्ति को पूर्ण रूप से किन्तु उक्त

पट्टें के निबन्धनों ग्रीर प्रसंविदाग्रों के प्रधीन रहते हुए धारण करेगा। किन्तु यह इसमें इसके पश्चात् दिए हुए मोचन मम्बन्धी उपबन्ध के प्रधीन होगा। इसके पक्षकारों हारा ग्रीर उनके बीच यह करार किया जाता है ग्रीर घोषणा की जाती है कि यदि बन्धककर्ता, बन्धकदार को इसके हारा प्रतिभूत उक्त मूलधन ग्रीर ब्याज का ग्रीर ऐसी श्रन्य रक्षम का (यदि कोई हा) जो बन्धककर्ता हारा बन्धकदार को उक्त विनियमों के निबन्धनों ग्रीर णतों के श्रधीन संदेय ग्रवधारित की जाए सम्यक रूप में संदाय इसमें दी हुई रीति से कर देगा तो बन्धकदार उसके बाद किमी भी समय बन्धककर्ता के ग्रनुरोध ग्रीर खर्च पर, उक्त बन्धक सम्पत्ति का प्रति श्रन्तरण ग्रीर प्रतिहस्तांतरण बन्धककर्ता को उनके या उनके निदेणानुसार उपयोग के लिए कर देगा।

(V) इसके द्वारा भ्रिभव्यक्त रूप से यह करार किया जाता है और घोषणा की जाती है कि यदि बन्धककर्ता श्रपनी श्रोर से की गई और इसमें दी हुई प्रसंविदाश्रो को भग करता है या यदि वन्धक मनी दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा-निवृत्ति/प्रधिविषता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नहीं रहता है या यदि उन मभी रकमों के जो इस विलेख के श्रधीन बन्धकदार को सदेय है, श्रीर उन पर ब्याज के पूरी तरह में चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्यू हो जाती है यायदि उक्त ग्रग्रिम या उसका कोई भाग इस बिलेख के प्रधीन या भ्रत्यथा तुरन्त सदेय हो जाता है तो ऐसी दशा मे बन्धकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बन्धक सम्पत्ति का या उसके किसी भाग का विक्रय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या टुकड़ो में भ्रौर लोक नीलाम द्वारा या प्राइवेट सविदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका क्रय कर ले या विक्रय की किसी संविदा को विखडित कर दे श्रीर उसका पूनः विक्रय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो। जो ऐसी करने से हो। उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विक्रय करने के लिए, जो बन्धकदार ठीक समझो, सभी कार्य करे. भ्रीर हस्तांतरण पत्नों का निष्पादन करे। यह घोषणा की जाती है कि विकय किए गए परिसरयाउसके किमी भाग के ऋग के लिए बन्धकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केता या केतायों ने कय धन का भुगतान कर दिया है।यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त शक्ति के भ्रनुसरण में किए गए किसी विक्रय से प्राप्त धन को बन्धकदार न्यास के रूप मे धारण करेगा। उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का संदाय किया जाएगा* (ग्रीर उसके बाद, बन्धक सम्पत्ति के पट्टाकर्ता, ''''को उक्त पट्टे के खण्ड : : : : : के श्रनुसरण में, श्रनुपार्जित वृद्धि के 50 प्रतिशत का संदाय किया जाएगा) श्रीर तब इस विलेख की प्रतिभूति पर तत्मसय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संदाय किया जाएगा ग्रौर यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह वन्धककर्ता को दे दिया जाएगा।

^{*} नियम के प्रधीन प्रभार्य ब्याज की प्रसामान्य दर।

^{*} जो लागू म हो उसे काट दीजिए।

- (5) बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करता है कि:--
 - (क) बंधककर्ता को इस बात का घच्छा ग्रधिकार श्रौर विधिपूर्ण प्राधिकार है कि वह बंधक संपत्ति का बंधकदार को श्रौर उसके उपयोग के लिए अनुदान, हस्तांतरण अन्तरण श्रौर समनुदेशन उक्त रीति में करें।
 - *(ख) बंधककर्ता गृह के निर्माण/उक्त गृह में श्रावास स्थान में परिवर्तन का कार्य उस अनुमोदित नक्शे श्रीर उन विनिर्देशों के श्रनुसार ही करेगा जिनके श्राधार पर उक्त श्रग्रिम की संगणना की गई है भीर वह मंज़र किया गया है, जब तक कि उससे विचलन की ग्रनुक्ता बंधकदार ने नहीं दे दी है। बंधककर्ता कुर्सी/छत पड़ने के स्तर पर अनुज्ञेय ग्रग्रिम की किस्तों के लिए श्रावेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्शे भौर प्राक्कलन के भ्रनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकवार को दिए हैं, ग्रौर यह कि निर्माण कार्य कुर्सी/छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है भौर मंजूर किए गए श्रक्रिम में से ली जा चुकी रकम का वस्तुतः उपयोग गृह के सन्निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्नों के सही होने का सत्यापन करने के लिए स्वयं बंधकदार को या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की अनुमति देगा/देगी । यदि बंधककर्ता कोई मिथ्या प्रमाणपत्न देता है तो उसे बंधकदार को वह संपूर्ण ग्रग्निम, जो उसे मिला है तथा उस पर
 - ** प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज तुरन्त देना होगा। इसके प्रतिरिक्त बंधककर्ता के विरुद्ध उसको लागू सेवा के नियमों के श्रधीन उपयुक्त अनुशा-सनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी।
 - ***(ग) बंधककर्ता गृह का निर्माण उक्त गृह में धावास स्थान में परिवर्धन **** के घठारह मास के भीतर पूरा करेगा जब तक कि बंधकदार ने इस कार्य के लिए लिखित रूप में समय न बढ़ा दिया हो। इसमें व्यतिक्रम होने पर बंधककर्ता को, उसे दी गई संपूर्ण रकम का भीर उक्त
- *जहां ग्राग्रिम पहले बने गृह के क्रम के लिए हैं वहां खंड (ख) ग्राँर (ग) लागू नहीं होगी।
- **नियम के अधीन प्रभार्य ब्याज की प्रस्तावित दर।

 ***टिप्पण:--जहां अग्रिम पहले बने गृह के कय के लिए

 है वहां खंड (ख) और (ग) लागू नहीं होंगे।
- ****यहां वह तारीख लिखिए जिस तारीख को मग्रिम की पहली किस्त बंचककर्ता को दी गई है।

- विनियमों के अधीन परिकलित ब्याज का एक मुक्त प्रतिसंदाय तुरन्त करना होगा । बंधककर्ता गृह पूरा होने की तारीख की सूचना बंधकदार को देगा और वह बंधकदार को इस आशय का एक प्रमाणपत्न देगा कि अग्निम की पूरी रकम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।
- (घ) बंधककर्ता भारतीय जीवन बीमा निगम में उस गृह का श्रपने खर्च पर उतनी रकम के लिए तुरन्त बीमा कराएगा जो उक्त श्रम्भिम की रकम में कम न हो। वह उसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार को श्रियम पूरी तौर से चुका नही दिया जाता है, अग्नि, बाक श्रीर तड़ित से हानि या नुकसान के विरुद्ध बीमा कृत करेगा जैसा कि उक्त विनियमों में उपवंधित है, बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देगा। बंधककर्ता समय-समय पर उक्त बीमा का नियमित रूप से देगा फ्रीर जब उससे भ्रपेक्षा की जाए, प्रीमियम की रसीद बंधक-दार के निरीक्षण के लिए पेश करेगा । यदि बंधककर्ता भग्नि, बाढ़ भीर तड़ित के विरुद्ध बीमा नहीं कराता है तो बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण, किन्तु भाबद्धकर नहीं होगा कि वह उक्त गृह का बीमा बंधककर्ता के खर्च पर करा ले श्रौर प्रीमियम की रकम को श्रम्भिम की बकाया रकम में जोड़ ले। तब बंधककर्ता को उस पर ब्याज देना होगा मानो प्रीमियम की रकम उसको ····'रु० के पूर्वीक्त श्राग्रिम के भाग के रूप में दी गई थी। यह ब्याज उसे उस समय तक देशा होगा जब तक वह रकम बंधकदार को चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी वसूली इस रूप में नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभृति के प्रन्तर्गत प्राने वाली रकम हो । बधककर्ता, अब भी उससे श्रपेक्षित हो, बंधकदार को एक पत्र देगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा कि बंधकदार बीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंधकदार उस बीमा पालिसी में हितबद्ध है ।
- (ङ) बंधककर्ता उक्त गृह को ग्रापने खर्च पर ग्राफ्छी मरम्मत की हालत में रखेगा ग्रीर बंधक सम्पत्ति की बाबत नगरपालिकाधों के धौर ग्रन्य सभी स्थानीय रेट, कर, ग्रीर ग्रन्य सभी देनवारियां उस समय तक नियमित रूप से देगा जब तक कि बंधकदार को ग्राग्रम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है। बंधककर्ता, बंधकदार को उक्त ग्राग्रय का एक वार्षिक प्रमाणपत्न भी देगा।

- (च) बंधककर्ता, गृह पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिश्चित करने के लिए कि गृह श्रम्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देगा जब तक कि श्रग्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) बंधककर्ता, ऐसी कोई रकम श्रौर उस पर देय ब्याज, यदि कोई हो, बंधकदार को लौटाएगा जो श्रम्भि के मद्धे उस व्यय के श्राधिक्य में ली गई है जिसके लिए श्रमिम मंजूर किया गया था।
- (झ) बंधककर्ता उस समय तक जब तक कोई धन उक्त बंधक संपत्ति को जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा समनुदेशित श्रिभिव्यक्त है, प्रतिभूति पर देय रहता है और हर हालत में उक्त करार की प्रविध्य तक पट्टे की सभी प्रसंविदाश्रों का श्रीर इसमें श्रागे दी गई श्रनुसूची में निर्दिष्ट उक्त पट्टा विलेख में अंतिविष्ट शती का सम्यक् रूप से श्रनुपालन करेगा तथा बंधकदार को उन सभी श्रनुयोजनों, बादों, कार्यवाहियों, खर्ची, प्रभारों, दावों श्रीर मांगों की बाबत क्षतिपूरित रखेगा जो उक्त किराए का संदाय न किए जाने के कारण या उक्त प्रसंविदाश्रों श्रीर शर्तों के या उनमें से किसी के भंग किए जाने, पालन या श्रनुपालन न किए जाने के कारण उपगत होंगी।
- (अ) बंधककर्ता, बंधक संपत्ति को इस विलेख के जारी रहने के दौरान न तो भारित करेगा, न उस पर विल्लंगम सुजित करेगा, न उसका अन्य संक्रामण करेगा और न उसका अन्यथा व्ययन करेगा।
- (ट) इसमें किसी बात के होते हुए भी, बंधकदार को यह हक होगा कि वह अग्रिम की शेष रकम और उम पर ब्याज जिसका संदाय बंधककर्ता की सेवानिवृत्ति के समय तक या यदि सेवानिवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नही किया गया है, बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले संपूर्ण उपदान या उसके किसी विनिदिष्ट भाग में से वसूल कर ले।

| ध्यान वें:—-ग्रावेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले। प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री का पुत्र है ग्रौर जो इस समय का पुत्र है ग्रौर जो इस समय (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त क्प से "बंधककर्ता" कहा गया है ग्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से ग्रपवर्जित या उसके विरूद्ध नहीं है) सिक ग्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक ग्रौर समनु- | थ्रनुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है*। |
|---|--|
| श्री ने इस पर अपने हस्ताक्षर कर दिए है जनत अंधककर्ता (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए और उनकी ओर से तथा उनके आदेश और निदेश से, संक्षालय/कार्यालय के श्री जनकी ओर से तथा उनके आदेश और निदेश से, (हस्ताक्षर) (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान दें:—आवेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्रकल्प सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है और संयुक्त रूप से पित और पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो स्क समय के कार्यालय में के कार्यालय में के कार्यालय में कि रूप में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी के स्प में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी स्प में से अपर्वाजत या उसके विरुद्ध नहीं है) (सके अन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक और समनु- | |
| कर दिए है उनत बंधककर्ता ते (हस्ताक्षर) (1) (प्रथम साथी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए श्रीर उनकी ग्रोर से तथा उनके ग्रादेश ग्रीर निदेश से, मंत्रालय/कार्यालय के श्री (हस्ताक्षर) (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान दें:—-ग्राबेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्रक्प सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है ग्रीर संयुक्त रूप से पति ग्रीर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जा पुत्र है ग्रीर जो इस समय के कार्यालय में के क्या में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी प्रक्ष में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी प्र सं "बंधककर्ता" कहा गया है ग्रीर जब तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से ग्रपर्वाजत या उसके विरूद्ध नहीं है) (सके ग्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक ग्रीर समनु- | श्रौर उसकी श्रोर में कार्यालय के |
| उनत बंधककर्ता े (हस्ताक्षर) (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए ग्रीर उनकी ग्रीर से तथा उनके ग्रादेश ग्रीर निदेश से, मंत्रालय/कार्यालय के श्री (हस्ताक्षर) (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान दें:—-ग्रावेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है ग्रीर संयुक्त रूप से पति ग्रीर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जा पुत्र है ग्रीर जो इस समय के कार्यालय में के कार्यालय में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी पर से मंं नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी पर से मंं विशेककर्तां कहा गया है ग्रीर जब तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से ग्रपर्वाजत या उसके विरूद्ध नहीं है) सिके ग्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक ग्रीर समनु- | श्री भारतीय के स्वाप्त |
| (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए श्रीर उनकी ग्रोर से तथा उनके ग्रावेश ग्रीर निवेश से, | भार । वर्ष ह |
| (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए ग्रीर उनकी ग्रोर से तथा उनके ग्रादेश और निदेश से, मंत्रालय/कार्यालय के श्री (हस्ताक्षर) (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान दें:—माबेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्रक्ष्प सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है ग्रीर संयुक्त रूप से पति ग्रीर पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो स्त समय के का प्रकार में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी के स्प में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी संयुक्त रूप में से ग्रवर्वित है तथा उसका पति/पत्नी संयुक्त रूप में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी संयुक्त रूप में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी संयुक्त रूप में से ग्रवर्वित या उसके विरुद्ध नहीं है) (सके ग्रन्तर्गंत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक ग्रीर समनु- | उन्त बंधककर्ताः |
| पता और व्यवसाय) (2) (दितीय साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए श्रीर उनकी श्रोर से तथा उनके श्रावेश श्रीर निवेश से, | · · · · · ने (हस्ताक्षर) |
| (2) (वितिय साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए श्रीर उनकी श्रोर से तथा उनके श्रादेश श्रीर निदेश से, | |
| पता श्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपित के लिए श्रीर उनकी श्रोर से तथा उनके श्रावेश श्रीर निवेश से, (हस्ताक्षर) (1) (श्रयम साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान वें:—- आवेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्रक्ष्प सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रीर संयुक्त रूप से पित श्रीर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो पत्र है श्रीर जो इस समय के कार्यालय में (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त रूप से "बंधककर्ता" कहा गया है श्रीर जब तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से श्रयवर्जित या उसके विरूद नहीं है) (सके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रीर समनु- | पता और व्यवसाय) |
| की उपस्थित मे हस्ताक्षर किए । भारत के राष्ट्रपति के लिए श्रौर उनकी श्रोर से तथा उनके श्रादेश श्रौर निदेश से, | · · |
| भारत के राष्ट्रपति के लिए श्रौर उनकी श्रोर से तथा उनके श्रादेश श्रौर निदेश से, | |
| उनके श्रादेश श्रौर निदेश सं, | · |
| मंझालय/कार्यालय के श्री | भारत के राष्ट्रपति के लिए और उनकी ओर से तथा |
| (हस्ताक्षर) (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान दें:—ग्रावेदको को सलाह दी जाती है कि इस स्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्रकल्प सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित ग्रौर पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | जनक आदश आर ।नदश स, |
| (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान वें:—ग्रावेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्ररूप सं० 4(क) (विनयम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रीर संयुक्त रूप से पित श्रीर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो को पुत्र है खीर जो इस समय जो को पुत्र है खीर जो इस समय जो को पुत्र है खीर जो इस समय से '' के कार्यालय में '' के रूप में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी '' के रूप में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी '' के स्प में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी संयुक्त रूप से ''बंधककतां' कहा गया है श्रीर जन्न तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से श्रपवर्जित या उसके विरूद्ध नहीं है) (सके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रीर समनु- | The state of the s |
| (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान वें:—ग्रावेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्ररूप सं० 4(क) (विनयम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रीर संयुक्त रूप से पित श्रीर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो को पुत्र है खीर जो इस समय जो को पुत्र है खीर जो इस समय जो को पुत्र है खीर जो इस समय से '' के कार्यालय में '' के रूप में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी '' के रूप में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी '' के स्प में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी संयुक्त रूप से ''बंधककतां' कहा गया है श्रीर जन्न तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से श्रपवर्जित या उसके विरूद्ध नहीं है) (सके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रीर समनु- | (हस्ताक्षर) |
| पता ग्रौर व्यवसाय) (2) '' (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान वें:ग्रावेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है ग्रौर संयुक्त रूप से पति ग्रौर पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री '' '' के कार्यालय में '' 'के कार्यालय में '' 'के कार्यालय में 'के रूप में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी '' '' (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त रूप से "बंधककर्ता" कहा गया है ग्रौर जब तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से ग्रपवर्जित या उसके विरूद्ध नहीं है) (सके ग्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक ग्रौर समनु- | |
| पता भ्रौर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान दें:—-आवेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पति श्रौर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो प्रत है और जो इस समय सं क्या से नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त रूप से "बंधककर्ता" कहा गया है श्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से श्रपर्वाित या उसके विरूद्ध नहीं है) सिके भ्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रौर समनु- | · · |
| पता भ्रौर व्यवसाय) की उपस्थित में हस्ताक्षर किए । ध्यान दें:—-आवेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले । प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पति श्रौर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो प्रत है और जो इस समय सं क्या से नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त रूप से "बंधककर्ता" कहा गया है श्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से श्रपर्वाित या उसके विरूद्ध नहीं है) सिके भ्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रौर समनु- | (2)(द्वितीय साक्षी का नाम, |
| ध्यान वें:—-ग्रावेदको को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले। प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री का पुत्र है ग्रौर जो इस समय का पुत्र है ग्रौर जो इस समय (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त क्प से "बंधककर्ता" कहा गया है ग्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से ग्रपवर्जित या उसके विरूद्ध नहीं है) सिक ग्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक ग्रौर समनु- | |
| दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले। प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए । |
| सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले। प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | ध्यान दें:आवेदको को सलाह दी जाती है कि इस |
| णुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले। प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | |
| हैं, राज्य सरकार से सम्पर्क कर ले। प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | The state of the s |
| प्ररूप सं० 4(क) (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | • |
| (विनियम 7 देखिए) जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारिन है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | हैं, राज्य सरकार से सम्पर्क कर लें । |
| जब सम्पत्ति पट्टा धृति है श्रौर संयुक्त रूप से पित श्रौर पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | प्र रू प सं० 4(क) |
| पत्नी के नाम से धारित है तब निष्पादित किये जाने वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | (विनियम 7 देखिए) |
| वाले बंधक विलेख का प्ररूप यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | |
| यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री | |
| जो के श्री के श्री के हा पुत्र है ग्रीर जो इस समय के कार्यालय में के कार्यालय में के रूप में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त रूप से "बंधककर्ता" कहा गया है श्रीर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से ग्रपर्वाजित या उसके विरूद्ध नहीं है) सके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रीर समनु- | वाले बंधक विलेख का प्ररूप |
| का पुत्र है ग्रीर जो इस समय ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' | यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री · · · · · · · · |
| में '''ं नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी ''''ं रूप में नियोजित है तथा उसका पित/पत्नी ''''ं ''''''''(जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त रूप से ''बंधककर्ता'' कहा गया है भ्रौर जब तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से श्रपर्वाजित या उसके विरूद्ध नहीं है) सके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रौर समनु- | जोके श्री |
| ते रूप में नियोजित है तथा उसका पति/पत्नी | का पुत्र है ग्रीरजो इस समय '''' |
| ······ (जिन्हें इसमें इसके पश्चात् संयुक्त रूप से ''बंधककर्तां' कहा गया है ग्रौर जब तक कि ऐसा वेषय या संदर्भ से ग्रपर्वाजत या उसके विरूद्ध नहीं है) सके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक ग्रौर समनु- | में कार्यालय में क |
| रूप से ''बंधककर्ता'' कहा गया है भ्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से भ्रपर्वाजत या उसके विरूद्ध नहीं है) सिके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रौर समनु- | क रूप म नियाजित ह तथा उसका पात/पत्ना |
| वेषय या संदर्भ से भ्रपर्वाजत या उसके विरूद्ध नहीं है) सिक भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रौर समनु- | (।आह इसम इसम परपाएं तपुनस स्प में "बंधककर्ता" कहा गया है ग्रीर जब तक कि ऐसा |
| सके ग्रन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रौर समनु- | |
| | इसके भन्तर्गत उनके वारिस, निष्पादक प्रशासक श्रीर समनु- |
| man or the service of the service of the service | देशिती भी हैं, श्रौर दूसरे पक्षकार के रूप में नव मंगलीर |
| त्तन न्यासी बोर्ड (जिसे इसमें इसके पण्चात् ''बंधकदार'' कहा | नत्तन न्यासी बोर्ड (जिसे इसमें इसके पक्ष्चात् ''बंधकदार'' कहा |

^{*}इसे बंधककर्ता भरेगा।

गया है श्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से श्रप्याजित या इसके विरुद्ध नहीं हैं) इसके श्रन्तर्गत उसके उत्तरवर्ती श्रौर समनुदेशिती भी हैं, के बीच श्राज तारीख ''''' को किया गया है।

तारीख ... के पट्टे द्वारा, जो ... भीर ... भीर ... के बीच किया गया था, पट्टाकर्ता ने ... में स्थित सम्पत्ति का, जिसका विस्तृत वर्णन इसमें भागे श्रनुमुची में किया गया है, पट्टान्तरण ... कि के वार्षिक/मासिक किराए पर ... के श्रारम्भ होने वाली ... वर्ष की भ्रविध के लिए श्रीर इस बात के भ्रधीन रहते हुए कि उसमें वर्णित प्रसंविधाओं श्रीर गर्ती का पालन श्रीर श्रनुपालन किया जाएगा, वधककर्ता को किया है।

बंधककर्ता में से एक श्रीं ते (जिसे इसमें इसके पश्चाम् भ्रावेदक "बंधकर्ता" कहा गया है) के (केवल क्या) के श्रीग्रम के लिए बंधकदार को भ्रावेदन किया है। श्रावेदक बंधककर्ता ने यह भ्राग्रम निम्नलिखित प्रयोजन के लिए मांगा है,

- *(1) भूमि का क्रय करने के लिए और उस पर गृह बनाने के लिए या *(उक्त भूमि पर विद्यमान गृह में ग्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)
- *(2) उक्त भूमि पर गह बनाने के लिए या* (उक्त भूमि पर पहले बने गृह में श्रावास स्थान का विस्तार करने के लिए)।
- *(3) उक्त पहले बने गृह/फ्लैंट का क्रय करने के लिए,

बंधकदार कुछ निबंधनों भीर शर्तो पर '''' रूपये की उक्त रकम बंधककर्ता को देने के लिए सहमत हो गया है।

उक्त ग्रग्निम की एक गर्त यह है कि बंधककर्ता को चाहिए कि वह इसमें श्रागे श्रनुसूची में वर्णित सम्पत्ति का बंधक करके उक्त श्रग्निम के प्रतिसंदाय को ग्रौर उन सभी निबंधनों ग्रौर गर्ती के सम्यक् श्रनुपालन को प्रतिभूत करे जो नथ मंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण ग्रादि के लिए ग्रग्निम का श्रनुदान) विनियम, 1980 में (जिसे इसमें इसके पश्चातेँ "उक्त विनियम" कहा गया है ग्रौर इसमें जहा संदर्भ के ग्रनुक्ल हों, तत्समय प्रवृत्त उसके संगोधन या उसके परिवर्धन भी है) दी हुई हैं।

श्रीर बधकदार ने

*(1) ग्रावेदक बंधककर्ता को '' '' 'हपए (केवल ''' '' 'हपए) का ग्राग्रिम, जो उतनी किस्सों में ग्रीर उस रीति में मंदेय होगा जो इसमें ग्रागे बताई गई हैं, मंजुर कर दिया है। *(2) श्रावेदक बंधककर्ता को ... रुपए (केयल ... रुपए) का श्रिप्रमा ... तारीख को ग्रीर उक्त विनियमों में उपबंधित रीति में ... दें दिया है, तथा उस उधार का ब्याज सहित प्रतिमंदाय तथा उक्त विनियमों में दिए हुए निबंधनों श्रीर णर्ती का, जिनका उल्लेख इसमें इसके पश्चात् किया गया है, श्रनुपालन इसमें इसके पश्चात् दी हुई रीति से प्रतिभूत करा लिया है।

आवेदक बंधककर्ता को बंधकदार में उक्त अग्निम निम्न-लिखित किस्तों में मिलना है।

(** · · · · · · रुपए · · · · · · · ः तारीख को मिल चुके हैं।

** · · · · · · · फपए तब जब बंधककर्ना, बंधकदार के पक्ष में इस विलेख का निष्पादन करेगे।

** गृह का निर्माण कुर्सी के स्तर पर पहुंचेगा।

** तब जब गृह का निर्माण छन के स्तर पर पहुंचेगा, परन्तु यह तब होगा जब कि बंधकदार का यह समाधान हो जाता है कि उस क्षेत्र का विकास जिसमें गृह बनाया गया है, जल प्रदाय सड़कों की प्रकाश व्यवस्था, सड़कों, नालियों ग्रींग मलवहन जैसी सुविधाग्रो की दृष्टि से पूरा हो गया है)

***शौर परिसर के पट्टाकर्ता ने बंधक का अनुमोदन इस शर्न पर किया है कि यदि इसमें श्रंतर्विष्ट गक्तियों के श्रधीन या अन्यथा सम्पित्त का विक्रय किया जाता है तो ऐसे विक्रय के खर्च के पश्चान् पहले उसे अनुपार्जित वृद्धि मे उसका हिस्सा दिया जाएगा जैसा कि उक्त पट्टे मे उपश्रंधित है यह करार निम्नलिखित का साक्षी है।

(1) (क) उम्त विनियमों के अनुसरण में भार उन्त विनियम में उपबंध के अनुसरण में बंधकदार द्वारा आवेदक बंधककर्ता को मंजूर किएगए/दिए गए उक्त अग्निम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता, बंधकदार में यह प्रसंविद्या करते हैं कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों और गतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे और पतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे और पतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे और पतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे और पतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे और पतों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेंगे और पतां का प्रतिसंदाय को प्रतिसंदाय स्पर्ण (केवल प्राप्त को प्रतिसंदाय स्पर्ण के अगले वंधककर्ता के बेतन में से करेंगे। यह प्रतिसंदाय पतां के अगले मास से, इनमें से जों भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। आवेदक बंधककर्ता ऐसी किस्सों की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी

**यदि श्रम्भिम के संदाय का ढंग नियम 5 में लिखित ढग से भिन्न है तो तवनुसार इसकी भाषा में परिवर्तन कर दिया जाएगा।

***हिप्पण, यह (सामान्यतः जल भूमि को लागू होता है ग्रौर वहां ग्रंत:स्थापित किया जाएगा जहां लागू हों।)

^{*}जो लागूहो वह लिखिए।

(1)(ख) उक्त विनियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों के उपबन्धों के प्रनुमरण में बंधकदार द्वारा श्रावेदक बधंककर्ता को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त प्रग्रिम के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करने है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबन्धनों श्रीर शर्ती का सदैव सम्युक रूप से अनुपालन करेगे ग्रौर· · · · · रुपये (केवल · · · · रुपये) की ** · · · · · · मासिक किस्तों में, श्रावेदक बंधककर्ता के वेतन में से करेंगे । यह प्रतिसंदाय ः ः ः के · · · · · · माम से या गृह पूरा होने के श्रगले मास से, इसमें से जो भी पूर्वचर हो, प्रारंभ होकर उसकी श्रधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा श्रीर उसकी श्रधिवर्षिता की तारीख को बकाया प्रतिशेष ग्रग्निम की तारीख से प्रतिसंदाय की तारीख तक ब्याज महित उसके उपदान/मृत्य एवं मेवा निवत्ति उपदान में से वसूल किया जाएगा । ग्रावेदक बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौनी उसके मासिक बेतन/ छटी वेतन/निर्वाह भागे में से तथा उसकी शेष रकम की जिमका मंदाय उसकी मृत्यू/मेवा निवृत्ति/ग्रधिवार्षिता की तारीख तक नही दिया गया है, कटौती जैसा इसमें इसके पूर्ववर्णित है उसके उपदान/मृत्यु एवं मेवा निवृत्ति/उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करती है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किमी भी समय प्रवृत्त करे श्रीर उस समय देश श्रिशम की ग्रोच रकम तथा उस पर ब्याज ग्रौर वसूली का खर्च, बंधक संपत्ति का विक्रय करके या विधि के प्रधीन अनुज्ञेय किसी प्रत्य रीति से वसूल करे । श्रावेदक बंधककर्ता इस रक्ष का प्रतिसंदाय इससे कम प्रवधि के भीतर कर सकता है ।

 $(i)(\pi)$ उक्त विनियमो के श्रनुसरण में श्रीर उक्त विनियम के उपबंधों के श्रनुसरण में वधकार द्वारा बंधककर्ता

*यह 180 स श्रधिक नहीं होंगी। **यर 60 से श्रधिक नहीं होंगी।

को मंजूर किए गए/दिए गए उक्त श्रम्भिम प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार से यह प्रसंविदा करते हैं कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों ग्रीर शतीं का सदैव सम्यक रूप से श्रन्पालन करेगे श्रौर क्पए (केवल.... प्राप्त के अन्त प्राप्तिम का वंधकदार की प्रतिसंदाय....क० (केबल कपण्) की मासिक किस्तों में ग्रपने (बंधककर्ता) के वेतन में से करेगा। यह से या गृह पूरा होते के अगले मास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा। वंधककर्ता इसके ढारा बंधकदार की ऐसी किस्तों की कटोती उसके मासिक वैतन/छड़ी वेतन में से करने के लिए प्राधिकृत करता है श्रौर बंधककर्ता ग्रग्निम की पूरी रकम का संदाय करने के पश्चात उस पर देय क्याज का जो...... .. रु०की.. मासिक किस्तों में संदाय श्रपनी श्रधिवार्षिता का तारीख तक करेगा तथा प्रियम दी गई रकम पर प्रियम की तारीखासे इसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के ब्याज की उस बाकी रकम का जो उसकी प्रधिवांषिता की तारीख को बकाया रहती है. संदाय ग्रपने उपदान/मृत्यु एव सेवा निवृत्ति उपदान से करेगा श्रीर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटोती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन में से तथा उस शेष रकम की जिसका मंदाय उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/ग्रिधवर्षिता की तारीख तक नही किया गया है, कटोती श्रपने उपदान/मृत्य एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को .प्राधिकृत करता है।यदि उसकी मृत्यु की तारीख को कोई अतिर्णेष श्रसंदत्त रह जाता है ता बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी भी समय प्रवृत्त करे ग्रीर उस समय देय भ्रग्निम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज और बसूली का खर्च, बंधक सम्पति का विकय करके या विधि के श्रधीन श्रनज्ञेय किसी श्रन्य रीति से वसूल करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम श्रवधि के भीतर कर सकता है।

(टिप्पण-खंड (1) (क), (1) (ख) या (1) (ग) में से जो लागू न हो उमे काट दीजिए

(ii) यदि ग्रावेदक बधककर्ता ग्राग्रिम का उपयोग किसी एैसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि ग्रावेदक बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप में सेवा निवृत्ति/ग्राधिविषता से भिन्न किसी कारण में सेवा में नहीं रहता हैं अथवा यदि श्राग्रिम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि वंधककर्ता उक्त विनियमों में विनिद्धित श्रोर उसकी श्रोर में श्रनुपालन किए जाने वाले किसी निबंधन, शर्त श्रीर श्रनुबंध का श्रनुपालन नहीं करते है तो ऐसी दशा म ग्राग्रिम का सम्पूर्ण मूलधन या उसका उतना भाग जा उस समय देय रहता है ग्रीर

जिसका संदाय नहीं किया गया है, श्रौर उस पर* प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त श्रिम के पहली किस्त के लिए दिए जाने की तारीख से परिचालित किया जाएगा, बंधकदार को तुरन्त संदेय हो जाएगा।

इसमें किसी बात के होते हुए भी, यदि ग्रावेदक बंधककर्ता ग्रिग्रिम का उपयोग किसी से प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न हैं जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधकदार ग्रावेदक बंधककर्ता के विरुद्ध ऐमी ग्रनुशासनिक कार्रवाई कर सकेगा जो उसको ग्रावेदक (बंधककर्ता को) लागू सेवा के नियमों के ग्रधीन उपयुक्त हो।

(iii) उक्त नियम के ग्रौर ग्रनुसरण में ग्रौर उपर्युक्त प्रतिफल के लिए तथा उपर्युक्त ग्रिग्रिम के ग्रीर उस पर ब्याज के, जो उसके पश्चात किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के ग्रधीन बंधकदार को देय हो, प्रति-संदाय को प्रतिभूत करने के लिए बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को तारीख के उक्त में समाविष्ट उक्त सम्मत्ति का जिसका इसमें ग्रागे लिखी ग्रनुसूची में किया गया है, उक्त संपत्ति पर, जिसे इसमें इसके पश्चात बंधक संपति कहा गया है, वंधककर्ताभ्रों द्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों से प्रथवा तत्समय उस पर रखी सामग्री का, उक्त, बधंक संपत्ति से संबंधित सभी या किन्हीं स्रधिकारों, सूखाचारों ग्रीर ग्रनुलग्नक सहित ग्रनुदान, हस्तांतरण, ग्रंतरण ग्रीर समनुदेशन पट्टेदार द्वारा की गई प्रसंविदास्रों को इसमें म्रंतिवष्ट शर्तों के प्रधीन रहते हुए करते हैं। बंधकदार उक्त बंधक संपत्ति को पूर्ण रूप से किन्तु उक्त पट्टे के निबंधनों ग्रौर प्रसंविदाग्रों के ग्रधीन रहते हुए धारण करेगा। किन्तू यह इसमें इसके पश्चात किए हुए मोचन संबंधी इस उपबंध के ग्रधीन होगा ग्रथीत कि यदि बंधककर्ता, बंधकदार को इसके द्वारा प्रतिभूत उक्त मूलधन ग्रीर ब्याज का ग्रीर ऐंसी ग्रन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ताग्रीं द्वारा बंधकदार को, उक्त विनियमों के निबंधनों स्रौर शर्तों के श्रधीन संदेय ग्रवधारित की जाए, सम्यक् रूप से संदाय इसमें दी हुई रीति से कर देगें तो बंधकदार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्तात्रो कें ग्रनुरोध ग्रौर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का प्रति भ्रंतरण भ्रौर हस्तांतरण बंधककर्ताम्रों को उनके या उनके निर्देशानुसार, उपयोग के लिए कर देगा।

(iv) इसके द्वारा स्रिभिव्यक्त रूप से यह करार किया जाता है श्रीर घोषणा की जाती है कि यदि श्रावेदक बंधककर्ता श्रपनी श्रोर से की गई श्रीर इसमें दी हुई प्रसंविदाश्रों को भंग करता हैं या यदि उन सभी रकमों के जो इस विलेख के श्रधीन बंधकदार को संदेय हैं, श्रीर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि उक्त श्रिग्रम या उसका कोई भाग इस विलेख के श्रधीन या श्रन्यथा तुरन्त संदेय हो

जाता है तो ऐसी दशा में बंधकदार के लिए गृह विधिपूर्ण होगा कि वह उक्त बंधक संपत्ति का या उसके किसी भाग का विकय, न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या टुकड़ों में ग्रौर लोक नीलाम द्वारा या प्राइवेट संविदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका ऋय कर ले या विकय की किसी संविदा को विखंडित कर दे स्रौर उसका पुनः विकय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो। उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विकय करने के लिए, जो बंधकदार ठीक समझे, सभी कार्य करे ग्रीर हस्तांतरण पत्नों का निष्पा-दन करे या घोषणा की जाती है कि विक्रय किए गए परिसर या उसके किसी भाग के ऋय धन के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का प्रमाण होगी कि केता या केताओं ने ऋय धन का भुगतान कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त शक्ति के अनुसरण में किए गए किसी विक्रय से प्राप्त धन को बंधकदार न्यास के रूप में धारण करेगा। उसमें ऐसे सर्व प्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का सदाय किया जाएगा (ग्रौर उसके बाद, बंधक संपत्ति के पट्टाकर्ताको उक्त पट्टे के खण्डके अनुसरण में, अनुवार्षित वृद्धि के 50 प्रतिशत का संदाय किया जाएगा) स्रौर तब इस विलेख की प्रतिभूति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का संदाय किया जाएगा स्रौर यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बंधककर्ताम्रों को दे दिया जाएगा।

टिप्पण: खण्ड (i) (a) या (i) (a) में से जो लागू न हो, काट दें।

- (v) बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार के साथ यह प्रसंविदा करते हैं कि :——
 - (क) बंधककर्ताभ्रों को इस बात का अच्छा अधिकार भ्रौर विधिपूर्ण प्राधिकार हैं कि वे बंधंक संपित्त का बंधकदार को भ्रौर उसके उपयोग के लिए अनुदान, हस्तांतरण, अन्तरण भ्रौर सम-नदेशन उक्त रीति में करें।
 - (ख) ग्रावेदन बंधककर्ता गृह के निर्माण उक्त गृह में ग्रावास स्थान में परिवर्तन का कार्य उस ग्रनुमोदित नक्शे ग्रीर उन विनिर्देशों के ग्रनुसार ही करेगा जिनके ग्राधार पर उक्त ग्रिप्रम की संगणना की गई है ग्रीर वह मंजूर किया गया है, जब तक कि उससे विकलन की ग्रनुज्ञा बंधकदार ने न दे दी हो। ग्रावेदक बंधककर्ता कुर्सी/छत पड़ने के स्तर पर ग्रनुज्ञेय ग्रिप्रम की किस्तों के लिए ग्रावेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्शे ग्रीर प्राक्कलन के ग्रनुसार किया जा रहा है जो उसने बंधकदार को दिए हैं, कि निर्माण कार्य कुर्सी/छत पड़ने के स्तर तक पहुंच गया है ग्रीर मंजूर किए गए ग्रप्रम में से ली जा चुकी रकम का वस्तुतः उपयोग गृह के निर्माण के लिए किया गया है।

^{*} नियम के ऋधीन प्रभार्य ब्याज की प्रसामान्य दर।

- **(ग) स्रावेदक बंधककर्ता गृह का निर्माण/उक्त गृह में स्रावास स्थान में परिवर्तन ' · · · * * के स्रठारह माम के भीतर पूरा करेगा जब तक कि बंधकदार ने इस कार्य के लिए लिखित रूप में समय न बढ़ा दिया हो। इसमें व्यतिक्रम होने पर स्रावेदक बंधककर्ता को उसे दी गई सम्पूणं रकम का स्रौर उक्त विनियमों के स्रधीन परिकलित ब्याज का एक मुश्त प्रतिसंदाय करना होगा। स्रावेदक बंधककर्ता गृह पूरा होने की तारीख की सूचना बंधकदार को देगा स्रौर वह बंधकदार को इस स्राशय का एक प्रमाण पत्र देगा कि स्रप्रिम की पूरी रकम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।
 - (घ) बंधककर्ता भारतीय जीवन बीमा निगम में उस गृह का अपने खर्च पर उतनी रकम के लिए त्रन्त बीमा कराएगा जो उक्त ग्रग्रिम की रकम से कप नहों। वेउसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार को श्रिप्रम पूरी तौर से चका नहीं दिया जाता है, अग्नि, बाढ भ्रौर तेड़ित से हानि या नुकसान के विरुद्ध बोमाकृत रखेंगे, जैसा कि उन्त विनियमों में उपबंधित है, स्रौर बीमा पालिसी बंधकदार को सौंप देंगे। बंधककर्ता समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमियम नियमित म्ब्य से देंगे ग्रौर जब उनसे ग्रपेक्षा की जाए प्रीमियम की रसीदें बंधकदार के निरीक्षण के लिए पेश करेंगे। यदि बंधककर्ता अग्नि, बाढ भीर तड़ित के विरुद्ध बीमा नहीं कराते हैं तो बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण, किन्तु भ्राबद्धकर नहीं होगा कि वह उक्त गृह का बीमा बंधक कर्ताग्रों के खर्च पर करा ले ग्रौर प्रीमियम की रकम को

अग्रिम की बकाया रकम में ओड ले। तब आवे-दक बंधककर्ता का उस पर ब्याज देना होगा मानो के पूर्वोक्त स्रियम के भाग के रूप में दी गई थी। यह ब्याज उसे उस समय तक देना होगा बंधकदार को कि वह रकम चुका नहीं दी जाती है या जब तक उसकी वमूली इस रूप में नही ही जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभृति के ग्रंतर्गत ग्राने वाली रकम हो। बंधककर्ता जब भी उनसे स्रपेक्षित हो, बंधकदार को एक पत्र देंगे जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस गह का बीमा कराया गया है। यह पत्र इसिंगए होगा कि बंधकदार बीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे सके कि बंधकदार उस बीमा पालिसी में हितवद्ध है।

- (ङ) बंधककर्ता उक्त गृह को ग्रपने खर्च पर अच्छी मरम्मत की हालत में रखेंगे श्रीर बंधक सम्पति की बाबत नगरपालिका के श्रीर श्रन्य सभी स्थानीय रेन्ट, कर श्रीर श्रन्य सभी देनदारियां उस समय तक नियमित करते रहेंगे जब तक कि बंधकदार को श्रिग्रम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है। बंधककर्ता, बंधकदार को उक्त श्राग्रय का एक वार्षिक प्रमाणपत्न भी देंगे।
- (च) बंधककर्ता, गृह पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिष्टिन करने के लिए कि गृह अच्छी मरम्मत् की हालत में रखा गया है, निरोक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देंगे जब तक कि अग्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया जाता है।
- (छ) स्रावेदक बंधककर्ता ऐसी कोई रकम स्रौर उस पर देय ब्याज, यदि कोई हो, बंधकदार को लौटाएगा जो स्रिप्रिम के मद्दे उस व्यय के स्राधिक्य में ली गई है जिसके लिए स्रिप्रिम मंजूर किया गया था।
- (ज) तारीख का उक्त पट्टा अब उक्त बंधक संपत्ति का विधिमान्य ग्रौर ग्रस्तित्वयुक्त पट्टा है ग्रौर वह किसी भी रूप में शून्य या शून्यकरणीय नहीं है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा आरक्षित किराए का संदाय ग्रौर उसमें दी हुई प्रसंविदाग्रों ग्रौर गर्तों का पालन इस विलेख की तारीख तक कर दिया गया है ग्रौर इसमें इसके पूर्व विणित रीति में इसका समनुदेशन किया जा सकता है।
- (झ) बंधककर्ता उस समय तक जब तक कोई धन उक्त बंधक संपत्ति की जो इसमें इसके पूर्व इसके द्वारा समनुदेशित ग्रभिव्यक्ति है, प्रतिभूति पर देय रहता

^{*ि}नयम के ग्रधीन प्रभायं ब्याज की प्रस्तावित दर।

^{&#}x27;*जहां ग्रग्निम पहले बने गृह के ऋय के लिए है वहां खंड ख) ग्रौर (ग) लागु नहीं होंगे।

ण्डां वह तारीख लिखिए जिस तारीख को **प्रग्रिम** की प**हली** किस्त बंधककर्ता को दी गई है।

है मौर हर हालत में उक्त करार की श्रविध तक पट्टे की सभी प्रसंविदांशों का और इसमें आगे दी गई श्रनुसूची में निर्दिष्ट उक्त पट्टा विलेख में श्रंतिबंध्ट गर्तों का सम्प्रक् रूप से श्रनुपालन करेंगे तथा बंधकदार को उन सभी श्रनुयोजनों, बादों, कार्थवाहियों, खर्चों, प्रभारों, दावों श्रीर मांगों की बाबत क्षतिपूर्ति कर रखेंगे जो उक्त किराए का संदाय न किए जाने के कारण या उक्त प्रमविदाशों श्रीर शर्तों के या उनमें से किसी के भंग किए जाने, पालन या श्रनुपालन न किए जाने के कारण उपगत होंगी।

- (अ) बंधकर्ताओं, बंधक संपत्ति को इस विलेख के जारी रहने के दौरान न तो भारित करेंगे, न उस पर विल्लंगम सृजित करेंगे, उसका ग्रन्थ संक्रामण करेंगे ग्रीर न उसका ग्रन्थथा व्ययन करेंगे।
- (ट) इसमें किसी बात के होते हुए भी, बंधकनार को यह हक होगा कि वह अग्रिम की णेष रकम अगेर उस पर ब्याज जिसका संदाय आवेदक बंधककर्ता की सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, आवेदक बंधककर्ता को मंजूर किए जाने वाले सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से वसूल कर ले।

ग्रतुभूची जिस हा कपर उल्लेख किया गया है। * इसके साध्यस्वरूप बंधककर्ताम्रों ने इस पर श्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

(1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता

ग्रौर व्यवसाय)

*इसे बंधककर्ता भरेंगे।

(2) · · · · · · · · · (द्वितीय माक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

भ्यान दें: -श्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह मुनिश्चित बारने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के गंदाय से कोई खूट मिल सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर लें।

प्ररुप सं० (**स**) (विनियम 7 देखिए)

जब संपत्ति पट्टा प्रति है तब निष्पादित किए जाने नाले बंधक निलेख का प्ररूप

उधार लेने वाले ने नवमंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण ग्रादि के लिए ग्रिग्रिम का ग्रनुदानः) विनियम, 1980 (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त विनियम' कहा गया है ग्रौर जहां संदर्भ के प्रमुक्त है, इसके ग्रंतर्गत उस समय प्रवृत्त उसके संशोधन या उरामें परिवर्धन भी है) के उपबंधों के ग्रधीन उपर्युक्त पहले बने गृह के क्रय के लिए हु ग्रीग्रिम के लिए नव पत्तन न्यास को ग्रावेदन किया गया था ग्रौर पत्तन न्यास ने उधार लेने वाले को हु कर दिया है। इस संबंध में देखिए तारीख का कार्यालय पत्न सं जिसमें उल्लिखत निबंधनों ग्रौर शर्तों पर यह ग्रीग्रम मंजूर किया गया है।

तारीख '''''' को उक्त उधार किए जाने के समय बंधककर्ता ग्रौर बंधकदार द्वारा ग्रौ बीच एक करार निष्पादित किया गया था ि बंधककर्ता ने ग्रन्य बातों के साथ उसे ग्राग्रिय दी ग्रीर उक्त रकम के लिए संदेय ब्याज के ि

निथमों द्वारा उपबंधित प्ररूप में प्रतिभूति के रूप में उन्त फ्लैंट का बंधकदार को बंधक करने वाली दस्तावेज का निष्पादन करने का वचनुबंध किया है।

तारीख के उस हस्तांतरण विलेख द्वारा जो एक पक्षकार के रूप में ग्रीर दूसरे पश्चार के रूप में बंधक कर्ता द्वारा ग्रीर उनके बीच निष्पादित किया गया है, उक्त विलेख में विणित प्रतिफल के लिए ने उन सम्पत्तियों का जिनका विस्तृत वर्णन उक्त दस्तावेज की ग्रनुसूची में ग्रीर इसकी प्रनुसूची में भ्री किया गया है, बंधककर्ता को उक्त विलेख में विणित निबंधनों ग्रीर गर्ती पर विक्रय, ग्रंतरण ग्रीर समनुदेगन किया है।

के उक्त ग्रग्निम का बंधकदार को प्रतिसंदाय राज्य किएए (केवल राज्य मासिक किस्तों में ग्रपने (बंधककर्ता

उस रीति में और उन निवंधनों पर करेगा जो उक्त विनिधमों में विनिष्टि हैं। परन्तु यह कि बंधककर्ता ब्याज सहित यप्रिम का पूरा प्रतिसंदाय उस तारीख मे पूर्व करेगा जिस तारीख को वह सेवा से निवृत्त होने वाला है। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो बंधकदार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी समय गवृत्त करे और उस समय देय अग्रिम की शेष रकम तथा

करके या विधि के प्रधीन प्रनुज्ञेय किसी ग्रन्य रीति
 न करे। बंधककर्ती उस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम

ए पर व्याज ग्रौर उसकी वसुली का खर्च बंधक संपत्ति का

(i)(ख) 'उक्त विनियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों के उपबंधों के अनुसरण में बंधकदार द्वारा बंधककर्ता को मंजर किए गए / दिए गए उनत श्रिप्रम के प्रतिफल-स्वरूप बंधककर्ता बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों ग्रौर शर्तों का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और रुपए (केवल रुपए) के उक्त ग्रग्निम का बंधकदार को प्रतिसंदाय : : : रुपए (केवल रुपए) की मासिक किस्तों में ग्रपने (बंधककर्ता के) वेतन में से करेगा। यह प्रतिसंदायके · · · · · मास से या अग्रिम लेने के अगले मास से, प्रारम्भ हो कर उसकी ग्रधिवर्षिता की तारीख तक किया जाएगा और उसकी अधिवर्षिता की तारीख को बकाया ग्रतिशेष ग्रग्रिम की तारीख से प्रतिसंदाय की तारीख तक ब्याज सहित उसके उपदान/मृत्य एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से वसूल किया जाएगा। बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती उसके मासिक वेतन/छुट्टी वेतन/निर्वाह भत्ते में से तथा उसकी शेष रकम की, जिसका संदाय उसकी मृत्यु/सेवा निवृत्ति/ म्रधिवर्षिता की तारींख तक नहीं किया गया है, कटौती **जैसा** इसमें इसके पूर्व वर्णित है उसके उपदान/मृत्यु, एवं सेवा निवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि फिर भी पूरी वसूली नहीं हो पाती है तो बंधककार को यह हक होगा कि वह बंधक की इस प्रतिभृति को उसके बाद किसी समय प्रवृत्त करे ग्रौर उस समय देव ग्रग्रिम की शेष रकम तथा उस पर ब्याज ग्रौर वसूली का खर्च, बंधक संपत्ति का विकय करके या विधि के ग्रधीन ग्रन् ज्ञेय किसी ग्रन्य रीति से वसूल करे। बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे कम ग्रवधि के भीतर भी कर सकता है'।

(i) (ग) उक्त विनियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों के उपबंधों के अनुसरण में बंधकदार द्वारा बंधक-कर्ता को मंजर किए गए | दिए गए उक्त ग्रग्निम के प्रति-फलस्वरूप बंधककर्ता बंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि बंधककर्ता उक्त विनियमों के सभी निबंधनों ग्रीर जतीं का सदैव सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा और रुपए (केवलरुपए) के (केवल हपए) की • • • • • • • मासिक किस्तों में अपने बंधककर्ता को वैतन में से करेगा। यह प्रतिसंदायके**मास से या गृह पूरा होने के अगले सास से, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारम्भ होगा। बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को ऐसी किस्तों की कटौती अपने मासिक वैतन/छुट्टी बेतन में से करने के लिए प्राधिकृत करता है ग्रौर बंधककर्ता ग्रग्निम की पूरी रकम

^{ें} भीतर कर सकता है।

⁰ से अधिक नहीं होंगी।

^{**}यह 180 में भ्रिष्ठिक नहीं होगी। ध्यान दें—(खंड़ (i) (क्त) या (i) (ख) में मे जो लामू न हो उमे काट दीजिए।

का संदाय क'रने के पश्चात् उस पर देय ब्याज का भी ······ क्व की · · · · · · · · मासिक किस्तों में संदाय अपनी अधिवर्षिता की तारीख तक करेगा तया अग्रिम दी गई रकम पर अग्रिम की तारीख मे उसके प्रतिसंदाय की तारीख तक के ब्याज का उस बाकी रकम का जो उसकी म्रधिवर्षिता की तारीख को बकाया रहती है, संदाय ग्रपने उपदान/मृत्यु एवं सेवा निवृत्ति से करेगा ग्रीर बंधककर्ता किस्तों की रकम की कटौती ग्रपने मासिक वेतन/ख़ुट्टी वेतन में से तथा उस शेष रकम की, जिसका संदाय उसकी मृत्यु की तारीख तक नहीं किया गया है, कटौतो श्रयने उपदान/मृत्यु एवं सेवानिवृत्ति उपदान में से करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है। यदि उसकी मत्यं की तारीख को कोई श्रितिशेष श्रसंदत्त रह जाता है तो बंधककार को यह हक होगा कि वह बंधक को इस प्रतिभूति को उसके बाद किसी समय प्रवृत्त करे ग्रौर उस समय देय ग्रिग्रिम की शेष रक्षम तथा उस पर ब्याज ग्रीर वसूली का खर्च, बंधक संपत्ति का विक्रय करके या विधि के अधीन ग्रनज्ञेय किसी ग्रन्य रीति से वसूल करे।बंधककर्ता इस रकम का प्रतिसंदाय इससे काम भ्रवधि के भीतर कर सकता है। |टिप्पण:--खण्ड (i) क (i) (ख) या (i) (ग) में से जो लागुन हो उसे काट दें।]

(ii) यदि बंधककर्ता श्रग्रिम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्य रूप से सेवा निवृत्ति/ ग्रिधविषता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नही रहता है ग्रथवा यदि ग्रग्रिम के पूरे संदाय के पूर्व उसकी मृत्यु हो जाती है या यदि बंधककर्ता उक्त विनियमों में विनिर्दिष्ट ग्रौर उसकी ग्रोर से श्रनुपालन किए जाने वाले किसी निबंधन, शर्त ग्रौर ग्रनुबन्ध का ग्रन्पालन नहीं करता है तो ऐसी दशा में श्रिम का सम्पूर्ण म्लघन या उसका उतना भाग जो उस समत्र देय रहता है ग्रौर जिसका संदाय नही किया गया है, ग्रौर उस पर ग्रीतशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज जो बंधकदार द्वारा उक्त श्रग्निम की पहली किस्त के दिए जाने की तारी ख में परिकलित किया जाएगा, बंधक-दार को तुरन्त संदेय हो जाएगा। इसमें किसी बात के होते हए भी, यदि बंधक कर्ता श्रिप्रम का उपयोग किसी ऐसे प्रयोजन के लिए करता है जो उस प्रयोजन से भिन्न है जिसके लिए वह मंजूर किया गया है तो बंधकदार बंधककर्ता के विरुद्ध ऐसी अनुशासनिक कार्रवाही कर सकेगा जो बंधककर्ता को

(iii) उक्त विनियमों के श्रौर श्रनुसरण में श्रौर उपर्युक्त प्रतिकल के लिए तथा उपर्युक्त श्रिग्म के श्रौर उस पर ब्याज के, जो उसके पश्चात् किसी समय या समयों पर इस विलेख के निबंधनों के श्रधीन बंधकदार को देय हो, प्रतिसंदाय को प्रतिमूत करने के लिए, बंधककर्ता इसके द्वारा बंधकदार को

लागू सेवा के नियमों के ग्रधीन उपयुक्त हो।

*नियम के प्रधीन प्रभार्य ब्याज की प्रसामान्य दर।

तारीख के उक्त हस्तांतरण पत्न में समाविष्ट उक्त मम्पत्ति का जिसका इसमें भ्रागे लिखी अनुसूची मे वियागया है, उक्त संपत्ति पर (जिसे इसमें ग्रागे बंधक संपत्ति कहा गया है) बंधककर्ती द्वारा निर्मित या निर्मित किए जाने वाले भवनों ग्रथवा तत्समय उस पर रखी सामग्री का उक्त बंधक संपत्ति से संबंधित सभी या किन्ही अधिकारों, सुखाचारों श्रीर श्रनलगाकों सहित अनुदान, हस्तांतरण, अतरण और समनुदेशन केता द्वारा की गई प्रसंविदास्रो स्रौर उसमें स्रंतिविष्ट शर्तों के स्रधीन रहते हुए करता है। बंधकदार उक्त बंधक संपत्ति को पूर्ण रूप से निःन्तु उक्त हस्तांतरण पत्र के निबंन्धनो ग्रौर प्रसं-विदास्रो के स्रधीन रहते हुए धारण करेगा किन्तु यह इसमें इसके दिए हुए मोचन संबंधी उपबध के ग्रधीन होगा। इसके पक्षकारो द्वारा ग्रांर उनके बीच यह करार किया जाता है श्रौर घोषणा की जाती है कि यदि बंधककर्ता, बंधकदार को इसके द्वारा प्रतिभ्नं उक्त मूलघन ग्रौर ब्याज का ग्रौर ऐसी भ्रन्य रकम का (यदि कोई हो) जो बंधककर्ता द्वारा बंधक-दार को, उक्त विनियमों के निवंधनों ग्रौर शर्तो के ग्रधीन संदेय अवधारित की जाए सम्यक् रूप से संदाय इसमें दी हुई रीति से कर देगा तो बंधकदार उसके बाद किसी भी समय बंधककर्ता के श्रनुरोध श्रौर खर्च पर, उक्त बंधक संपत्ति का प्रतिम्रंतरण म्रोर प्रति हस्तांतरण बंधककर्ता को उसके या उसके निदेशानुसार उपयोग के लिए कर देगा।

'iv) इसके द्वारा ग्रिभिव्यक्त रूप से यह करार किया जाता है भौर घोषणा की जानी है कि यदि बधकवर्ता ग्रपनी ग्रोर से की गई ग्रौर इसमे दी हुई प्रसंविदास्रों को भंग करता है या यदि बंधककर्ता दिवालिया हो जाता है या सामान्यरूप से सेवा निवृत्ति/श्रधिवर्षिता से भिन्न किसी कारण से सेवा में नही रहता है या यदि उन सभी रकमों के जो इस विलेख के ग्रधीन वधकदार को संदेय है, ग्रौर उन पर ब्याज के पूरी तरह से चुकाए जाने से पूर्व उसकी मृत्य हो जाती है या यदि उक्त ग्रम्भिम या उसका कोई भाग इस विलेख के अधीन या अन्यथा तुरन्त संदेय हो जाता है तो ऐसी दशा में बंधकदार के लिए यह विधिपूर्ण होगा कि बह उक्त बंधक सम्पत्ति का या उसके किसी भाग का विक्रय. न्यायालय के हस्तक्षेप के बिना, एक साथ या टुकड़ों में भ्रौर लोक नीलाम द्वारा या प्राइवेट संविदा द्वारा कर दे। उसे यह शक्ति होगी कि वह उसका ऋय कर ले या विकय की किसी संविदा को विखंडित कर दे ग्रौर उसका पृन: विकय कर दे तथा ऐसी किसी हानि के लिए जिम्मेदार न हो जो ऐसा करने से हो । उसे यह शक्ति भी होगी कि वह ऐसा विऋय करने के लिए, जो बंधकदार ठीक समझे, सभी कार्य करे ग्रौर हस्तांतरण पत्नो का निष्यादन करें। यह घोषणा जाती है कि विकय किए गए परिसर या उसके किसी के ऋय के लिए बंधकदार की रसीद इस बात का होगी कि केता/केताम्रों ने कय धन का भुगतान कर यह भी घोषणा की जाती है कि उक्त शक्ति है में किए गए किसी विक्रय से प्राप्त धन को बंध

के रूप मे धारण करगा। उसमें से सर्वप्रथम ऐसे विकय पर हुए खर्च का सँदाय किया जाएगा * [ग्रीर उसके बाद. बधक संपत्ति के पट्टाकर्ता,———को उक्त पट्टे के खण्ड———के अनुसरण मे अनुपाजित वृद्धि के 50 प्रतिशत का सदाय किया जाएगा ग्रीर तब इस विलेख की प्रतिभृति पर तत्समय देय धन को चुकाने में या उसके लिए, धन का सदाय किया जाएगा ग्रीर यदि कोई धन बाकी रहता है तो वह बधककर्ता को दे दिया जाएगा।

- (V) बधककर्ता इसके द्वारा बधकदार के साथ यह प्रस्विदा करना है कि ---
- (क) बधककर्ता का इस बात का प्रन्छा अधिकार ग्रौर विधिपूर्ण प्राधिकार है कि वह बधक सपत्ति का, बधकदार को ग्रौर उसके उपयोग के लिए प्रमुदान, हस्तातरण, अतरण ग्रौर समनुदेणन उक्त रीति में करें।
- ** (ख) बधकवर्ता गृह के निर्माण/उक्तगृह में ग्रावास स्थान मे परिवर्धन का कार्य उत्र अनुमोदिन नक्शे ग्रोर उन विनिर्देशों के ग्रनुसार ही करेगा जिनके स्राधार पर उक्त स्रिप्रम की सगणना की गई है स्रौर वह मजुर किया गया है, जब तक कि उससे विचलन की भ्रनुज्ञा वधकदार ने नहीं दे दी है। वधककर्ता कुर्सी / छत पडने के स्तर पर अनुज्ञेय ग्रग्निम की किस्तो के लिए ग्रावेदन करते समय यह प्रमाणित करेगा कि निर्माण कार्य उस नक्शे ग्रीर प्राक्कलन के अनुसार किया जा रहा है जो उसने बधकदार को दिए है स्रौर यह कि निर्माणकार्य कुर्सी/ छत यह ने वे स्तर तक पहुंच गया है श्रौर मजुर किए गए ग्रग्निम में में ली जा चुकी रकम का वस्तुतः उपयोग गृह के निर्माण के लिए किया गया है। वह उक्त प्रमाणपत्नो के सही होने का सत्यापन करने के लिए स्वयं बंधक-दार को या उसके प्रतिनिधि के द्वारा निरीक्षण करने की अनुमति देगा/देगी । यदि बंधककर्ता कोई मिथ्या प्रमाणपत्र देता है तो उसे बधकदार को वह सम्पूर्ण ग्रग्निम, जो उसे मिला है तथा उस पर----%प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से ब्याज तुरन्त देना होगा । इसके म्रतिरिक्त बधक-कर्ता के विरुद्ध, उसको लागू सेवा के नियमो के ग्रधीन, उपयुक्त ग्रनुशासनिक कार्रवाई भी की जा सकेगी।
- ** (ग) बधककर्ता गृह का निर्माण/उक्त गृह मे स्रावास स्थान मे परिवर्धन -----***के स्रठारह मास के
 - यहा वह तारीख लिखिए जिस तारीख को अग्रिम की ज़ली किस्त बधककर्ता को दी गई है।

ग—जहां प्रग्रिम पहले बने महान क कय के लिए खण्ड (ख) ग्रौर (ग) लागू नहीं होंगे। ग्रीख लिखिए जिस तारीख की ग्रग्रिम की पहली किसती को दी गई हैं

़ीन प्रभार्य ब्याज की प्रस्तावित दर।

भीतर पूरा करेगा जब तक कि बंधकदार ने इस कार्य के लिए लिखित रूप में समय न बढ़ा दिया हो। इसमें व्यक्तिकम होने पर वंधककर्ता को, उसे दी गई सम्पूर्ण रकम का ग्रोर उक्त नियमों के ग्रधीन परिकलिन ब्याज का एकमुश्न प्रतिसंदाय नुरन्त करना होगा। बंधककर्ता गृह पूरा होने की तारीख की सूचना बंधकदार को देगा ग्रौर वह वंधकदार को इस ग्राशय का एक प्रमाणपत देगा कि ग्रग्निम की पूरी रकम का उपयोग उसी प्रयोजन के लिए किया गया है जिसके लिए वह मंजूर किया गया था।

- (घ) बधककर्ना भारतीय जीवन बीमा निगम मे उस गृह का अपने खर्च पर तुरन्त बीमा उतनी रकम के लिए कराएगा जो उक्त अग्रिम की रकम से कम नहो। वह उसे उस समय तक जब तक कि बंधकदार को अग्रिम पूरी तौर से चुका नही दिया जाता है, ऋग्नि, बाढ़ ग्रौर तड़ित से हानि या नुक्सान के विरुद्ध बीमाकृत रखेगे जैसा कि उक्त विनियमो में उपबंधित है, स्रोर बीमा पालिसी वधकदार को सौप देगा । बधकर्क्ता समय-समय पर उक्त बीमा का प्रीमियम नियमित रूप से देगा ग्रौर जब उनसे ग्रयेक्षा की जाए, प्रीमियम की रसीदे बधकदार के निरीक्षण के लिए पेंग करेगा । यदि बधककर्ता ग्रग्नि बाढ ग्रौर तडित के विरुद्ध बीमा नही कराता है तो बधकदार के लिए यह विधिपूर्ण किन्तु श्रावद्धकर नहीं होगा कि वह उक्त गृह की बीमा बधककर्ता के खर्च पर करा ले ग्रौर प्रीमियम की रकम को स्रिप्रम की बकाया रकम मे जोड ले । तब वधककर्ता को उस पर ब्याज देना होगा मानो प्रीमियम की रकम उसको----रुपए के पूर्वीक्त स्रिप्रम के भाग के रूप मे दी गई थी । यह ब्याज उसे उस समय तक देना होगा जब तक कि वह रुम बधकदार को चका नही दी जाती है या जब तक उसकी वसूली इस रूप मे नहीं हो जाती है मानो वह इस विलेख की प्रतिभूति के ग्रंतर्गत ग्राने वाली रकम हो। बधककर्ता, जब भी उससे श्रपेक्षित हो, बंधकदार को एक पत्न देगा जो उस बीमा करने वाले के नाम लिखा होगा जिससे उस गृह का बीमा कराया गया है । यह पत्र इसलिए होगा कि बधकदार वीमा करने वाले को इस तथ्य की सूचना दे नके कि बबकबार उस बीमा पालिमी मे हितवद्ध है।
- (ह) बधककर्ता उक्त गृह को अपने खर्च पर अच्छी

 मरम्मत की हालत में रखेंगे और बधक सम्पत्ति

 की बाबत नगर पालिका के और अन्य सभी
 स्थानीय रेट, कर और अन्य सभी देनदारिया

 उस समय तक नियमित रूप से देगा जब तक कि
 बंधकदार को अग्रिम पूरी तौर से चुका नहीं दिया

जाता है। बंधककर्ता, बंधकदार को उक्त श्राशय का एक वाषिक प्रसाणपत्न भी देगा।

- (च) बंधककर्ता, गृह पूरा होने के बाद बंधकदार को यह सुनिश्चित करने के लिए कि मकान अच्छी मरम्मत की हालत में रखा गया है, निरीक्षण करने की सभी सुविधाएं उस समय तक देगा जब तक कि प्रग्रिम पूरी तौर से चुका नही दिया जाता है।
- (छ) बधक कर्ता, ऐसी कोई रकत और उस पर देय ब्याज, बंबकदार को लौटाएगा जो अग्निम के मद्ये, उस व्यय के श्राधिक्य मे लो गई हे जिसके लिए श्रग्निम मंजूर किया गया था।

टिप्पण: जहां अग्निम पहले बने गृह के लिए लिया गया है, खण्ड (ग) वहा लागू नही होगा।

- (ज) तारीख —————का उक्त हस्तानरण विलेख ग्रंब विधिमान्य है ग्रौर उक्त बंधक संपत्ति का ग्रस्तत्वयुक्त पट्टा है ग्रौर वह किसी भी रूप में शून्य या शून्यकरणीय नहीं है तथा पट्टा विलेख में या उसके द्वारा ग्रारक्षित किराए का संदाय ग्रौर उसमें दी हई प्रसंविदान्नो ग्रौर शर्तो का पालन इस विलेख की तारीख तक कर दिया गया है ग्रौर इसमें इसके पूर्व विणित रीति में इसका समनुदेशन किया जा सकता है।
- (झ) बंधककर्ता उस समय तक जब तक कोई धन उक्त बंधक सपित की, जो इसमे इसके पूर्व इसके द्वारा समनुदेशित अभिव्यक्त है, प्रतिभूति पर देय रहता है और हर हालत मे उक्त करार की अवधि तक पट्टे की सभी प्रसंविदाओं का और उक्त पट्टा विलेख में अतिविष्ट शर्तो का सम्यक् रूप से अनुपालन करेगा तथा बंधकदार को उन सभी प्रमुयोजनों, वादों. कार्यवाहियो, खर्चे, प्रभारो, दावो और मागों की बाबत श्रतिपूरित रखेगा जो उक्त किराए का संदाय न किए जाने के कारण या उक्त प्रसंविदाओं और शर्तों के या उनमें से किसी के भंग किए जाने, पालन या अनुपालन न किए जाने के कारण उपगत होंगी।
- (च्ा) बंधककर्ता वंधक संपत्तिको इस विलेख के जारो रहने के दौरान न तो भारित करेंगे, न उम पर विल्लंगम सृजित करेंगे, न उसका अन्य संकामग करेंगे और न उसका अन्यया व्ययन करेंगे।
- (ट) इसमे किसी बात के होते हुए भी बंधकदार को यह हक होगा कि वह श्रिप्रम को शेष रकम श्रौर उत पर ब्याग जिलका तंदाय यंधककर्ता की सेवा निवृत्ति के समय तक यायदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नही किया गया है, बंधककर्ता को मंजूर किए

| | जाने वाने सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी त्रि- |
|---|---|
| ` | निर्दिष्ट भाग में से वसूत्र कर ले। |
| | इसके साक्ष्यस्वरूप बंधककर्ता ग्रौर नव मंगलौर |
| | ात्तन न्यामी बोर्ड के निए ग्रौर उनकी ग्रोर से |
| | कार्यालय के श्री |
| | *इस पर ऋपने हस्ताक्षर कर दिए हैं। |

| इसे बंधककर्ता भरेंगे" |
|--|
| उक्त बंधककर्ता ने र र |
| (हस्नाक्षर) |
| (1) ''' '(प्रथम साक्षी का नाम, |
| पता ग्रौर व्यवसाय) |
| (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, |
| पता ग्रौर व्यवसाय) |
| की उपस्थिति मे हस्ताक्षर किए । |
| इसके साध्यस्वरूप, नव मंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड |
| के लिए स्रौर उसकी स्रोर से तथा उसके निर्देश से |
| ····· कार्यालय के श्री |
| · ·····• · · · · · · · · • ने |
| • |
| (हस्ताक्षर) |
| (1) * (प्रथम साक्षी का नाम, |
| ् पता ग्रौर व्यवसाय) |
| (2)(द्वितीय साक्षी का नाम, |
| पता ग्रौर व्यव साय) |
| की उपस्थिति मे हस्ताक्षर किए। " |

ध्यान दें:—आविदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तावेज पर स्टाम्प शुल्क देने से पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मिल सकती है, ग्रंपनी राज्य सरकार से सम्पर्क कर लें।

प्रनुपूर व वंधक विलेख

को किया गया यह करार तारीख को नवमंगलीर पत्तन के न्यासी बोर्ड के पक्ष में उक्त श्री ... खारा निजादित बंबक विलेख का (जिसे इसमें आगे "उक्त मूल बंधक विलेख" कहा गया है) अनुपूरक है।

- (1) बंधक कर्ता ने इस प्रयोजन के लिए कि वह *गृह बना सके । *यावास स्थान का विस्तार कर सके । *पहले बने गृह का कथ कर सके, `````` ह्रपए (केवल ह्रपए) के अग्निम के लिए वंधक दार को आवंदन किया है । बंधक कर्ता ने यह आवंदन नवमंगलीर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण आदि के लिए अग्निम का अनुदान) विनियम, 1980 के, जिसे इसमें इसके पण्चात् उक्त विनियम कहा गया है, अधीन किया है ।
- (2) बंधकदार "उक्त मूल बंधक विलेख" में दिए गए निबंधनों श्रीर शर्तों पर बंधककर्ना को ''''' रु० (केवल '''' रु०) की उक्त राशि, जिसे इसमें इसके पश्चात 'मूल उधार' कहा गया है, देने के लिए सहमत हो गया है श्रीर बंधककर्ना ने यह करार किया है कि वह बंधकदार को मूल उधार का प्रतिसंदाय ''' रु० की '' समान मासिक किस्तों में करेगा श्रीर यह प्रतिसंदाय ''' समान मासिक किस्तों में करेगा श्रीर यह प्रतिसंदाय ''' मास से श्रारंम्भ होगा।
- (3) बंधककर्ता ने, मूल उधार के प्रतिफलस्वरूप उक्त मूल वंधक विलेख की अनुसूची में और इसमें आगे लिखी अनुसूची में भी उल्लिखित सम्पत्तियां नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को ब्याज सहित उक्त राश्रि के संदाय की प्रतिभूति के रूप में अंतरित, समनुदेशित और हस्तांतरित कर दी हैं।
- (4) बंधककर्ता *पूरा मूल उधार/मूल उधार में से ऋमशः
 ह० ग्रीरह० तथाह०
 की....किस्तें ले चुका है।
- (5) बंधककर्ता मूल उधार के मद्ये ' ' ' रु० की ' ' समान मासिक किस्तों में कुल ' ' ' ' रु० क् का प्रतिसंदाय कर चुका है।
- - (7) बंधकदार : : : रु० की उक्त ग्रतिरिक्त शि जिसे इसमें भ्रागे ''श्रतिरिक्त उधार'' कहा गया है, ं ग्रागे उल्लिखित निबंधनों भ्रौर शर्तों पर बंधककर्ता े के लिए सहमत हो गया है।

- (8) बंधककर्ता, नवमंगलीर पत्तन न्यासी बोर्ड के आदेशों के श्रनुसरण में मूल उधार भीर श्रितिरिक्त उधार का प्रिति-संदाय श्रिधिक पुविधाजनक किस्तों में करना चाहता है। यह करार इस बात का साक्षी है कि:—
- (1) उक्त विनियमों के अनुसरण में और उक्त विनियमों में उपबन्धों के श्रनुसरण में बंधककर्ता को श्रब मंजुर किए गए श्रिप्रम श्रौर श्रितिरिक्त उधार के प्रतिफलस्वरूप बंधककर्ता इसके द्वारा वंधकदार से यह प्रसंविदा करता है कि वह (बंधककर्ता) उक्त विनियमों के सभी निबंधनों ग्रौर शर्ती का सदैव सम्यक् अनुपालन करेगा श्रौर उक्त मूल बंधक विलेख के स्रधीन देय : : : : : रु० की राशि का (ग्रौर : : : : रु० की राशि तथा ग्रितिरिक्त उधार का जिनका योग '''' रु० होता है) ***प्रतिसंदाय (कुल) राशि का संदाय करने के पश्चात वह ब्याज का भी संदाय उक्त विनियमों में विनिर्दिष्ट रीति से ग्रीर दर से ः ः समान मासिक किस्तों में करेगा। यदि उक्त : : : : : रु० की (कुल) * * राशि की रकम शेष रहती है तो वह श्रीर/या उपगत ब्याज की बसूली बंधककर्ता से उसकी अधिवर्षिता/मृत्यु/सेवा निवृत्ति की तारीख पर उसके (बंधककर्ता को) शोध्य उपदान । मृत्य एवं सेवा निवृत्ति उपदान की रकम में से की जाएगी । उक्त रु० की (कुल) ** राशि की वसूली, बंधककर्ता के वेतन से ····· वर्ष के मास मे ग्रारंभ्भ होगी ग्रौर बंधककर्ता ग्रपने मासिक वेतन/छुट्टी वेतन में से इन किस्तों की रकम की कटौती करने के लिए बंधकदार को प्राधिकृत करता है ।
 - (2) बंधककर्ता यह घोषणा करता है कि वह सम्यत्ति जो उक्त मूल बंधक विलेख में समाविष्ट है और जिसका उल्लेख इसमें आगे लिखी अनुसूची में भी है, अब मंजूर किए गए अतिरिक्त उधार के संदाय के लिए भी उसी प्रकार प्रतिभूति होगी और वह उसी प्रकार भारित होगा मानो अतिरिक्त उधार उस मूल राशि का ही भाग है जो उक्त मूल बंधक विलेख द्वारा प्रतिभूत है।

गुन हो तो काट दीजिए।

^{***} इसे तब काट दें जब किसी श्रतिरिक्त उधार के लिए श्रावेदन नहीं किया गया है।

^{**} उन मामलों में जहां मूल उधार का प्रतिसंदाय म्रारंम्भ नहीं हुम्रा है यह निर्माण या विस्तार की दशा में ।हली किस्त के प्राप्त किए जाने की तारीख से 18 वें ।ास के पण्चात् का भ्रौर पहले वने गृह के ऋय के लेए अग्रिम प्राप्त किए जाने की तारीख के म्रागामी ।। से पण्चात् का नहीं होना चाहिए । म्रन्य मामलों ने यह मनुपूरक विलेख के निष्पादन के म्रागामी माम ने पश्चात् का नहीं होना चाहिए ।

(iii) यह करार किया जाता है श्रीर घोषणा की जाती है कि उक्त मूल बंधा जिलेख के श्रधीन संदेय मूल धन ग्रौर किस्तों के सम्बंध में उक्त मूल बंधक विलेख में ग्रन्त-विष्ट सभी प्रसंविदाएं, शक्तियां ग्रौर उपबंध इस विलेख के **ग्रधी**न संदेय (उक्त ग्रतिरिक्त उधार ग्रौर) *** किस्तों को लागू होंगे भ्रौर इसके द्वारा किए गए परिवर्तनों के सिवाय उक्त मूल बंधक विलेख के सभी निबंधन ग्रौर शर्तें पूर्णतया प्रवृत्त ग्रौर प्रभावी रहेंगी। परिवर्णन (v) तब हटा दिया जाएगा जब मूल उधार के किसी भाग का प्रतिसंदाय नहीं किया गया है। परिवर्णन (vi) ग्रौर (vii) तथा खण्ड (ii) तब हटा दिया जाएगा जब किसी ग्रतिरिक्त उधार के लिए ग्रावेदन नहीं किया गया है। परिवर्णन (viii) तब हटा दिया जाएगा जब प्रतिसंदाय की रीति में कोई परिवर्तन करने का स्राशय नहीं है। म्रानुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है सभी सुखाचारों, ग्रनुलग्नकों, मार्गाधिकारो सहित. सं ० · · · · · · · वाला वह सम्पूर्ण भूखण्ड जो · · · · · · · में स्थित है ग्रौर जिसका क्षेत्रफल '''' वर्गमीटर (· · · · · · ·) है तथा जिसके— उत्तर में है दक्षिण में है पूर्व में है पश्चिम मेंहै इसके साक्ष्यस्वरूप बंधककर्ता ने ग्रौर नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए ग्रौर उसकी ग्रोर से श्री : : : : : : : ने इस पर ग्रपने-अपने हस्ताक्षर कर दिए हैं। बंधककर्ता ने (हस्ताक्षर) बंधककर्ता 1 ... (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय) 2 · · · · · · · · · · · · (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए। नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए ग्रौर उनकी श्रोर मे के कार्यालय के श्री ने (हस्ताक्षर) 1 (प्रथम साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय)

***इसे तब काट दें जब किसी म्रतिरिक्त उधार के

लिए म्रावेदन नहीं किया गया है।

टः ः ः ः ः ः ः ः ः ः (द्वितीय साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए ।

प्ररुप सं० 5

(विनियम 7 देखिए)

बोर्ड के कर्मचारी द्वारा भूखण्ड का ऋय करने ग्रौर गृह बनाने, विद्यमान गृह का विस्नार करने तथा पहले बने गृह के ऋय के लिए ग्रिग्रिम लेने के समय निष्पादिन किए जाने वाले करार का प्ररूप

यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री '''' जो श्रीका पुत्र है ग्रौर इस समय ं ं ं ं ं ं ं ं ं ं लिसे इसमें सेवा कर रहा है (जिसे इसमें इसके पश्चात् ''उधार लेने वाला'' कहा गया है श्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से ग्रपवर्जित या उसके विरुद्ध नहीं है) इसके म्रन्तर्गत उसके वारिस, निष्पादक, प्रशासक ग्रौर विधिक प्रतिनिधि भी हैं, ग्रौर दूसरे पक्षकार के रूप में नव मंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड (जिन्हें इसमें इसके पश्चात ''नवमंगलौर पत्तन'' कहा गया है स्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से ग्रपवर्जित या उसके विरुद्ध नहीं है) इसके ग्रन्तर्गत उनके उत्तरवर्ती ग्रौर समनुदेशिती भी है, के बीच स्राज तारीख : : : : को किया गया। उधार लेने वाला इससे संलग्न ग्रनुसूची में वर्णित भृमि का * ऋय करना चाहता है ग्रौर उस पर गृह बनाना चाहता है (*
••••में स्थित ग्रपने गृह में वास स्थान का विस्तार करना चाहता है) · · · · · में स्थित एक पहले बने गृह का ऋय करना चाहता है ग्रौर उधार लेने वाले ने नवमंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण ग्रादि के लिए ग्रग्रिम का ग्रनुदान) विनियम, 1980 के (जिसे इसमें ग्रागे ''उक्त विनियम'' कहा गया है श्रौर इसमें जहां संदर्भ के अनुकूल है, तत्समय प्रवृत्त उसके संशोधन या परिवर्तन भी है) उपबंध के ग्रधीन उक्त भूमि का ऋय करने ग्रौर उस पर गृह बनाने के लिए* · · · · · · · · भ्रपने गृह में वास स्थान का विस्तार करने के लिए* उक्त पहले बने गृह का ऋय करने के लिए ॱॱॱॱॱॱः (.... रपए) के ग्रग्रिम के लिए नवमंगलौर पत्तन न्यास को ग्रावेदन किया है । नवमंगलौर पत्तन न्यास रुपए) का अग्रिम उक्त प्रयोजन के लिए मंजूर कर दिया है। इस संबंध में देखिए पत्न सं० : : : : : तारीख : : : : जिसकी एक प्रति इस विलेख के साथ संलग्न है ग्रौर जिसां उल्लिखित निबंधनों ग्रौर शतों पर यह ग्रग्निम मंजूर ि गया है। इसके पक्षकारों द्वारा ग्रौर उनके बीच यह किया जाता है कि:--

(1) इस करार के निष्पादन के बाद ूं करने के लिए नवमंगलौर पत्तन न्यास द्वारा $\hat{\zeta}$

^{*}जो लागू न हो उसे काट दीजिः

की रकम लिखिए) की राशि ग्रौर उक्त विनियमों के उपबंधों के ग्रनुसार नवमंगलौर पत्तन न्यास द्वारा उधार लेने वाले को दी जाने वाली '''''' के प्रति वह स्वरं के करार करता है कि वह :--

- - \dagger (ख)(i) उक्त मंजूर किए गए ग्रग्निम में से

(यहां दी जाने वाली किस्त की रकम लिखिए) की रकम प्राप्त करने की तारीख से दो मास के भीतर या ऐसे स्रतिरिक्त समय के भीतर जो नवमंगलौर पत्तन न्यास/विभागाध्यक्ष इस निमित्त स्रनुज्ञात करें, भूमि का क्रय करने में उक्त रकम खर्च करेगा स्रौर उसके संबंध में विकय विलेख नवमंगलौर पत्तन न्यास के निरीक्षण के लिए प्रस्तुत करेगा स्रौर ऐसा न करने पर उधार लेने वाला उमे प्राप्त स्रिमिम की पूरी रकम का स्रौर उस पर ब्याज का नवमंगलौर पत्तन न्याम को प्रतिसंदाय करेगा।

- †(iii) उक्त गृह का निर्माण/विस्तार, नवमंगलौर पत्तन न्यास बोर्ड द्वारा अनुमोदित किए जाने वाले उस नक्षे ग्रौर उन विनिर्देशों के अनुसार जिनके ग्राधार पर ग्रिग्रिम की रक्तम की संगणना की जानी है ग्रौर ग्रन्तिम रूप से मंजूर जानी है, ... के ग्राठारह मास के भीतर या उस बढ़ाई गई ग्रवधि के भीतर पूरा करेगा जो नवमंगलौर पत्तन के न्यासी बोर्ड द्वारा ग्रिधिकथित की जाए।

- (2) यदि उधार लेने वाले द्वारा भूमि का ऋय करने ग्रौर उस पर गृह बनाने के लिए /†गृह का विस्तार करने के लिए/।पहले बने गृह का ऋय करने के लिए वस्तुतः दी गई रकम इस विलेख के ग्रधीन उसके द्वारा प्राप्त की गई रकम मे कम है तो वह शेष रकम का नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त प्रतिमंताय करेगा।
- (3) इस विलेख के ग्रधीन उधार लेने वाले को ग्रिप्रम दी गई रकम के लिए ग्रौर उक्त रकम के लिए संदेय ब्याज के लिए प्रतिभूति के रूप में, उक्त गृह/उक्त भूमि ग्रौर उस पर बनाए जाने वाले गृह को नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के पास बंधक रखने के लिए उक्त विनियमों द्वारा उपबंधित प्ररूप में दस्तावेज का निष्पादन करेगा।
- (4) †यदि उक्त प्रयोजन के लिए ऋग्रिम का भाग लेने की तारीख से दो मास के भीतर या ऐसे अतिरिक्त समय के भीतर, जिसे नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड/विभागाध्यक्ष इस निमित्त अनुज्ञात करे, भूमि का ऋय नहीं किया जाता है श्रौर उसका विक्रय विलेख नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के निरीक्षण के लिए प्रस्तुत नहीं किया जाता है/पयदि अग्रिम लेने की तारीख से तीन मास के भीतर या ऐसे ऋतिरिक्त समय के भीतर जो नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड/विभागाध्यक्ष इस निमित्त अनुज्ञात करे, गृह का ऋय नहीं किया जाता है श्रौर उसे बंधक नहीं रखा जाता है/विद उक्त उधार लेने वाला ऊपर किए गए करार के अनुसार, उक्त गृह का निर्माण/ विस्तार पूरा करने में भ्रसफल रहता है या यदि उधार लेने वाला दिवालिया हो जाता है या नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड की सेवा छोड़ देता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो श्रिप्रिम की पूरी रकम उस पर लगने वाले ब्याज सहित नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को, तुरन्त शोध्य श्रौर संदेय हो जाएगी।
- (5) बोर्ड को यह हक होगा कि वह उक्त अग्निम को शेष रकम और उस पर ब्याज जिसका संदाय उसकी (उधार लेने वाले को) सेवानिवृत्ति के समय तक या यदि सेवानिवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से वसूल कर ले, जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।
- (6) नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के इस निमित्त किसी ग्रन्य ग्रिधिकार पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यदि कोई रकम उधार लेने वाले द्वारा नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को लौटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड उम रकम को भू-राजस्व की बकाया के रूप में वमूल करने का हकदार होगा।
- (7) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प शुल्क देना होगा वह नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड देगा।

† अनुसूची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है।

ांजो लागू न हो उसे काट दीजिए। ांचह उधार लेने वाला भरेगा।

[†]जो ेलागू न हो उसे काट दीजिए। 1333 GI/80--6

| इसके साक्ष्य स्वरूप उधार लेने वाले ने भौर नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए भौर उनकी भ्रोर से के कार्यालय के श्री के कार्यालय के श्री कर दिए हैं । उक्त उधार लेने वाले ने |
|---|
| |
| व्यवसाय) |
| (2) · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता ग्रीर व्यवसाय) |
| की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए । |
| कार्यालय के |
| প্রী |
| (1) · · · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता भीर व्यवसाय) |
| ्रिस्साक्षर) (हस्साक्षर) (नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड |
| के लिए श्रीर उनकी श्रोर से) |
| (2) · · · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता भीर व्यवसाय) |
| की उपस्थिति में हस्ताक्ष र किए । |
| परूप सं० 5(क) |
| (विनियम 7 देखिए) |
| बोर्ड के कर्मवारी द्वारा भूमि का ऋय करने भौर गृह बनाने के लिए तब निष्पादित किए जाने वाले करार का विशेष प्ररूप जब उसे भूमि का हक, गृह बन जाने के पश्चात् संक्रान्त होगा |
| यह करार एक पक्षकार के रूप में श्री ः ः ः ः |
| जो इस समय |
| के रूप में सेवा कर रहा है (जिसे इसमें इसके पश्चात् उधार लेने बाला कहा गया है धौर जब∞तक कि ऐसा विषय या |
| लन वाला कहा गया हु आर जबरतक कि एसा विषय या संदर्भ से भ्रापवर्जित या उसके विरुद्ध नहीं है, इसके श्रन्तर्गत |
| उसके वारिस, निष्पादक, प्रशासक श्रौर विधिक प्रतिनिधि |
| भी है) भीर दूसरे पक्षकार के रूप में नवमंगलौर पत्तन |
| न्यासी बोर्ड (जिसे इसमें भ्रागे नवमंगलौर पत्तन 'न्यासी बोर्ड' |
| कहा गया है भौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से |
| प्रपर्वाजत या उसके विरुद्ध नहीं है इसके ग्रन्तर्गत उसके |
| उत्तरवर्ती भौर समनुदेशिती भी हैं) के बीच भाज तारीख ····ःको किया गया। |
| सर्वा स्था । |

उधार लेने वाला इससे संलग्न धनुसूची में वर्णित भूमि

का '''' (यहां विक्रेता का नाम लिखिए)

से ऋय करना चाहताहै ग्रौर उस परगृह बनाना चाहता है।

इस संबंध में देखिए तारीख ' ' ' जिसकी एक प्रति का कार्यालय पत्न सं० ' ' जिसकी एक प्रति इस विलेख के साथ संलग्न है श्रीर जिसमें उल्लिखित निबंधनों श्रीर शर्तों पर यह श्रियम मंजूर किया गया है।

इसके पक्षकारों के द्वारा भ्रौर उनके बीच यह करार किया जाता है कि :---

ोजो लागून हों उसे काट दीजिए।

भत्ते बिलों में से करने के लिए नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को प्राधिकृत करता है।

- (ख) ज्योंही उसे उक्त भूमि का क्रय मूल्य प्राप्त हो जाएगा श्रीर उक्त भूमि का कब्जा मिल जाएगा उक्त भूमि की बाबत उक्त भूमि के क्रता के रूप में श्रपने सारे श्रिधिकारों का प्रतिभूति के रूप में, नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के पक्ष में भौर उक्त(विक्रेता का नाम पिखिए) के विरुद्ध समनुदेशन करेगा श्रीर इस प्रयोजन के लिए उक्त विनियमों में उपबंधित प्ररूप में श्रतिरिक्त इस्तांतरण पत्न निष्पांवित करेगा।
- (ग) उक्त गृह का निर्माण श्रमिम की प्रथम किस्त प्राप्त करने की तारीख से श्रठारह मास के भीतर या उस बढ़ाई गई श्रवधि के भीतर जो नयमंगलौर पसन न्यासी बोर्ड श्रभिकथित करे, पत्तन न्यासी बोर्ड हारा श्रनु-मोदित किए जाने वाले नक्शे श्रौर उन विनिर्देशों के श्रनुसार जिनके श्राधार पर श्रमिम की रकम की संगणना की जानी है श्रौर श्रंतिम रूप से मंजूर की जानी है, पूरा करेगा।
- (घ) यदि गृह बनाने के लिए वस्तुतः दी गई रकम इस विलेख के प्रधीन उसके द्वारा प्राप्त की गई रकम से कम है तो वह शेष रकम का नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त प्रतिसंदाय करेगा।
- (ङ) ज्योंही गृह बन जाता है श्रीर उस्रके पक्ष में श्रावश्यक श्रिभहस्तान्तरणपत्न या हस्तांतरणपत्न निष्पादित हो जाता है इस विलेख के श्रधीन उधार लेने वाले को श्रिप्रम दी गई रकम के लिए श्रीर उक्त रकम के लिए संदेय ब्याज के लिए भी प्रतिभूति के रूप में, उक्त भूमि श्रीर उस पर बनाए गए गृह को नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के पास बंधक रखने के लिए उक्त विनियमो द्वारा उपबन्धित प्ररूप में दस्तायेज का निष्पादन करेगा।
- (2) यदि उधार लेने वाला ऊपर किए गए करार के धनुसार, उक्त गृह का निर्माण पूरा करने में ध्रसफल रहता है या यदि उक्त भूमि के क्रय मूल्य का संदाय करने श्रीर कब्जा प्राप्त करने के पश्चात् ध्रतिरिक्त हस्तान्तरण पत्न निष्पादित नहीं करता है या उसके पक्ष में ध्रावश्यक ध्रिम्हस्तांतरण पत्न का हस्तान्तरण पत्न निष्पादित कर दिए जाने के पश्चात् बंधक विलेख निष्पादित नहीं करता है या यदि उधार लेने वाला दिवालिया हो जाता है या नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड की सेवा छोड़ देता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो श्रिप्रम की पूरी रकम उस पर लगने वाले क्याज सहित, नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त शोध्य श्रीर संदेय हो जाएगी।
- (3) नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को यह हक होगा कि वह उक्त प्रश्निम की शेष रकम धौर उस पर ब्याज जिसका संदाय उसकी (उधार लेने वाले की) सेवा निवृत्ति के समय त्क या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु

- (4) नव मंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के इस निमित्त किसी अन्य श्रिधिकार पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, यदि कोई रकम उधार लेने वाले द्वारा नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को लौटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड उस रकम को भू-राजस्व की बकाया के रूप में वसूल करने का हकदार होगा।
- (5) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प शुल्क देना होगा उसे नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड देगा।

अनुसूची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है **

(भूमि का वर्णन करें)

इसके साक्ष्यस्वरूप उधार लेने वाले ने भ्रौर नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए भ्रौर उनकी श्रोर से · · · · · · · · के कार्यालय के श्री · · · · · · · · ने इस पर श्रपने भ्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं। उक्त उधार लेने वाले ने · · · · · · · · · ·

(उधार लेने वाले के हस्ताक्षर)
(1) · · · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता भ्रौर
व्यवसाय)
(2) · · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता भ्रौर
व्यवसाय)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।
....कार्यालय के

(1) · · · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता श्रौर व्यवसाय)

> हस्ताक्षर

(नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए और उनकी श्रोर से)

(2) · · · · · · · · · (साक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

प्ररूप 5(ख)

(विनियम 7 देखिए)

बोर्ड के कर्मचारी द्वारा गृह बनाने के लिए प्रिग्निम की दूसरी किस्त प्राप्त करने के पूर्व उस दशा में निष्पात्तित किए जाने वाले करार का विशेष प्ररूप जिसमें उसने वित

हो गई है तो उस समय तक नही किया गया है, उस सम्पूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से वसूल कर ले. जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।

^{*}जो लागू न हो उसे काट दीजिए।

^{**}यह उधार लेने वाला भरेगा।

प्ररूप में करार का निष्पादन करने के पश्चात् भृषि के क्रय के लिए प्राग्रिम की पहली किस्त प्राप्त कर ती है प्रौर जब कि भूमि का हक उसे गृह बनाने के पश्चात् संक्रात होगा।

उधार लेने वाला इससे मलग्न श्रनुसूची मे वर्णितमें स्थित भूमि पर गृह बनाना चाहना है।

उधार लेने वाले ने नयभगलीर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण श्रादि के लिए श्रिशम का श्रनुदान) विनि-यम, 1980 (जिसे इसमे इसके पश्चात् "उक्त विनियम" कहा गया है भ्रौर इसमें जहां सदर्भ के श्रनुकूल हो, तत्समय प्रयुक्त उसके संशोधन या परिवर्धन भी है) के उपबंधों के **प्रधीन** रुपाप्) के श्रिप्रिम के लिए नवमंगलीर पत्तन न्यासी बोर्ड को श्रावेदन किया है। नवमंगलीर पत्तन न्यासी बोर्ड ने, उधार लेने वाले को ' ' ' ' ' रु० (' ' ' ' रुप्) (यहां मंजूर की गई पूरी रक्तम लिखिए) का प्रग्रिम उक्त प्रयोजन के लिए मंजूर कर दिया इस संबंध मे देखिए ता॰ का कार्यालय पत्न सं ः ' ' ' ' ' ' ' ' ' जिसकी एक प्रति इस विलेख के साथ संलग्न है भौर जिसमें उल्लिखित निबंधनो भीर शर्ती पर यह श्रम्भिम मंजूर किया गया है। इसके पक्षकारों के बीच हारीखा ... को निष्पादित करार के अनु-सरण में नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड ने उपर्युक्त मजुर की गईः • • • • • • की राशि (यहा मंजूर की गई पूरी रकम लिखिए) में से ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' ' र० (यहा दी गई पहली किस्त की कम लिखिए) की राशि उधार लेने **षाले को उ**क्त करार मे वर्णित निबंधनो ग्रौर शती पर दे दी है जिससे कि वह उवतः ' ' ' ' का क्रय कर सके

उधार लेने वाले ने उक्त ग्रायम में में उक्त भूमि के अध्य मूल्य का संदाय ' ' ' ' (यहा विक्रेता का माम लिखिए) को कर दिया है ग्रीर उक्त भूमि का कब्जा प्राप्त कर लिया है;

उधार लेने वाले ने नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड मे उपर्युक्त मंजूर की गई रकम की शेप रकम दिए जाने का श्रनुरोध किया है। उधार लेने वाले के नाम उक्त भूमि का हम्तातरण पत्र उक्त (विश्रेता का नाम निर्मिष्ण) तभी किया जाएगा जब गृह बन जाएगा।

इसके पक्षकारो द्वारा श्रौर उनके बीच निम्नलिखित करार किया जाता है :---

- (2) उधार लेने वाला नवमंगलीर पतन न्यासी बोर्ड के नाथ यह करार करता है कि वह:—
- (क) उस समय प्रवृत्त विनियमों के श्रनुसार लगाए गए ब्याज सहित क० (यहां मंजूर की गई पूरी रक्म लिखिए) की उक्त रकम का ''' क० की ''' ''' (यहा मख्या भरे) मामिक किम्तों में नवमंगांलौर पत्तन न्यागी बोर्ट को प्रतिसंदाय ग्रापन वेतन में से करेगा। यह प्रतिसदाय ''' ''' माम से प्रथवा गृह पूरा होने के प्रवान्दर्ती मान से, इसमें से जो पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा श्रीर उधार लेन वाला एमी किस्तों की कटौती उसके मामिक वेतन, छुट्टो वेतन श्रीर विविद्य भते विलों में से करने के लिए नवमगलीर पत्तन न्यामी बोर्ड को प्राधिकृत करता है।
- (ख) उक्त गृह का निर्माण, प्रथम किस्त प्राप्त करने की तारीख से अठारह मास के भीतर या उस बढ़ाई गई अवधि के भोतर जो नवमगलौर पत्तन न्यामी बोर्ड अधिकथित करे, उस अनुमोदित नक्षों और उन जिनिवेंकों के अनुमार पूरा करेगा, जिनके आधार पर अधिम की रहम की सगणना की गई है और एउ मज़र की गई है और गृह पूरा हो जाने की तारीख से तीन मास की अवधि के भीतर अपने पक्ष में आवश्यक अभिहम्नातरण पत्न या हस्तानरण पत्न आपन करेगा।
- (ग) यदि गृह बनाने के लिए वस्तुतः दी गई रकम उधार लेने वाले द्वारा प्राप्त की गई रकम से कम है तो वह उनके श्रन्तर का नथमगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त प्रतिसदाय करगा।

- (घ) ज्यो ही गृह तन जाता है और उसके पक्ष में भावस्थक अभिह्स्तांतरण पा या ह्स्तांतरण पत्र निष्पादित हो जाते है, उधार लेने वाले को श्रम्मिम दी गई रकम के लिए श्रीर उक्त राज्य के लिए संदेय ब्याज के लिए भी प्रनिमृति के रूप में, उक्त भूमि स्रीर उस पर बनाए गए गृह को नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के पाग बंधक रखने के लिए उक्त विनिधमों द्वारा उपबंधित प्ररूप में दस्तावेण का निष्या-वन करेगा।
- (3) यदि उधार लेन बाला इसमें इसके पूर्व उपवेधित म्ल में उक्त गृह का निर्माण पूरा करने में ग्रसफल रहता है या श्रपने पक्ष में श्रावश्यक ग्रभिहस्तावरण पत्र या हस्तावरण पत्र कराने में या बंधक विलेख निष्पादित करने में धमफल रहता है या यदि उधार लेने वाला दिवालिया हो जाता है या नवंमगलीर पत्तन त्यामी बोर्ड की सेवा छोड़ देता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो ग्रिग्रिम की पूरी रकम उस पर लगने वाले ब्याज राहित नवमंगलौर पनात न्यासी बोर्ड को त्रन्त शोध्य और संदेश हो जाएगी और नवमंगलीर पत्तन न्यामी बोर्ड प्रपने ग्रन्थ श्राधनगरों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना इसके द्वारा अनुदत्त प्रतिभूति की वसूली के लिए कार्य-वाही करने का हकदार होगा।
- (4) नवंगगलीर पत्तन न्यामी बोर्ड को यह हक होगा। कि वह उक्त प्रग्रिप की शेष रक्षम श्रीर उस पर ब्याज िंसका संदाय उसकी (उधार लेन वाले की) सेवा-निवृत्ति के समय तक या यदि सेवा निवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नहीं किया गया है, उस संपूर्ण उपदान या उसके किसी विनिर्दिष्ट भाग में से वसूल करले जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।
- (5) नवमंगलौर पतन न्यासी बोर्ड के इस निमित किसी अन्य अधिकार पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, यदि कोई एकम उधार लंने वाले द्वारा नवमंगलौर पत्तन न्यासी बार्ड को लौटाई जानी है या संदेथ हो जाती है तो नवमगलीर पत्तन न्यासो बोर्ड उस रकम को भू-राजस्त्र की बकाया के रूप में वसूत करने का हक शर होगा।
- (6) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प गुल्क देना होगा उसे नवमंगलीर पनन न्यासी बोई देगा।

अनुसूची जिसाग उट्नेख ऊपर किया गया है* (भूमि का वर्णन करें)

इसके साध्यस्ताच्य उधार लेने वाले ने भौर नवमंगलीर पत्तन स्थासी बोर्ड क लिए धोर उनकी भ्रोर से ' ' ' ' ' ' ' कार्यालय के श्री : : : : ने इस पर ग्रंपने ग्रंपने हस्ताक्षर कर दिए है।

उक्त उधार लेने वाल ने

(उधार लेन वाले के हस्ताक्षर) (1) (साक्षी का नाम, पता और व्यवसाय)

| (2) की |) * • • • • • • उपस्थिति | मे | ं (मक्षीः हस्याधर | का नाम, किए | प्रका | श्रीर | व्यवसाय) |
|-----------|---|--------|----------------------|----------------|-------|-------|----------|
| | * | | | | | | |

(1) (माक्षी का नाम, पता भौर व्यवसाय (2)(गाश्री का चाम, पता और व्यवसाय) की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

> हस्ताक्षर (नवमंगलीर पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए स्रौर उनकी भ्रोर से)

प्ररूप सं० 5(ग) (विविधम ७ वेखिए)

बोर्ड के कर्मचारी द्वारा गृह बनाने के लिए अग्निम की पहली किस्त लेले के पूर्व उस दशा में निष्पादित किए जाने वाले करार का विशेष प्ररूप जिसमें उसने भूमि का ऋय श्रपने ही धन से किया है किन्तु भूमि का हक गृह बन जाने के पश्चान् उसे संकान होगा।

थह करार एक पक्षकार के रूप में श्री जो श्री का पुत्र है भ्रौर इस समय · · · · · · के रूप में सेवा कर रहा है (जिसे इसमें इसके पश्चात उधार लेने वाला कहा गया है ग्रौर जब तक कि ऐसा विषय या मदर्भ मे भ्रपवर्जित या उसके विरुद्ध नहीं हैं इसके धन्तर्गत उसके वारिस, निष्पादक, प्रशासक भौर विधिक प्रतिनिधि भी हैं), भौर दूसरे पक्षकार के रूप में नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड (जिसे उसमें भ्रागे निवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड कहा गया है ग्रीर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से भ्रपविर्जित या उसके विरुद्ध नहीं है इसके भ्रन्तर्गत उसके उत्तरवर्ती ग्रीर समनुदेशिती भी हैं), के बीच ग्राज तारीखको किया गथा।

उधार लेने वाले ने इससे उपाबद्ध प्रनुसूची में वर्णित श्रीरमें स्थित भूमि का(यहां विकेता का गाम सिखिए) से क्रय करने का करार किया है श्रीर प्रपने ही धन से उसके मूल्य का संदाय कर दिया है श्रीर उत्त भूमि का कब्का प्राप्त कर लिया है। उधार लेने वाला उक्त भूमि पर गृह बनाना चाहमा है भ्रीर उक्त ' ' ' ' विकेना का नाम निध्यिए) उधार नेने वाले के पन्न में उक्त भूमि का श्रिभिहस्तांतरण पत्न तभी निष्पादित करेगा जब गृह का निर्माण हो जाएगा। उधार लेने वाले ने नवमंगलीर पत्तन न्यासी कर्मचारी गृहों के निर्माण ग्रादि के लिए श्रग्रिम का अनुदान) विनियम, 1980 जिसे इसमें इसके पण्चान् 'उक्त विनियम' कहा गया है ग्रौर इसमें जहां संदर्भ से

^{*}यह उधार लेने वाला भरंगा।

इसके पक्षकारों द्वारा श्रौर उनके बीच निम्नलिखित करार किया जाता है:

- (2) उधार लेने वाला नवंमगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड के साथ करार करता है कि वह:
- (क) उस समय प्रवृत्त उक्त विनियम के भ्रनुसार लगाए गए ब्याज सहित · · · · · · · · · · · · ः कि (यहां मजूर की गई पूरी रकम लिखिए)

(पहा नेपूर का गर पूरा रकन लाखर)
की उकत रकम का है की (यहा संख्या भरे) मामिक किस्तों में नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को प्रतिमंदाय प्रपत्ने वेतन में से करेगा। यह प्रतिमंदाय माम मे प्रथवा गृह पूरा होने के अगले माम से, इसमें से जो भी पूर्वतर हो, प्रारंभ होगा और उधार लेने वाला ऐसी किस्नों की कटौती अपने मासिक बेतन, छुट्टी बेतन और निर्वाह भने बिलों में से करने के लिए नव-मंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को प्राधिकृत करता है।

(ख) उक्त गृह का निर्माण प्रथम किस्त प्राप्त करने की तारीख से भ्रटठ्रारह माम के भीतर या उस बढ़ाई गई भ्रवधि के भीतर जो नवसंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड श्रधिकथित करे, उस भ्रनुभोदित नक्षों और उन विनिर्देशों के श्रनुभार पूरा करेगा जिनके श्राधार पर अग्रिम की रकम की संगणना की गई है और वह मंजूर की गई है और गृह पूरा हो जाने की तारीख से तीन मास की श्रवधि के भीतर श्रपने पक्ष में श्रावश्यक श्रिमहस्तांतरण पत्न या हस्तांतरण पत्न प्राप्त करेगा।

- (ग) यदि गृह बनाने के लिए वस्तुतः दी गई रकम उधार लेने वाले द्वारा प्राप्ता की गई रकम से कम है तो वह शेष रकम का नवमगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त प्रति-मंवाय करेगा।
- (घ) ज्यों ही गृह बन जाता है ग्रौर उस के पक्ष में प्रावण्यक श्रिमहस्तांतरण पत्न या हस्तांतरण पत्न निष्पादित हों जाते हैं, उत्रार लेने वाले को ग्रिग्रिम दी गई रकम के लिए ग्रीर उक्त रकम के लिए संदेय ब्याज के लिए भी प्रतिभृति के रूप में, उक्त भूमि ग्रीर उस पर बनाए गए गृह को नवमंगलीर पत्तन न्यासी बोर्ड के पास बंधक रखने के लिए उक्त विनियमों द्वारा उपबंधित प्ररूप में दस्तावें ज का निष्पादन करेगा।
- (3) यदि उधार लेने बाला इममें इसके पूर्व उपबिधत रूप में उक्त गृह का निर्माण पूरा करने में अमफल रहता है या अपने पक्ष में आवश्यक अभिहम्नातरण पत्न या हस्तांतरण पत्न प्राप्त कराने में आवश्यक अभिहम्नातरण पत्न या हस्तांतरण पत्न प्राप्त कराने में या बधक पत्न निष्पादिन करने में अमफल रहता है या यदि उधार लेने वाला दिवालिया हो जाता है या नवमगलीर पत्तन न्यासी बोई की मेवा छोड़ देता है या उमकी मृत्यु हो जाती है तो अभिम की पूरी रकम उस पर लगने वाले ब्याज महित नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोई को तुरन्त शोध्य और संदेय हो जाएगी और नवमंगलौर प्रस्तन न्यामी बोई अपने अन्य अधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना इसके द्वारा अनुदत्त प्रातिभूति की वसूली के लिए कार्यनाही करने का हकदार होगा।
- (4) नवमंगलौर पत्तन न्यामी बोर्ड को यह हक होगा कि वह उक्त प्रश्निम की शेप रक्षम थौर उस पर ब्याज जिमका सदाय उसकी (उधार लेने वाले को) सेवानिवृत्ति के समय तब या यदि सेवानिवृत्ति से पूर्व उसकी मृत्यु हो गई है तो उस समय तक नही किया गया है, उस सपूर्ण उपदान या उपके किसी विनिद्धिष्ट भाग में से वसूल कर ले, जो उधार लेने वाले को मंजूर किया जाए।
- (5) नवमंगलीर पत्तन न्यामी बोर्ड के इस निमित किसी श्रन्य अधिकार पर प्रतिकूल प्रमाय डाले बिना, यदि कोई रकम उधार लेने बाले द्वारा नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को लौटाई जानी है या संदेय हो जाती है तो नवमंगलौर पत्तन न्यामी बोर्ड उस रकम को पूरा भू-राजस्य की बकाया के रूप में वसूल करने का हकदार होगा।
- (6) इस विलेख पर जो भी स्टाम्प गुल्क देना होगा उसे नवमंगलीर पत्तन न्यासी बोर्ड देगा।

म्रनुसूची जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है* (भूमि का वर्णन करें)

इसके साक्ष्यस्वरूप उधार लेने वाले ने श्रीर नवमंगलीर पत्तन न्यासी बोर्ड के लिए श्रीर उनकी श्रीर से..... ें इस पर श्रपने श्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

^{*}यह उधार लेने वाला **भ**रेगा।

| उक्त उधार | लेने वाले | ने | |
|-------------|------------------|-----------------|---|
| | | (उधार लेने वाले | के हस्ताक्षर) |
| (1) · · · · | · · · · (सक्षी | का नाम, पता | प्रौर व्यवसाय) |
| (2) | (स | क्षीकानाम, पता | ग्रौर व्यवमाय) |
| | में हस्ताक्षर वि | | |
| | | | |
| | | | 'कायालय क |
| শ্বী ''' | ने ⁻ | | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| | 4 | | |
| (1) | · · · · · · (स | क्षीकानाम, पता | ग्रीर व्यवसाय) |
| (2) | (स | क्षीका नाम, पता | भ्रोर व्यवसाय) |
| की उनस्थिति | में हस्ताक्षर ि | केए | |

हस्ताक्षर

(नवमंगलौर गत्तन न्यासी बोर्ड के लिए और उनकी श्रोर से)

प्ररूप सं० 6

[विनियम 7 (6) देखिए]

यह सबको ज्ञान हो कि मैं '''' जो '''' का पुत्र ग्रौर : : : जिले में : : : का निवासी हूं, ग्रौर इस समय ' ' ' में स्थायी ' ' ' के रुप में नियोजित हूं (जिसे इसमें इसके पश्चात् "प्रतिभू" कहा गया है), नव-मंगलीर पत्तन के न्यासी बोर्ड के प्रति (जिसे इसमें इसके पण्चात् नवमंलीर पत्तन न्यासी बोर्ड कहा गया है श्रीर जब तक कि ऐसा संदर्भ से श्रपवर्जित या उसके विरुद्ध नहीं है इसके भ्रन्तर्गत उनके उत्तरवर्ती और समनुदेशिती भी हैं,) ''''' रु० (केवल '''' रु०) की रकम का नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को संदाय करने के लिए वचन-बद्ध हूं ग्रौर दृढ्तापूर्वक श्राबद्ध हूं । यह संदाय पूर्णत: ग्रौर सही रूप में करने के लिए मैं, भ्रपने को, भ्रपने वारिसो, निष्पादकों, प्रशासकों श्रौर प्रतिनिधियों को इस विलेख द्वारा थुढ़तापूर्वक ग्राबद्ध करता हूं। इसके साक्ष्यस्वरूप मैं ग्राज • • • • • को इस पर भ्रपने हस्ताक्षर करता हूं । • • • • ने जो '''' का पुत्र श्रौर ''''' जिले में ····भा निवासी है श्रौर इस समय ····में श्रस्थायी/स्थायी ' ' के रूप में नियोजित है (जसे इसमें इसके पण्चात् "उधार लेने वाला" कहा गया है) (किन्तु जो ' ' ' को सेवानिवृत्त होने वाला है) भूमि का क्रय करने भ्रोर या नए गृह का निर्माण करने/विद्यमान गृह में ग्रावास का विस्तार करने/पहले बने गृह का ऋय करने के लिए '''' ह० भ्रय्रिम के लिए नवमंगलौर पत्तन न्यासी **बोर्ड** को ग्रावेदन किया है।

नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड ने नवमंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (गृहों के निर्माण ग्रादि के लिए ग्रग्रिम का ग्रनुदान) विनियम, 1980 जिसे इसमें इसके पश्चात् "उक्त विनियम" कहा गया है, श्रधीन '''' रूपये (केवल ''' रु०) का संदाय मंजूर कर दिया है।

उधार लेने वाले ने उक्त रकम का ''' किस्तों में प्रतिसंदाय करने का वचनबंध किया है भौर उधार लेने वाले ने यह भी वचनबंध किया है कि वह उक्त रकम की सहायता से निर्मित/क्रय किए गए गृह को बंधक कर देगा और उक्त विनियमों के उपबवधों का श्रनुपालन करेगा । उधार लेने वाले को पूर्वोक्त श्रिम देने के लिए नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड द्वारा करार के प्रतिफलस्वरूप प्रतिभू ने उपर्युक्त बंधपत्न नीचे लिखी शतों पर निष्पादित करने का करार किया है ।

उक्त बाध्यता की शर्त यह है कि यदि उक्त उधार लेने वाला उक्त ' में या किसी भ्रन्य कार्यालय में नियो-जित रहने के दौरान नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को देय पूर्वोक्त श्रग्रिम की रकम का नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को तब तक सम्यक् ग्रौर नियमित रूप मे किस्तो में संदाय करता है या कराता है जब तक कि ॱॱॱॱ रु० (केवल ···· रु०) की उक्त -राणि का सम्यक् रूप से भुगतान नहीं हो जाता या वह उक्त निर्मित / ऋय किए गए गृह का नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को बंधक कर देता है, जो भी पूर्वतर हो, तो यह बंधपत्र शून्य हो जाएगा भ्रन्यथा यह पूर्णतः प्रवृत्त श्रौर बलग्रील रहेगा । किन्तु यदि उधार लेने वाले की मृत्यु हो जाती है या वह दिवालिया हो जाता है या किसी समय नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड की सेवा में नहीं रहता है तो '''' हु (केवल '''' हु) का उक्त पूरा मूल धन या उसका उतना भाग जितना शेष रह जात है तथा उक्त मृल धन पर देय ब्याज, जो उस समय भ्रसंदत्त रहता है, नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड को तुरन्त शोध्य श्रौर संदेय हो जाएगा ग्रौर इस बंधपन्न के ग्राधार पर प्रतिभू से एक किस्त में बसूल किया जा सकेगा।

प्रतिभू ने जो बाध्यता स्वीकार की है, वह नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड द्वारा समय बढ़ाये जाने या उक्त उधार लेने वाले के प्रति कोई भ्रन्य उदारता बरते जाने के कारण न तो उन्मोचित होगी श्रीर न किमी प्रकार प्रभावित होगी।

नवमंगलौर पत्तन न्यासी बोर्ड इस विलेख की बाबत संदेय स्टाम्प शुल्क देगा ।

उक्त ''''ने

- (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय) (प्रतिभू के हस्ताक्षर)
- (2) (द्वितीय साक्षी का नाम, पदनाम · · · · · · · · पता श्रौर व्यवसाय) कार्यालय · · · · · ·

की उपस्थिति मे हस्ताक्षर किए श्रीर परिदान किया ।
....कार्यालय के श्रीकार्यालय

- (1) (प्रथम साक्षी का नाम, पता श्रौर व्यवसाय)
- (2) दितीय साक्षी का नाम,पता ग्रीर व्यवसाय)

की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए।

(नवमंगलीर पत्नन न्यासी बोर्ड के लिए श्रौर उसकी श्रोर से)

प्ररूप सं० 7

(विनियम 10 (घ) देखिए)

गृह निर्माण ग्रमिम के लिए प्रनिहस्तांतरण पत्न का प्रक्ष यह प्रनिहस्तांतरण बिलेख, एक पक्षकार के रूप में न्यासी बोर्ड (जिसे इसमें इसके पण्चात् बंधकदार कहा गया है ग्रौर जब तक कि ऐसा संदर्भ से ग्रपबर्जित या उसके विरुद्ध नहीं है इसके ग्रन्तर्गत उसके उत्तरवर्ती ग्रौर समनुदेशिती भी हैं) ग्रौर दूसरे पक्षकार के रूप मेंके (जिसे इसमें इसके पण्चात् बंधककर्ती कहा गया है ग्रौर जब तक कि ऐसा विषय या संदर्भ से ग्रपबर्जित या उसके विरुद्ध नहीं है उसके ग्रंतर्गत उसके बारिस, निष्पादक, प्रशासक ग्रौर सम-नदेशिती भी है,) के बीच ग्राज तारीख को किया गया है।

एक पक्षकार के रूप में बंधकर्ता श्रौर दूसरे पक्षकार के रूप में बंधकदार के बीच तारीख ' ' को किए गए बंधक करार द्वारा जो ' ' में पुस्तक सं० ' ' , जिल्द सं० ' ' पृष्ट सं० ' ' ' तक सं० ' ' तक सं० ' ' तक सं० ' ' के रूप में ' ' ' के लिए, (जिमे इसमें मृल करार कहा गया है) रजिम्द्रीकृत है, बंधकर्ता ने ' ' ' में स्थित सम्पत्ति का, जिसका विस्तृत वर्णन इसमे श्रागे लिखी श्रनुसूची में दिया गया है, बंधक बंधकर्ता को दिए गए ' ' रु० के श्रिग्रम को प्रतिभूत करने के लिए कर दिया गया है।

मल करार की प्रतिभूति पर शोध्य श्रौर देथ सब धन का पूरा संधाय कर दिया गया है और तदनुभार बंधकर्ता के अनु-रोध पर बंधकदार ने इसमे इसके पण्चात् श्रंतर्विष्ट रूप मे बंधक परिसर का प्रतिहस्तांतरण विलेख निष्पादित करने का करार किया है। अब यह विलेख इस बात का साक्षी है कि उक्त करार के ब्रनुसरण में श्रौर उपर्युक्त के प्रतिफलस्वरूप बंधकदार ''''में स्थित उक्त सम्पूर्ण भूखण्ड का, जो मुल करार में समाविष्ट है श्रौर जिसका विस्तृत वर्णन इसमें ग्रागे लिखी ग्रनुसूची में किया गया है, उसके उन प्रधि-कारों, सुखावारों श्रौर अनुतग्नकों सहित, जो मूल करार में उल्लिखित है तथा मूल करार के ग्राधार पर उक्त परिसर में, से या पर बंधात्दार की सभी सम्पदा, श्रधिकार, हक, हित, सम्पत्ति दावे और मांग का इसके द्वारा बंधककर्ता को श्रनुदान, समनुदेशन श्रीर प्रतिहस्तांतरण करता है । इसके द्वारा बंधककर्ता को ग्रौर उसके उपयोग के लिए जिस परिसर का ग्रनदान, समनुदेशन श्रीर प्रतिहस्तांतरण किया जाना भ्रभि-व्यक्त है, उसे बंधकर्ना उक्त भूल करार द्वारा प्रतिभृत किए जाने के लिए ग्राणियत सभी धन ग्रीर उक्त धन या उसके किसी भाग के लिए या उसके संबंध में ग्रथवा मूल करार के या परिसर की बाबत किसी चीज के संबंध में सभी श्रनुयोजनो, वादो, लेखाश्रो, दावों श्रौर मांगों से निर्मुक्त रूप में प्राप्त ग्रौर धारण करेगा । बंधकदार इसके द्वारा बध-कर्ता से प्रसंविदा करता है कि उसने (बंधकदार ने) न तो ऐसी कोई बात की है, न जानबूझ कर सहन की है, ग्रीर न

उसमें पक्षकार या संसर्गी रहा है जिससे उक्ष परिसर या उसका कोई भाग हक, सम्पदा की बाबत या श्रन्थथा ग्रिधि-क्षिप्त, विक्लंगमित या प्रभावित होता है या किया जाता है। इसके साध्य स्वरूप बंधकदार ने अपनी प्रोर से ' · · · · वारा इस पर ऊपर सर्वप्रथम लिखी तारीख को हम्साक्षर करवा दिए है।

श्रनुसूची जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है। बंधकदार ''''के लिए भ्रौर उनकी श्रोर से''''ने (1) ''''''(प्रथम साक्षी का नाम, पता श्रीर व्यवसाय)

(2) · · · · · · · · · · · (द्वितीय मक्षी का नाम, पता ग्रौर व्यवसाय)

की उपस्थिति में (नवमंगलौर पत्तन न्यामी बोर्ड के लिए सम्माक्षर किए। भौर उमकी स्रोर से)

ह्यान दें: प्रावेदकों को सलाह दी जाती है कि इस दस्तायेज पर स्टाम्प णुल्क देने के पूर्व यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्या स्टाम्प शुल्क के संदाय से कोई छूट मित सकती है, राज्य सरकार से सम्पर्क कर लें।

प्ररूप सं० 8

(विनियम 9 (ख) देखिए)

भारतीय बीमा निगम को उन गृहों की जिनका निर्माण/ क्रय इस नियम के ग्रधीन श्रनुक्रेय भवन निर्माण श्रिप्रम से किया गया है, बीमा पालिसियों में बोर्ड के हिन की सूचना देने बाले पन्न का प्ररूप।

प्रेषकः ---सेवामें

> (त्रितीय मलाहकार घौर मुख्य लेखा श्रधिकारी/श्रध्यक्ष/ विभागाध्यक्ष के माध्यम से)

महोवय,

श्रापको सूचना दी जाती है कि नवमंगलौर पसन न्याम श्रापके निगम में प्राप्त गृह की बीमा पालिसी मं० में हितबद्ध है। भ्रापसे श्रनुरोध है कि श्राप पालिसी में निम्न लिखित श्रामय का खण्ड जोड़ने की कुपा करें।

बीमा पालिसी में जोड़े जाने वाले खण्डों का प्ररूप

1. यह घोषणा की जाती है स्रौर करार किया जाता है कि श्रीने (जो उस भवन का स्वामी है जिसका नगर पालिका संहै) (जिसे इसमें इसके पश्चात् इस पालिमी की अनुसूची में बीमाकृत कहा गया है) गृह बनाने के लिए, लिए गए अग्निम की प्रतिमृति के स्प मे गृह नवमंगलौर पत्तन न्याम को बंधक कर दिया है। यह भी घोषणा की जाती है स्रौर करार किया जाता है कि नत्रमंगलौर पत्तन न्याम हो हितबद्ध है जो यदि यह पृष्ठांकन न होता नो उक्त श्री(इन पालिसी के

प्रवीन बीमाकृत) को उक्त गृह की हानि या उनको हुए नुकसान की बाबन (जिस हानि या नुकसान की प्रतिपूर्ति, मरम्मत, यथापूर्वकरण या प्रतिस्थापन द्वारा नही की गई है) संदेय होगा । ऐसा धन नवमंगलौर पतन न्याम को उस समय तक विया जाएगा, जब नक कि वह इस गृह का बंधक-दार हैं। उसकी रसीद इस बान का प्रमाण होगी कि ऐसी हानि या नुकसान की बाबन निगम ने पूरा भीर श्रंतिम भुग-तान कर दिया है।

2. इस पूष्ठांकन हारा श्रिभगक्त रूप से जो करार किया गया है, उसके मिवाय इसकी किसी भी बात से बीमा- इत या निगम के, इस पालिसी के श्रधीन या संबंध में भिध- कार या दायित्व का श्रथवा इस पालिसी के किसी निबंधन, उपबंध या शर्त का न तो उपान्तरण होगा श्रीर न उस पर प्रभाव पहेगा।

स्थान---

तारीख--

म≢दीय,

घप्रेषित । कृपया इस पत्र के प्राप्त होने की ग्राभिस्वीकृति दें । यह भी अनुरोध है कि जब कभी इस पालिसी के मधीन किसी दाने का संदाय किया जाए तब धौर यदि नबीकरण के लिए कालिक रूप से प्रीमिश्म का संदाय नहीं किया जाता है तो उसकी भी सूचना मुझे देने की कृपा करें।

(नेखा प्रधिकारी/विभागाध्यक्ष का पदनाम)

स्थान--

तारीख--

राज्य भावास बोर्ड में क्रय की गई सम्पत्ति के बंधक के लिए राज्य भावास बोर्ड द्वारा दिया जाने वाला सहमति पन्न। प्रेषक—

भ्रध्यक्ष राज्य भ्रावास बोर्ड

सेवा में.

भ्रध्यक्ष, नवमंगलौर पत्तन न्याम, मंगलौर-575010

महोदय,

निर्देश :---राज्य प्रावास बोर्ड से कय की गई सम्पत्तियों का बंधक किया जाना।

हम यह वजनबद्ध करने के लिए सहमत है कि यदि उस सम्पत्ति/फ्लेट/गृह सं० का, जो श्री ... ने राज्य भावास बोर्ड से क्रय किया है श्रीर जिसका पहले बने गृह/फ्लेट श्रादि के क्रय के लिए उधार लेने के उद्देश्य से नव-मंगलौर पत्तन न्यास को बंधक करने की श्रव प्रस्थापना है, श्रावटन की तारीख से पांच/दस वर्ष के भीतर किसी कारण से नवमंगलौर पत्तन न्यान द्वारा विक्रय किया जाता है श्रीर यदि हम कोना द्वारा निष्नादिन विक्रय/पट्टा तथा विक्रय करारों के श्रनुसार उस सम्पत्ति का गुनः कर एरने के श्रपने विकल्पाधिकार का प्रयोग करने है, तो हम उस बकाया रकम का, 1332 GI/80—7

जो बंधक उधार के मद्दे नवमंगलीर पत्तन न्यास को देय हो ग्रीर ऐसी ग्रतिरिक्त राशि का जो भ्रावेदक द्वारा नवमंगलीर पत्तन न्याम के पक्ष में निष्पादिन किए जाने वाले बंधक विलेख के निबंधनों के भ्रनुमार देय हो, संदाय करेंगे अथवा भ्रानुकल्पतः, हम नवमंगलीर पत्तन न्यास को सम्पत्ति के साथ ऐसा संव्यवहार जो भ्रावश्यक हो जाए भ्रीर जिसके भ्रंतर्गत उसका विकय भी है, करने की भ्रनुजा देगा मानों उक्त करार के मुसंगत खण्डों में ऐसा कोई भ्रनुबन्ध नहीं है कि यदि भ्रावटन की तारीख से पांच/दस वर्ष के भीतर उसका विकय किया जाता है तो वह प्रथमतः राज्य भ्रावास बोर्ड को प्रस्थापित किया जाएगा।

घध्यक्ष

राज्य आवास बोर्ड से क्षय की गई सम्पत्ति के बंधक के लिए राज्य आवास बोर्ड द्वारा विया जाने वाला प्रसाणपत

उपार्वध-ख

प्रेषक:

भध्यक

राज्य आवास बोई,

प्रमाणित किया जाता है कि भूखण्ड/फ्लैट/गृह/सं० '''' के ग्राबंटिती श्री '''' ने उक्त सम्पति की पुरी ग्रनस्तिम लागत '''ठ० (केवल ''''रुपए) का भुगतान कर दिया है। इसकी सूचना इस कार्यालय के तारीख ···के श्राबंटन ग्रावेश सं० · · · मे (जो भावंटिती को सम्बोधित है) दे दी गई है तथा उसको भूखण्ड/फ्लैट/गृह का कब्जा (तारीख) ** भो दे विया गया था। राज्य मावास बोर्ड उस भृषाण्ड / गृह / फुलैट सं० : : : का हक ग्राबंदन की तारीख से 5 वर्ष/ 10 वर्ष की भवधि पूरी होने पर और यदि उसकी श्रंतिम कीमत तत्पम्चात् नियत की जाती है तो लागत में ग्रन्तर, यदि कोई है, का भुगतान कर दिए जाने पर ग्राबंटिनी की निश्चित रूप से ग्रंनरित कर देगा। उक्त भृखण्ड पर भवन निर्माण का/उक्त पहले बने गृह/फुलैट के खर्च की पूर्ति के लिए उधार जुटाने के प्रयोजन से उकत सम्पति के नवमंगलौर पत्तन न्यास को बंधक किए जाने पर राज्य भावास बोर्ड को कोई भापति नहीं है।

म्रह्यक्ष

रिजस्ट्रीकृत सहकारी सोसाइटियों से पहले बने गृह /फ्लैट के क्रय की दशा में निष्पादित किए जाने वाले स्वीय बंधपत्न का प्ररूप

(स्वीय बंधपत्न)

 करने के लिए वचनबद्ध हूं भीर दृढ़तापूर्वक भावत हूं। यह संदाय पूर्णत: भीर सही रूप में करने के लिए मैं भ्रपने को, भ्रपने वारिसों, निष्पादकों, प्रशासकों भीर विधिक प्रतिनिधियों को इस विलेख डारा दृढ़तापूर्वक भावत करता हूं।

सारीख ' को इस पर हस्ताक्षर किए गए।

उक्त धाबद्ध व्यक्ति ने ं ं में स्थित ं ं नामक भवन में एक धावासिक फ्लैंट क्रय करने के प्रयोजन के लिए ं ं रुपए के उधार के लिए वोई को आवेदन किया है। उक्त भवन का विस्तृत वर्णन इसमें आगे लिखी अनूमूची में किया गया है और यह भवन शीझ ही ं ं सिमाइटी लिमिटेड को अंतरित किया जाने वाला है जो महकारी सोसायटी धांधनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत सोसाइटी है और जिसका रजिस्ट्रीकृत कार्यालय ं में हैं (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'सोसायटी'' कहा गया है)। बोई ने यह उधार अन्य बातों के साथ-साथ इन निबंधनों भीर शर्तों पर सम्यक रूप से मंजूर कर दिया है कि बाध्यताधारी इसमें आगे अंतर्विष्ट रीति से एक बंधपत्न बोई के पक्ष में निष्पादित करें।

इस बंधपन्न की शर्त यह है कि यह बंधपन्न शून्य हो जाएगा, यदि उक्त बाध्यताधारी बोर्ड को तारीखसे ····वर्ष की भ्रविध के भीतर उक्त···रु० की राशि का सम्यक् रूप से संदाय ६० की समान मासिक किस्तों में प्रत्येक क्लैण्डर मास के प्रथम सप्ताह में करता है तो ऐसी प्रथम किस्त का संदाय 19 ... के ····के प्रथम सप्ताह में किया जाएगा भौर पश्चातुवर्ती किस्तों का संदाय तत्पश्चात् प्रत्येक ग्रागामी क्लैण्डर मास के प्रथम सप्ताह में किया जाएगा और जैसा इसमें इसके पूर्व उपबंध है उसके अनुसार उक्त उधार के मूलधन का नियमित किस्तों में संदाय करने के पश्चात् उक्त बाध्यताधारी बोर्ड को उक्त ६० के उधार के घटते हुए ग्रतिणेष के ज्याज की रकम का भुगतान होने तक उसका सम्यक रूप से संदाय ' ' ' वर्ष की ग्रतिरिक्त ग्रवधि के भीतर ' ' ' प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से करेगा। ऐसे व्याज का संदाय रु० की ' 'समान मासिक किस्तों में किया जाएगा। सम्पूर्ण उधार धौर उम पर ब्याज का प्रतिदाय ता० ... से वर्ष की भ्रवधि के भीतर किया जाएगा। परन्तु यदि बाध्य-ताधारी मूलधन की श्रौर / या ब्याज की किसी किस्त का नियत तारीख पर संदाय करने में श्रसफल रहता है तो ऐसे प्रत्येक मामले में बकाया मुलधन या व्याज की एैं। किस्त की रकम पर '''प्रतिशत प्रतिवर्ष की ब्याज की उच्चतर दर से न्याज लगेगा भीर ब्याज की ऐसी प्रत्येक किस्त में उसी श्रनुपात में वृद्धि कर दी जाएगी । परन्तु यह और कि इसकी किसी भी बात का यह प्रर्थ नहीं लगाया जाएगा कि उससे मुलधन धौर ब्याज की उक्त किस्तों का उनके लिए नियत तारीखों पर संदाय करने का उक्त बाध्य-ताधारी का दायित्व अथवा अन्यथा बोर्ड का कोई अधिकार या उपचार गिथिल होता है।

(ख) उन्त उधार की सम्पूर्ण रकम का उपयोग इस विलेख की तारीख से क मास के भीतर ें भौर जिसका विस्तृत वर्णन इसमें आगे दी गई अनुसूची में किया गया है, आवामिक फ्लेंट का क्य करने में और सोमाइटी के ऐसे शेयरों और/या डिवेंचरों का जिनका उक्त मोसाइटी की सदस्यता की अर्हता के लिए क्रय किया जाना अपेक्षित है क्रय करने में करेगा और उक्त फ्लेंट के क्रय के पूरे होने से संबंधित सभी अपेक्षित हक—दस्तावेजों और अर्हता के रूप में क्रय किए जाने के लिए अपेक्षित शेयर/डिवेंचर बोर्ड को अस्तुत करेगा!

- (ख) बाध्यताधारी के पक्ष में गृह या भूखंड के फ्रांनरण का निष्पादन कर दिए जाने पर वह उसे बोर्ड से प्राप्त किए गए उधार के लिए प्रतिभूति के रूप में बोर्ड के पास बंधक कर देगा।
- (ग) यदि उक्त फ्लैट श्रीर शेयरो/डिबेंचरों की, जिनका पूर्वोक्त रूप में क्रय किया जाना श्रपेक्षित है, वास्त-विक कीमत उक्त उधार की रक्षम से कम है नो वह उस श्राधिक्य का बोर्ड को तुरन्त प्रति-दाय करेगा।
- (घ) वह बोर्ड की लिखिन पूर्व सहमित के बिना उक्त फ्लैंट या उसमें किसी हिन का न तो झंतरण, समनुदेशन, उप-पट्टा करेगा, ना उसका कब्जा छोड़ेगा और न उक्त शेयरों/डिबेंचरों का बोर्ड की पूर्व लिखित सहमित के बिना श्रंतरण या भ्रन्यथा भ्रन्य संकामण करेगा:
- †(ङ) जब तक उक्त उधार श्रीर ब्याज भाग बकाया रहता है श्रीर यदि की जाए तो वह उक्त शेय hæk læ kh समुचित रूप से हस्ताक्षरित कोरा llab læ kæk उक्त उधार की श्रतिरिक्त प्रतिभूति (ईमेध्र) बोर्ड को सींप वेगा।

बाध्यताधारी निम्नलिखिन करार करता है:--- ::

- 1. बाध्यताधारी द्वारा बोर्ड को तत्ममय देय उनत उर्हें या उमका श्रतिशेष तथा इस विलेख के ग्रधीन देय ग्रन्य सभा धन निम्नलिखित घटनाश्रों में में किमी के होने पर तुरन्त संदेय हो जाएगा:—
 - (क) यदि बाध्यताधारी किसी किस्त का संदाय या मूज धन का प्रति मदाय, जब वह शोध्य और नदेय हो जाता है, उसके लिए नियन तारीख को संदाय करने में श्रसफल रहता है।

गिह केवल उन फ्लैट को लागू होगा जो उस भवन में कय किए गए जिसका स्वामिस्व सहकारी श्रावास सोसाइटी के पास है।

- (ख) यदि बाध्यताधारी ब्याज की किसी किस्त का नियत तारीख को, इसमें इसके पूर्व उपबंधित रूप में संदाय करने में व्यतिक्रम करता है।
- (ग) यदि बाध्यताधारी की किसी संपत्ति पर कोई कर-स्थम् या निष्पादन उद्गृहीत किया जाता है या उसका रिसीवर नियुक्त किया जाता है।
- (घ) यदि वाध्यताधारी उक्त प्रसंविदाग्रों या उपबंधों का, जिनका उसकी ग्रोर से पालन किया जाना है, भग करना है।
- (ङ) यदि बाध्यताधारी की मृत्यु हो जाती है या वह बोर्ड की सेवा से निवृत्त हो जाता है या उसकी सेवा में नहीं रहता है।
- (च) यदि बाध्यताधारी दिवालिया न्यायनिर्णीत किए जाने के लिए याचिका प्रस्तुत करता है या दिवा-लिया न्यायनिर्णीत कर दिया जाता है।
- 2. बोर्ड को प्रतिमास बाध्यताधारी के वेतन में से मासिक किस्तों की रकम की कटौती करने तथा उसे मूलधन या ब्याज के प्रतिसंदाय के मासिक किस्तों में विनियोजित करने का पूर्ण ग्रिधिकार ग्रौर स्वतंवता होगी ग्रौर उपर्युक्त प्रयोजनों के लिए बाध्यताधारी बोर्ड को ऐसी कटौतियां बाध्यताधारी की किसी ग्रितिरक्त ग्रन्य सहमित या संपत्ति की ग्रावश्यकता के बिना करने के लिए ग्रप्रतिसंहरणीय रूप से प्राधिकृत करता है।
- 3. बाध्यताधारी के सेवानिवृत्त होने या उसकी सेवा-निवृत्ति के पूर्व मृत्यु हो जाने की दशा में, बोर्ड को हक होगा कि वह उक्त उधार का संपूर्ण असंदत्त अतिशेष जो ऐसी सेवानिवृत्त या मृत्यु के समय असंदत्त रहता है और उस पर सभी ब्याज, जिसका संदाय नहीं किया गया है उस उप-दान से, यदि कोई हो, वसूल कर ले जो आबद्ध व्यक्ति को लागु सेवा नियमों के अधीन उसे मंजूर की जाए।
- 4. जब कभी इस विलेख के श्रधीन बाध्यताधारी द्वारा शोध्य श्रौर संदेय मूलधन या ब्याज की कोई किस्त या कोई अन्य राशि बकाया होगी, बोर्ड को उसे भू-राजस्व की बकाया रकम के रूप में वसूल करने का हक होगा। परन्तु यह श्रौर कि यह खंड बोर्ड के किन्हीं अन्य श्रधिकारों, शक्ति श्रौर उपचारों को प्रभावित नहीं करेगा।

इसके साक्ष्यस्वरूप ऊपर वर्णित बाध्यताधारी ने ऊपर सर्वप्रथम लिखित तारीख को इस पर ग्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

| ग्रनुसूची | जिसका | ऊपर | उल्लेख | किया ग | ाया है। |
|-----------|----------------|------------|-----------|-----------|----------------|
| बाध्यत | धा री १ | श्री · · · | • • • • • | • • • • • | · · · · · · ने |
| | | | | | • • • |
| | | | | | |

णित में हस्ताक्षर किए ग्रौर परिदान किया । े ः सहकारी सोसाइटी से पहले बने गृह/फ्लैट के में निष्पाृदित किए जाने वाले प्रतिभूति बंध-

(प्रतिभूति बंधपत्र)

हम, 1

(विभाग ग्रादि) के हैं, स्वयं को के लिए (जिसे इसमें इसके पश्चात् बाध्यताधारी कहा गया है) प्रतिभूति घोषित करते हैं ग्रौर यह प्रत्याभूति देते हैं कि बाध्यताधारी वह सभी कार्य करेगा जिसको करने का वचनबद्ध उसने बोर्ड के पक्ष में उसके द्वारा निष्पादित तारीख: '''के बंधपत्र के म्रधीन किया है। हम बोर्ड को ए० (केवल : : : : : : रुपए) की राशि का, जो उक्त बंधपत्र के ग्रधीन बाध्यताधारी द्वारा शोध्य ग्रौर संदेय राशि है, केवल ऐसी राणि का जो बोर्ड उसको (बोर्ड को) बाध्यता-धारी के व्यक्तिकम के कारण हुई किसी हानि या नुकसान की पूर्ति के लिए पर्याप्त समझे, संदाय करने के लिए स्वयं को अपने वारिसों भ्रौर निष्पादकों को भ्राबद्ध करते हैं। हम यह करार भी कहते है कि बोर्ड, किसी अन्य अधिकार श्रौर उपचार पर प्रतिकुल प्रभाव डाले बिना, उक्त राशि को भू-राजस्व की बकाया के रूप में हमसे वसूल कर सकेगा श्रौर हम यह करार भी करते हैं कि बाध्यताधारी के प्रति उक्त बन्धपत्न के प्रवर्तन में किसी प्रविरति या किसी ग्रन्थ उदारता या उक्त बंधपत्न के निबंधनों में किसी परिवर्तन से या बाध्यताधारी को दिए गए किसी समय से या ऐसी किन्हीं ग्रन्य शर्तों या परिस्थितियों से जिनके ग्रधीन कोई प्रतिभ् विधि की दृष्टि से उन्मोचित हो जाएगा, हम उक्त रकम का संदाय करने के अपने दायित्व से उन्मोचित नहीं होंगे। भ्रौर इस बन्धपत्र के प्रवर्तन के प्रयोजन के लिए इस बंधपत्र के

ग्राज तारीख ' ' ' को श्री ' ' ' की जिपस्थित में (1) ' ' ' ' विभाग / कार्यालय के श्री ' ' ' विभाग / कार्यालय के श्री ' ' ' ' ने ग्रीर ' ' ' विभाग / कार्यालय के श्री ' ' ' ' ' ने इस पर हस्ताक्षर किए हैं। प्रतिभू, जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं

ग्रधीन हमारा दायित्व मूल ऋणी के रूप में होगा ग्रौर वह

बाध्यताधारी के दायित्व के साथ संयुक्ततः ग्रीर पृथकत:

गृह बनाने या उसमें परिवर्धन करने की श्रनुज्ञा के लिए विहित प्राधिकारी को रिपोर्ट/श्रावेदन का प्ररूप महोदय,

भूमि

होगा ।

- ग्रवस्थिति (सर्वेक्षण सं० ग्राम, जिला, प्रदेश)
- 2. क्षेत्रफल
- 3. लागत

4. भवन सामग्री ग्रादि:---

- 1. ईंट (दर/परिमाण/लागत)
- 2. सीमेंट (दर/परिमाण/लागत)
- 3. लोहा ग्रौर इस्पात (दर/परिमाण/लागत)
- 4. लकड़ी (दर/परिमाण/लागत)
- 5. स्वच्छता फिटिंग (लागत)
- 6. विद्युत् फिटिंग (लागत)
- 7. ब्रन्य कोई विशेष फिटिंग (लागत)
- 8. श्रम प्रभार
- 9. ग्रन्य प्रभार, यदि कोई हों

भूमि श्रौर भवन की कुल लागत

2. निर्माण कार्य का पर्यवेक्षण मैं स्वयं करूंगा।

निर्माण कार्य* दारा किया जाएगा।

ठेकेदार के साथ मेरा कोई सरकारी व्यवहार नहीं है श्रौर न मैंने ठेकेदार के साथ कोई सरकारी व्यवहार किया है / किया था श्रौर विगत काल में उसके साथ सरकारी व्यवहार को / उसके साथ मेरे व्यवहार की प्रकृति निम्निलिखित है / थी।

प्रस्तावित सन्तिर्माण की लागत निम्नलिखित रूप से पूरी की जाएगी—(1) निजी वचत खाते (2) उधार/श्रिग्रिम पूर्ण विवरण सहित (3) श्रन्य स्रोत पूर्ण विवरण सहित। भवदीय

गृह के पूरा बन जाने/गृह का विस्तार पूरा हो जाने के पश्चात् विहित प्राधिकारी को रिपोर्ट का प्ररूप

महोदय,

मैंने श्रपने तारीख के पत्न सं०, द्वारा सूचना दी थी कि मैं एक गृह बनाना चाहना हूं। मुझे गृह बनाने के लिए श्रादेश सं० तारीख द्वारा श्रानुज्ञा दी गई थी! श्रब वह गृह बनकर पूरा हो गया है श्रीर मैं दारा दारा सम्यक्नः प्रमाणित मूल्यांकन रिपोर्ट संलग्न कर रहा हूं।

भवदीय

(हस्ताक्षर)

मूल्यांकन रिपोर्ट

मैं/हम प्रमाणित करता हूं/करते है कि मैंने/हमने गृह सं ' का का जो श्री/श्रीमती क्या मेंने/हमने सिन्निर्मित किया गया है, मूल्यांकन किया है ग्रौर मैंने/हमने

*ठेकेदार का नाम ग्रौर कारबार का स्थान लिखिए।

उस गृह के मूल्य का जो प्राक्कलन किया है वह निम्नलिखित शीर्षों के ग्रधीन इस प्रकार है:—

शीर्ष

लागत

1. ईट

इ० पै०

- 2. सीमेट
- 3. लोहा भौर इस्पात
- 4. लकडी
- 5. स्वच्छता फिटिंग
- 6. विद्युत् फिटिंग
- 7. सभी अन्य विशेष फिटिंग
- 8. श्रम प्रभार
- 9. सभी ग्रन्य प्रभार

गृह की कुल लागत

तारीख:

मूल्यांकन प्राधिकारी के हस्ताक्षर

- मिविल इंजीनियरी की कोई फर्म या ख्याति प्राप्त सिविल इंजीनियर।
- थ यहां गृह का ब्यौरा लिखिए।
- ³ यहां कर्मचारी का नाम, ग्रादि लिखिए। [पी०डब्ज्यू०/पी०ई०एल-98/79]

(पत्तन पक्ष)

सा० का० नि० 156 (म्र):—केन्द्रीय सरकार, महा-पत्तन न्यास म्रधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 28 के साथ पठित धारा 126 द्वारा प्रदत्त मक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित विनियम बनाती है, म्रथीत्:—

- संक्षिप्त नाम ग्रौर प्रारंभ :--(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम मंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (भर्ती, ज्येष्ठता ग्रौर प्रोन्नित) विनियम, 1980 है।
 - (2) ये 1 ग्रप्रैल, 1980 को प्रवृत्त होंगे।
- 2. लागू होना :—-ये विनियम बोर्ड के ग्रधीन सभी पदों को, ग्रधिनियम की धारा 24 की उपधारा (1) के खंड (क) के ग्रंतर्गत पदों को छोड़कर, लागू होंगे।
- 3. परिभाषाएं :--इन विनियमों में जब तक कि संदर्भ से ग्रन्थया श्रपेक्षित न हो,--
 - (क) "अधिनियम" से महापत्तन न्यास अधिनियम 1963 (1963 का 38) अभिप्रेत है;
 - (ख) किसी श्रेणी या पद के संबंध में "नियुक्ति प्र कारी" से ऐसा प्राधिकारी ग्रिभिप्रेत हैं े श्रेणी में या पद पर नियुक्ति करने नवमंगलौर पत्तन कर्मचारी (वर्गीकर" ग्रौर ग्रपील) विनियम, 1980 के . हैं;

- (ग) ''बोर्ड,'' ''ग्रध्यक्ष'' ''उपाध्यक्ष'' ग्रौर ''विभाग का प्रधान'' का वहीं ग्रर्थ है जो उनका ग्रधिनियम में है;
- (घ) "काडर" से, किसी पृथक इकाई के रूप में मंजूर की गई किसी सेवा या सेवक के किसी भाग की सदस्य संख्या, अभिप्रेत हैं। इसमें वे पद या उन्हीं प्रवर्गों के पद हैं जिनको धारण करने वाले व्यक्तितयों को, उसी सेवा या सेवा के भाग में उच्चतर पद रिक्त होने पर, अन्तरित किए जाने या ज्येष्ठता तथा उपयुक्तता अथवा ज्येष्ठता तथा योग्यता के आधार पर प्रोन्नित किए जाने का पान्न समझा जाता है;
- (ङ) "वर्ग I पद" "वर्ग III, "वर्ग IIIपद" श्रौर "वर्ग IV पद", का वही अर्थ होगा जो नव मंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (वर्गीकरण, नियंत्रण श्रौर अपील) विनियम, 1980 में उनका है;
- (च) "विभागीय प्रोन्नित सिमिति" से ऐसी कोई सिमिति प्रिभिप्रेत हैं जो किसी श्रेणी या पद पर प्रोन्नित या पुष्टि के लिए सिफारिश करने के प्रयोजन के लिए विनियम 29 के ग्रधीन समय-समय पर गठित की जाती है;
- (छ) ''सीबे भर्ती किया गया व्यक्ति'' से ऐसा कोई व्यक्ति ग्रभिप्रेत है जिसे सेवा चयन समिति द्वारा प्रतियोगिता परीक्षा या साक्षात्कार या दोनों के ग्राधार पर भर्ती किया गया है;
- (ज) "ड्यूटी पद" से किसी विशेष प्रकार का कोई भी पद ग्रभिप्रेत है, चाहे वह स्थायी है या ग्रस्थायी;
- (झ) ''कर्मचारी'' से बोर्ड का कोई कर्मचारी ग्रभिप्रेत है;
- (ञ) "श्रेणी" से अधिनियम की धारा 23 के अधीन तैयार की गई और मंजूर की गई बोर्ड कर्मचारी-वृन्द अनुसूची में विनिर्दिष्ट कोई श्रेणी अभिप्रेत है;
- (ट) किसी श्रेणी या पद के संबंध में "स्थायी कर्मचारी" से ऐसा कोई कर्मचारी ग्रभिग्रेत है जिसे उस श्रेणी या पद में किसी स्थायी रिक्ति पर ग्रधिष्टायी रूप में नियुक्त किया गया है;
- (ट) ''ग्रनुसूची'' से इन विनियमों से उपाबद्ध ग्रनुसूची ग्रभिप्रेत हैं;
 -) "ग्रनुसूचित जातियां" ग्रौर "ग्रनुसूचित जनजातियां" का वही ग्रर्थ है जो उनका भारत के संविधान के ग्रनुच्छेद 366 के खंड (24) ग्रौर (25) में

ो श्रेणी या पद के संबंध में "चयन सूची" स श्रेणी या पद के लिए विनियम 30 के

- खंड (ङ) के अनुसार तैयार की गई चयन सूची अभिप्रेत है;
- (ण) "चयन पद" से ऐसा कोई पद ग्रिभिन्नेत है जो इन विनियमों के विनियम 7 के ग्राधीन ऐसे पद के रूप में घोषित किया गया है!
 - (त) ''सेवा चयन सिमिति'' से ऐसी सिमिति ग्रिभिप्रेत है जो सीधी भर्ती के लिए ग्रारक्षित पदों पर नियुक्ति के लिए प्रतियोगिता परीक्षा या साक्षात्कार या दोनों के माध्यम से ग्रभ्यर्थियों के चयन के लिए नियम 16 के ग्रधीन गठित की गई है;
 - (थ) किसी श्रेणी या पद के संबंध में "ग्रस्थायी कर्मचारी" से ऐसा कोई कर्मचारी ग्राभिप्रेत है जो उस श्रेणी या पद में ग्रस्थायी या स्थानापन्न रूप में नियुक्त है।
- 4. कर्मचारियों की श्रेणीकरण सूची:—कर्मचारियों की परस्पर ज्येष्ठता को उपदर्शित करने वाली श्रेणीकरण सूची प्रत्येक श्रेणी के लिए रखी जाएगी। सूची में स्थायी ग्रौर प्रस्थायी कर्मचारियों को पृथक-पृथक दर्शित किया जाएगा
- 5. प्राधिकृत स्थायी श्रौर ग्रस्थायी सदस्य संख्या:—विभिन्न श्रेणियों की प्राधिकृत स्थायी श्रौर ग्रस्थायी सदस्य संख्या वह होगी जो ग्रिधिनियम की धारा 23 के श्रधीन समय-समय पर तैयार श्रौर मंजूर की गई कर्मचारिवृन्द ग्रनुसूची में है।
- 6. नियुक्तियां :—सभी पटों पर, जिन्हें वे विनियम लागू होते हैं, नियुक्तियां इन विनियमों के उपबन्धों के अनुसार की जाएंगी। नियुक्तियां या तो कर्मचारियों की प्रोन्नित या स्थानान्तरण द्वारा की जाएंगी, या सीधी भर्ती द्वारा।
- 7. भर्ती की पद्धति :—भर्ती की पद्धति, ग्रायु, शिक्षा, प्रशिक्षण से संबंधित ग्रर्हताएं, न्यूनतम ग्रनुभव संबंधी ग्रर्हताएं, ग्रावश्यक ग्रौर/या वांछनीय ग्रर्हताएं, चयन पदों या ग्रचयन पदों के रूप में पदों का वर्गीकरण ग्रौर विभिन्न पदों पर नियुक्ति मे संबंधित ग्रन्य विषय इन विनियमों से उपाबद्ध ग्रनुसूची में यथादर्शित रूप में होंगे:

परन्तु विहित म्रधिकतम म्रायु-सीम, निम्नलिखित रूप से शिथिल की जा सकेगी, म्रर्थात्:--

- (1) यदि न्यूनतम विहित अनुभन 10 वर्ष या अधिक है तो 5 वर्ष तक और यदि न्यूनतम विहित अनुभव 5 से 9 वर्ष तक है तो 3 वर्ष तक अध्यक्ष द्वारा शिथिल की जा सकेगी;
- (2) ऐसे ग्रभ्यर्थी की दशा में, जो भूतपूर्व सैनिक है, ग्रर्थात्, भारतीय रक्षा सेवा का भूतपूर्व कर्मचारी है, ग्रौर जिसने रक्षा बलों में कम से कम छह मास निरंतर सेवा की है, उतनी ग्रवधि के लिए शिथिल की जा सकेगी जितनी ग्रवधि तक उसने रक्षा बलों में सेवा की है घन 3 वर्ष, किन्तु यह तब जब भरी जाने वाली रिक्ति ऐसे भूतपूर्व

मैनिकों ग्रौर युद्ध में मारे गए व्यक्तियों के श्राश्चितों के लिए ग्रारक्षित है ग्रौर यह सीमा रक्षा वलों में उसके द्वारा की गई सेवा की कुल ग्रवधि तक के लिए उस दशा में शिथिल की जा सकेगी जब कि भरी जाने वाली रिक्ति ग्रनारक्षित रिक्ति है; ग्रौर

(3) श्रनुस्चित जाित श्रौर श्रनूस्चित जनजाित के श्रम्यर्थी की दशा में ऐसे ब्रादेशों के श्रनुसार शिथिल की जा सकेगी जो श्रनुस्चित जाितयों श्रौर श्रनुस्चित जनजाितयों के पक्ष में ऐसी सेवाश्रो या उसके अधीन पदो पर नियुक्ति के लिए समय-समय पर केन्द्रीय सरकार जारी करे:

परन्तु यह श्रौर भी कि विहित न्यूनतम श्रायु-सीमा श्रौर गैक्षिक तथा अन्य अर्हताएं श्रच्छं श्रौर पर्याप्त कारणों मे जो लेखबढ़ किए जाएंगे, अध्यक्ष द्वारा उस दशा में णिथिल की जा सकेगी जब अभ्यर्थी को अन्यया उपयुक्त या सुर्आहत पाया जाता है:

परन्तु यह श्रीर कि श्रनुभय संबंधी श्रह्ताएं श्रध्यक्ष के विवेकानुसार श्रनुसूचित जातियों श्रीर श्रनुसूचित जन जातियों के श्रभ्यिथों के मामलों में उस दशा में शिथिल की जा सकती है, जब कि चयन के किसी प्रक्रम पर श्रध्यक्ष की यह राय है कि इनके लिए श्रारक्षित पदों पर भर्ती के लिए श्रपेक्षित श्रनुभव रखने वाले इन समुदायों के श्रभ्यर्थी पर्याप्त संख्या मे उपलब्ध नहीं हो सकेंगे।

8. परिवीक्षा:——(1) प्रत्येक व्यक्ति, जिसे ग्रनुसूची के स्तम्भ 2 में विनिर्दिष्ट किसी पद पर चाहे सीधी भर्ती द्वारा या प्रोन्नित या स्थानान्तरण द्वारा नियुक्त किया जाता है, उप-विनियम (2) श्रीर (3) के उपबन्धों के श्रधीन रहते हुए, श्रनुसूची में उस पद के सामने विनिर्दिष्ट श्रवधि के लिए परिवीक्षा पर रहेगा:

परन्तु जहां नियुक्ति ही, नियुक्ति ग्रादेश में विनिर्दिष्ट किसी ग्रविध के लिए है वहां ऐसी नियुक्ति ऐसी श्रविध की समाप्ति पर स्वतः समाप्त हो जाएगी, जब तक कि ऐसी श्रविध को नियुक्ति श्रिधिकारी बढा नही देता है।

- (2) यदि नियुक्ति प्राधिकारी ठीक समझता है तो वह परिवीक्षा की भवधि को, एक बार में, किसी विनिर्दिष्ट भवधि के लिए बढ़ा सकेंगा किन्तु ऐसे बढ़ाए जाने की कुल भ्रविध, उस दशा की छोड़कर जब कि ऐसे कर्मचारी के विरुद्ध किसी विभागीय या विधिक कार्रवाई के लिम्बित होने के कारण ऐसी वृद्धि भावश्यक है, विहित प्रारम्भिक परिवीक्षा की भ्रविध में श्रिधिक नहीं बढ़ाई जाएगी।
- (3) र्याद नियुक्ति प्राधिकारी ठीक समझता है तो उपयुक्त मामलों में, परिवीक्षा की स्रवधि को कम किया जा सकेगा।
- (4) कर्मचारी से उसकी परिवीक्षा की अवधि के दौरान ऐसा विभागीय प्रशिक्षण लेने श्रौर ऐसी विभागीय

परीक्षाएं उत्तीर्ण करने की भ्रापेक्षा की जा सकती है जो श्रध्यक्ष समय-समय पर इसे निमित विनिर्दिष्ट करे।

- 9. परिवीक्षाधीन कर्मचारियों की पुष्टि:—(1) जब किसी कर्मचारी ने, जिसे किसी श्रेणी या पद पर परिवीक्षा पर नियुक्त किया गया है, विनिर्दिष्ट विभागीय परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली हैं और नियुक्ति प्राधिकारी के समाधानप्रद रूप में श्रपनी परिवीक्षा पूरी कर ली हैं तो वह कोई स्पष्ट स्थायी रिक्ति उपलब्ध होने पर, उस श्रेणी या पद पर पुष्टि के लिए पान होगा।
- (2) जब तक कि परिवीक्षाधीन कर्मचारी इस विनियम के श्रधीन पुष्ट नहीं कर दिया जाता है या विनियम 10 के श्रधीन सेवामुक्त या प्रत्यावर्तित नहीं कर दिया जाता है तब तक वह परिवीक्षाधीन कर्मचारी की प्रास्थित में बना रहेगा।
- 10. परिवीक्षाधीन कर्मचारियो की सेवोन्मुक्ति या प्रत्या-वर्तन:---(1) परिवीक्षाधीन कर्मचारी, जिसका किसी पद पर कोई धारणाधिकार नहीं है, बिना किसी सूचना के किसी भी समय सेवोन्मुक्त किया जा सकेगा,---
 - (क) यदि परिवीक्षा की श्रविध के दौरान उसके कार्य करने या श्राचरण के श्राधार पर उसे सेवा में श्रागे बनाये रखने के लिए श्रनुपयुक्त समझा जाता है; या
 - (ख) यदि उसकी राष्ट्रिकता, ग्रायु, स्वास्थ्य, णिक्षा ग्रांगर ग्रन्य श्रहंताग्रों या पूर्ववृत से सबधित किसी जानकारी की प्राप्ति पर नियुक्ति प्राधिकारी का समाधान हा जाता है कि वह सेवा में बनाए रखे जाने के लिए ग्रपाल या अन्यथा ग्रनुपयुक्त है।
- (2) परिवीक्षाधीन कर्मचारी, जिसका किसी पद पर कोई धारणाधिकार है, उप-विनियम (1) में विनिर्दिष्ट किसी भी परिस्थिति में, किसी भी समय ऐसे पद को प्रत्या-वर्तित किया जा सकेगा।
- (3) परिबीक्षाधीन कर्मचारी, जिसे विनियम 8 में विहित परिवीक्षा की स्रविध की समाध्ति पर पुष्टि के लिए उपयुक्त नहीं समझा जाता है, यथास्थिति उप-विनियम (1) या उप-विनियम (2) के ध्रनुसार सेवोन्सुक्त या प्रत्यावर्तित कर दिया जाएगा।
- 11. जयेष्ठता:--(1) स्थायी कर्मचारी-िकमी श्रेणी या पद पर ग्रिधिष्ठायी रूप में नियुक्त व्यक्तियों को पारस्परिक जयेष्ठता उसी कम में विनियमित की जाएगी जिस कम में वे ऐसे नियुक्त किए जाते हैं।
- (2) श्रस्थायी कर्मचारी—श्रेणी में सीधे भर्ती, किए गए व्यक्तियों श्रीर विभागीय प्रोन्नित के ग्राधार पह निमुक्त किए गए व्यक्तियों की पारस्परिक ज्येष्ठता पदेंद्र के उसी चक्रानुकाम में निश्चित की जाएगी जिसमें कि सीधी भर्ती ग्रीर प्रोन्नित के लिए पद रिक्त हुए हैं। यह जिलानुकम उस श्रेणी में सीधी भर्ती श्रीर प्रोन्नित के लिए श्रारक्षित रिक्तियों के कोटे पर श्राधारित होगा।

- (3) सीधे भर्ती किए गए व्यक्तियों की पारस्परिक पंक्ति उसी योग्यता कम में निश्चित की जाएगी जिसमें कि उन्हें ऐसी किसी परीक्षा या साक्षास्कार के, जिसके ब्राधार पर उनकी भर्ती की गई है, परिणामस्वरूप रखा गया है। किसी पूर्वतर परीक्षा या साक्षात्कार के ब्राधार पर भर्ती किए गए व्यक्ति उन व्यक्तियों में ज्येष्ठ पंक्ति में होंगे जो किसी पश्चात्वर्ती परीक्षा या साक्षात्कार के ब्राधार पर नियुक्त किए जाते है।
- (4) रिक्तियों के प्रोन्नित कोटे महे नियुक्त व्यक्तियों की पारस्परिक पंक्ति उसी ऋम में निष्चित की जाएगी जिस ऋम में कि उन्हें विभागीय प्रोन्नित समिति ने प्रोन्नित के लिए अनुमोदित किया है।
- (5) उक्त उप-विनियम (1) मे (4) तक में किसी बात के होते हुए भी इन विनियमों के प्रारम्भ से पूर्व ग्रव-धारित की गई ज्येष्ठता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
- 12. रोस्टर का रखा जाना:— विभाग का प्रधान ध्रपने विभाग में प्रत्येक श्रेणी के लिए यह दिशान करने के लिए एक रोस्टर रखेगा कि कोई विशिष्टि रिक्ति सीधी भर्ती द्वारा भरी जानी चाहिए या प्रोन्नित द्वारा, किन्तु सामान्य काडगें के संबंध में ऐसा रोस्टर सचिव रखेगा।
- 13. श्रारक्षण:—(1) श्रनुसूचित जातियों श्रीर श्रनुसूचित जनजातियों के पक्ष में केन्द्रीय सरकार के श्रधीन पवों पर नियुक्तियों के, चाहें वे सीधी भर्ती द्वारा की आएं या प्रोन्नित द्वारा, श्रारक्षण के लिए समय-समय पर केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी किए गए श्रादेश, इन विनियमों के श्रन्तर्गत सभी नियु-क्तियों को यथावश्यक परिवर्तन सहित लागु होंगें।
- (2) भूतपूर्व सैनिकों श्रीर युद्ध में मारे गए व्यक्तियों के ग्राश्रितों के पक्ष में केन्द्रीय सरकार के ग्रधीन पदों पर नियुक्तियों के, जिनके लिए मीधी भर्ती की जानी है, श्रारक्षण के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए ग्रादेश, इन विनियमों के श्रन्तर्गत नियुक्तियों को भी लागू होंगे।
- 14. सीधी भर्ती के लिए ब्रावेदन:—(1) सीधी भर्ती द्वारा नियुक्ति के लिए प्रत्येक श्रम्यर्थी, ऐसी नारीख से पूर्व और ऐसे प्ररूप में तथा ऐसी रीति में ब्रावेदन करेगा, जो श्रध्यक्ष समय-समय पर विहित करे। वह श्रपनी ब्रायु, श्रह्ताओं और श्रनुभव के बारे में ऐसे सबूत भी प्रस्तृत करेगा, जिनकी श्रध्यक्ष श्रपेक्षा करे।
- (2) पाए भीमा निर्धारित करने के लिए निर्णायक तारीख प्रत्ये भारत में आवेदन प्राप्त करने के लिए नियत समित्र के, तम तारीख होगी।

 1.5. सीधी भीता कालिए पात्रता और निरहेताए:—(1)
- 1.5. मीधी भित्री के लिए पात्रता और तिरहेताए:—(1) कोई व्यक्ति किसी श्रेणी या पद पर मीधी वर्ती के लिए तभी पांत्र होगा जब कि वह,
 - (क) भारत का नागरिक है; या
 - (खा) नेपाल की प्रजा है; या

- (ग) भूटान की पंजा है; या
- (घ) तिब्बती शरणार्थी है जो भारत में 1 जनवरी, 1962 में पूर्व इस प्राशय में प्राया है कि वह स्थायी रूप में भारत में बसेगा; या
- (ङ) भारतीय मूल का ऐसा कोई व्यक्ति है जो भारत में स्थायी रूप से बसने के आणय से पाकिस्तान, वर्मा, श्रीलंका, या पूर्वी श्रफीकी देशों, केन्या, उगान्डा या तंजानिया, संयुक्त गणराज्य, जास्विया, मलावी, जैरे श्रीर इथोपिया श्रीर वियतनाम से श्राया है :

परन्तू प्रवर्ग (क) के प्रभ्यर्थी को प्रवनी राष्ट्रिकता के बारे में ऐसा सबूत प्रस्तुत करना होगा जिसकी प्रध्यक्ष संभय-समय पर ग्रमेक्षा करें;

परन्तु यह भीर भी कि प्रवर्ग (ख), (ग), (घ) भ्रौर (ङ) का श्रभ्यर्थी ऐसा व्यक्ति होगा जिसके पक्ष में भारत सरकार ने पावता प्रमाणपत्न आरी किया है;

परन्तु यह भौर कि ऐसे श्रभ्यर्थी को, जिसके मामले में राष्ट्रिकता या पात्रता का प्रमाणपत श्रावश्यक है, तब तक के लिए अनंतिम रूप में नियुक्त किया जा सकता है जब तक वह यथास्थिति, श्रावश्यक सबूत या केन्द्रीय सरकार द्वारा उसके पक्ष में जारी किया गया श्रावश्यक प्रमाणपत्न, प्रस्तुत करना है।

- (2) बह व्यक्ति-
- (क) जियने ऐसे व्यक्ति में, जिसका पति या जिसकी पत्नी जीवित हैं, विवाह किया है, या
- (ख) जिसने श्रपने पति या अपनी पत्नी के जीवित होते हुए किसी व्यक्ति में विवाह किया है;

किसी ऐसी श्रेणी में या पद पर नियुक्ति का पाव नही होगा जिसको ये विनियम लागू होने है:

परन्तु यदि ग्रध्यक्ष का समाधान हो जाता है कि ऐसा विवाह ऐसे व्यक्ति ग्रौर विवाह के श्रन्य पक्षकार को लागू स्वीय विधि के श्रधीन ग्रनुज्ञेय है ग्रौर ऐसा करने के लिए ग्रन्य ग्राधार है तो वह किसी व्यक्ति का इस उप-विनियम के प्रवर्तन से छूट दे सकेगा।

- (3) श्रभ्यर्थी को नियुक्ति प्राधिकारी का यह समाधान करना होगा कि उनका शील श्रांर पूर्ववृत ऐसा है कि वह किसी भी श्रेणी या पद पर नियुक्ति के लिए उपयुक्त है। ऐसा कोई श्रभ्यर्थी जिसे नैतिक श्रधमता श्रन्तर्वेलित करने वाले किसी अपराध के लिए न्यायालय द्वारा सिद्धदोष टहराया गया है या जिसे दिवालिया श्रधिनिणींत किया गया है, वोई की सेवा मे नियुक्ति के लिए पाव नहीं होगा।
- (4) यदि वह प्रश्न होता है कि किस्री अम्यर्थी ने इन विनियमो की सभी या किसी अपेक्षा की पूर्ति की है या नहीं, तो उनका विनिश्चय अध्यक्ष करेगा।

- (5) ग्रध्यक्ष, केन्द्रीय सरकार के पूर्व ग्रनुमोदन से, उप विनियम (1) की ग्रपेक्षांग्रों में से किसी को भी उपान्तिरित या उसका ग्रधित्यजन उस दशा में कर सकेगा जब किसी विशेष प्रकृति के कार्य के लिए नियुक्ति की जानी है ग्रीर ऐसा कोई उपयुक्त ग्रध्यर्थी मिलना सम्भव नहीं है जो इन विनियमों की ग्रपेक्षांग्रों की पूर्ति करता है।
- (6) ग्राभ्ययीं का स्वस्थ होना : ग्राभ्यर्थी की मानसिक ग्रीर गारीरिक स्थित ठीक होनी चाहिए ग्रीर ऐसे सभी गारीरिक दोपों में मुक्त होना चाहिए जिससे कि बोई के कर्म- चारी के रूप में उसके कर्त्तव्यों के निर्वहन में क्कावट संभाव्य है। यदि कोई ग्राभ्यर्थी ऐसी किसी स्वास्थ्य परीक्षा के पण्चात, जो ग्राध्यक्ष विनिर्दिष्ट करे, ग्रानुपयुक्त पाया जाता है तो उसे नियुक्त नहीं किया जाएगा।
- 16. सेवा चयन समिति—(1) जैसा कि उप-विनियम (2) में उल्लिखित है, प्रत्येक प्रवर्ग के पदों के लिए एक सेवा चयन समिति होगी श्रीर ऐसी समिति का यह मुख्य कृत्य होगा कि वह सीधे भर्ती द्वारा विभिन्न पदों पर नियुक्तियां करने के लिए ग्रभ्यथियों का चयन करने के विषय में नियुक्ति प्राधिकारी को सलाह दे और उसकी सहायना करे।
- (2) उप-विनियम (1) में विनिर्दिष्ट पदों के प्रवर्ग भीर उसके लिए मेवा चयन समिति निम्नलिखित होगी, भर्षात् :—
 - (क) वर्ग I ग्रीर वर्ग II पदों के लिए: ग्रध्यक्ष: ग्रध्यक्ष, या उपाध्यक्ष, यदि कोई नियुक्त किया गया है, जैसा ग्रध्यक्ष विनिश्चित करे।
 - सदस्य: (i) उस विभाग का प्रधान, जिसमें रिक्ति विद्यमान है ;
 - (ii) सचिव ;
 - (iii) उस विभाग के प्रधान के जिसमें कि रिक्ति विद्यमान है परामर्श से ग्रध्यक्ष द्वारा नाम निर्दिष्ट किसी ग्रन्य विभाग का प्रधान या कोई ज्येष्ठ भ्रष्टिकारी; भ्रौर
 - (iv) यदि झध्यक्ष ऐसा निवेश दे तो, नव मंगनौर पत्तन न्यास के बाहर का कोई एक
 व्यक्ति जिसकी, झध्यक्ष की राय में,
 उपयुक्त वृक्षिक या तकनीकी पृष्ठभूमि है
 ग्रीर जिसे उस क्षेत्र में भनुभव प्राप्त है,
 जिसके निए चयन किया जाना है।
 - (ख) बर्ग III भ्रौर वर्ग IV पद: भ्रष्ट्यक्ष: उस विभाग का प्रधान, जिसमें रिक्ति विद्यमान है।

सदस्य: (i) सचिव;

(ii) विभागों के प्रधान के उप प्रधिकारी की पंक्ति से प्रन्यून पंक्ति का कोई प्रधिकारी । इसका नाम निर्देशन प्रध्यक्ष उस विभाग के प्रधान के परामर्श से करेगा जिसमें कि रिक्ति विद्यमान है; श्रौर

(iii) यदि ग्रध्यक्ष ऐसा निदेश दे तो, नव मंगलीर पत्तन न्यास के बाहर का कोई एक व्यक्ति जिसकी, ग्रध्यक्ष की राथ में, उपयुक्त वृत्तिक या तकनीकी पृष्ठभूमि है भीर जिसे उस क्षेत्र में ग्रनुभव प्राप्त है, जिसके लिए चयन किया जाना है।

टिप्पण: यदि किसी एक ही चयन के द्वारा एक से धिधक विभाग में हुई रिक्तियों के लिए भर्ती की जानी है तो समिति के गठन की बाबत विनिष्चय धध्यक्ष, समय-समय पर करेगा।

- (3) इस विनियम में किसी बात के होते हुए भी, सीधी भी द्वारा विभिन्न पदों पर नियुक्ति के लिए अम्यिधयों का जयन करने से संबंधित विषयों में नियुक्ति प्राधिकारी को सलाष्ट्र देने और उसकी सहायता करने के लिए अध्यक्ष किसी परामर्णदाता को या परामर्णदाता फर्म को नियोजित कर सकेगा।
- 17. सीधी भर्ती की रीति:—सीधी भर्ती द्वारा सभी नियुक्तियां, नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा, यथास्थिति, संबंधित सेवा चयन समिति, परामगेदाता या किसी परामगेदाता फर्म की सिकारिश पर की जाएंगी:

परन्तु प्रध्यक्ष को ऐसे कारणों से जो लेखबद्ध किए जाएंगे, यह हक होगा कि वह किसी विशिष्ट मामले में ऐसी सिफारिश स्वीकार न करे:

परन्तु यह भौर भी कि यदि नियुक्ति प्राधिकारी श्रध्यक्ष का ग्रधीनस्थ प्राधिकारी है और वह प्राधिकारी किसी मामले में ऐसी सिफारिश से भ्रसहमत है तो वह ऐसी श्रसहमति के निए कारण भ्रभिलिखित करेगा भौर मामला भ्रध्यक्ष को प्रस्तुत करेगा भौर श्रध्यक्ष ऐसा मामला विनिश्चित करेगा ;

परन्तु यह भौर कि पूर्णतः भस्यायी प्रकृति की रिक्तियों भौर छुट्टी के कारण हुई रिक्तियों के मामले में, यदि विनियम 24 में निदिष्ट प्रतीक्षा सूची में सम्मिलित किए जाने के लिए सम्बन्धित सेवा चयन समिति, परामर्णदाता या परामर्ण-दाता फर्म द्वारा सिफारिश किया गया कोई व्यक्ति उपलब्ध नहीं है तो श्रध्यक्ष ग्रपने विवेकानुमार निम्नलिखित शर्तों के श्रधीन रहते हुए ऐमी रिक्तियों में उपयुक्त व्यक्तियों को श्रधिक से अधिक छह मास की श्रवधि के लिए नियुक्त कर सकेगा, श्रवात्:—

- (1) ऐसा धाभ्यथीं जिसने छह मास की सेवा पूरी कर कर ली है, पुन: नियुक्त नहीं किया जाएगा या सेवा में नहीं बना रखा जाएगा, जब तक र्व्हि उसका चयन यथा जिल्हा समिति, परामर्शवाता क्यां कर नहीं लिया जाता है; धौर
- (2) पूर्णतः ग्रस्थायी ग्राधार पर नियुक्त व्यक्ति की सेवाएं, यथास्थिति, सम्बन्धित सेवा चर्यन समिति, परामर्शदाता वा परामर्शदाता कर्म द्वार्ण चयन किए गए श्रम्थर्थी के उपलब्ध होते ही समाप्त कर दी जाती है:

परन्तु यह धौर कि तुरन्त भ्रावश्यकता के मामले में भौर जब प्रतीक्षा सूची समाप्त हो चुकी है, भ्रष्ट्यक्ष या उपाध्यक्ष, यथास्थिति उपयुक्त सेवा चयन समिति; परामर्शदाना या परामर्श-दाता फर्म द्वारा चयन होने तक के लिए पूर्णतः भ्रस्थायी भ्राधार पर नियुक्ति कर सकेगा।

18. कितिपय दशामों में पदों का विज्ञापित किया जाना :—
यदि ऐसा प्रतीत होता है कि स्थानीय रोजगार कार्यालय
उपयुक्त अभ्यायों के नाम की सिफारिण करने की स्थिति
में नहीं है तो सीधी भर्ती द्वारा भर्र जाने वाले पद विज्ञापित किए
जाएंगे।

टिप्पण:—ग्रधिसूचनाग्नों ग्रौर विज्ञापनों की प्रतियां साथ ही साथ निम्नलिखित को भेजी जाएंगी—-(1) महानिदेशक, नियोजन तथा भृतपूर्व सैनिक सैल, नई दिल्ली-1; ग्रौर

- (2) ऐसी संस्थाए मादि जो सेवामों में विशेष प्रति-निधित्व के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार द्वारा जारी किए गए मादेशों के प्रयोजन के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा यथास्थिति, मनुसूचित जातियों भौर मनुसूचित जनजातियों के प्रतिनिधि के रूप में मान्यताप्राप्त है।
- 19: कुछ दशाओं में उच्चतर प्रारम्भिक वैतन देना या शारीरिक दोषों की बाबत छूट देना :—यथास्थिति, सेवा चयन सिमिति परामर्शदाता या परामर्शदाता फर्म, नियुक्ति के लिए घम्याधियों की बाबत सिफारिश करने के साथ ही उपयुक्त मामलों में, यह सिफारिश कर सकेगी कि ऐसे अम्याधियों को कोई उच्चतर प्रारम्भिक वेतन दिया जाए या उसके शारीरिक बोष की बाबत छूट दी जाए।
- 20. समर्थन के लिए संयाजना से निरहता:—यदि कोई
 व्यक्ति बोर्ड की सेवा में नियुक्ति के लिए प्रपते प्रावेदन के
 सम्बन्ध में या किसी उच्चतर पद पर प्रोन्नित के लिए किसी
 भी रीति में समर्थन प्राप्त करने लिए प्रस्थक्तः या प्रप्रत्य-क्षतः स्वयं या पपने सम्बन्धियों या मित्रों द्वारा संयाचना करने
 या कराने का प्रयास करेगा तो बह ऐसी नियुक्ति या प्रोम्नित के
 लिए निरहित हो जाएगा।
- 21. तथ्यों को छिपाना:—यदि किसी श्रभ्यर्थी के बारे में यह पाया जाता है कि उसने जानबूझकर ऐसी कोई विशिष्टियां प्रस्तुत की हैं जो मिथ्या हें या ऐसी प्रकृति की कोई तात्विक जानकारी छिपाई हैं जो यदि ज्ञात हो जाती तो उसे बोर्ड की सेवा में नियुक्ति पाने से साधारणत्या विवर्णित कर देती, तो वह निर्महत होने और यदि नियुक्त कर दिया गया की वा से पदच्युत किए जाने का दायी होगा।
- 22. सीधी भर्ती के लिए विद्यमान कर्मचारियों की पाहता:— जब सीधी भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पद विज्ञापित किए जाते हैं तो पहने से ही सेवारत कर्मचारी भी धावेदन कर सकते हैं, परन्तु यह तब जब कि उनके पास विहित महिताएं भौर भन्भव हैं।

- 23. कतिपय दशाओं में लिखित श्रीर प्रायोगिक परीक्षण सेवा:—वर्ग I पदों की दशा में अध्यक्ष श्रीर अन्य पदों की दशा में अध्यक्ष श्रीर अन्य पदों की दशा में अध्यक्ष था यदि नियुक्त किया गया है तो उपाध्यक्ष, यह विनिश्चित कर सकेगा कि कोई लिखित या प्रायोगिक परीक्षा या दोनों ली जानी चाहिएं या नहीं। वह उस श्रिधकारी को नामित करेगा, जो उक्त परीक्षा लेखा श्रीर ऐसी परीक्षा की रीति तथा तक्ष्मबन्धी श्रन्य ब्यौरे भी श्रिधकथित करेगा।
- 24. नियुक्ति के लिए अनुमोदित अभ्याधियों की सूची—
 यथास्थिति सेवा चयन समिति, परामर्गंदाता या परामर्गंदाता
 फर्म, योग्यताक्रम में, जो उसने तथ किया है, उन चयन किए
 गए अभ्याधियों के नामों की सिफारिश कर सकेगी, जिन्हें
 सीधी भर्ती के लिए रखे गए पदों पर नियुक्ति के लिए
 प्रतीक्षा सूची में रखा जाएगा। ऐसी सूची उस तारीख से
 बारह मास की अवधि के लिए विधिमान्य समझी जाएगी जिस
 तारीख को ऐसी सूची को अन्तिम रूप दिया जाता है। प्रतीक्षा
 सूची में अभ्याधियों में से ऐसे अभ्याधियों को जिन्हें किमी युक्तियुक्त अवधि के भीतर समुचित रिक्तियों पर नियुक्ति के लिए
 प्रस्थापना की जानी संभाव्य है, यह सूचित किया जा सकता
 है कि उनका नाम ऐसी रिक्तियों के सम्बन्ध में जिनका निकट
 भविष्य में होना, सम्भाव्य है, आमेलित किए जाने के लिए
 प्रतीक्षा सूची में रखा गया है।
- 25. नियुक्ति ग्रादेश रह् करना:—यदि कोई ग्रभ्यर्थी, जिसका ज्यन सीधी भर्ती के लिए रखे गए पद के लिए किया गया है, नियुक्ति ग्रादेश में उल्लिखित तारीख के भीतर ग्रीर यदि ऐसी कोई तारीख उल्लिखित नहीं की गई है तो ऐसे नियुक्ति ग्रादेश के जारी किए जाने की तारीख से 30 दिन के भीतर, या ऐसी किसी बढ़ाई गई ग्रवधि के भीतर जो श्रध्यक्ष नियत करे, पदग्रहण करने में ग्रसफल रहता है तो यह समझा जाएगा कि नियुक्ति-ग्रादेश रह कर दिया गया है।
- 26. साक्षात्कार के लिए उपस्थित होने के लिए याता भार्त का संदाय:—सीधी भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पदों की दशा में, ऐसी सभी याताओं का जो अभ्याधियों (जिसके अन्तर्गत ऐसे व्यक्ति भी हैं जो पहले से ही बोर्ड की सेवा में हैं) को लिखित या प्रायोगिक परीक्षा या साक्षात्कार के प्रयोजन के लिए करनी पड़े, खर्च स्वयं उन्हें उठाना होगा। किन्तु लिखित या प्रायोगिक परीक्षा या साक्षात्कार के लिए बुलाए गए अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के अभ्याधियों को, बोर्ड द्वारा समय-समय पर इस निमित्त जारी किए गए आदेशों के अनुसार, याता भता दिया जा सकेगा।
- 27. ऐसे कर्मचारियों के, जिनकी, मृत्यु हो गई है, निकट नातेदारों का नियोजन:—इन विनियमों में किसी बात के होते हुए भी, प्रध्यक्ष या यदि नियुक्त किया गया है तो उपाध्यक्ष इन विनियमों में भर्ती के लिए विहित की गई प्रसामान्य प्रक्रिया को त्याग कर बोर्ड के कर्मचारी के, किसी मृत्यु सेवा में होते हुए हो जाती है, धर्मज पुत्र या पुत्री या किसी प्रति निकट नातेदार या ऐसे कर्मचारी की/के उत्तरजीवी पित/ पत्नी को नियुक्त कर सकेगा किन्तु यह तब जब इस प्रकार

1332 GI 81-8

नियुक्त किए जाने वाले व्यक्ति के पास विहित महैताएं और अतुगय है यहां वह अन्यथा उपयुक्त पाया जाता है।

टिप्पण :--इस विनिधम के प्रधीन शक्ति का प्रयोग करते समग, नियुक्ति की प्रसामान्य प्रक्रिया से विचलन के कारणों को लेखबद्ध किया जाएगा। इस उपबन्ध का उद्देश्य निधंनावस्था में कुटुम्ब की सहायता करना है।

28. ग्रंग नालिक नियुक्ति:— ग्रध्यक्ष किसी व्यक्ति या व्यक्तियों को, ऐसी किसी विनिर्दिष्ट ग्रविध के लिए, जो एक बार में 2 वर्ष से ग्रधिक की नहीं होगी, तथा ऐसे ग्रन्य निबन्धनों पर जो वह समय-समय विनिर्दिष्ट करे, ग्रंगकालिक रूप में नियुक्त कर सकेगा।

29. विभागीय प्रोन्नित सिमिति:—(1) बोर्ड के विभिन्न युनिटों के लिए प्रत्येक प्रवर्ग के पदों की बाबत, उप विनियम (2) में उल्लिखन रूप में, एक विभागीय प्रोन्नित सिमिति होगी। ऐसी सिमिति के मुख्य कृत्य इन विनियमों के प्रमुसार प्रोन्नित द्वारा विभिन्न पटों पर नियुक्ति करने के लिए ग्रभ्यांष्यों का चयन करने संबन्धी विषयों में नियुक्ति प्राधिकारी को सलाह देना श्रीर उसकी सहायता करना है।

(2) पदों में प्रवर्ग भौर उनके लिए उप-विनियम (1) में निर्दिष्ट विभागीय प्रोन्नति समितियों का गठन निम्नलिखित रूप में होगा, श्रवर्ति:—

(क) वर्ग I ग्रौर वर्ग II पदों के लिए:---

- (1) ग्रध्यक्ष ;
- (2) उपाध्यक्ष, यदि नियुक्त किया गया है ;
- (3) सचिव या वित्त सलाहकार भौर मुख्य लेखा श्रधिकारी (सी०ए०भो०), जिसे श्रध्यक्त किसी विनिर्दिष्ट भविध के लिए नाम निर्दिष्ट करे ; श्रौर
- (4) उस विभाग का प्रधान, जिसमें रिक्ति विध-मान है।

टिप्पण : ग्रध्यक्ष या उनकी ग्रनुपस्थिति में, उपाध्यक्ष यवि कोई नियुक्त किया गया है, इस समिति के ग्रधिवेशनों की ग्रध्यक्षता करेगा। यदि श्रपरिहार्य कारणों से, यथास्थिति, सचित्र या वित्त मनाहकार श्रीर मुख्य लेखा श्रधिकारी श्रधिवेशन में उपस्थित होने में श्रसमर्थ है तो उनके सम्बन्धित विभाग का कोई ज्येष्ठ श्रधिकारी, श्रध्यक्ष या उपाध्यक्ष के पूर्व श्रनुमोदन से, उसमें उपस्थित हो सकता है।

- (ख) वर्ग III ग्रीर वर्ग IV पदों के लिए:--
 - (1) उप विभाग का प्रधान जिसमें रिक्ति विद्य-मान है;
 - (2) सचिव ; श्रीर

(3) दो श्रधिकारी जो विभाग के प्रधान के उस श्रधिकारी की पंक्ति से नीचे के न हों, जो किसी दिनिर्दिष्ट श्रवधि के लिए श्रध्यक्ष द्वारा नाम निर्दिष्ट किए आएंगे:

परस्तु यदि एक ही जयन के आधार पर एक से अधिक विभागों में रिक्तियों पर प्रोक्तित की जानी है तो उसके लिए समिति के गठन की बाबत विनिश्चय अध्यक्ष समय-समय पर करेगा:

परन्तु यह श्रौर भी कि यथासम्भन सम्बन्धित विभाग का प्रधान भौर दो श्रन्य श्रधिकारी, जिन्हें समिति के सबस्य के रूप में नामनिर्दिष्ट किया जाएगा, व्यक्तिगत रूप से श्रधिवेशन में मम्मिलित होंगे। यदि किन्ही श्रपरिहार्य कारणों से, वे किमी श्रधिवेशन में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नही हो सकते हैं, तो उनके श्रपने-श्रपने विभाग के ठीक भगले ज्येष्ठ श्रधि-कारी श्रधिवेशन में उपस्थित होंगे।

टिप्पण:-सम्बन्धित विभाग का प्रधान यदि उपस्थित है तो, ग्रीर उसकी श्रनुपस्थिति में, सचिव समिति के भ्रधिवेशनों की भ्रष्यक्षता करेगा।

30. प्रोन्नतियों के लिए चयन-क्षेत्र—(1) यदि प्रोन्नति किमी प्रचयन पद पर की जानी है तो चयन के लिए साधारण-तथा उन कर्मचारियों पर विचार किया जाएगा जो उस काडर की, जिससे कि प्रोन्नतियां की जानी हैं, पदकम सूची में ज्येष्ठतम हैं। यदि प्रोन्नति किसी चयन पद पर की जानी है तो चयन-क्षेत्र विद्यमान रिक्तयों की संख्या से कम से कम तीन गुने तक, किन्तु अधिक से प्रधिक पांच गुने तक का होगा, किन्तु यह तब जब कि श्रावश्यक प्रहुंताएं ग्रीर ग्रनुभव रखने वाले ऐसे कर्मचारी उपलब्ध हैं। विभागीय प्रोन्नति समिति स्वविवेकानुसार श्रसाधारण परिस्थितियों के ग्रनुसार इस सीमा में परिवर्तन कर सकती है।

- (2) विभागीय प्रोन्नतियां करने के लिए निम्नलिखित सिद्धांत भीर प्रक्रिया का सामान्यतः भनुपालन किया जाएगा श्रर्थातु:---
 - (क) किसी भी कर्मचारी को किसी उच्चतर पद पर तब तक प्रोधत नहीं किया जाएगा जब तक उसके ध्रभिलेख से यह दिशत नहीं होता है कि उच्चतर पद के लिए उसके पास ध्रावश्यक निश्चित धर्हताएं है। ऐसी ध्रहताधों के ध्रन्तर्गत, कर्मचारी का व्यक्तिष शैक्षिक ध्रहताएं, नेतृत्व, चरित्र बल धौर व्यक्ति-गत रूप से उत्तरदायित सम्भालने के लिए तैयार रहना है।
 - (ख) किसी चयन पद पर प्रोन्नति की दशा में, किसी भी ऐसे कर्म ज़ारी की, जिसके पाम खण्ड (क) में निर्दिष्ट निश्चित महंताएं है, उससे कांनष्ठ किसी कर्म जारी की तुलना में, उपेक्षा नहीं की जाएगी जब तक कि किन्ही विशेष कारणों से, जो लेखबढ़ किए जाएंगे, ग्रध्यक्ष ग्रन्थणा निर्दिष्ट न करे।

- (ग) िहनो वरा पर पर प्रोन्नति को वशा में, विभागीय प्रोन्नति समिति सम्बन्धित कर्मचारियों की योग्यता का निर्धारण करेगी श्रौर उन्हें बह उत्कृष्ट, 'बहुत श्रम्का' श्रौर 'अच्छा' के श्राधार पर श्रेणीकृत करेगी श्रौर उमकी ज्येष्ठता के कम से सम्बन्धित चयनसूची में उनके नाम लिखेगी। उत्कृष्ट कर्मचारी चयनसूची में उन कर्मचारियों से ज्येष्ठ होंगें जो 'बहुत श्रम्छा' श्रेणी के हैं श्रौर 'बहुत श्रम्छा' श्रेणी के लामचारियों से ज्येष्ठ होंगें जो 'युक्डा' श्रेणी के हैं श्रौर इसी प्रमुष्ट होंगे जो 'युक्डा' श्रेणी के हैं श्रौर इसी प्रमुष्ट होंगे जो 'युक्डा' श्रेणी के हैं श्रौर इसी
- (घ) खण्ड (क) भौर खण्ड (ग) में प्रधिकथित सिद्धांतों के प्रयोजन के लिए पुलनात्मक वृष्टि से कर्मचारियों की योग्यता का निर्धारण करने में, सम्बन्धित कर्मचारियों की योग्यता, उत्साह, नेतृत्व, उत्तरवायित्व की भावना भादि को, जो किसी निश्चित श्रवधि (यदि सम्भव है तो तीन वर्ष से कम की श्रवधि न हो) में प्रकट हुआ है, विचार में लिखा जाएगा भौर यथासम्भव तीन भिन्न-भिन्न वरिष्ठ श्रधिकारियों की रिपोटों पर सावधानीपूर्वक विचार करने के पश्चात निर्णय किया जाएगा;
- (क) विभागीय प्रोन्नित समिति समय समय पर ऐसे पदों के सम्बन्ध में जो प्रोन्नित द्वारा मरे जाने हैं, उस काइर से जिनसे कि प्रोन्नितयां की जानी है, पाल कर्मचारियों की चयन सूची तैयार करेगी;
- (च) चयन सूची साधारणतया खण्ड (क), (ख), (ग) भ्रौर (घ) के उपबन्धों को ध्यान में रखते हुए, तैयार की आएगी ;
- (छ) भाकस्मिक भौर भन्नस्याधित रिक्तियों के लिए व्यवस्था को ध्यान में रखि हुए, प्रत्येक चयन सूची में कर्मजारियों की संख्या सामान्यतः उन रिक्तियों की संख्या सामान्यतः उन रिक्तियों की संख्या से थोड़ी श्रधिक होगी जिनके श्रागामी बारह मास में उज्वतर पदों के लिए होने की सम्भावना है।
- 31. प्रोझित के कुछ सामलों में धर्हताएं शिथिल करना.—
 यदि कोई पद प्रोझित द्वारा भरा जाना है तो विभागीय प्रोझित
 सिमिति, श्रध्यक्ष के धनुमोदन के प्रधीन रहते हुए
 भौक्षणिक अर्हताओं को उस दशा में शिथिल कर सकेगी जब
 कि प्रोझित किया जाने वाला ध्रम्यर्थी पर्याप्त धनुभव के कारण
 धन्यमा उपयुक्त धौर प्रहित है।
- 3.2. तक्ष्यं नियुक्तियां अप्रेश्नित द्वारा सभी नियुक्तियां नियुक्ति प्राधिकारी द्वारा उस कम में की जाएगी जिसमें कि वे सम्बन्निवत चयनसूची में रखे गए हैं:

परन्तु तुरन्त भावश्यक मामले में भौर उस दशा में अब कि भौक्षति के लिए उपयुक्त कर्मचारी उपलब्ध नहीं है, अध्यक्ष मा अध्यक्ष के पूर्वानुमोदत से नियुक्ति प्राधिकारी एक बार में अधिक से अधिक छह मास कामधि के लिए पूर्णतः

दतर्थ ग्राधार पर नियुक्ति कर सकता है किन्तु ऐसी तदर्थ नियुक्ति की कुल श्रवधि एक वर्ष से श्रधिक की नहीं होगी।

- 33. कितप्य मामलों में पुष्टिकरण के लिए विभागीय परीक्षाएं:— प्रध्यक्ष, समय-ममय पर उस प्रवर्गों के पदों को विनिर्विष्ट कर सकेगा जिन पर पुष्टि या प्रोप्तिति किसी प्रहुंक विभागीय परीक्षा में उतीर्ण होने के प्राधार पर की जाएगी। प्रध्यक्ष समय-समय पर ऐसी प्रहुंक विभागीय परीक्षा के ब्यौरों को भी विनिर्विष्ट कर सकेगा। इन ब्यौरों के भ्रन्तर्गत होगी, परीक्षा लेने की प्रक्रिया, परीक्षा का पाठ्यक्रम, वे श्रन्तराल जिनमें ऐसी परीक्षा की जाएगी, वह भ्रधिकतम श्रवधि जिसमें अभ्याययों को ऐसो परीक्षा उतीर्ण करनी होगी, ग्रादि।
- 34. विभागीय परीक्षाओं में असफल रहने के कारण प्रस्यावर्तन किसी पद पर प्रोक्षित कर्मचारी को ऐसी घर्डक विभागीय परीक्षा जो समय-समय पर प्रध्यक्ष विनिर्दिष्ट करे, प्रीर ऐसी धर्वध के भीतर जो वह विनिर्दिष्ट करे, उसीर्ण करनी होगी अन्यथा कर्मचारी को प्रस्यावर्तित कर दिया जाएगा न जहां किसी उच्चतर पद पर प्रोन्नित के लिए किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होगा एक पुरोभाव्य णर्त के रूप में विनिर्दिष्ट किया जाता है वहां ऐसे किसी पद पर प्रोन्नित के लिए किसी कर्मचारी पर तब तक विचार नहीं किया जाएगा तब तक कि वह विहित परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर लेता है:

परन्तु किसी विभिष्ट मामले में, ऐसे विशेष कारणों से जो पेखबद किए जाएगें ग्रध्यक्ष ऐसी किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होने की भर्त शिथिल कर सकेगा।

- 35. प्रतिनियुक्ति किसो भी कर्मचारी को, ऐसी निबन्धनों पर जिनके लिए श्रव्यक्ष समयन्तमय पर रजामन्द हो, केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार, किसी स्थानीय प्राधिकारण, किसी कानूनी उपक्रम या कम्पनी श्रिधिनियम, 1956 (1956 का 1) में यथा परिभाषित किसी सरकारी कम्पनी या ऐसे किसी संस्थान के, जिसे सरकार से श्रनुदान प्राप्त होता है, नियंत्रण के ग्रधीन, प्रतिनियुक्ति पर सेवा या श्रन्यत सेवा की श्रनुका दी जा सकेगी।
- 36. निर्वाचन: यदि इन विनियमों में से किसी के निवर्धन— के बारे में कोई संदेह उत्पन्न होता है तो मामला बोर्ड को निर्देशित किया जाएगा श्रीर बोर्ड उस पर अपना विनिष्धय देगा।
- 37. निरसन श्रौर व्यावृत्तिः—इन विनियमों के तत्स्थानी निम्निखित नियम जो इन विनियमों के प्रारम्भ से ठीक पूर्व प्रवृत्त थे, निरसित किए जाते हैं, श्रर्थात्:—
- (1) नव मंगलौर पत्तन (उपसंरक्षक, बन्दरगाह मास्टर श्रौर पायलट भर्ती नियम, 1975)।
- (2) नव मंगलौर पत्तन (अधीक्षण इंजीनियर सिविल) भर्ती नियम, 1976।
- (3) नव मंगलौर पत्तन (मधीक्षण इंजीनियर-यांत्रिक) भर्ती नियम, 1977।
- (4) नत्र मंगलौर पत्तन (कार्यपालक इंजीनियर-सिविल यांद्रिक श्रौर वैद्युत) **भ**र्ती नियम, 1977 ।

- (5) नव मंगलौर पत्तन (वित्त सलाहकार ग्रौर मुख्य लेखा ग्रधिकारी ग्रौर लेखा ग्रधिकारी) भर्ती नियम, 1976।
- (6) नव मंगलौर पत्तन (खदान प्रबन्धक) भर्ती नियम, 1979।
- (7) नव मंगलौर पत्तन (समुद्री सर्वेक्षण) भर्ती नियम, 1976।
- (8) नव मंगलौर पत्तन (सम्पदा अधिकारी) भर्ती नियम, 1976।
- (9) नव मंगलौर पत्तन (सिविल सहायक सर्जन की श्रेणी का चिकित्सा ग्रिधकारी) भर्ती नियम, 1976।
- (10) नव मंगलौर पत्तन (सहायक इंजीनियर) भर्ती नियम, 1976।
- (11) नव मंगलौर पत्तन (सुरक्षा प्रधिकारी) भर्ती नियम, 1976।
- (12) नव मंगलौर पत्तन (सहायक यातायात प्रबन्धक) भर्ती नियम, 1977।
- (13) नव मंगलौर पत्तन (श्रम भिष्ठकारी) भर्ती नियम, 1976।
- (14) नव मंगलौर पत्तन (ज्येष्ठ श्रनुसंधान सहायक) भर्ती नियम, 1976।
- (15) नव मंगलौर पत्तन (वृत्तिक सहायक) भर्ती नियम, 1976।
- (16) नव मंगलौर पत्तन (सहायक वित्त सचिव) भर्ती नियम, 1978।
- (17) नव मंगलौर पत्तन (समूह ग ग्रौर समूह घ पद) भर्ती नियम, 1977।
- (18) नव मंगलौर पत्तन(सिगनल बोसन, ज्येष्ठ सिगनल मैन, कनिष्ठ सिगनल मैन श्रौर सिगनल खलासी) भर्ती नियम, 1975।
- (19) नव मंगलौर पत्तन (यातायात निरीक्षक) भर्ती नियम, 1977।
- (20) नव मंगलौर पत्तन (ग्राशुलिपिक) भर्ती नियम,
- (21) नव मंगलौर पत्तन (सहायक समुद्री कोर मैन) भर्ती नियम, 1977।
- (22) नव मंगलौर पत्तन (सहायक यातायात निरीक्षक टेली लिपिक ग्रौर लस्कर) भर्ती नियम, 1976।
- (23) नव मंगलौर पत्तन (प्रमुख प्राथमिक उपचार सहायक और प्राथमिक उपचार सहायक) मर्ती नियम, 1976।
- (24) नव मंगलौर पत्तन (पुस्तकालयाध्यक्ष) भर्ती नियम, 1977।
- (25) नव मंगलौर पत्तन (रेडियोग्राफर) भर्ती नियम, 1976।
- (26) नव मंगलौर पत्तन (ग्रिभिलेख पाल) भर्त्ती, नियम, 1977।

- (27) नव मंगलौर पत्तन (चूहेमार ग्रौर परिचर) भर्ती नियम, 1978।
- (28) नव मंगलौर पत्तन (ज्येष्ठ भेषजविज्ञ) नियम, 1978।
- (29) नव मंगलौर पत्तन (सर्देशवाहक) भर्ती नियम, 1979।
- (30) नव मंगलौर पत्तन (श्रम ग्रधिकारी) भर्ती (संशोधन) नियम, 1976।
- (31) नव मंगलौर पत्तन (श्रधीक्षण इंजीनियर-सिविल) भर्ती (संशोधन) नियम, 1976।
- (32) नव मंगलौर पत्तन (सहायक इंजीनियर) भर्ती (संशोधन) नियम, 1976।
- (33) नव मंगलीर पत्तन (सिविल सहायक सर्जन की श्रेणी के चिकित्सा-अधिकारी) भती (संशोधन) नियम, 1977।
- (34) नव मंगलौर पत्तन (समुद्री सर्वेक्षण) भर्ती (संशोधन) नियम, 1977।
- (35) नव मंगलौर पत्तन (प्रमुख प्राथमिक चिकित्सा सहायक ग्रौर प्राथमिक चिकित्सा सहायक) भर्ती (संशोधन) नियम, 1977।
- (36) नव मंगलौर पत्तन (ग्राशुलिपिक) भर्ती (संशोधन) नियम, 1977।
- (37) नव मंगलौर पत्तन (सहायक इंजीनियर) भर्ती (संशोधन) नियम, 1978।
- (38) तत्र मंगलौर पत्तन (कार्यपालक इंजीनियर सिविल, यांत्रिक ग्रोर वैद्युत) भर्ती (संशोधन) नियम, 1978।
- (39) नव मंगलौर पत्तन (वित्त सहलाकार ग्रौर मुख्य लेखा ग्रधिकारी ग्रौर लेखा ग्रधिकारी) भर्ती नियम, 1978।
- (40) नव मंगलौर पत्तन (सहायक समुद्री कोरमैन) भर्ती (संशोधन) नियम, 1979।
- (41) नव मंगलौर पत्तन (पुस्तकालयाध्यक्ष) भर्ती (संशोधन) नियम, 1979।
- (42) नव मंगलौर पत्तन (सहायक समुद्री इंजीनियर) भर्ती नियम, 1979।
- (43) नव मंगलौर पत्तन (हवार्फकैन प्रचालक) भर्ती नियम, 1979।
- (44) नव मंगलौर पत्तन (समूह 'ग' ग्रौर समूह 'घ', पद) भर्ती (संशोधन) नियम, 1979।
- (45) नव मंगलौर पत्तन (समूह 'ग' ग्रौर समूह, व' पद) भर्ती (द्वितीय संशोधन) नियम, 1979।
- (46) नव मंगलौर पत्तन (चूहेमार ग्रौर प्रिचर) भर्ती (संशोधन) नियम, 1980।
- (2) ऐसे निरसन के होते हुए भी, इस प्रकार निरस्त उक्त नियमों के अधीन की गई कोई बात या कोई कार्यवाही इन विनियमों के तत्स्थानी उथबन्धों के अधीन की गई समझी जाएगी।

| | | | [विनि | धनुसूर यम 3(ख) ग्र | | 3 | | |
|--|--|-----------------------------------|---|------------------------------|---|---|-------------|---|
| कम सं० | पद का नाम | पदों की संख्या | वेतन मान | वर्गी | करण | सीधे भर्ती किए जाने वा व्यक्तियों के लिए न्यूनत ग्रौर ग्रधिकतम ग्रायु-सीम | म लिए | भर्ती किए जाने वाले व्यक्तियों वे शैक्षिक और मन्य म्रहैताएं |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | | 6 | | 7 |
| | | | | | | | आवः | यक: |
| | यक सिचव | एक भर्ती की पद्ध | 650-30-740-35-880 द०रो•-40-960 ६० ते प्रोक्सित द्वारा वा ग्रथवा | वर्गे II | प्रोन्नति | 30 वर्ष से प्रधिक नहीं या स्थानांतरण द्वारा भर्ती | (ii) (i) | किसी मान्यता प्राप्त विशव- विद्यालय से उपाधि या समतुल्य किसी सरकारी विभाग या लोक निकाय या ख्याति प्राप्त श्रौद्यो- गिक समुत्थान में जिम्मेदार हैसियत में स्थापन श्रौर लेखा कार्य का 3 वर्ष का अनुभव । वांछनीय:— सरकारी नियमाँ श्रौर विनियमो श्रौर पत्तन प्रबंध का ज्ञान । किसी मान्यता प्राप्त विश्व- विद्यालय से विधि में उपाधि या समतुल्य। की टिप्पणियां |
| न्यक्तियों प्रायु भी प्रहंताएं ऐसे व्यक्ति विभाग में कर रहे हैं | के लिए विहित क्षेक भौर भन्य प्रोक्ति की भौर क्यों की जो भन्य मिट्टा पद धारण भौर प्रतिनियुक्ति क्यों की दशा में | स्थानांतरण द्वारा या भर्ती | द्वारा प्रतिनियुक्ति हंसीचे तथा विभिन्न त भरी जाने वाली | , | की दशा | | विहित ग्रव | |
| <u>-</u> | 8 | | 9 | 10 | - | 11 | 12 | 13 |
| नहीं | | पर प्रतिनि रण द्वार कालिक स | जिसके न हो सकने प्युक्ति पर स्थानांत- प (जिसमें भ्रल्प- संविदा भी है) के न हो सकने पर िद्वारा । | चयन | मध्याः जिन्हें 3 वर्षे प्रतिनियुं केन्द्रीय महाप संकट वितन्ह समतु 42.5 बेतन संघा महंत (प्रतिनिय् | क्षिक, भागुलिपिक भौर के तिजी सहायक में से ले मिजी सहायक में से ले मिजी सहायक में है। कि नियमित सेवा की है। कि नियमित सेवा की है। कि नियमित सेवा की हि मिजी के मिजी के प्राप्त में की नियमित सेवा की है ले मिजी के प्राप्त में की नियमित सेवा की है ले मिजी के पर्दों पर के की है भौर जो स्तंभ 7 में मिजी के लिए विहित लएं और अनुभव रखते हैं। पुक्ति/संविदा की भविष्व मिजी में प्राप्त के पर्दों पर अवुं की है भौर जो स्तंभ 7 में मिजी के लिए विहित लएं और अनुभव रखते हैं। पुक्ति/संविदा की भविष्व मिजी के लिए विहित लों सेवा की सेवा की होंगी)। | दो वर्ष | लागू नहीं होता |

(i) पत्तन के कार्य का ज्ञान और

(ii) किसी मान्यता प्राप्त विशव-विद्यासम से विधि में उपाधि या

यनुभव ।

समपुल्य। (iii) कन्नड् का ज्ञान। भारत का राजपत्त : असाबारण

| 8 | | | 10 | 11 | 12 | 13 |
|--------------------------------------|-------------------------|--|-----------|--|---------|--|
| लागू नहीं होता | (जिसमें भी है) य | पर स्थानान्तरण नागू अल्पकालिक संविदा ा स्थानांतरणद्वारा होने पर सीबी भर्ती | नहीं होता | प्रतिनियुक्ति पर स्थानास्तरण (जिसमें भ्रस्पकालिक संविदा भी है) या स्थानातरण: केन्द्रीय सरकार या महापक्तन स्थास या भौ खोगिक उपकम के भ्रष्ठीन सदुज पद धारण करने काले स्रष्ठिकारी। (प्रतिनियुक्ति या संविदा की भ्रष्ठिक नहीं होगी)। | धी वर्ष | नागूनहीं होता |
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
| 4. सुरझा मधिकारी | एक | 650-30-740-35-81 ब्रुटो०-35-880-40- 1000-ब्रुटो०-40- 1200४० | 0- वर्ग2 | 45 वर्ष से मधिक नही | বাদ্ত | किसी मान्यता प्राप्त विश्व- विद्यालय से उपाधि या समतुल्य। पुलिस विभाग में या सरकार के प्रधीन सुरक्षा विभाग में या किसी ख्याति प्राप्त भौकोगिक उपक्रम में पर्यवेकीय हैसियत में 10 वर्ष का मनुभव। |
| नेका प्रक्रिकारी | एक | 840-40-1000-ৰ৹হাত 40-1200হ০ | ०- वर्ग2 | लागू नहीं होता | | मही होता |
| 8 | | 9 10 |) | 11 | 12 | 13 |
| भाषु : नहीं शैक्षिक महैंताएं : हो | पर प्रतिकि रण द्वारा | जिसकेन हो सकने अव नेयुक्ति पर स्थानात- , भौर दोनों केन हो . र सीघी मर्ली द्वारा । | यम | प्रोक्ति: साहयक सुरक्षा प्रधिकारी जिसमे उस श्रेणी में नियमित प्राप्तार पर नियुक्ति के पण्चात् ६ वर्ष सेवा की है। प्रतिनियुक्ति पर स्थामांतरण: केन्द्रीय या राज्य पुलिस विभाग या केन्द्रीय प्रौद्योगिक सुरक्षा वल में सवुल पद धारण करने वाले प्रधिकारी। (प्रतिनियुक्ति की प्रविध सामा- स्यत: 3 वर्ष मे प्रधिक नही होगी)। | दो वर्ष | आग् न हीं होता |
| लागू नहीं होता | | नेयुक्ति पर स्थानांतरण/ च नांतरण द्वारा । | ाथन | प्रोप्तसि : नवम गलौर पस्त का ऐसा सहायक लेखा भ्रधिकारी (जो प्रति- नियुक्ति पर नहीं हैं) भौर जिस में उस श्रेणी में नियमित भ्राधार पर नियुक्ति के पश्चात् 5 वर्ष सेवा की है। प्रतिनियुक्ति पर स्थामान्तरण/ स्थानान्तरण : लेखा/लेखा परीक्षा की पिक्त के भ्रधिकारी या ऐसे भ्रधिकारी जिक्होंने किसी संगठित लेखा विभाग, मर्थात् भारतीय लेखा परीक्षा भीर लेखा विभाग, | হী বৰ্ষ | लागुनही होता |

8 9 10 11 12 13 भारतीय रका लेखा विभाग, भारतीय रेख लेखा विभाग भौर भारतीय बाकतार लेखा घौर किस विभाग और भार-तीय सिविल लेखा सेवा, में मधीनस्य लेखा सेवा लेखाकार (बेतनमान 550-900 र॰) की वा समतुख्य श्रेणी में 5 वर्ष की नियमित सेवा की है। (प्रतिनियुक्ति की प्रविध सामा-न्यतः 3 वर्ष से मधिक नहीं होगी)। 7 1 3 4 5 नौ 6. सहायक लेखा घधिकारी 500-20-700 द॰रो०-वर्ग 2 लागू नही होता लागू नहीं होता 25-900ছ৹ 8 10 11 13 12 प्रोचित : जागू नहीं होता प्रोसति द्वारा, जिसके न हो सकने (i) 20 प्रतिशत ऐसे प्रधीक्षकों दो धर्व नागुनहीं होता पर स्थानास्तरण या प्रति-में से जिन्होंने उस श्रेणी में 2 निदुक्ति पर स्थानांतरण द्वारा । वर्ष नियमित सेवा की है और (ii) 80 प्रतिशत पत्तम के ऐसे प्रधान लिपिक/प्राशु-लिपिक 30 থাঁ০ লি ০/ भण्डारी/कनिष्ठ प्राशुलिपिक/ नि॰ खे॰ लि॰/रोकडिया/ टेलीफोन घापरेटरों में से जिन्होंने पूर्वोक्त किसी भी भेणी में कुल एक वर्ष की नियमित सेवा की है (जिसमें उच्चतर श्रेणियों जैसे कि ग्रंधीकक, मध्यक्ष का निजी सहायक षावि में की गई सेवा भी है) धौर जो पत्तन प्राधिकारियों हारा ली गई विभागीय परीका उत्तीर्ण कर लेते हैं। स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्ति पर स्यानास्तरण: किसी भी संगठित लेखा विभाग धर्षातु भारतीय लेखापरीक्षा मौर लेखा विभाग, भारतीय रेल लेखा विभाग, भारतीय रक्षा लेखा विभाग झादि के एस०ए० एस० लेखाकार की पंक्ति के प्रधिकारी। [प्रतिनियुक्ति की भवधि सामा-म्मत: 3 वर्ष से घष्टिक नहीं है विधामान दो एस ०ए ०एस ० लेखाकार जो मधिष्टायी हैसि-यत से पव धारण कर रहे हैं सक्षायक लेखा मधिकारी (वर्ग

2) के रूप में वर्गीकृत किए

आएंगे]

मारत का राजपळ : असाधारण

मावश्यकः (1) किसी मान्यताप्राप्त विश्व- घधीक्षण इजीनियर 1500-60-1800-100-वर्गा 45 वर्ष (सिविल) विद्यालय से सिविल इंजीनियर 200050 में उपाधि या समतुल्य । (2) बन्दरगाह इजीनियरी में 10 वर्षका ग्रनुभव या किसी पत्तन पर ज्येष्ट सिविल इंजीनियर पद मे तुलनीय भनुभव । वाछनीय : डाक भीर बन्दरगाहों पर प्रयुक्त होने वाले वैद्युत भीर यांत्रिक उपस्करों के प्रचालन का कार्यसाधक ज्ञान। प्रावश्यकः (1) किसी मान्यतात्राप्त विषद्ध-40 वर्ष से मधिक नही कार्यपालक इंजीनियर पार 1100-50-1600 ব৹ यगै 1 विद्यालय से मिविल इंजीनियरी (सिविल) में उपाधि या समतुल्य । (2) बन्दरगाह इंजीनियरी में 5 वर्षे का भ्रमुभव। 13 12 8 9 10 11 प्रोन्नति : ऐसा कार्यपालक इंजीनियर दो वर्ष मागृनहीं होता बोक्रति द्वारा, जिसके न हो सकते भाय : नहीं नैक्षिक बहुताएं : हां पर प्रतिनिमुक्ति पर स्थानांत-(सिविल) जिसने उस श्रेणी में नियमित माधार पर नियुक्ति रण द्वारा (जिसमें मस्प-कालिक संविदा भी है), धौर के पश्चात् 5 वर्षे सेवाकी है। प्रतिनियुक्ति पर स्थानास्तरण दोनों के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारत । (जिसमें घल्पकालिक संविदा भी है) केन्द्रीय या राज्य सरकार महापत्तन न्यास धौर पश्लिक सेक्टर उपक्रमों में सदश पद धारण करने वाले मधिकारी या ऐसे मधिकारी जिन्होंने 1100-1600 रू० या समतुल्य वेतनमान के पव पर कम से कम 5 वर्ष सेवाकी है भौर जिनके पास स्तम्भ 7 के ब्राधीन सीधी भर्ती के लिए विहित महेताएं हैं। (प्रतिनियुक्ति/संविवा की भविध सामान्यतः 4 वर्षं से प्रधिक महीं होगी)। प्रोपति : ऐसे सहायक इंजीनियर (मिविल) दो वर्ष लागू नहीं होता 60 प्रतिमत प्रतिनियुक्ति पर चयन भ्याब् : नहीं भौर समुद्री सर्वेकको जिन्होने स्थानातरण (जिसमें घरफ-रीक्षिक अर्द्वताएं : हो भ्रपनी-भ्रपनी श्रेणी में 8 वर्ष कालिक संविदा भी है) । नियमित सेवा की है। प्रति-स्थानांतरण द्वारा जिसके व हो सकने पर प्रोन्नति द्वारा गौर नियक्ति पर स्थानान्तरण (जिसमें ग्रन्पकालिक संविदा दोनों के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा । 40 प्रसिक्त भी है)। स्वामातरण: बोस्नति द्वारा, जिसके न हो सकने पर प्रतिनियुक्ति पर केन्द्रीय या राज्य सरकारों, महा-पत्तन न्यासो या पश्लिक सेक्टर स्थानांतरण द्वारा (जिसमें बस्पकालिक संविवा भी है) उपक्रमों के भाषीन सद्श पद धारण करने वाले प्रधिकारी भौर दोनों के न हो सकने पर या ऐसे मधिकारी जिन्होंने सीधी महीं द्वारा।

| 8 | 9 10 | | 11 | 1 | 2 | 13 |
|---|---------------------------------|---------------|--|----------|---------------|-------------------------------------|
| | | | 700-1300 रु० भीर 650 -1200 रु० या समबुख | | | - |
| | | | वेतनमान के पदों पर ऋमशः | | | |
| | | | 5 फ़ीर 8 वर्ष सेवा की है फ़ीर | | | |
| | | | जो सीधी भर्ती के लिए बिहित | | | |
| | | | मह् ताएं भीर मनुभव र य ते | | | |
| | | | ₹1 | | | |
| | | | (प्रतिनियुक्ति या संविदा की संविध सामान्यतः 3 वर्ष से | | | |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | / | भविक नहीं होगी)। | | | ···· |
| 1 2 | 3 4 | | 6 | | | |
| 1 4 | | 5 | | | 7 | |
| p. सहायक इंजीनियर | नौ 650-30-740- | 35-810- वर्ग2 | 30 सर्च | | | न्यताप्राप्त विका |
| (सिविल) | द०रो०-35-88(| | | ` , | विद्यालय से | सिविल इंजीनियर |
| | 1000-द०रो० ६० | 10-1200 | | (2) | | या समतुल्यः। न्निर्माण भौर सिवित |
| | | | | ` ' | | संकर्मी के अनुरक्ष |
| | | | | ৰান্তৰ | | ા અનુમવા |
| | | | | | | ररीका अनुभयः। |
| , , , , , , , , , , , , , , , , , , , | | | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | <u>-</u> | | |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | | 13 |
| | | | त्रोक्षति : | | - | |
| बाबुः नहीं | प्रोमति द्वारा, जिसके न हो सकने | | ऐसे कनिष्ठ इंजीतियर (मिविल) | दो वर्ष | नाग् | ्नद्गीं होसा |
| शैक्षिक पहुँताएँ : हा | पर प्रतिमियुक्ति पर स्थानान्त- | | भीर नक्शानबीस श्रेणी 1 | | | |
| जीमास्तंभ ७ में वर्शित है। | रण द्वारा (जिसमें कल्प | | (प्रतिनियुक्ति पर व्यक्तियों को | | | |
| | कालिक संविदा भी है) भी | | छोड़कर), जिन्होंने उस श्रेणी | | | |
| | दोनों के म हो सकने पर सीर्ब | ľ | में यदि उनके पास उपाधि है | | | |
| | भर्ती द्वारा । | | तो 3 वर्ष भौर यदि उनके | | | |
| | | | पास डिप्लोमा है तो 7 वर्ष की | | | |
| | | | नियमित सेवाकी है। नक्शा- | | | |
| | | | नबीस श्रेणी 1 (सिविल) को | | | |
| | | | कम से कम एक वर्ष का क्षेत्रीय | | | |
| | | | भ्रनुभव होना चाहिए ।] | | | |
| | | | प्रतिनियुक्ति पर स्वानाश्तरण | | | |
| | | | (जिसमें घल्पकालित संविदा भी है) : | | | |
| | | | केम्ब्रीय सरकार, राज्य सरकारो, | | | |
| | | | भहापत्तन स्यास या पश्चितक | | | |
| | | | सेक्टर उपत्रमों के भ्रधीन सवृश | | | |
| | | | पद धारण करने वाले झीत- कारी। | | | |
| | | | (प्रतिनियुक्ति/संविवा की खबिब | | | |
| | | | (रासानम्हरकाताया का स्रापाध | | | |
| | | | सामान्यतः ३ वर्ष से प्रधिक | | | |
| | | | | | | |

| 1 2 | 3 | <u>. </u> | | 6 مستیل پیششهای معتبی با | | 7 | |
|--------------------------------------|--|--|----|---|--|--|--|
| | | | | | श्रीवर | यक | |
| (ও অ বান সর্ল ম ক | ाक | 650-30-740-35-8 बर्जा०-35-880-40 1000-इंग्ले०-40-1 |)- | 35 वर्ष से श्रिधिक नही | | किसी मान्यताप्राप्त विश्व विद्यालय से खनन इंजीनियरी है उपाधि या समनुख्य और नीर्व मद (ii) में यथा वर्णित 2 वर्ष का धनुभव । या किसी मान्यनाप्राप्त सस्था है खमन इंजीनियरी में बिप्लोम और नीर्व मद (ii) में यथ वर्णित 5 वर्ष का धनुभव आतुत्सारक खास विसिधम 1961 की धारा 16 के प्रमुसा खानों में समुभव । | |
| 8 | | 9 | 10 | 11 | 1 2 | 13 | |
| ध्रायुः नहीं शैक्षिक श्रहताप् हां | 9 10 प्रोक्षति द्वारा, जिसके न हो सकने चयन पर प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्त- रण द्वारा (जिसमें झल्पका- लिक संविदा भी है) और वोनों। के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा | | | प्रोप्तति . ऐमा विभागीय किनष्ठ इंजीनियर (खान) जिसने यदि उसके भास उपाधि/बिष्कोमा है तो उस श्रेणी में कमश 3/7 वर्ष की नियमित सेवा की है)। प्रतिनियुक्ति पर स्थानाम्परण (जिसमें घल्पकालिक संविद्या भी है): केन्द्रीय या राज्यं सरकारो या महा-पत्तन न्यास या पिन्सक सेक्टर उपत्रमो मे सदृश पव धारण करने वाले घिकारी या ऐसे प्रधिकारी जिन्होंने 550-900रू० या समतुल्य खेतनमान वाले पदों पर 3 वर्ष सेवा की है और जिसके पास (1) स्तंभ 7 में सीधी भर्ती के लिए बिहत अहनाएं भीर अनुध्य धौर (ii) प्रथम या दितीय भेणी मे खान-प्रध्यक का सक्षमता प्रमाण पत्र है। (प्रतिनियुक्ति की घवधि सामा-त्यतः 3 वर्ष से धिक नहीं होगी)। अहताए धीर अन्ध्रम | 12 13 दो वर्ष लागू नहीं होता दिप्पणसभी श्रधिकारियों को परिवोक्ता की श्रवधि के दौरान प्रचम या ब्रिसीय | | |
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 | |
| | | | | | आव ः / ` | | |
| 11. समुद्री पर्यवेक्स | ग्रं क | 650-30-740-35- द०रो०-35-880-4 1000-द०रो०-40- | 0- | 35 वर्षं से श्रक्षिक नही | (1) | किसी मान्यताप्राप्त विश्व विश्वालय से उपाधि वा सम् तुल्य। या डफरिन या "राजेन्द्र" सन्तिः उसीर्ण परीक्षा पास करवे व प्रमाण-पक्ष। या वितीय मेट (फारेन गोइंग) य उपमत्तर के रूप से परिसह मंत्रालय का सक्षमता प्रमाणप | |

7

6 3 2 1 (2) भारतीय नौसेना वाणिज्य मौसेना या किसी जल राशिक सर्वेक्षण संगठन में 3 वर्ष का व्यावहारिक धन्भव जिसमें लगभग 2 वर्ष का ध्यावहारिक प्रनुमव जल-राशिक सर्वेक्षण में होना चाहिए। 12 11 10 13 9 प्रोचितः ऐसा सहायक समुद्री पर्यवेक्षक दो वर्ष 50 प्रतिशत प्रोप्तति द्वारा, जिसके लागू नहीं होता जिसने उस श्रेणी में 3 वर्ष की न हो सकने पर प्रतिनियुक्ति नियमित सेवा की है। पर स्थानांतरण द्वारा (जिसमें ग्रस्पकालिक संविदा भी है) भौर प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण **शोनों के न हो सकने पर सीधी** (जिसमें भल्पकालिक संविदा भर्तीद्वारा। 50 प्रतिशत सीधी भी है) या स्थानान्तरणः भर्ती द्वारा, जिसके न हो सकते कैन्द्रीय सरकार, राज्य सरकारों, पर प्रमिनियक्ति पर स्थनास्तर महापत्तन, परान ग्यास पब्लिक सेन्डर उपत्रमों भीर लघु पत्तन द्वारा (जिसमें अल्पकाकि संगिवा भी है) या स्थानन्तरण द्वारा। ज्ञमाई भौर सर्वेक्षण संगठन में सबुश पद धारण करने वाले मधिकारी या ऐसे मधिकारी जिन्होंने 550-900 रू० या समतुल्य बेतनमान बाले पदों पर कम से कम 3 वर्ष नियमित सेवा की है भीर जो सीघी भर्ती के लिए विहित महैताएं भौर मनुभव रखते हैं। (प्रतिनियुत्ति/संविदा की मवधि सामान्यतः 3 वर्षे से प्रधिक नहीं होगी)। 3 भावस्यकः वर्ग2 35 वर्ष से भिधक नहीं 12. सम्पदा प्रधिकारी एक 650-30-740-35-810-(1) किसी मान्यताप्राप्त विश्व-द०रो०-35+880-40-विद्यालय से, प्रधिमानतः विधि 1000-व॰रो०-40-1200 र० या सिविल इंजीनियरी में उपाधि या समसुख्य । (2) भूमि के प्रबंध, निपटान भौर पट्टे पर देने के झौर सम्पदा भू-मर्जन, भू-राजस्य मादि के कार्य का पर्यवेक्षकीय हैसियत में 3 वर्षका मनुभव ≀ 10 11 12 लागु नहीं होता प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण लागू भहीं होता प्रतिनियुक्ति पर स्यानास्तरण दो वर्ष नागूनहीं होता (जिसमें अस्पकालिक संविदा (जिसमें अल्पकालिक संविदा भी है) या स्थानान्तरण द्वारा, भी है) या स्थानान्तरण : जिसके न हो सकने पर सीधी केन्द्रॉय सरकार या राज्य सरकार भर्ती द्वारा । के अधीन सहायक इंजीनियर (सिविल) या तहसीलवार या समतुल्य पंक्ति के बाधकारी या महा-पत्तन स्थास में सबुश पद धारण करने वाले अधिकारी। (प्रतिनियुक्ति या संविदा की **भवधि** सामान्यतः तीन वर्षे से भश्चिक नहीं होगी)।

| [भाग]1-—सण्ड ३। | (1)] | | | भारत | का राजालाः भवाक्षारणु | | 233 |
|------------------------------------|-----------------------|--|---------------|-------------|--|--|---|
| 1 2 | 3 | 4 | | 5 | 6 | | 7 |
| | | | | | | 1 | रावस्थकः |
| 13. भ्रधीक्षण इंजीनियर (यांकिक) | र एक | 1500-60-1800 2000 ቴሪ | -100- व | र्ग 1 | 45 वर्षे से प्रधिक न | ही (1) | किसी मान्यताप्राप्त विश्व विद्यालय से यांत्रिक इंजीनियर में उपाधि या समतुरू |
| | | | | | | | या |
| | | | | | | | नीवहन धौर परिवहन मंत्राल द्वारा जारी किया गया सक्षमर प्रमाणपत्र/प्रथम श्रेणी इंजीनिय (बाष्प भौर मोटर या मोटर) |
| | | | | | | (2) | प्लावमान यानों के जल पर भी तट पर मनुरक्षण भीर मरम्म का 10 वर्ष का मनुभव भी डाक भीर बन्दरगाह से संबंधि यांतिक उपस्कर से सुपरिचि होना चाहिए। |
| | | | | | | (3) | किसी मान्यताप्राप्त कर्मशाल में जिम्मेदार हैसियन में यांतिक संग्रंत्र भीर उपस्कर हथलाने क मनुभव। |
| 8 | | 9 | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| तम् : नहीं चैतार्पः हा | (जिसमें झ भी है) य | ल्पकालिक संविदा या प्रोच्नति द्वारा, हो सकने पर सीधी | नागू नहीं होत | π | प्रतिनियुक्ति पर स्थानाम्तर (जिसमें अल्पकालिक संविध् भी है) या प्रोप्तति : केन्द्रीय सरकार या राज्य सरका महापत्तन न्यास और पब्लि सेक्टर उपक्रमों के प्रधीन सवृग्य पद धारण करने वा अधिकारी या ऐसे प्रधिकार जिन्होंने 1100-1600 ह पुनरीक्षित) या समयुल् नेतनमान वाले पदों पर 5 व नियमित सेवा की है। ऐ विभागीय कार्यपालिक इंज नियर पर भी, (यिक्तिक जिसने उस श्रेणी में 5 व नियमित सेवा की है, विच किया जाएगा और नियुक्ति लिए उनका चयन किए जां की दशा में पद को प्रोप्ता द्वारा भरा गया समझ् जाएगा। (प्रतिनियुक्ति या संविदा के | त र, काले ले पर्यं से -) चे र के ते ते | लागृ नहीं होता |

तुल्य

(2) वैद्युत सकर्मों के निर्माण प्रधासन ग्रीए ग्रनुरक्षण मे जिम्मेदार हैसियत में 5 नवें ना अनुभव। भारत का राजपत : प्रसाधारण

10 मागु नहीं होता प्रतिनियक्ति पर स्थानान्तरण दो वर्ष साग नही होना प्रतिसियक्ति पर स्थानान्तरण षायु : मही (जिसमें भल्पकालिक संविदा र्मक्षिक चहुँताएं : हां (जिसमें ग्रह्पकालिक संविधा भी है) या प्रोन्नति: भी है) या प्रोन्नति द्वारा, जिसके न हो सकने पर सीधी केन्द्रीय सरकार या राज्य सर-कार, महापत्तन भौर पश्लिक भतींद्वारा । सेक्टर उपकर्मी के प्रधीन सबुश पद धारण करने बाले ग्रधिकारी या ऐसे ग्रधिकारी जिल्होने कमशः 700-1300 650-1200 ६० या सम-तुल्य बेतनमान बाले पदों पर कम से कम 5 मौर 7 वर्ष सेवा की ग्रीर जो स्तम 7 के श्रधीन सीधी भर्ती के लिए विहित गई-ताएं रखते हैं। ऐसे सहा-यक इंजीनियर (वैद्युत) पर भी, जिसने नियमित भाषार पर नियुक्ति के पक्ष्वात् उस श्रोणी में 8 वर्ष सेवा की है, विचार फिया जाएगा। नव भंगलौर पत्तन के सहा-यक इंजीनियर (वैद्युत) का उस पद पर नियुक्ति के लिए चयन किये जाने की दशा में, उसे प्रोन्नति 🖫 भरा गया समझा जाएगा (प्रतिनियुक्ति या संविदा की भवधि सामान्यतः ३ वर्ष से प्रधिक नहीं होगी) 3 5 1 30 वर्ष 16. सहायक इंत्रीनियर 650-30-740-35-810-वर्ग 2 धावस्यक: (1) किसी मान्यता प्राप्त विशव-(यांक्रिक) द ०रो ०-35-88 0-40-विद्यालय से मंत्रिक इंगी-1000-च ०रो ०- 40-नियरी में उपाणि सा तम-1200₹• तुल्य (2) किसी बड़ी यांक्रिक सा सम्ब्री कर्मशाला या संगठन जिम्मेदार हैसियत में मनुभव । 2 वर्ष का 12 13 10 11 8 जागू नहीं शोदा प्रोमति द्वारा, जिसके न हो सकने दो नर्व धायु : महीं चयन ऐसा कनिष्ठ इंजीनियर (यांबिक) **गैक्तिक भ**र्तुनाएं : हा पर प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्त-स्तंभ ७ में यथा उपदक्षित रण द्वारा (जिसमें भल्पकालिक भौर नक्शानबीस श्रेणी 1 संविचा भी है) भीर दोनों के न (प्रतिनियुक्ति पर व्यक्तियों हो सकने पर मीधी भर्ती द्वारा। को छोड़ कर) जिसने, यबि उसके पान उपाधि है तो उस भेणी में 3 वर्ष भीर यदि उसके पास डिप्सोमा 🕏 तो उस श्रेणी में 7 वर्ष

THE GAZETTE OF INDIA: EXTRAORDINARY

236

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | |
|-----------------------|--|--|--------|---|---|--|
| 18 सहायक समुद्री इंजी | नियर गृक | 650-30-740-35-810- ब ०रो ०-35-880-40- 1000-ब ०रो ०-40- 1200 ६० | वर्ग 2 | 3 5 वर्षे से भ्रघिक नही | भो टी क प्रमाणपत्न या (मोटर) क पुल्य । 40,000 प्र० के क्वीजल रक्षण इंजी के भ्रनुपाल नेवी द्वारा | ो क्यो टी का एम (जीनियर (मोटर) इनलैण्ड इंजीनियर साणपत्र या सम- या स० तक उत्पादन संस्थापन पर भनु- नियर के कर्तेव्यो न का भारतीय जारी किया गया |
| | | | | | के इंजन क | क्ष के स्वतंत्र भार लगभग 5 वर्ष का |
| | | | | | बांछनीय : समुद्री यानो के मरम्मत क कर्मशाला मे श्रनुषर नेवी यानो | के अनुरक्षण और या पोत सरस्मत मे या डाक यार्ड जया वाणिज्यिक पर इंजीनियर के समतुल्य सेवा। |
| 8 | 9 | | | 11 | 12 | 13 |
| लागू महीं होता | प्रतिनियुक्ति प (जिसमें झर भी है)/स्था | र स्थानान्तरण लागू नहं पकालिक संविदा भान्तरण द्वारा, । सकने पर सीधी | | प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण (जिसमें भ्रत्यकालिक संविदा भी है)/स्थानान्तरण: केन्द्रीय/राज्य सरकारो/महापसन न्यास में सदृश पद धारण करने वाले भ्रधिकारी या ऐसे भ्रधिकारी जिन्होंने क्रमश. 550-900 द०/525-700 द० या समतुल्य धेतनमान वाले पदौं पर 3/8 वर्ष सेवा की है भौर जो स्तंभ 7 के भ्रधीन विहित धर्हताएं रखते हैं। (प्रतिनियुक्ति/संविदा की भ्रवधि सामान्यत: 3 वर्ष से भ्रधिक नहीं होगी) | दो वर्ष | सागू नही होता । |
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | |
| 19\ बन्दरगाह मास्टर | एक : | 1500-60-1800 স্৹ | वर्ग 1 | 4.5 वर्षे से भ्रधिक नही | या व्यवसाय या किसी देश जिसका कामनवेल्थ का है, द्वारा विदेश गामी | परिवहन मंत्रालय ं बोर्ड, यू० के० झन्य कामनवेल्य सक्षमता प्रमाणपत्न विधि मान्यता ं जारी किया गया ं पोत के मास्टर सक्षमता प्रमाणपत्न |

| | | | 7 (2) ग्रनिर्वेन्धित टनभार वाले सभी प्रकार के पोतो को हैडल करने में प्रवीणना ग्रमिप्राप्त करने के पश्चात् पाइलट के रूप में 5 वर्ष का ग्रनुभव। |
|--|---|-----------|--|
| | 9 10 | | 12 13 |
| ्रायु : नही श्रायु : नही श्रीक्षिक श्रष्ट्रेनाएं : हां | | | दो वर्ष लागू नहीं होता |
| | | | |
| 1 2 | 3 4 5 | 6 | 7 |
| 2 0 . पा ष्ट्रलट | एक 1200-50-1500-60- वर्ग 1800 र ० | 1 45 वर्ष | स्रावस्थक (1) भारत सरकार के नौवहन भौर परिवहन मंस्रालय या व्यवसाय बोर्ड, यू० के० या किसी प्रस्य कामन वैल्थ देश जिसका सक्षमसा प्रमाणपत्र कामन वैल्थ विधि मान्यता का है, द्वारा जारी किया गया विदेशगृतमी पोत के मास्टर के स्त्रम में सक्षमता प्रमाणपत्र का धारक हो। |
| | | | (2) किसी विदेशगार्सी पोत के मुख्य श्रिषकारी या भारतीय नौसेना के कार्यपालक श्रिध- कारी के रूप में 3 वर्ष का ग्रमुभव । |

भारत का राजपतः ग्रसाधारण

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|---------------------------------|--|------------------------------------|---|--|--|
| नायू नहीं होता | सीघी भर्ती द्वारा, जिसके न सकने पर स्थानान्तरण/प्र नियुक्ति पर स्थानान्तरण द्व | ति- | स्थानान्तरण /प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण: महापत्तन न्यास या केन्द्रीय सर- कार के विभाग या समुद्र तटवर्ती राज्य सरकारों में सदृश पद धारण करने वाले ग्रधिकारी। (प्रतिनियुक्ति या संविदा की ग्रविध सामान्यतः 3 वर्ष से ग्रधिक नहीं होगी) | दो वर्ष | लागू नहीं होता |
| 1 2 | 3 | 4 5 | 6 | | 7 |
| 21. सहायक यातायात प्रव | द ०रो ०- 3 | 5-880-40- ०रो ०-40- | ु · 35 वर्ष से ग्रधिक नही | (2) पत्तन कम पर्यवे ग्रनु | मान्यताप्राप्त विश्व- ालय से उपाधि या तुल्य । यातायात का, जिसमें से कम एक वर्ष का क्षिकीय हैसियत का भव भी है, 3 वर्ष व्यावहारिक ग्रनुभव । |
| | | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 8 लागू नही होता | 9 प्रितिनियुक्ति पर स्थानान् द्वारा (जिसमें ग्रल्पक संविदा भी है), जिसके सकने पर सीधी भर्ती द्वार | तरण लागू नहीं होता ालिक न हो | प्रतिनियुक्ति पर स्थानान्तरण जिसमें श्रव्पकालिक संविदा भी है): महापत्तनन्यास या केन्द्रीय या समुद्र तटवर्ती राज्य सरकार के विभागों में सदृश पद धारण करने वाले श्रधिकारी । (प्रतिनियुक्ति या संविदा की ग्रविध सामान्यतः 3 वर्ष से ग्रिधिक नहीं होगी)। | दो वर्ष | लागू नहीं होता |
| | 3 | 4 5 | 6 | | 7 |
| 1 2 22. ज्येष्ठ ग्रनुसंघान र | | 750-द ०रो ०-30 वर्ग 2 | 25 वर्ष से ग्रधिक नही | विद्य गणि सांवि में समद् किसं विद्य स्प या स्रोर संस्थ | े मान्यताप्राप्त विश्व ालय्रसे सांख्यिकी य त या ग्रर्थशास्त्र य इयकी के साथ वाण्णिक स्नातकोत्तर उपाधि य तुल्य । या तो मान्यताप्राप्त विश्व में सांख्यिकी या गणित श्रर्थशास्त्र के साथ उपाधि किसी मान्यताप्राप्ता किसी मान्यताप्राप्ता के प्रशिक्षण के पश्चाक |

होगी) ।

| 1 | 2 | 3 | 4 | | 5 | 6 | | 7 |
|------|---|---|--|--------|--|---|--|---|
| 25. | प्रभागीय लेखाकार | 1 | 425-15-500-द०रो०-1 560-20-640-द०रो० 20-700-25-750 रु | - | 3 | लागू नहीं होता | | लागू नहीं होता |
| 26. | उच्च श्रेणी लिपिक/भंडा | री 65 | 330-10-380-द॰रो०- 12-500-द०रो०-15- 560 रू० | ব্ | र्ग 3 | लागू नहीं होता | | लागू नहीं होता |
| 27. | निम्न श्रेणी लिपिक/ रोकड़ियां/टेलीफोन ग्रापरेटर | 129 | 260-6-290-द०रो०-6- 326-8-366-द०रो०- 8-390-10-400 ह० | | वर्ग 3 | कम से कम 18 ग्रधिक से ग्रधिक 25 | टंकण में क्षाब्द प्रति परन्तु— (क) ऐसा व्या उक्तप्रहृंत शर्त के नियुक्त है कि उ गित तहीं तब तक वृद्धि प्राण्या श्रेणी जाने या भाव नहीं आने या करने के किन्तु उक्ति कि नियुक्त कि निकल्सा बोर्ड न यह है कि उ है कि निकल्सा है कि उ दक्ण कर विकल्प कर कि निकल्सा कि निकल | या समतुल्य श्रह्ता। कम से कम 30 मिनट की गित, वित जो टंकण में ा नहीं रखता है, इस अधीन रहते हुए किया जा सकता वि तक वह टंकण शब्द प्रति मिनट की ं श्रिजित कर लेता वेतनमान में वेतनप्त करने के लिए पुष्ट किए जानिका हो होगा; श्रीर कलांग व्यक्ति; जो लिपिकीय पद धारण लिए आहित है त शर्त के प्रधीन किया जा के प्रधीन कार्या जब ऐसा हो तब सिविल ह प्रमाणित कर देता व्रत विकलांग व्यक्ति ते के लिए उपयुक्त में नहीं है। |
| | 8 | | 9 | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| | नहीं होता | सकने पर | जिसके न हो प्रतिनियुक्ति द्वारा । | चयन | उर 3 प्रतिनि केन्द्रीय सम में जि पर प्रति न्य हो | ०श्रे०लि०/भण्डारी जिन्होंने त श्रेणी में कम से कम वर्ष सेवा की है। युक्ति: पुराज्य लेखा विभाग में तक्ष्प या समतुल्य श्रेणियों कार्य कर रहे ऐसे व्यक्ति न्होंने प्रभागीय लेखाकार तेक्षा उत्तीर्ण कर ली है। नियुक्ति की श्रविक नहीं ती) | दो वर्ष | लागू नहीं होता |
| लागू | नहीं होता | को भस्यी के अधीन के भाघार 2. 25 प्रतिष् श्रेणींचिप भापरेटर | ात, पत्तन के निम्न क/रोकड़िया/टेलीफोन | ग्रचयन | · आ में | | दो वर्ष | लागू नहीं होता |

| 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|--|--|--|--------|--|---------------------------------------|--|
| त्यु नहीं हुताए हा | नान्तरण सकने प भौर 10 प्रति कर्मचारि | भत प्रोम्नति पर स्था- द्वारा, जिसके न हो र सीधी भर्ती द्वारा; भित पत्तन के वर्ग 4 | चयन | प्रोन्नित/स्थानान्तरण पत्तन के ऐसे कार्य सहायको (जो डिप्लोमा धारफ नही है) भीर कार्य मेटो में से, जिन्होने उस श्रेणी में 3 बर्ष सेवा की है। कार्यमेटो से वस्तुपरक परीक्षण उत्तीणं करना अपेक्षित हैं भीर वे सीधी भर्ती के लिए विहित महंलाएं भी रखते हो/10 प्रतिशत रिक्ष्तयां पत्तन के नियमित स्थापन के ऐसे वर्ग 4 कर्मचारियों में से निम्नित स्थापन के ऐसे वर्ग 4 कर्मचारियों में से निम्नित लिखत शतों के भ्रधीन भरी जाने के लिए मारिक्षित रहेंगी: (1) जयन, ऐसे वर्ग 4 कर्मचारियों, जो न्यूनतम गैक्षिक घहंता, अर्थात् मैद्रिकुलेशन या समतुत्य प्रहंता, की भ्रपेक्षा को पूरा करते हैं, के लिए सीमित विभागीय परीक्षा के माध्यम से किया जाएगा। (2) इस परीक्षा के लिए मधिकताम भ्रायु 45 वर्ष (मनुसूचित जनजाति अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों के लिए 50 वर्ष) होगी; भौर (3) समृह घ स्थापन में कम से कम 5 वर्ष की सेवा भावप्यक होगी; भौर (4) इस रीति से भर्ती किए जाने वाले क्यक्तियों की श्राम्वस्थक होगी; भौर (4) इस रीति से भर्ती किए जाने वाले क्यक्तियों की प्राप्त सेवा भावप्यक होगी; भौर (4) इस रीति से भर्ती किए जाने वाले क्यक्तियों की प्राप्त होगी; भीर | दो वर्ष | लागू नही होता |
| | | | | नहीं गई है, ग्रगले वर्ष को ग्रग्नेनीत नहीं की जाएगी। | | |
| | | | | | | |
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
| 1 2 8. आ शुलिपिक मी का निजी सहाय | 1 | 550-20-650-25- 750 च० | बर्ग 3 | न्यूनतम् 18 वर्षे अधिकतम् 25 वर्षे | 2 टकण मे शब्द प्रति 3. भागुलिपि | या समजुल्य धहेता कम से कम 4 मिनट की गति में कम से क प्रति मिनट क |

भारत का राजपत्न : ग्रमाधारण

| 8 | 9 | | 10 | | 11 | 12 | 13 |
|--------------------------|--|---|----------------|-------------|--|------------------------------------|---|
| ागू नहीं हो ता | प्रोन्नति द्वारा, सकते पर स्थ प्रतिनियुक्ति छ न हो सकने प | गानान्तरण या ारा । जिसके | चयन | 3 | प्रोन्नतिः ऐमा प्राण्निषिक जिमने उम श्रेणी में कम से कम 3 वर्ष मेक्षा की है। स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्तिः केन्द्रीय/राज्य मरकार के विभागों मे ममरूप या समतुत्य श्रेणिया मे कार्य करने वाले व्यक्ति। (प्रतिनियुक्ति की प्रविध सामा- न्यतः 3 वर्ष से प्रविक नही होगी) | दो वर्ष | लागू मही होमा |
| 1 2 | <u>-</u> | 4 | - | . —— 5 | | | 7 |
| | | 25-15-500-द०रे 15-560-20-70 | | · 3 | 18 झौर 2 5 वर्ष के बीच | वाणिज्य 2 श्रंग्रेशी प्रतिरि | मान्यताप्राप्त विश्वन म से कला, विश्वान या म स्नातक। म्राणुलिपि में 120 शब्द सनट की गति ग्रौर श्रंग्रेजी में 40 शब्द प्रति मिनट नि। |
| 30. कमिष्ट ग्राशृलिपिक | 12 3 | 30-10-380-य०रो 12-500-य०रो० 560 रु० | | iз | 24 वर्ष से ऋधिक नहीं | तथा प्रति गि | या उमके समतुल्य श्रर्हस प्राशुलिपि मे 80 शब् ननट ग्रीर टंकण मे 40 प्रति मिनट की गति । |
| 31 सहायक सुरक्षा प्रधिका | री 2 3 | 80-12-440-वर् 15-560-दररो 640 रु | | र्गे 3 — | न्यूनतम 21 वर्ष ग्रधिकतम 30 वर्ष | के साध् स्रन्य : के प्रय | या समतुल्य प्रर्हत य ही प्रश्निशामक ग्रौ प्रकार के सुरक्षा उपाय तिन का कम मे क वर्ष का अनुभव । |
| | | | 10 | | | | - 13 |
| <u> </u> | प्रोज्ञति द्वारा, सकने पर सीध | — जिसके न हो | चयन | | प्रोन्निति पत्तन का ऐसा कनिष्ट श्राणु- विपिक जिसने उम श्रेणी में कम से कम 5 वर्ष सेवा की है। | दो वर्ष | लागू नही होता |
| लाग् नहीं होता | मीधी भर्ती द्वारा, सकने पर स्थ नियुक्तिद्वारा | प्रानान्तरण/प्रति- | लागू नहीं होता | | स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्तिः केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकारां के भ्रधीन समरूप या सम- सुल्य श्रेणियो में कार्यरत व्यक्ति। (प्रतिनियुक्ति की भ्रवधि माधा- रणतः 3 वर्ष से ग्रधिक नही | दो अर्थ | सागू नहीं होना |
| | | | | | होगी) । | | |

| 1 2 | 3 | | 1 | 5 | 6 | | 7 |
|-------------------------|-------------------------|--|---------|---|---|---|---|
| 32. राजस्य निरीक्षा | 啊 1 | 290-8-330- व ०रो०-12 गे०-15-5 | -500-द॰ | वर्ग3 | न्यूनतम 18 वर्ष ग्रधिकतम 25 वर्ष | सा | सेकेण्डरी या समदुस्य प्रहं ता य _ु में राजस्व कार्य में पूर्व नुभव भौर प्रशिक्षण । |
| 33. ग्रभिलेख पाल | 2 | 225-5-260-6 व०गे०-6-3 | | वर्गे 3 | ला गू नही होता | सागू न | हीं होता |
| 34. यातायान निरीध | तक 1 | 425-15-500- 15-560-2 | | वर्ग3 | लागू नहीं होता | लागू न | ही होता |
| 35. महायक याताया | स्त निरो ञ्च क 3 | 380-12-500- 15-560ትና | | वर्ग उ | 21 झौर 25 वर्ष के बीच | किसी बोर हाय की वाछनी उन ट | मान्यनाप्राप्त विश्वविद्यालय/ हे से विष्यविद्यालय पूर्व कक्षा/ (र सेकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण हो। य: प्यक्तियों को प्रक्षिमान दिया एगा जिन्हें नौबहन संकर्मी |
| | _ — — — | | | | 11 | | |
| लागू नही होता | | _9 द्वारा जिसके न हो ८ स्थानान्तरण/प्रति- प्रगा | | केन्द्रीय श्रधीन में क (प्रतिनिय | 11 क्त/स्थानान्तरणः सरकार/राज्य सरकारों के समान या समतुख्य श्रेणियों गर्यरत उपयुक्त व्यक्ति। पुक्ति की भ्रवाध सामान्यतः वैसे भ्रिधिक नहीं होगी)। | <u>12</u> 2 वर्ष | 13 लागू नहीं शेता |
| लागू नहीं होता | प्रोन्नति द्वारा | | ग्रचयन | पत्त- f ^क है f | ा के ऐसे समूह घं कर्म- बारियों में से जिनके पास मेडिल कक्षा उत्तीर्ण होने तो न्यूनतम गैकिक महैता है भौर जिन्होंने पत्तन के नेयमित स्थापन में 5 वर्ष वा की है। | 2 वर्ष | लागू महीं होता |
| सागू नहीं होता | | जिसके न हो प्रतिनियुक्ति पर गद्वारा। | चयन | नि न श्रे क प्रतिनि केन्द्रीः के स व व | तः के सहायक धातायात रिक्षिकों में से जिक्क्षेति व मंगलौर पत्तन में उस णी में 3 वर्ष सेषा की है। स्युक्ति पर स्वानान्तरण: य सरकार/राज्य सरकारों कार्यालयों में सवृश या मतुल्य पद धारण करने ले व्यक्ति (प्रतिनियुक्ति । प्रविध सामान्यतः 3 वर्ष ग्राधिक नहीं होगी)। | 2 বর্ণ | सागू न हीं होता |
| लागृ महीं हो ना | सकने पर | जिसके न हो स्थानान्तरणद्वारा न हो सकते पर ≱ारा। | चयन | उर की स्थाना पसन जि | मिलान लिपिक जिन्होंने म श्रेणी में 4 वर्ष सेवा है। न्तरणः के उच्च श्रेणी लिपिक न्होंने उस श्रेणी में कम कम 2 वर्ष सेवा की | 2 ষর্ণ | लागू नहीं होना |

भारत का राजपक्ष : घसाधारण

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | - | 7 |
|---------------------------|---|---|---|--|--|--|
| 36 मिलान लिपिक | ir- 3 | 290-द०गे०- 25-५-३६६-द०गे०- 90-10-400 ४० | वर्ग 3 18 | ग्रीर 25 वर्ष कंबीच | शंखनीय उन व्यक्तिय जामगा | या उनक समसुल्य । ो ना प्रश्निमान दिया जन्में पनन के किसी विभाग का शनुभव है। |
| 37 पुस्तकालग्राध्यक्ष | | i- १६(1-द्व०सी०- ति((1)-द्व०सी०- १ त- के० | वर्गः । | .उ २ वर्ष | तिबाल समतुल्य (च) किसी विचाल कालय या स (ग) कम तक वि में य वैक्सिस्य | मान्यताप्राप्त विश्व- य या संस्था सं पुस्त- विज्ञान मे उपाधि मतुल्य विष्लोमा । पे कम हाई म्कूल स्तर शक्षण माध्यम के रूप |
| | 4 | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| भायु नहीं अर्ह्सताम हो | (i) 90 प्रतिशत स्था द्वारा जिसके न ह पर प्रोफ्तित पर स्था द्वारा चीनो के न पर सीबी भर्मी द्वारा | ो सकते नाम्तरण हो सकते | वृत्य में से जिनके पा | तर्धारित कर्मचारि- स्थानान्तरणद्वारः २ सोधी मर्तीकिए स्थानियो के लिए नाएं हैं। | दो वर्ष | लागू नहीं होता। |
| | (11) पसमके वर्ग 4 क क शक सीमित विभागी द्वारा 10 प्रतिशत (| | की 10 निभ्नलिखि रहते हुए स्थापनी से भरी | ा लिपिक की श्रेणी प्रतिशत रिक्तिया त सती के अधीन पत्तत के नियमित के कर्मकारियों ये जाने के लिए | | |
| | | | नेक व परीक्षा माध्यम जो क न्युन्तक शबसि | के ऐसे कर्मचारियों शिमिन विभागीय या परीक्षण के ते चयन किया किया जिनके पास ग गैक्षिक प्रहुँताए प्रहेंना है, | | |
| | | | (ii) इस पर के लिए 4.0 वर्ष ग्रीर ग्र के कार्य | िक्षा या परीक्षण ए घधिकतम भाग् ं (मनुसूचित जाति नुसूचित जनजाति विद्यारियो के निए ं) होती। | | |
| | | | में काम | के स्थापन मंकम 5 वर्ष की सेवा ग्रामध्यक है। | | |
| | | | (iv) उस पर मिलान मे किल बाली पि गान मक भरी गई बर्ष के | इति से की गई भर्ती लिपिकों के सवर्ग विवर्ष में होने पित्रयों के 10 प्रति- मी मिल रहेंगी म रिक्तियों को अगर्ज लिए अग्रजीत नहीं जायेगा। | | |
| | सीधी मर्ती द्वार | | | | | |

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
|--------|------------------------------|-------------------------------------|---|--------------|---|-----------|---|
| | कनिष्ठ इंजीनियर (सिविल) | 48 | 425-15-500 द०३ 15=560-20-700 | | न्यूननम 21 वर्ष प्रधिकतम 33 वर्ष | इंजीतियरी | ों में स्तातक या सिविल में 3 वर्ष के पूर्व धनुभव नियरी में बिप्लीमा। |
| 39. | कतिष्ठ इंजीतियर | (चान) 1 | 425-15-500 - द०र 15-560-20-7 | | 21 33 वर्ष | के साम ध | इंजीनियरी में बिप्लोमा तूप्पादक स्नान बिनियम, ग्रनुसरण में क्षमन मे उ |
| | कनिष्ठ इंजीनियर (मोस्रिक) | 21 | 425-15-500-द०र 15-560-20-70 | | न्यूनतम 21 वर्ष मधिकतम 33 वर्ष | | यरी में स्नातक या सेव। के साथ यांक्रिक डिम्लोमा। |
| | 8 | | | 10 | | 12 | 13 |
| | नही | सकते पर उसकेभी न भर्ती द्वारा | ारा, जिसके न हो प्रोप्निति द्वारा ग्रीर हो सकते परसीबी सब के न हो सकते [क्ति द्वारा। | चयन | स्थानान्तरणः पत्तन के निर्धारित कमें स्थापन के ऐसे कार्यं ध्रश्रीमस्थ जिनके पास सीधे भर्ती किए जाने वाले व्यक्तियों के लिए विद्यित धर्मुताएं हैं। | नो वर्ष | नागृ नहीं होता |
| | | | | | प्रोज्ञति ऐसे नक्जानवीस श्रेणी 2 (सिविल) जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है या ऐसे कार्य महायक (सिविल) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा के साथ ही सिविल इंजीनियरी में दिस्लोमा है। प्रतिनियुक्ति | | |
| | | | | | केन्द्रीय/राज्य सरकार के भन्य विभागों में या सहा पक्तन न्यास, पब्लिक सेक्टर उपकर्मों में सभान या समतुख्य श्रेणियों मे कार्यरत व्यक्ति। | | |
| | | | | | (प्रतिनियुक्ति की प्रविध सामा- न्यतः 3 वर्ष से प्रधिक नही होगी |) | |
| ताम् : | नहीं होता | | स्थानास्तरण/प्रति- | लागृनही होता | स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्ति केन्द्रीय/राज्य सरकार के अन्य विभागों या महापत्तम न्यासों/ पब्लिक संक्टर उपक्रमों में ममान या समपुल्य श्रीणयों में काम करने वाल व्यक्ति। (प्रतिनियुक्ति की ग्रवधि मामान्यत 3 वर्ष से श्रधिक नहीं होगी) | दो वर्ष | लागू नहीं होता |
| | गडी | सकते पर उसके भी न भंदी द्वारा | ारा, जिसके न हो प्रोप्नति द्वारा ग्रीर । हो सकसे परमीधी सब के न हो सकसे युक्ति द्वारा । | चय न | स्थानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य घडीनस्थ जिनके पास सीधे भर्ती किए जाने बाले व्यक्तियों के लिए बिहिस महैताएं है। | दो वर्ष | लाग् नहीं श्लोला |

| | ाग [[सा ण्डा 3 (1)] | · | | भारत क | ाराजपत्र ग्रसाधारण ==================================== | | 247 |
|----|-----------------------------|---|---|----------------|---|--------------|---|
| | 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| _ | | · | | | — — — — — — — — प्रोन्नति | - | |
| | | | | | एस नक्शानवीस श्रेणी 2 (यात्रिक) | | |
| | | | | | जिन्होंने उस श्रेणी से 3 वय | | |
| | | | | | की नेवाकी है या ऐसे कार्य | | |
| | | | | | महासक (यादिक) जिनके पास | | |
| | | | | | उस श्रेणी से 5 वर्ष की सेवा के | | |
| | | | | | माच हो यांशिक इजीनियरी में | | |
| | | | | | बिप्सोमा है । | | |
| | | | | | प्र िनयुन्ति | | |
| | | | | | केन्द्रीय/राज्य सरकार के घन्य | | |
| | | | | | विभागो मे या महापत्तन न्यास | | |
| | | | | | पब्लिक सेक्टर उपऋगो में | | |
| | | | | | समान या समतुस्य श्रेणियो मे | | |
| | | | | | कार्यरत व्यक्ति । | | |
| | | | | | (प्रतिनियुक्ति की धनधि | | |
| | | | | | सामान्यत 3 वर्ष से श्रक्षि क | | |
| _ | | | | | | | |
| 1 | | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
| 1 | कनिष्ठ इ जीनियर | | 425-15-500-व०गे० | वर्ग 3 | 31 33 वर्ष | | नियरी में स्नातक य |
| | (विद्युत) | | 15-560-20- | | | | की पूर्विक सेवा के सा |
| | | | 700 হ৹ | | _ | _ | इजीनियरी में डिप्लोमा । |
| 42 | सहायक समुद्री सर्वेक्षक | ह्ययक समुद्री सर्वेक्षक 1 550-20-650-25- 750 क | | भग ३ | न्यूनतम 25 वर्षे प्रधिकतम 45 वर्षे | समतुल्य | जीनियरी में उपाधि य : या 3 वर्ष के अनुभव |
| | | | | | | साथ सिर्व | वेल इजीनियरी में डिप्सो।म |
| | | | | 10 | | | वेल इजीनियरी में डिप्सोाम |
| | 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| | | | द्वारा जिसके न हो | 10 चयम | स्यानान्तरण | | |
| | | सकते पर | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके | _ _ | स्यानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स | द्वारा जिसके न हो प्रोप्नति द्वारा, उसके सकने परसीधी भर्ती | _ _ | स्यानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पास सो। सर्वी विष्णु जाने पारे | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोप्निति द्वारा, उसके सकने परसीधी भर्ती | _ _ | स्थानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अधीनस्थ जिनके पास सो। सर्वी थिए जाने पारे व्यक्तियो के लिए विहिन | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्थानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्स स्थापन के ऐसे कार्य अधीनस्थ जिनके पास स्रोत सर्वी विष्णु जान प्रार्वे ज्यक्तियों के लिए विहिन ग्राहुताएं हैं। | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्तरण पत्तन के निर्धारित कर्स स्थापन के ऐसे कार्य अधीनस्थ जिनके पास स्रोत सर्वी किए जाने पारे व्यक्तियो के लिए विहिन स्रहेताएं हैं। प्रोक्ति | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्स स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पास स्था भनी विष्णु जान पाने व्यक्तियो के लिए विहिन प्रदेताएं हैं। प्रोक्षित | 12 | 13 |
| - | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्थानात्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम सोर भनी विष् जान गारे व्यक्तियों के लिए विहिन महेताएं हैं। प्रोम्नति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2(विज् न) जिन्होन उस श्रेणी में 3 वर्ष | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम स्रोत भर्ती विष्णु जान गार्ने व्यक्तियों के लिए विहिन महिताएं हैं। प्रोक्षित ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विख्त) जिन्होनं उस श्रेणी में 3 वर्षे सेवा की है था ऐसे कार्य सहायक | 12 | 13 |
| - | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम सो। भनी थिए जान गारे व्यक्तियों के लिए विद्यन प्रदेताएं हैं। प्रोक्ति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2(विश्वन) जिन्होनं उस श्रेणी में 3 वर्षे सेवा की है या ऐसे कार्य सहायक (विश्वन) | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम स्थाप मनी भनी किए जान जाते व्यक्तियों के लिए विद्वित्त सहैताएं हैं। प्रोक्षति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विद्युत) जिन्होनं तस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा ने | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्तरण पत्तन के निर्धारित कर्स स्थापन के ऐसे कार्य अधानस्थ जिनके पास सो। सनी किए जान बारे व्यक्तियों के लिए विहिन सहैताएं हैं। प्रोक्षात हैं। प्रोक्षात ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विश्वत) जिन्होनं उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है था ऐसे कार्य सहायक (विश्वत) जिनके पास उस श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा में साथ ही विश्वत हजीनियरी में | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम स्थाप मनी भनी किए जान जाते व्यक्तियों के लिए विद्वित्त सहैताएं हैं। प्रोक्षति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विद्युत) जिन्होनं तस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा ने | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम सो। नर्नी विए जान गार्ने व्यक्तियों के लिए विहिन महेताएं हैं। प्रोप्ति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2(विखुत) जिन्हीनं उस श्रेणी में 3 वर्षे सेवा की है या ऐसे कार्य सहायकः (विद्युत) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्षे की सेवा ने माथ ही विद्युत इजीनियरी में दिल्लोमा है। | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्वानात्तरण पत्तन के निर्धारित कर्स स्वापन के ऐसे कार्य अधानस्थ जिनके पास सो। मनी विष्णु जाने पाने व्यक्तियों के लिए विहिन सहेताएं हैं। प्रोक्षरित ऐसे नक्जानबीस श्रेणी 2(विश्वत) जिल्होन उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है या ऐसे कार्य सहायक (विश्वत) जिनके पास उस श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा के साथ ही विश्वत इजीनियनी में विश्वत इजीनियनी में विश्वता है। प्रतिनिश्वतिक संक्षीय/राज्य सरकार के घन्य विश्वागों में या महापत्तन स्थाम | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्वानात्तरण पत्तन के निर्धारित कर्स स्वापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पास सो। भनी विण् जान गाने व्यक्तियों के लिए जिल्लि प्रकृता हैं। प्रोक्षित हैं। प्रोक्षित हैं। प्रोक्षित ऐसे नक्षानबीस श्रेणी 2 (विख्त) जिल्होन उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनके पास उस श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा के माथ ही विद्युत इजीनियरी में दिल्लोमा है। प्रतिनियुक्ति केन्द्रीय/राज्य सरकार के घन्य विकारों में या महापत्तन स्थास प्रिलक सेक्टर उपक्रमों में | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्सरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम सी। भनी किए जान जारे व्यक्तियों के लिए विहिन प्रकृताएं हैं। प्रोक्ति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विखून) जिन्होनं उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युन) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा में माथ ही विद्युत हजीनियरी में विद्युत सरकार के घत्य विभागों में या महापत्तन त्याम परिसक सेकटर उपक्रमों में समान या समतुत्य श्रीणयों में | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्थानात्सरण पक्त के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम सी। भर्ती विष्णु जान जारे व्यक्तियों के लिए विहिन महेताएं हैं। प्रोक्षति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विख्नुत) जिन्होनं तस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनहोनं तस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा के माथ ही विद्युत इंजीनियरी में दिल्लोमा है। प्रतिनियुक्ति केन्द्रीय/राज्य मरकार के घन्य विभागों में या महापक्त स्थाम परिलक नेक्टर उपक्रमों में समान या समतुत्य श्रेणियों में कार्यर व्यक्ति । | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्यानात्तरण पक्षन के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्य जिनके पाम सी। भर्ती विष्णु जान जारे व्यक्तियों के लिए विहिल सहताएं हैं। प्रोक्षति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विक्कृत) जिन्होनं उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है था ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा के माथ ही विद्युत इजीनियरी में दिल्लोमा है। प्रतिनियुक्ति केन्द्रीय/राज्य मरकार के बन्य विभागों में या महापक्षन स्थाम पश्चिक सेकटर उपक्रमों में समान या समतुत्य श्रेणियों में कार्यर व्यक्ति । (प्रतिनियुक्ति की। अर्थाः | 12 | 13 |
| | | सकते पर भीन हो स द्वारा जिस | द्वारा जिसके न हो प्रोन्निति द्वारा, उसके सकते परसीधी भर्ती वेन हो सकते पर | _ _ | स्थानात्सरण पक्त के निर्धारित कर्म स्थापन के ऐसे कार्य अर्धानस्थ जिनके पाम सी। भर्ती विष्णु जान जारे व्यक्तियों के लिए विहिन महेताएं हैं। प्रोक्षति ऐसे नक्शानबीस श्रेणी 2 (विख्नुत) जिन्होनं तस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनहोनं तस श्रेणी में 3 वर्ष सेवाकी है या ऐसे कार्य सहायक (विद्युत) जिनके पास उम श्रेणी में 5 वर्ष की सेवा के माथ ही विद्युत इंजीनियरी में दिल्लोमा है। प्रतिनियुक्ति केन्द्रीय/राज्य मरकार के घन्य विभागों में या महापक्त स्थाम परिलक नेक्टर उपक्रमों में समान या समतुत्य श्रेणियों में कार्यर व्यक्ति । | 12 | 13 |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | |
|-----------------------------------|--|-----------------------------------|---|-----------------|---|--|
| नहीं | प्राप्तिक्षाण जिसके न हो । पर स्थानान्तरण/प्रतिनिध् द्वारा, दोनों के न हो सकर सीधी भर्ती द्वारा | [बिल | प्रोन्नति . कतिष्ट समुद्री सर्वेक्षक जिसने उम श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । स्यानान्तरण/प्रतिनियृक्ति : केन्द्रीय/राज्य सरकार के प्रत्य विभागों में या महापस्तन न्यासो/ पब्लिक सेक्टर उपक्रमों में समान या समतुख्य श्रेणियों में कार्यरस व्यक्ति । (प्रतिनियुक्ति की धवधि सामान्यतः 3 वर्ष से प्रधिक नहीं होगी) | 2 वर्ष | लाग् नहीं होता | |
| | | | | | | |
| 1 2 43 कलिष्ठ समुद्री सर्वेकम | | 4 5 0-द०रो०- वर्ग 20-700 द० | ं उ न्यूनतम 18 वर्षे भ्रधिकतम 35 वर्षे | स मुद्री | 7 इंजीनियरी में क्रिप्लीमाया य मर्वेक्षण में झनुभव सहित त्य प्रहेता। | |
| 4. प्रधास सम्झानयीस (सिविस) | 1 550-20-69 ኝ0 | 50-25-750 बर्ग | | सागू नहीं होता | | |
| 45. नक्शानबीस श्रणीं—1 (सिथिस) | 425-15-50 15-560-2 | 00-द०रो० वर्ग 20-700 रु० | 3 सागू नही होता | | गियू नई। होता | |
| | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | |
| लागु नहीं होता | गीधी भर्ती द्वारा जिसके न हो स पर स्थानान्तरण द्वारा ध दोनों के न हो सकने पर प्र नियुक्ति द्वारा | प्रोर | स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्ति . केन्द्रीय/राज्य सरकार के भन्य विभागों में समान या समसुल्य श्रेणियो में कार्यरत व्यक्ति । (प्रतिनियुक्ति की भवधि सामान्यतः 3 वर्ष से ग्रधिक नही होगी) | 2 वर्ष | लागू न ही हो ता | |
| लाग् नहीं द्वोता | प्रोक्षति द्वारा, जिसके न हो स् पर स्थानान्तरण द्वारा इ टोनों के म हो सकते प्रतिनियुक्ति द्वारा । | िर | प्रोप्ततिः नक्ष्मानश्रीस श्रेणी 1 (सिश्विल) जिसमें उम श्रेणी में कम से कम 4 वर्ष की सेवा की है। स्थानान्तरण प्रतिनिमुक्तिः केन्द्रीम/राज्य सरकार के श्रन्य विभागों में समाम या समसुख्य श्रेणियों में कार्यरत व्यक्ति। (प्रतिनियुक्ति की संश्रिष्ठ मामान्यतः 3 वर्ष से श्रीधक नहीं होगी) | <u>2</u> वर्ष | क्षागृनहीं होता | |
| लाग् नहीं होता | प्रोक्षति द्वारा, जिसके न हो सक पर स्थानान्तरण क्षारा ग्री दोसों के न हो सकते प प्रतिनियुक्ति द्वारा। | रि | प्रोप्तति : नक्जानवीम श्रेणी II (मिविल) जिसने उस श्रेणी में कम से कम 3 वर्ष सेवा की है । स्थानाम्लरण प्रतिनियुन्ति : केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकारों के विभागों में समक्रप या सम- तुल्य श्रेणियों में कार्य क्रेने श्राले क्यक्ति । (प्रतिनियुक्ति की भ्रविध सामान्यतः 3 वर्ष से प्रविभ नक्षी होगी) | 2 सर्व | सागू नही होता | |

| भाग 11 वाण्य 3 | (1)] | | | भारत व | हा राजपन्न असाधारण | | |
|----------------------------------|----------------|--|--------------------|-------------|--|---|--|
| 1 2 | 3 | 4 | | | 5 6 | | 7 |
| 46. नम्शानवीस श्रेणी (याजिक) | [-1 . 4 | 425-15-500-50 15-560-20-700 | | वर्गे 3 | मागू नहीं होता | | नागूनई होता |
| 47. नक्शानवीस भेणी (विद्युत) | 1 1 | 425-15-500-द०रे 560-2 0- 700 | | र्ग अ | लागू नहीं होता | य | ागू नह ी होता |
| ⊌8. नक्शानकीस श्रेणी- (सिकिल) | - 2 6 | 330-10-380-द०र 12-500- ग ०रोत 15-560 क | | वर्ग उ | स्यूननम् 18 वर्षे प्रियकत्म 25 वर्षे | इंजीनि की प्रभाण का क भौर पद्म के प्रास्त | पनाप्राप्त सस्था में सिविल प्रजी में कम से कम 2 वर्ष अवधि का नक्ष्णानवीस क पत्र (इसके अन्तर्गत 6 मान शबहारिक प्रशिक्षण भी है) इसके अतिरिक्त ऐसा प्रमाण- को के पश्चान् किसी क्यानि संगठन में इस क्षेत्र में कम से नि वर्ष का व्यावहारिक अनु |
| | | 9 | 10 | | 11 | 12 | 1 3 |
| | पर स्था | | ग्रचयभ | | प्रोन्नितः नक्तानश्रीमः श्रेणी 2 (याजिक) जिसने उसः श्रेणी में कम में कम उवर्ष सेवा की है। स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्तिः | 3 वर्ष | ल≀गूनर्टाह्योसा |
| | | | | | केन्द्रीय भरकार/राज्य मरकारो के विभागों में समरूप या सम- तुल्य श्रेणियों मे कार्यरन व्यक्ति | | |
| | | | | | (प्रतिनियुक्ति की प्रविध सामान्यतः उवर्षसे प्रश्चिक नहीं होगी) | | |
| लागुनहीं होता | पुर स्थान | जिसकेन हो सकने तास्तरण द्वारा श्रीर न हो सकनेपरश्रीत- द्वारा। | भं च यन | | प्रोन्नि: नक्यानिक्षीस श्रेणी 2 (विश्वृत) जिसने उस श्रेणी मे कम से कम तीन वर्ष सेवा की है। स्थानान्नरण/प्रतिनियुक्तिः केन्द्रीय/राज्य सरकार के विभागो में समस्प या समनुत्य पदों पर कार्येरन व्यक्ति। | 2 वर्ष | लागृ नहीं होता |
| | | | | | (प्रतिनियुक्ति को ग्रविध सामा- न्यतः 3 वर्षे से अधिक नहीं होगी) | | |
| नही | | , जिसके न हो सकने भर्ती द्वारा | अच्यन | | प्रोफ़ित: नक्शानवीस श्रेणी (सिनित) जिसने इस पत्तन में इस श्रेणी मैं 3 वर्ष सेवा की है। | 2 वर्ष | सागृनहीं होता |

| 1 | | 2 | 3 | 4 | | 5 | 6 | | 7 | | |
|-----|---------------------------------|--------------|-----------------------------|---|------------------|---------|--|---|---|--|--|
| 49. | नक्यानवीस (यांबिक) | श्रेणी— 2 | 2 | 330-10-380-य 12-500-व०रोव 560 रू० | | वर्ग 3 | न्यूनतम 18 वर्षे प्रधिकतम 25 वर्ष | ेनियरी वे सबिध पत्र (व्यावहारि इसके प लेने के संगठन | किसा मान्यताप्राप्त सस्या स याक्षिक इवा ेनियरी में कम से कम 2 वर्ष की ग्रवधि का नक्षान्त्रवीस का प्रमाण पत्र (इसके भ्रन्तर्गत 6 मास का व्यावहारिक प्रविक्षण भी है) भौर इसके ग्रविरिवत ऐसा प्रमाणप्रस थेने के प्रकात् किसी क्यातिप्राप्त संगठन में इस क्षेत्र में कम से कम सीन वर्ष का व्यावहारिक अनुभव। | | |
| | नक्शानबीस (त्रि यु त) | भोजी 2 | 1 | 330-10-380- 12-500- य ०री 560 फ्र | | बर्ग 3 | न्यूनतम 18 वर्षे घधिकतम 25 वर्षे | इंजीनिय की सब प्रमाणप का क्या भीर इस पद्म लेने प्राप्त सं | नताप्राप्त संस्था में विद्युत री में कम से कम 2 वर्षे श्रि का नक्शानबीस का अ (इसके ग्रन्तगंत 6 मास अहारिक प्रशिक्तण भी है) तके ग्रतिरिक्त ऐसा प्रमाण के प्रश्वात् किमी ख्याति- गठन में इस क्षेत्र में कम से रा वर्षे का ब्यावहारिक । | | |
| 51- | मक्कानबीस (सिबिल) | भ्रेणी-3 | 6 | 260-8-300-রত্ব 340-10-380- 10-430 রত | | वर्गे 3 | 1825 वर्ष | इंजी≀नयरी की सब' प्रमाणप | ताप्राप्त संस्था से सिविश में कम ने कम 2 वर्ष धि का नक्शानबीसी का ल (इसके अन्तर्गत 6 मास बहारिक अनुभव भी है) | | |
| | 8 | | . — | - | 10 | ~ | | 12 | 13 | | |
| | नर्द्रो | प्रोस | चिद्वारा, जिस् परसीधी भ | सकेन हामकने तिद्वारा | प्रचयन प्रचयन | | प्रोन्नित . नक्णाननीस श्रेणी 2 (यास्त्रिक) जिसने इस पत्तन में इस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है। | 2 वर्ष | लागू मही होता | | |
| | नही | प्र | ान्निति द्वारा परसीर्धाभ | जिसको न ही सक हर्नो द्वारा | ने अचयन | | प्रोन्नति : नक्काननीस श्रेणो 3 (विश्वन) जिसने इस पसन मे इस श्रेणी में 3 अर्थ सेवा की है । | 2 वर्ष | प्तामू नहीं होसा | | |
| | न ही | মী | पर स्थानान | जिसके न हो सकते लरण द्वारा, और हो सकते पर सीधी । | ग्र चीयन | | प्रोप्तिः ऐसे फोर मृद्रकः जिल्होंने उस श्रेणी से कम से कम 5 वर्ष सेवा की है स्थानास्मरणः | ७ वर्ष | सागृ नहीं होता | | |
| | | | | | | | पसन के निर्माण कार्य प्रभारित ऐसे कर्मभारिकृत्य में से जिसके पास सीधे भर्ती किए जाने वाले व्यक्तियों के लिए विहित मर्ह- ताएं हैं। उनके मामलों में मधिमतम शायुमीमा शिथिल करके 40 वर्ष की जा सकती है | | | | |

| 1 2 | 3 | 4 | | G | 1 |
|--------------------------------------|---|--|------------|------------|--|
| 52: नक्जामबीस श्रेणी 3 (यांश्रिक) | 3 | 260-8-300-ছ০ বৈ০-৪ 340-10-380-ছ০ শী০- 10-430 ছ০ | — वर्गः | 19~25 वर्ष | किसी सास्यताप्राप्त सस्था रे यांश्रिक इनीतियरी में कम से कम 2 वर्ष का श्रवधि का नक्ष्णानशीसी का प्रमाणपत्र (इसके श्रत्नेगत 6 मास का ब्यावहारिक श्रमुभव भी ८) |
| 53 नक्सानचीस श्रेणी 3 (विद्युत) | 1 | 26(+8-300-द०रो०-8- 340-10-380-द० ^२ ो०- ,10-430 र० | वर्ग 3 | 18—25 वर्ष | किसी मान्यताप्राप्त सम्था से विज्ञुत इजीतियरी से कम से कम 2 वर्ष की प्रजीध का नक्ष्णानतीसी का प्रमाण- पक्ष (इसके ग्रन्तगैत 6 मास का ज्याबहारिक ग्रनुषय भी है) |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|-----|---|---------------|--|--------|------------------------|
| नही | प्रौधित द्वारा, जिसके न द्वो सकने पर स्थानान्तरण द्वारा, भौर दोनो के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा । | श ज यन | प्रोन्नतिः ऐमे फेरो मुद्रक जिन्होने उसर् प्रेणी में कम से कम 5 वर्ष सेवा की है सम प्रत् के प्रधीन रहने हुए कि उन्हें विभागीय परीका | 2 वर्ष | लागृ न ही हो ता |
| | | | स्थानान्तरण : | | |
| | | | पत्तन के निर्माण कार्य प्रभारित ऐसे निर्धारित कर्मकारिकृत्द में से जिनके पास सीधी भर्मी किए जाने वालों के लिए विहित भ्रष्ट्रंताएं, है । उनके मामले में भ्रष्टिकृतम श्रायु सीमा श्रिथिल करके 40 वर्ष की जा सकती है। | | |
| नही | प्रोक्षिति द्वारा, जिसके न हो सकते पर स्थानान्तरण द्वारा, धौर दोनों के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | श्चयन | प्रोक्तति : ऐसे फेरी सुद्रक जिल्होने उस थेणी से कम से कम 5 वर्ष सेवा की है। इस णत्ते के प्रधीन रहते हुए कि उन्हें विभागीय परीक्ता उनीर्ण करनी होगी। | 2 সর্ঘ | लागृन हीं हो स |
| | | | स्थानान्तरण: पत्तन के ऐसे निर्धारित कर्म- वारिवृत्य में से जिनके पास सीधी भनी किए जाने वाली के लिए विक्रित ग्रर्सनाए है । उनके सामले से ग्रधि- कतम ग्रायुसीमा शिथिल करके 35 वर्ष की जा सकती है । | | |

| 1 2 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|---|---|-----------------------|--|--|
| 54 फेरो महक | 2 225-5-260-6- द्रु० गे०-6-3 | | 1 8-2 द वर्ष | मैट्रिकुलेझन या फेरो-मुद्रण मे एक का पूर्व प्रमुभव सक्रिय उ समनुक्य ग्रर्हना। |
| 55 कैमरामेश | 1 550-20-650-1 | 5-750 रुष्या । | स्मृनशम 25 वर्षे श्रधिकतम √ 5 वर्ष | (i) मैट्रिकुलेशन या इसके तुल्य प्रकृता । (ii) चलचिस्र घौर स्थिर फो ग्राफी से पर्याप्त ग्रनुभव । |
| 56 रसाय ने ज | 1 425-15-500-3 15-560-20 | | न्यृत्तमम 22 वर्षे ग्रिथिकतम 30 वर्षे | (i) रसायन विज्ञान से बी० एसी० । (ii) ध्रकार्बनिक सिश्रण विज्ञिष् सिविल डजीनियरी से उप किए जाने वाले पदार्थी सीसेन्ट, चूना, ब्रिट्टी, पानी सल क विलेखण का ध्रमुभ |
| 8 | | 10 | 11 | 12 13 |
| नागूनही होना | मीधी भर्ती द्वारा | | ·— — — — लागुनहीं होता | |
| नागृ नहीं हाँता | सीधी भर्ती द्वारा जिसके न हो सकते पर स्थानास्तरण द्वारा ग्रौर दोनों के न हो सकने पर प्रतिनियुक्ति द्वारा | नागृ सही ह ीना | स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्ति केन्द्रीय/राज्य सरकार के भ्रत्य विभागों में समक्रम या सम- तुल्य श्रेणी में कार्यरत व्यक्ति। (प्रतिनियुक्ति की श्रवधि सा- मान्यत 3 वर्ष से श्रिष्कि नहीं होंगी)। | 2 वर्ष लागू नही हो सा |
| तम् न हीं ह ोता | भीधी भर्ती द्वारा जिसके न हो सकते पर स्थानास्तरण द्वारा ग्रीर दोनों के न हो सकते पर प्रतिनिधुक्ति द्वारा | लागृनकी होता | स्थानान्तरः श/प्रतिनियुक्तिः । केन्द्रीय/राज्यं सरकारं के भ्रन्यं विभागों से से समक्ष्यं या समनुष्यं अंधी से कार्यरन्त व्यक्तिः । (प्रतिनियुक्तिः की श्रवधिं सामन्यतं 3 वर्षे से भ्रष्ठिक नहीं होगी) | 3 वर्ष लागृ नहीं होसा |
| | | | | |
| 12 | 3 4 | | 6 | 7 |
| 57 बिजासी मिस्त्री ए ध्वानीगभीरतासापी सोज्ञिक | | | न्यूसनम् 25 वर्षे प्रधिकतम् 40 वर्ष | (i) किसी मास्यनाप्राप्त सर् विश्वविद्यालय से विष् र्जीनियरी में डिप्लोमा केस्त्रीय सरकार द्वारा मान्य प्राप्त कोई ग्रन्थ समृत् श्रहेता, या |
| | | | | (ii) विद्युत किल्पी (एय विद्युत किल्पी (एयर रेडियो भारतीय नी सेना का प्रा पाठ्यकम उत्तीर्ण किया या |
| | | | | (iii) बेतार प्रचालक यांक्रिक व्यवसाय परीक्षण उक् किया हो प्रतिध्वति गमी भापन ग्रीर रेक्रियो की जा कारी के शौथ 5 वर्ष ग्रमुभव वर्षिणतीय है। |

| | 8 | | 9 | 10 | | 11 | 1 2 | 13 |
|-----------|---------------------------------------|-------------------------|---|------------------------|------|--|---|---|
| _ ~ाग् | नहीं होना | पर स्था वाना के | ाग जिसके न हो सकत नाल्पण द्वारा और न हा सकते प क्ति द्वारा | थाग् नहा होस | | स्थानान्तरण / प्रतिनियुक्ति केन्द्रीय/राज्य , सरकार के प्र विभागों में समक्ष्य या सम- तुल्य श्राणीं में कार्यपन व्यक्ति | | लागृ नहीं होता |
| | | 3 | 4 | | | | | |
| | _ | , | | | 7 | 6 | | 7 |
| 38 | ज्येष्ठ प्रयोगभा ना स हा यक | 7 | 350 12 200 दिव 1 22 260 ₹0 | 410 | वस ३ | <i>2</i> ९ वर्ष | या सम नमून प सफलन कंत्रीट क का निया करने वा में प्रयोग समतुल्य | वयो सहित मैद्धिकुलेका नुत्य धर्के । मिट्टी व ानी कं नमृतं सीमेन (बारीक या मीटा गैर भ्रम्य निर्माण सामग्रे मित रूप से परीक्षा ली किमी प्रयोगशाल शाला सहायक या उसके को ना चाहिए । |
| 59 | प्रसोगणाया सहायक | * | 260-8-300-ጃ0ኛ 340-10-480 10-430 ቹ0 | | | न्युनतम 1५ वर्ष अधिकतम 25 वर्ष | विज्ञान विष या समतु | त्रयः मं मैट्रिकुंलेणन ल्यः प्रकृं ता । |
| 60 | उद्यान मधीक्षक | 1 | 260-6 290-द० र 326-8-366 - प | | | न्यूनतम 18 वर्ष स्रक्षिकतम 25 वर्ष | (i) पैद्रिकुर | नेशन या समसुख्य प्रहेंता |
| | | | 8-39 0- 10-40 | () ব্ | | | से या बागवा प्रशिक्ष किया (ii) केन्द्रीय मान्यां | ह भरकार के लालकार ज्ञन्य किमी समरू नी उद्यान से माणी क ण या समतुल्य पूर हो । य राज्य सरकार द्वार सा प्राप्त कृषि विद्यालय रिणक्षण भवण्य लिय |
| 61 | कार्यं महायक (मिकिय) | 16 | 260-6+326-द ५-350 हर | ০ বা কৰ্ম | 3 | 30 वर्ष मे नीचे | विश्वविद्य | —िकसी मान्यताप्राप्ट ालय या संस्था से इजीनियरी में डिप्लोमा |
| - | 8 | | 9 | 10 | - | 11 | 12 | 13 |
| - | — नहीं | | — जिसके न हो सकने भर्तीद्वारा | प्रवयन | | प्रोक्सिन चन का ऐसा प्रयोगशाला सहायक जिसने उस श्रेणी मे 3 वर्षकी सेथानी है। | ? वर्ष | लागू नहीं हं त्रा |
| लाग् | नहीं होता | मोधी भग्ती | द्वारा | लागृनहीं होता | | लागू नहीं होता | 2 वप | लागू नहीं हाता |
| लागुः | नहीं होता | स्थानान्तरण { द्वीरा | बारायामीधी भर्ती | साय ्नहीं हो ता | प | यानान्तरण सन के निर्धारित कर्म स्थापन मे उद्यान पर्यवेक्षक । उनके मामलो मे ध्रधिकतम श्रायु- मीमा मे छुट दी जाण्गी । | 2 वर्ष | भागू नहीं होता |
| | नहीं | ही सकत ग्रीर दीन | द्वारा, जिसके न पर प्रौक्षति द्वारा ों के न हा सकने भर्तीद्वारा। | मंच यत | प | ानान्तरण सन के निर्धारित कर्मस्थापन के कार्य सहायको में से । श्रति -ऐसे कार्यभेट जिन्होंने उस श्रण से ३ वर्ष सेवा की है । | . वर्ष | लागू नहीं दौता |

| | 1 2 | | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
|---------------|---|--|----------------------|---|--|---|--------------------------------|--|
| 62 | कार्य सम्रायक (यांत्रिक) | | 4 | 260-6-326-वर्गे०-8- 350 वर् | वर्गे 3 | 30 वर्ष से नी जं | | |
| | कार्य सहायक (वि यु त) | | 4 | 260-6-326- 電 の行い- 8-350 Fo | यर्गे उ | ९∪ वर्ष से नीचं | | ——िकसी सान्यताप्राप्य ष्यालय यासम्यासेविद्युत स्पीमेडिप्लोमा। |
| | कार्य सहायक (मिजेटक्रेजर) | | 3 | 26()-6-326-ব৹নী৹- ৪-350-ছ৹ | बर्गे 3 | 30 वर्ष से नीचे | | —किसी मान्यताप्राप्त द्यान्त्रय या सस्यान से इजीतियरी में द्रिप्लोमा |
| 65 | पम्प परिचर स्पीरः | प्राक्षिकः | 7 | 260-6-326-द०गे०- 9-350 प्र० | वर्ग 3 | 35 वर्ष से नीचे | 2 2 वर्ष मा उस | मान्यताप्राप्त नकनीर्यः १ सस्थान से यांत्रिक गणपत्र धारक हो । का व्यावहारिक ग्रनुभव् । क्षेत्र मे कम से कम का ग्रनुभव । |
| 6 f. | न कार | | 1 | 260-6-326- र ०गे०- ९-350 ह० | वर्ग3 | 30 वर्ष से नीचे | प्रमाणपर साथ क व्यावहारि | िकसी मान्यसाप्राप्त मिन्या में नेसकर का इ धारक हो जिसके म से कम ८ वर्ष का रक ग्रनुभव श्रीर नल- कार्य से परिचित |
| - | | | _ | 9 | | | | |
| नहीं - | <u></u> | सम दोः | ने परप्र तों के स | | 10 | 1। | 1 <u>2</u> - — - 2 वर्ष | |
| | | | | | | प्रौन्नति पत्तन के ऐसे कार्यमेटी ध्यौर खनेन सेटों से से जिल्होंने उस श्रेणी से 3 क्यंसेवाकी है। | | |
| r e ji | | स्थानान्तरण द्वारा, जिसके न हा अध्ययन सकने पर प्रोन्नति द्वारा घौर वोनो के न हो सकने पर सोधी भतीं द्वारा। | | | | म्थानास्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म म्थापन के कार्य सहायकों में में। प्रोप्तति पत्तन के ऐसे कार्य मेटो भ्रीर खनन भेटों में में जिन्होंने उस श्रेणीं में 3 वर्ष सेवा की हैं। | 2 वर्ष | लागू न ही होता |
| E I | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न ही। श्रवयन सकने पर प्रोन्नति द्वारा भौर दोनो के न ही सकने पर सीबी भर्ती द्वारा। | | | | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्मे स्थापन के कार्य महायकों में में। प्रोप्ति पत्तन के कार्य मेट घौर खनन मेट जिन्होंने उम श्रेणी में 3 वर्ष मेंदा की है। | ∠ वर्ष | षाम् नहीं होता | |
| गृमह | ही हासा | | | रा जिसकेन हो लागूनही। धीभर्तीद्वारा। | होता | स्थानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्था- पन के पस्प परिचर भ्रौर साक्षिक में से । | 2 यर्ष | ल।गू नही होता |
| गृनह | प्रे स् ोना | | | ाजिसकेन हो लागृनहीं। भीभनीद्वारा | র্)দা | स्थानान्तरण पत्तनं के निर्धारित कर्मस्थापन के नलकारों में से । | 2 वर्ष | लागूनहीं होता |

| 1 2 | 3 | 4 | | 5 | 6 | | 7 |
|----------------------------|------------------------|--|-------------------|--|--|------------|--|
| 67. राज | 1 | 260-6-326-व॰रो॰ 8-350 क | अर्ग3 | | 35 वर्ष से मीचे | में | क साक्षर झौर उस क्षेत्र कम में कम 3 वर्ष का स्थ रखना थें। |
| 68 नर्स | 3 | 425-15-560-द०रे 640 र० | ा∘-20 वर्ग3 | | ल्यूनतम 20 वर्षः श्रिष्ठिकतम 30 वर्ष | (2) | मैद्रिकुलेशन या उसके सम- तुल्य प्रहंता परिचया कार्य में सरकारी प्रमाणपत्न भौर साथ में 3 वर्ष का सनुभव। मिडवाइफरी के कार्य में महंता प्राप्त हो। |
| 69 ज्येष्ठ भेषजज्ञ | 1 | 425-15-560-द०रो 20-640 ह० | o- व र्ग 3 | | लागृ नहीं होता | लागृब | नहीं होता |
| 70 मेचजर्ज | 2 | 330-10-380-द०रो 12-500-द०रो० 560 ह० | | | न्यूनतम 20 वर्ष षश्चिकतम 30 वर्ष | (2) | मैद्रिकुलेशन या उसके सम- पुत्य थर्हेग कम्पाउक्षिम परीक्षण फारमैसी भिधिनियम, 1948 (1948 का 3) की धारा 31(ग) या धारा 32 के प्रधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए पात्र होना चाहिए! |
| | | 9 | 10 | | | 1 2 | 1 3 |
| —— — — — साग्नर्नहीं होता | | — द्वाराजिसकेन हो ' प्रोक्ति द्वारा | | केर प्रो ज ित राज या | र्हे निर्धारित कर्मस्थापन ।जो मे से । | 2 वर्ष | सागृ म हीं हो त। |
| लागूनहीं इंति ⁻ | सकने पर | ारा जिसके न हों ह स्थानाच्तरणद्वारा के न हो सकने क्लिडाया। | तरम् नहीं होता | केन्द्रीय विभ तुल्य व्यक्ति (प्रतिनि यन्य | रण/प्रिंसिनयुक्ति . /राज्य भरकार के खन्य ागों में समस्त्य या सम- पदों पर कार्येरत स्म । युक्ति की भवधि सामा- त 3 वर्ष में भ्रष्टिक होगी) | 2 বর্ষ | लागृनहीं होता |
| लागू नहीं होता | प्रोभृति द्वारा | , | प्रचयन | उ म | बजकों में से जिन्होंने श्रोणी में कम से कम एपेंसेबाकी है। | 2 वर्ष | लागू नहीं होता |
| सागू नहीं होता | ही सकते द्वारा श्री | हारा जिसके न १ पर स्थानान्तरण र दोनों के न हो प्रांमनियुक्ति द्वारा | तामूनश्री होता | केन्द्री <i>य न</i> विभ समह् व्यक्ति श्रव | रणप्रति/नियुक्ति . राज्य नरकार के श्रन्य गो में समरूप या हुत्य श्रेणियों में कार्यरत केत । (प्रितिनयुक्ति की धि सामास्थतः 3 धर्षे प्रिधिक नहीं होगी) | 2 वर्ष | लागू नहीं होता |

| 1 2 | 3 | 4 | | 5 | 6 | | 7 |
|--------------------------------------|-------------------------------|--|----------------------|--------|---|-----------------------------------|--|
| 71 ज्येष्ट स्वास्थ्य नि | रीक्षक 1 | .330-10-380-ইও 12-500-ইওব 560 ইও | | † 3 | स्यूनतम् 20 वर्षे घष्टिकतम् 30 वर्षे | (2) सप क्रम | |
| 72. कनिष्ठ स्वास्थ्य | निरीक्षक 1 | .330-10-380 -* 12-500-হে০ 56 0 হ ০ | | र्गि 3 | न्यूनतम 20 वर्ष भिधिकतम 30 वर्ष | (2) सफा | कूलंणन यासमसुल्य ई निरीक्षक का पाठ्यक्रम र्णकिया हो। |
| 73. प्रयोगशाला क्षका | रोकी 1 | 260-8-300 ব ০ 340-10-38 10-430 ৼ ৹ | | गै 3 | श्वनतम १४ वर्षे मधिकतम २५ वर्षे | नकः पूर्वव | ार द्वारा मान्यता- ा किसी सख्या मे मास तक प्रयोगशासा नीकी प्रशिक्षण सफलता |
| 74. विकिरण विज्ञनी (रेडियोग्राफर) | 1 | 260-8-300- व ०र 340-10-38 10-430 र ० | | ក់ 3 | 35 वर्ष | मावश्यकः. (1) मैट्रिक् महंत | हुलेणन या समतुख्य ता |
| | | | | | | में पि पाफी | ो मान्य ताप्राप्त सस्यान येकिरण विक्रान (रेडियो- ो) में डिप्सोमा या गपत्रा |
| | | | | | | बिकिश्य | करण चिकित्सा केक्ट्र में ा विज्ञानी के रूप में का मनुभव। |
| 8 | <u> </u> | 9 | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| मही | सकने प प्रतिनियु उसके प | रा जिसके न हो रुर स्थानान्तरणया क्सि द्वारा घौर नी न हो सकने पर तींद्वारा। | घ स्यम | 10 | श्रति . किनिष्ठ स्वाम्थ्य निरीक्षक जिसने उस श्रेणी में उस पद पर कम से कम 3 वष सेवा की है। वानान्तरण /प्रतिनियुक्ति न्द्रीय/राज्य सरकार के विभागो से समक्रप पद बारण करने बाले अपयुक्त व्यक्ति (प्रतिनियुक्ति की प्रविध सामान्यतः 3 वर्ष के स्रिधक नहीं होगी) | 2 यर्ष | मागृनही होता |
| लागूनकी केरेंग | सकने पः | ारा जिसके न हो १.स्यानास्तरण या क्तिद्वारा। | माग् मही होता | स्थ् | नान्तरण/प्रिप्तिनियुक्तिः केन्द्रीय/राज्यः सर- कार के विभागों में समरूपः पद धारण करने वाले उप- युक्तः व्यक्तिः (प्रितिनियुक्तिः की प्रविध नामान्यतः 3 वयः से स्रधिक नहीं होंगी) | 2 বর্ষ | लागृ मही होता |
| | | | | | 1 -11-1 ig. (/) | | |
| लागू नहीं होता | मीधी भर्त | ीं हा रा | सागृ नहीं होता | ল | यू नहीं होता | 2 वर्ष | लाग् मही होता |

| [भाग ∐ | | भारत का र | ाजपद्ध भसाधारण | |
|-----------------------------------|---|-----------|--|--|
| 1 2 | 3 4 | 5 | | 7 मैहिकुलेशन या उच्चतर परीक्षा |
| 75 दुलाई प्राथमिक उपचारः कर्ता | ্ 1 3 10-8-37 (-10-40 ()- হ⊙েশ্০ 1 ()-4 \ () ক০ | वर्ग ≀ | 21 में 30 बर्ष | मैहिकुलेशन या उच्चतर परीक्षा उन्नीणं की हा। भारतीय सेन्ट जान एम्बुलेरस सगठन द्वारा जारी किया गया घायलो के प्राथमिक उपचार का प्रसाणपक्ष हा। किसा ख्यानिप्राप्त सगठन प्रधिमानन प्राथमिक उपचार सगठन म नम स कम 5 वस ना प्रमाम होना चाहिए। उन र्व्याक्तियों को जिनके पास सहायक कैंडेट कोर या राष्ट्रीय कैंडेट कोर का प्रसाण पक्ष है या जो भृतपूर्व सैनिक है |
| 76. प्राचमिक उपचारकर्या | 3 260-6 390-द०गो०-6- 326 9 366-द०गो०- 8-390-10-400 ৼ ० | वर्गे उ | 1 ८ मं 2 5 व ष | सेकण्डरा स्कूल छोडने वा प्रमाणपद्ध उत्तीण हो। वायलां के प्रथयोपचार का मान्यताप्राप्त प्रमाणपत्न उसके पास हो। उन व्यक्तियां का ग्रक्षिमान दिया आण्या जिसके पास विसी क्यांति प्राप्त चिकित्सा सस्था का प्राय- सिक उपचार का प्रसाणपद्ध है |
| 77 सिमनस बोसन | 1 425-15-500-द०रो०- 15-560-20-700 क० | ≢सै 3 | 30 ৰব্ | प्रावण्यक (1) किसी मार्यताप्राप्त विश्व- विद्यालय या बोर्ड से मैट्रि- कुलेगन या समतुल्य। (2) नो सेना का वर्ग 1 सिवि- लियन प्रमाणपल उसीर्ण किया हाया अंतर्राष्ट्रीय काड या सकत की सभी पद्ध- किया का अच्छा ज्ञान हा स्रीर 10 सं 12 मन्द्र प्रति सिनट की दर से मार्स सौर समाफार मे सन्द्रेग प्राप्त करन श्रीर भेजने का 2 वर्ष वा अनुभव हो। (3) भारत सरवार के सखार भवालय द्वारा भी गई परीक्षा का अक्लेशीय (समुद्री) रेडिया टेसीकान धापरेटर का प्रमाणपत्न हो। (4) सकेत प्रंपक के रूप मे कम से कम 3 वर्ष नक कार्य किया हो। |
| 8 | 9 10 | | | 12 |
| नहीं | प्राथित हारा जिसके नहा सकने वयन पर सीधी भर्ती हारा | | प्रोभिनि गैसे प्राथमिक उपचार कर्ता जिल्हान उस श्रेणी में ६ वैष सेवा का है। | 2 वर्ष साग नहीं होता |
| नही | प्रोच्चति द्वारा जिसके न ही सकने अध्यय धरसीधी भर्तीद्वारा | न | प्राक्रिति गेसे श्रीवधालय परिचर जिनक पास घायला के प्राथमिक उपकार का मान्यताप्राप्त प्रमाणपदा है श्रीर उस शीणी से उस्क्षी से सा की है। | ≟ वय न्यागृत क्षी होता |

| 230/4 === 8 | <u></u> | <u> </u> | 10 | | 11 | 13 | 13 |
|-----------------------|-----------------------|--|-----|------|-------------------|---|---|
| | सकते पर ग्रीट दोनो | ्रिसके न हा जिसके न हा सोधी भर्ती द्वारा के न हो सकने धुक्ति पर स्था- पा। | चयन | | | र्का ब्प प्यं- न | मागृ नहीं होसा |
| | | 4 | | 5 | | | |
| 78 सहायक सभुदी फौरमैन | एक | - 425-15-500-द०राव 15-560-20-70 | | | 2.1 3.0 घण के बीस | ंड (2) स्व स्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य स्य | नार्ण किया हा। वस्थ्य प्रशिर वाले नार्सैनिव स्था सं ४ वर्ष क मुद्रीय व्यावहारिक धनुभव |
| 79 ज्योद्ध सिन्तस मैन | एक | 330-10-380-द०रो०- 12-500-द०रो०- 560 स० | | | 28 वर्ष | या (2) - द य स स प्र दास्त्रनीय भारत इस्स देणीः | त्थालय या बोर्ड से मैंदूब न न या उसके समस्त्या। असना वा वर्ग 1 सिर्मि त्यान प्रमोणपाल उसीर्ण किया। में प्रमारिट्ट्रीय बोर्ड र में की सभी प्रस्नाति या प्रभावता स्थान श्रीरिंग के से 12 शब्द प्री मनट नी दर से मो भीर सेमाफोर में सम्दे भावत करने श्रीर भेजने स्था या वर्ष का श्रमुम्य। सरकार क संचार मुलाल ली गई परीक्षा मुक्ताल म (समुद्री) रेडिया नेलीको |
| | 9 | | 10 | | 11 | ગાય 12 | टर का प्रमाण पद्ध हा। – — — , 13 |
| 8 | | | | | | | |

| 8 | ą | 10 | | 11 | 1.2 | 1 3 |
|-------------------------------|--|---|---------------|---|---------------------------|---|
| नहीं वि | पोध्रति हारा, जिसके सकते पर सीधी भ ध्रीर दोनों के न पर प्रतिन्युक्ति पर स्तरणद्वारा। | ती हारा हो भकने | | (क) प्रोफ्ति किनारः सिग्नल मैन जिसने उस श्रेणी में कम से कम 3 वर्ष सेया की है। (क) प्रीक्तियक्ति पर स्थाना- न्तरण श्रन्य महापननों में समक्रप या समनुस्य श्रेणियों में कार्यरन व्यक्ति (प्रतिनिम्नुक्ति की श्रवधि सामान्यन 3 वर्ष मे ग्रिधिक नहीं होगी) | ু বর্ ষ | - लाग नहीं ह ोंका |
| | | | | | | |
| 1 2 | 3 | 4 | - 5 | 6 | | 7 |
| | | | | | | - |
| ९n, कनिष्ठ सिग्नल मै न | 32 | -2911-द्र०गी०-6- 6-8-५५५-२०गी०- 190-10-400 र० | वर्ग3 | 28 নম | | यकः किसी मान्यताप्राप्त विक्व विद्यालय या बोर्ड से मैट्रि कुलेशन या उसके समनुख्य |
| | | | | | (?) | नो नेना का वर्ग II सिवि लियन प्रमाणपत्र उत्तीर्ण किय हो या अवराष्ट्रीय कोड भी सकेत की सभी पद्धित्यों व प्रच्छा ज्ञान हो और से 12 णस्य प्रति मिनट व दर से मोर्स और सेमापे में सन्देण प्राप्त करने भीर भेज का एक वर्ष का अनुभव हो |
| | | | | | | |
| | | | | | | |
| | 9 | | 10 | 11 | 12 | 13 |
| —- श्रायुः नही | 9 (क) 75 प्रतिशत सं द्वारा (ख) 25 प्रतिशत प्रो (स) (क) ग्रीर (ख सकमे पर प्रतिनिद् स्थानान्तरण द्वारा। | प्रतिद्वारा)केन हो पुक्ति पर | 10 भयन | गिर्माल क्षेत्रां कि प्रोप्ताल कि प्रोप्ताल कि प्राप्ताल कि प्राप्ताल करने की प्राप्त के प्राप्तील करने कि प्राप्ताल के प्राप्तील करने कि प्राप्ताल क्ष्मलासी जिल्होंने उस श्रेणी में 5 वर्ष सेवा की है। | 12 – 2 ব ৰ্ষ | 13 लागू नहीं होता |
| = | (क) 75 प्रतिश्रत सं हारा (ख) 25 प्रतिशत प्रो (स) (क) ग्रीर (ख सकमे पर प्रतिनिद | प्रतिद्वारा)केन हो पुक्ति पर | भयन | (क) प्रोप्तिति । उस श्रेणी में विभागीय परी- क्षण उत्तीर्ण करने की गर्त के प्रधीन रहने कुए ऐसे सिग्नल सालासी जिल्होंने उस श्रेणी में 5 वर्ष सेवा | | |

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | б | 7 |
|---------------------------|------|---|-------------|---------------------------------------|---|
| 81 फोरमैन (दिधुत) | 1 42 | .5-15-560 द०गा०-20- (640- २० | — अर्थ 3 | न्यूननम 25 वर्ष स्रक्षिकतम 35 वर्ष | शायण्यक 5 वर्ष के श्रनुभय महिल विश्वत हजीनियरी में दिन्लोमा या 8 वर्ष के श्रनुभय महिल तकनीकी परीक्षा बार्ब द्वारा मचालिल विश्वल वार्यारण का पाठ्यकम या समतुरूप किया हो। वाश्वलीय: उच्च दाव ग्रीर निम्नः दाव वाले केबिल स्योजन संस्थापन का जान 500 किल्या तक के ट्रांमफामंग केखी के संस्थापन ग्रीर उनके श्रनुरक्षण, घरेल वार्यारण, मोटर वार्यारण ग्रीर उनके श्रनुरक्षण, घरेल वार्यारण, मोटर वार्यारण ग्रीर उनके श्रनुरक्षण, घरेल वार्यारण, मोटर वार्यारण ग्रीर 200 भ्रवण तक की मरम्मन प्रत्यक्षि धारा ग्रीर मीधी धारा दोनों के संस्थापन, सभी प्रकार के स्टार्टनों की मरम्मन का श्रनुभव। ग्रन्याधिक गनि ग्रीर प्रतिध्वनि गभीरता सापी उपस्करों के उपयोग करने में समर्थ होना चाहिए। किसी विश्वल उपकार में काम किया हो भीर विभिन्न विश्वत परीक्षण उपकारों ग्रीर उनके उपयोग से अलीभांति परिचित हो। |
| 82. फोरमैन (च ान) | | 25-15-508- হ ০সী০- 15-560-20-700 হ ০ | वर्ग 3 | 35 षष में नीचे | यावश्यकः (i) धातुन्नत्यादक ज्ञान विनिधम, 1961 के विनिधम 12 के मनुसार ज्ञान फारमैन का प्रमाण पत्र धारक हो। (ii) खनन कार्य में कम से कम 3 वर्ष का भनुभव होना धायभ्यक है। |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 1 3 |
|----------------------------|---|---------------|--|--------|---------------|
| मायु : नहीं महेता : हां | प्रोचिति द्वारा जिसके ते हो सकते पर सीधी भर्ती द्वारा | भव यन | प्रोक्सति: ऐसे विजली मिस्त्री भीर प्रति- ध्वनि गंभीरता मापी योजिक विसने उस श्रेणी में निय- मित माधार पर 5 वर्ष सेवा की है। | 2 वर्ष | नागृनहीं होता |
| नागू नहीं होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकते पर सीखी मतीं द्वारा | सागू नही होता | स्थानक्तरण पनन के निर्धारित कर्मस्यापन के फोरमैंग (चान) में से। | 2 वर्ष | लागू भही होता |

| 1 2 | 3 4 | 5 | 6 | | 7 |
|-------------------------------------|--|---------------|--|---|--|
| 83. सहायक भ्रानि शमन भ्रष्टिकारी | 2 380-12-440-द०रं 560-द०रो०-20-6 | | 3 0 वर्ष | प री (ii) राष्ट्र निष प्रसि उप पार्ट् हो | कुलेशन या समतुल्य क्षा उत्तीर्ण की हो । ट्रीय प्रग्नि सेवा महा- ग्रिय नागपुर या कायर कौर क्षण केन्द्र बंगलौर से प्रश्चिकारी का प्रशिक्षण यत्रम सफलता पूर्वक किया या कोई अन्य अहँसा ता हो । |
| | | | | ब्रास्य हैसि अनुष कसी शम प्रका | न सेवा के ड्रिकों को सभी र से खोलने का अनुदेश : प्रशिक्षण देने में समर्थ |
| 84. प्रमुख फायरमैन | 2 260-6-326-व०से० 350 २० | o-8- व | र्गं 3 स्यूनतम 21 वर्षे श्रधिकतम 30 वर्षे | (ii) सभी प्र भौर करने (iii) सिविल सामक | ा स्कूल स्तर उत्तीर्ण कार के प्रश्नि सेवा द्रिलों फायरमैनों का संचालन में सक्षम हो व या सरकारी घन्नि- वल में फायरमैन के होतीन वर्ष का ग्रनुसर्थ। |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| नाग ृ नहीं हो ना | प्रोन्नति द्वारा जिसके न हो सकने पर प्रतिनियुक्ति द्वारा दोनों के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | चयन | प्रोन्निसि — ऐसे प्रमुख फायरमैन जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है। प्रतिनियुक्ति: किसी राज्य प्रनिन समन दल या महापत्तन स्थास में समरूप या सब्स्य पद घारण करने वाले व्यक्ति (प्रतिनियुक्ति की प्रविध सामास्यत. 3 वर्ष से प्रविक नहीं होगी) | 2 বর্ঘ | लागू नहीं हीता |
| मागृ नहीं हुंता | र्साधी भर्ती द्वारा जिसके नहा सकते पर प्रतिनियक्ति पर स्थानांतरण कारा। | लागृनहीं होना | स् धानांतरण/प्रतिनियुक्ति पर स्थानांतरण राज्य या केन्द्रीय ग्रग्निशामन दलो में या किसी महापसन में सम रू प | 2 वर्ष | लाग् न ष्टी हो सा |

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|----------------------------|---|--|--------|---|---|
| 65. फायर मैन पालक | 4 | 260-6-326-द्व० से०-8- 350 ह० | वर्ग 3 | न्यूनसम् 23 वर्षे प्रधिकतम् 30 वर्षे | (i) प्राथमिक विद्यालय स्तर उत्तीर्ण (ii) किसी सिबिल या सरकारी प्रशिनशामक दल में घालक के कप में 3 वर्ष के प्रनुभव के साथ भारी मोटर यान चलाने की वैश्व चालन प्रमुक्षण्त हो। (iii) उपकेन्द्रीय पम्पों को जलामे का 3 मास का प्रमुभव। |
| 86 शावेल सचालक श्रेमी (| 2 | 380-12-500-द∘रो०-15- 560 ६ ० | गरी 3 | न्युनंतम 21 वर्ष स्रविकतम 46 वर्षे | शावस्थक— (i) 200 धण्य मिंग धौर 75 कीट वृम हैंग जेल विशेष रूप से टाटा पी एण्ड एथ जेल के प्रचालन का 3 वर्ष का अमुभव। (ii) शावेल क्लैमशेल हैंग लाइन और जेल परिवर्तन सहिन उमी बनावट के जेल के प्रचालन का 5 वर्ष का अनुभव। वांच्रनीय- श्रिधमानत एस एस एस सी उत्तीर्ण हो |
| 87. शादिल प्रचालक श्रेणी ∏ | 5 | 330-8-370-10-400- द•रो०-10-480 ६० | वर्ग 3 | न्यूनतम् 21 वर्षे स्रक्षिकतम् 45 वर्षे | भावश्यक (i) 30' सूम लम्बाई वाले 60 से 80 भगवश्यकित के न्यूमेटिक चल केन जो पूर्णसः शोजल मे या बिजली मे चसता है के उपयोग का भ्रमुभव। (ii) केन के प्रचालन में 3 वर्ष का भनुभव। बांछनीय मिडिल स्कूल स्तर उत्तीर्ण साक्षर |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|------------------------------|---|------------------|--|--------|-----------------------|
| लागूनही होता | नीधी भर्तो द्वारा जिसके न ही सक्ते पर स्थानातरण/प्रक्ति- नियुक्ति परस्थानांतरणद्वारा। | लायूनही होता | स्वानांतपण/प्रतिनियुव्सि पर स्थानांतरण राज्य या केन्द्रीय श्रान्नशामक दल में या किसी महा पत्तन में समस्प या समतुन्य श्रेणियों में कार्य- रत व्यवित (प्रतिनियुक्ति की भ्रविध सामास्यस 3 वर्ष से श्रिधक नहीं होगी) | 2 वर्ष | लागू नहीं हीता |
| ग्रायु - नहीं घर्हता . हो | प्रोन्नति द्वारा त्रिसके न हो सकने परसीधी भर्ती द्वारा। | अचयन | प्रोफ़ित माबेल प्रचालक श्रेणी IIजिसने पमन में ३ वर्ष गेवा की है। | 2 वर्ष | लागृनहीं होना |
| लागूनही होता | मीधी यर्ती द्वारा | लागू मही होता | लागृ नहीं होता | 2 वर्ष | लागृ नही होता |

| | 2 | 3 | 4 | | 5 6 | 7 | |
|----------------------|-----------|-------------------|--|-------------|--|--|--|
| g. चालक [्] | त्रेणी I | 4 | 380-12-500-द्व०२१०- 15-560 ६० | यर्गे 3 | न्यूनतम 21 वर्ष श्रिधिकतम 45 वर्ष | ऐसे व्यक्ति जिनके पास जलयान धर्धिनयम, (1917 का 1) व प्रमुखात प्रथम श्रेण वालक का प्रमाणपक्ष वाणिष्य पोत परिवा नियम 1958 (1958 की धारा 75 के प्र धात इंजिन चालक व पल हो या अन्तर्वेकाय प्रधिनयम, 1917(1 1) की धारा 25 (ख) में निर्विष्ठ के पल हो या भारत द्वारा मान्यताधारा व तुल्य प्रमाणपक्ष हो | 1917 के मधीन हो या हुन प्रधि हो या हुन प्रधि हो सा का ४४) धीन प्रमाण जलयान १९१७ के सम्बद्ध |
| 9. चालक | श्रेणी II | 5 | 330-8-370-10-400- ব০শী০-10- 48 0 হ০ | वर्गे 3 | ध्युनतम् 21 पर्वे धिकितम् 45 वर्षे | 1917(1917 का भ्रमीन भनुकात दिस | निनिर्दिष त मरका |
| 90. सेरांग व | बेची I | 3 | 380-12-500-द०रोज 15-560 द० | वर्ग 3 | न्यूनतम 21 वर्ष प्रधिकतम 45 वर्ष | , , | मम, 191 के मधी का मास्ट या उक |
| | 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 13 | |
| | नहीं | सकते पः मीर दो | रा जिसके न हो सीधी मर्तीद्वारा तों के न हों सकने तिरण/प्रतिनियुक्ति | षयत | प्रोक्षति: पत्तम में कार्य कर रहे भीर 5 वर्ष का अनुभव रखने वाले उपयुक्त चासक श्रेणी II में से: स्वामातरण प्रतिनियुक्ति: केन्द्रीय/राज्य सरकार के प्रन्य विभागों में समरूप या सम- तुरुप श्रेणियों मे काम करने थाले व्यक्ति (प्रतिनियुक्ति की धविध सामान्यता 3 वर्ष मे प्रधिक महीं होगी) | 2 वर्ष लाग् | ्नहीं हो। |
| मानू नहीं ह | ोता | हो सक क्वाराय | ंदारा ज़िसके न व ने प्रर स्थानांतरण रिदोशों के न हो रप्रतिनियुक्ति दारा | म् नही होता | स्वाभातररा/प्रतिनिधुचित : केम्ब्रीय/राज्य सरकार के ग्रन्थ विवागों में समस्य या सम तुल्य श्रेणियों में कार्यरस व्यक्ति (प्रतिनिधुचित की श्रवधि सामान्यतः 3 वर्षने श्रधिक नहीं होगी) | 2 वर्ष मागून | वीं झीना |

| 56/8 | THE GAZET | TE OF INDIA | : EXTRA | ORDINAKY | [PAK | T II—SEC. 3(I) |
|--------------------------|--|---------------------|---|--|---|--|
| 8 | 9 | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| ही | प्रोन्नति ढारा जिसके न ह सकने पर सीधी भर्ती व भीर उसके भी न हो स पर स्थानौतरण ढारा ह थोनों के न ही सकने प्रतिनियुक्ति ढारा। | ारा कने मौर | सेरां सेरां वर्ष स्थानीतः केन्द्रीय/ समय में नियु रणस | पलन में कार्यरत ऐसे ग श्रेणी II जिनके पास ग श्रेणी II के रूप में 5 का प्रमुख्य है। (ण/प्रतिनियुक्तिः राज्य सरकार के विभागे में क्ष या समतुल्य श्रेणी कार्यरत ध्यक्ति (प्रति- क्ति की भविष्ठ साधा- स्वि से प्रियक होगी) | 2 ৰঘ | लागृनहीं होता |
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
| 91. सेरांग श्रेणी [[| | 0-10-400- 480₹¢ | वर्ग 3 | र्यम्तस्य 21 वर्षे ग्रिधिकतम् 45 वर्षे | जलवात (1917 धनुवत या उक्त 26 के कोई प्र सरकार | जिनके पास मन्तर्वेशीय मधिनियम, 191' का 1) के मधीन सेरांग का प्रमाणपत्न हैं मधिनियम की सार बण्ड (क) में निर्विष् माणपत्न हैं या भारत द्वारा माम्यताप्राप्त की। माणपत्न हैं। |
| 92. তথ্যন্ত গ্ৰীক্রনিক্ষ | (निकर्षक)} 2 330-8-37 द•रो०-10- | °0-10-400- 480₹0 | धर्ग 3 | 21 से 25 धर्च | पशीक (2) रेत लाइमी | लेशन या समसुख्य ११ । पंपों, तैरती क्षुई पा। मीर चित्रयों के समंज |
| | | | | | _ | क्षण भीर मरम्मत कर 3 वर्षका भनुमन। |
| | | | | | (3) तैरन | ा माता हो भीर पर कार्य करने का सनुभ |
| | | | | | | मन्यवियों की दशा भहंता शिषिल की व है) |
| 8 | 9 | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| लागू नहीं होता | सीधी भवीं द्वारा जिस ही सकते पर स्वान द्वारा चौर दीनों के व सकते पर प्रतिनि द्वारा। | तिरण र हो | केन्द्रीर विष सुर (४ सा | तिरस्य प्रतिनिषुषितः : ग/राज्य सरकार के प्रन्य भागों में समरूप या सम- य श्रेणी में कार्यस्त व्यक्ति तित्रिषुष्तिः की प्रवीधः नाष्याः 3 वर्षं से प्रशिकः शि होगी) | 2 वर्ष | लागू नहीं होता |
| नहीं | प्रोचित द्वारा जिलके न सकने पर सीबी भर्ती दा | | জি | ःऐसे मैकेनिकों (निकर्षक) म्हें उस श्रेणी में 5 वर्ष । मनुभव है। | 2 वर्ष. | सागू नहीं होता |

भारत का राजपत्न : बसाधारण

| 1 | 2 | 3 | 4 | | | 5 | 6 | | 7 |
|---------------------------|--------------|--------|---|-------------------|------------|---------|---|---|--|
| 93 ज्योच्ठ प्रसा | लक (सिकर्षक) | 2 | 330-8-370-1 द०रो०-10-480 | | | घर्गे 3 | 21 से 25 वर्ष | उत्तीप (2) निकर 3 व (3) विभिन्न मे कि श्रीर गाज उपयो | कुलेशन यासमसुख्य परीक्ष र्गकी हो। कि के नीक्ष्पण क र्वका समुभव। अ प्रकार की मिट्ट नकर्षण का सनुभय जल पेपों के प्रचासक स्वीर सस्य उपस्करों के ग का सनुभव। |
| ० 4: ज्येष्ठ सहर्ष | | 2 | 330-8-370-10 | •400 - | | वर्गे 3 | 3 5 वर्ष से भीचे | (ग्रनुभवी | ग्रभ्यर्थियों की दशा व श्रहेता शिथिल की ज है)। |
| 2 | | | द०गो०-10-480° | | | | | (1) बक्ईगीरी संस्थ सम (2) किसी में इ कम या गास | मे भौगोगिक प्रशिक्षण्यान का प्रमाणपंत्र य तुल्य हो। क्यातिप्राप्त कर्मनाल कृष्टें के रूप में कम व 3 वर्ष का भनुभव किसी स्थातिप्राप्त कर्म में बढ़ाई के रूप व षें के भनुभव के सा |
| | | | | | | | | (3) अवद्रश् को स हो स्र वाली | ्हा। गिरी के विभिन्न का अतंत्रतापूर्वक कर सक र लकड़ी के काम कर मधीगों तथा भौजा गुपरिचित हो । |
| | | ····· | | | <u>.</u> . | | | शास्त्रभीय: घातु की शान हो | यहरों की गढ़ाई का |
| 8 | | | 9 | | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| महीं - | | | ा जिसके न हो सीधी मर्ती द्वारा। | षयन | | я | । प्रति:ऐसे प्रचालक (निकर्षक) जिन्होंने उस श्रेणी में ठवर्ष सेवा की है। |) 2 वर्ष | लागू नहीं होता |
| नहीं | सक दोन | ने परः | रा जिसकेन हो प्रोप्ततिद्वाराष्ट्रीर न हो सकने पर इ.स.। | भ्रचयन | | | वानांतरणः पतन के निर्धारित कर्म स्वापन के ज्येष्ठ बढ़- इयो में से। तेवाति : बौद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का प्रमाणपद्ध वारण करने बालों की दशा मे ऐसे बद्द जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष भीर प्रमाणपत्र न वारण करने वालों की दशा | | वागू न हीं होता |

में 5 वर्षकी सेवाकी हो।

| | | OI INDIA . L | AIRAORDINARI | (I.V. | RT 11—SEC. 3(1) |
|--|--|----------------|---|--|--|
| 1 2 | 3 4 | | 5 6 | | 7 |
| 95. ज्येष् ठ मैके निक (जलप्रवाय) | 1 330-8-370-10- द०गे०-10-480 ह | | 3 35 वर्ष से नीचे | मावश्यक (1) मैद्रिबु उसी | |
| | | | | | ा तकनीकी संस्थान मे 14क का प्रमाणपद्माधारक |
| | | | | वास्त्रीयः इस क्षेत्र में - | - पूर्वे मनुभव हो । |
| 96. ज्येष्ठ मैकेनिक (मोटरगाड़ी) | 2 330-8-370-10-4 द०रो०-10-480 व | · - | 35 वर्ष से कम | आवस्थक · (1) मैट्रिश् परीक्ष | ुलेशन या समतुल्य गाजसीर्णा |
| | | | | भीर भला | नेक के रूप में हलके भारी मोटरयामों के ने भौर मरम्मत करने कम से कम 5 वर्ष का खा |
| | | | | का बार | तैयोगिक प्रशिक्षण संस्थान ंप्रमाणपक्ष घारण करने नों को धर्धिमान दिया एगा। |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| ग्ही | स्थानान्सरण द्वारा जिसकेन हो सक्कने पर प्रोक्षति द्वारा दोनों केन हो सकने पर सोधी भर्ती द्वारा | ···- | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ज्येष्ठ यांत्रिक (जल प्रदाय) में से । प्राक्तित: ऐसे पस्प परिचर घोर मैंकेतिकों में से जिन्होंने श्रीद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का, प्रमाणपत्न धारकों की दशा में उस श्रेणी में कम से कम 3 वर्ष भीर प्रभाण- पत्न न धारण करने वालों की दला में 5 वर्ष सेवाकी है। | 2 वर्ष | लागू नहीं सुोला |
| ही | स्थानाग्तरण द्वारा जिसके सही सकते पर प्रोफ्निति द्वारा, दोनों के नहीं सकते पर सीधी मर्तीद्वाणा। | अंच्य भ | स्वामाश्तरण: पतन के निर्धारित कर्म स्वापन के ज्येष्ठ मैके- निकों (मोटरगाड़ी) में से । प्रोम्नित: मोटर गाड़ी मरम्मन कर्मशाला के मैकेनिकों में से, भौद्योगिक प्रशिक्षण तस्यान का प्रमाणपन्न धारण करने बासों की दशा में जिन्होंने 3 वर्ष सेवा को है पीर प्रमाणपन न रखने वासों की दशा में 5 वर्ष सेवा की | 2 বর্ষ | लागू नहीं होता |

| 1 2 | 3 | 4 | | 6 | | <i>ī</i> |
|------------------------------|---|--|----------------|--|---|---|
| 97. ज्योष्ठ बायर मैन | | 0-8-370-10-40 रो०-10-480 ६ ० | | 35 वर्ष | पढ़ें '' (2) बायर | ा तथा स्थानीय भाषा प्रौर लिख सकता हो। मैन का पर्मिट होना ए। स्थातिप्राप्त समुत्थान देशोगिक श्रीर भाषासीय की सभी प्रकार की रंग का 5 वर्ष का श्रमु- हो। श्रभ्य शक्ति के ए०सी०/ ति० मोटरो भौर स्टार्टरो वार्यारग भौर अनकी मन तथा श्रनुरक्षण का हो। देर कम दाव/उच्च दाव के केयल संयोजकी रक्षण श्रीर प्रचालन। |
| 98 लाइन मैक्नोनक (वैद्यत) | | -8-370-10-400- ०रो०-10-480 न ् | | ि उठवर्षसेम | भाषा प (2) 11 के उन्हें ट्रांस स्विच का (3) 50 ट्रांस भ्री को | (1) अग्रेजी और स्थानीय इ मौर लिख सकता हो। कि या० सम्प्रेषण लाइने बिछाने परीक्षण करने औ इे जोड़ने का 11 कि०वा शे के लगाने सरम्मत कर्रे पूर्व प्रन्भव होना चाहि १० कि० या० तक वे स्कार्मरों के प्रतिन्ठापन मेगन केबिलों के बिछा र शिरोपरि संप्रेषण लाइन लगाने का किसी ख्यारि प्र सग्ठन मे कम ने क |
| | | | | _ | | |
| 8 नहीं | ् | भिन्नति द्वारा नहीं सकते | 10 अचयन | भागानिक्ष पत्तन के निर्धा कर्म स्थापन के उथे प्रदेश भीनों में से। श्रीक्रित परिमट न धारण के बाले वायरमैंनों की दे में ऐंसे धायरमैंनों में जिल्होंने उस श्रेणी में वर्ष सेवा की है। श्रीर मिट धानकों की दशा ऐसे बायरमैंनों में में जि उस श्रेणी में 3 वर्ष की हैं। | नायण रूप मे प ५ पणि- मे न्होंने सेवा | 13 लाग् नहीं होता |
| नही | | प्रोक्षति द्वारा ृनहो सक्ते | ग्रचयन | स्थानान्तरण पत्तन क निर्धारित कर्म स्थ के लाइन मैत्रेनिको (विष मे स । प्रोक्सित एसे लाइन मैना मे से जि | ग ्न) | लागृ नहीं हाता |

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|-----------------------------|---|--|------------|--|---|
| 99. ज्येष्ठ फिटर | 1 | 330-8-370-10-46 द॰रो॰-10-480 र॰ | 00∸ वर्ग3 | नागू नहीं होता | लागू नहीं होता |
| 100. ज्योष्ठ वैत्व | | 330-8-370-10-44 व०रो०-10-480 द | | 35 वर्ष से नीचे | श्रीवस्थक . (1) वैश्विंग में श्रीश्रीगिक प्रशिक्षण संस्थान का श्रमाणपत । (2) किसी ख्यातिप्राप्त कर्मशाला में विद्युत वैश्विंग श्रीर गैम वैश्विंग कार्य में कम से कम 3 वर्ष का श्रमुभव या विश्वत श्राक्ष वैश्विंग श्रीर गैम वैश्विंग कार्य, पर्लेम करिंग भीर पोजीशन वैश्विंग भीर पोजीशन वैश्विंग भीर पोजीशन वैश्विंग भीर पोजीशन वैश्विंग विश्वाप विश्विंग किस से कम 5 वर्ष के श्रमुभव के साथ साक्षर हो। (3) स्विष्ण्यन कार्यों, मभी प्रवार के वैश्विंग क्लेक्ट्राट श्रिणेप सिश्वधानु के वेश्विंग क्लेक्ट्राट श्रिणेप सिश्वधानु के वेश्विंग क्लेक्ट्रा क्लेक्ट्राट श्राप उनकी वैश्विंग वास्तिए । (4) ए डी श्रीर की मी वैश्विंग उपस्करों, गैस वैश्विंग उपस्करों, गैस वैश्विंग उपस्करों का ज्ञान श्रीर एसी निथा की सी वेश्विंग उपस्करों, गैस वैश्विंग उपस्करों का ज्ञान । |
| 8 | | —— - 9 | 10 | | 12 13 |
| लागू न र्हा होता | | —— ग्रद्धारा जिसके न हो इर प्रोम्ननिद्धारा | श्रचयन | | |
| | | | | का प्रमाण पक्ष धारण करने वालों की दशा में उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है और प्रमाणपत्न धारण न करने की दशा में उस श्रेणी में 5 वर्ष सेया की है। | |

न घारण करने कालों की दशा में उस श्रेणी में 5 वर्ष सेवाकी

₹1

भारत का राजपत्न : ग्रसाधारण

| [माग IIखण्ड 3(1 | /] | | भारत | का राजपत्न : ग्रसाधारण | 230/13 |
|-------------------------|---|-----------------------------------|----------------|---|---|
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 101. ज्येष्ठ लौहार | | 30-8-370-10-400- रो०-10-480 ६० | वर्ग 3 | 35 वर्ष से नीचे | ग्रावश्यक: (1) लौह-कार्य में श्रौद्योगिक प्रशि- क्षण संस्थान का प्रमाणपक धारक । (2) लौहार के रूप में 3 वर्ष का पूर्व ग्रनुभव । टिप्पण: धातु-शीट कार्य, यानों के केबिनों की गढ़ाई, संविरचन, गैस वेल्डिंग, विबुत वेल्डिंग ग्रादि में ग्रनुभव रखने वालों को ग्रीध- |
| 102. ज्येष्ट मशीन मिस्त | | 0-8-370-10-400- | वर्ग 3 | 35 নৰ্থ | प्रावश्यक : (1) मैट्टिकुलेश्वन या समतुल्य उत्तीर्ण (2) मशीन मिस्त्री कार्य में श्रौद्यो- गिक प्रशिक्षण संस्थान का प्रमाणपत्त । (3) निम्निलिखित मशीनों के प्रचा- लन श्रौर अनुरक्षण का तथा उनके सिद्धांत और संव्यवहार का ग्रच्छा शान रखता हो । (4) किसी ख्याति प्राप्त कर्मश्राला में कम से कम 3 वर्ष तक कार्य किया हो । (i) मिखिंग मशीन, उसका इन्डेक्सिम श्रौर जिम भेदन ; (ii) रेडियल द्विलंग मशीन (iii) स्लाटिंग मशीन ; (iv) युनिवर्सल टूल श्रौर कटर ग्राईडंर ; (v) छिद्रण श्रौर शीर्यारंग मशीन ; (vi) कर्तन मशीनें जैसे पैक ग्रौर दू ग्राल मशी ग्रौर लकड़ी काटने की मशीन । (vii) ग्रन्य कर्मशाला श्रीजारों का श्रनरक्षण ग्रौर प्रचालन । |
| 8 | 9 | | 10 | 11 | 12 13 |
| हि | स्थानान्तरण द्वारा हो सकने पर श्रौर दोनों के पर सीधी भर्ती द्व | श्रोन्नति द्वारा न हो सकने | भ्र चयन | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ज्येष्ठ लौहारों में से। प्रोन्नति: हैं ऐसे लौहारों में से जिन्होंने, ग्रीद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का प्रमाणपत्न धारण करने वालों की दशा में उस श्रेणी में 3 कर्ष ग्रीर प्रमाणपत्न न धारण करने वालें की दशा में उस श्रेणी में 5 वर्ष सेवा की है। | 2 वर्ष लागू नहीं द्वोता |

| ~ | ~ | - | 11 | 1 |
|---|---|---|-----|---|
| 4 | Э | o | / 1 | 4 |

| 230/14 | THE CAZETTE | OF INDIA: | EATRAORDINARI | [FAR | 1 [1—3EC. 3(1)] | |
|--------------------------------------|---|------------------|--|---|-----------------|--|
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | |
| नही | स्थानान्तरण क्वारा जिसके न हो सकने पर भीधी भर्ती द्वारा। | धवयन | स्थानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के ज्येष्ठ मशीन मिस्लियो में से। प्रोज्जति: ऐसे मशीन मिस्ली और मिलिंग भशीन प्रचाल कोंमें से जिन्होंने, धौदोगिक प्रशिक्षण सस्थान | 2 বর্ঘ | लागू नही होता | |
| | | | का प्रमाणपत्न धारण करने बालों की दशा मे उस श्रेणी में 3 वर्ष मेबा की है धौर श्रीकोगिक प्रशिक्षण सस्थान | | | |
| | | | का श्रमाणपत्न नेधारण करने वालो की दशा में 5 अर्थ सेवाकी हैं। | | | |
| 1 2 | 3 4 | | | | | |
| 103. क्षेत्र , जालक (विद् | - |)-400- अर्ग 3 | 3 5 वर्ष | श्रावश्यक: (1) शंग्रेजी तथा स्थानीय भाषा पढ़ श्रीर लिख सकता हो । (2) एम श्री टी केनी, रिगिग, समाक्षेपी (स्लिगिग), लिफ्टिग टेकलर के प्रचाकन का श्रमु- भव होना चाहिए श्रीर नाधारण हाथ सकतो श्रीर वस्तुओं के संचलन का श्राम हो । टिप्पण: ऐसे वायरमैस को श्रीध- मान दिया जाएगा जिसके पाम वायर मैन का परमिट हो श्रीर किसी सुविख्यात उपक्रम में विश्वत कार्य का 5 वर्ष का श्रमुभव हो । | | |
| 104 ज्येष्ठ ख रा दि या | 2 330-8-370-10 ধ্ৰুণী ০-10 48 | | लागू नहीं होता | लागू न ही | होता | |
| 8 | 9 | 10 | | 12 | | |
| क्षायू नहीं श्लोना | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा । | भचयन | स्थानान्तरण : पसन के निर्धारित कर्म स्थापन के केन प्रचालक (विद्युत) मेमे। | 2 वर्ष | लागूनहीं होता | |
| श्राम् नहीं होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर प्रोन्नति द्वारा । | ग्रस्थन | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के अधेष्ट खरावियों में से । प्रोक्तति: ऐसे खरावियों में से जिन्होंने, धौद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान का प्रमाण्याब धारण करने वालों की वशा में उमश्रीणी में 3 वर्ष धौर प्रमाणपल धारण न करने वालों की वशा में उस श्रेणी में 5 | 2 वर्ष | सागू नही होता | |

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|---------------------------------------|---|---|------------------|-----------------|--|
| 105 ज्येष्ठ मैंकेनिक (तैरते जलयान) | 1 | 339-8-370-10-400- द०गो०-10-480 रु० | व ग 3 | 35 वर्ष से नीचे | भावश्यक (1) मैद्रिकुलेणन या समनुस्य परीक्षा उसीर्ण की हो । |
| | | | | | (2) समुद्रो गियरो श्रीर क्यूमिन्स इजना की मरम्मत करने का लगभग 3 वर्ष का श्रनुभव। |
| | | | | | टिप्पण एम व्यक्ति जिन्हे वायु सपीडका और प्रपक्षको के समुद्री इजना की मरम्मत का प्रनुभव रखने बाल व्यक्ति भीर उन व्यक्तियो को जो किर्लोस्कर कम्यून्स, किर्लोस्कर न्यूमेटिक कम्पनी लिमिटेड मे प्रशिक्षण प्राप्त है भीर ऐसे व्यक्तियो का जिन्हे भारी वाहन, कैना श्रादि का मनुभव है, श्रिधमान दिया जाएगा। |
| 106 बे-तारप्रचालक | I | 330-10-380-इ॰रो॰- 12 500-द॰रो॰-15- 560 र॰ | वर्ग 3 | 35 व ष | भावश्यकः (1) मेट्टिकुलेणन या समतुल्य उत्तीर्णः। |
| | | | | | (2) तकनाकी व्यवसाय में बेनार प्रचासक का पराक्षण उत्तार्ण किया हो। टिप्पण ' रेडियो सेवा इजीनियरी में सैद्धातिक भौर व्यावहारिक प्रशिक्षण का श्राम रखने वाले व्यक्तियो को ग्रिधिमान दिया जाएगा। |

| 8 | 9 | 10 11 | _ 12 | 13 |
|------------------|--|---|---------|-----------------|
| ——— — — — नही | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो भ्रज्यन सकने पर प्रान्निति द्वारा भीर दोनो के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | स्थानात्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन कं ज्येष्ट मैकेनिको (तैरन जलयान) में से। | 2 वर्षे | लाग नहीं होता |
| | | प्रोन्निति ऐसे मैकेनिक जिन्होने समुद्री इजनी की यद्व रचना के अनुभवके साथ-साथ उवर्ष संवाकी अनुभवके हैं। | | |
| क्षागृ नही होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हा लागनहीः सकने परसीधी भर्तीद्वारा। | होता स्थानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के बेतार प्रचालको में सं। | 2 লঘ | लागृ नष्टी होता |

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|------|-----------------|----|--------------------------------------|--------|--|--|
| 107. | घाट जेन प्रचालक | 12 | 330-8-370-10-400- व॰रो॰-10-480 द० | बर्ग 3 | 35 वर्ष | धावध्यकः मिडिल स्कूल स्तर उत्तीणं किया हो । विद्युत मोटर धौर यांत्रिक गियरों घौर सुरक्षा उपस्करो का कार्यकारी ज्ञान घौर विद्युत केनों घौर धन्य केनों के प्रचा- लन का 2 वर्ष का धनुभव। वांछनीयः वायरमैन के कार्य में व्यवसाय प्रमाणपन्न या वायरमैन का परमिट धारक हो घौर पूर्वोक्त के धनुसार धनुभव हो। |
| 108. | गौताचोर | 3 | 330-8-370-10-400- व∘रो∘-10-480 र• | वर्ग 3 | न्यूनतम् 18 वर्षे भिन्निकतम् 45 वर्षे | (1) साक्षर होना चाहिए । (2) गोताखोरी में अपनसाय परी- क्षण उत्तीर्ण किया हो या निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम हो —— (1) पानी के भीतर सतह के नीचे कम से कम 30 मिनट नक कार्य करना (2) इने हुए जलयानों को खोद हुई सामग्री का तृष्ट निकालना । (3) पोतों ग्रीर जलयानों को पानी के सीचे हुई अनि का स्पष्ट रेखाजिल वेना (4) गोताखोरी के पम्पों, हेल्मेट भौर ग्रन्य गोताखोरी गियरों का पर्यवेक्षण भौर मरम्मत करना (5) पानी के नीचे बिस्फीटकों का प्रयोग करना (6) गोताखोरी उपस्करों का श्रनुरक्षण भौ उनकी वेखभाल करना टिप्पण भारतीय नौसेनो में समा हैसियत में ग्रनुभव रखने — ग्राम्तयों को ग्राधमान |
| | | | | | | |
| | 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 13 |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 1 2 | 13 |
|------------------|--|------------------------|---|--------|--------------------|
| लानू मही होता | सीधी भर्ती द्वारा जिसके न हो सकने पर प्रतिनियुक्ति द्वारा | सागू महीं होना | प्रतिनिधृक्तिः ग्रन्थं महापसनों में समरूप काडरो/श्रेणियों में कार्यरन ज्यक्ति । (प्रतिनियृक्ति की भवधि सामान्यतः 3 वर्ष से प्रधिक नहीं होगी) | 2 কর্ঘ | लागूनही होता . |
| श्रागू महीं होता | सीघी भर्ती द्वारा जिसके म हो सकते पर स्थानास्तरण द्वारा भौर दोनों के न हो सकने पर प्रतिनियुक्ति द्वारा। | लागू नहीं हो ता | स्थानान्तरण/प्रतिनियुक्ति : केन्द्रीय/राज्य सरकारों के अन्य विभागो में समक्ष्प या सम- सुल्य पदों पर कार्यन्त व्यक्ति (प्रतिनियुक्ति की भ्रवधि सामान्यतः 3 वर्ष से श्रक्षिक नही होगी) | 2 वर्ष | लागृ महीं ह्योता ≀ |

भारत का राजपत्र : असाधारण

| 1 | 2 | 3 | 4 | | 5 | 6 | | 7 |
|------|---------------------------------------|--|--|-----------|---|---|---|---|
| 109. | भण्डार लिपिक | 5 260- | 6-326-द०रो०-8-35 | 0 ह० वर्ग | 3 | 30 वर्ष से नीचे | साथ श्रीर सामग्र करने उनक कर्मश श्रीजा करने हो। वांछनीय टाइमर्क | ान या उच्चतर ग्रहंता के ही—कमंशाला के भण्डार ग्रीजार कक्ष को संभालने, शे ग्रीजारों को प्राप्त ग्रीर निर्गमित करने ग्रीर समुचित लेखा रखने ग्रीर ा समुचित लेखा रखने ग्रीर ाला, ग्रादि के भण्डार ग्रीर र कक्ष की तालिका तैयार का 2 वर्ष का पूर्व ग्रनुभव |
| 8 | | 9 | and the second of the second o | 10 | | 11 | 12 | 13 |
| नहीं | | स्थानान्रण द्वारा जि सकने पर प्रोद ग्रीर दोनों के न पर सीधी भर्ती द्वार | गित द्वारा हो सकने | श्रचयत | | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के भण्डार निपिकों में से । प्रोन्नित: कर्मशाला या म्राटो मरम्मत कर्मशाला या केन्द्रीय भण्डारों में कार्य कर रहे सकर्म मेटों में से जिन्होंने कर्मशाला या आटो मरम्मत कर्मशाला या केन्द्रीय भण्डारों में भण्डार या म्रीजार कक्ष संभालने, सामग्री म्रीजार मरैर वस्तुम्रों के प्राप्त करने भ्रीर निर्गमित करने म्रीर उनका समुचित लेखा रखने, भण्डारों म्रीर म्रीजारों की तालिका तैयार करने से संबंधित 1 वर्ष तक सेवा की हो । | 2 वर्ष | लागू नहीं होता । |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | | 6 | | · 7 |
| 110. | मैकेनिक (वातानुकूलन स्रौर प्रशीतन) | | -6-326-द०० रो०-8 350 ह० | वर्ग 3 | | 18 से 30 वर्ष | (2) (3) | ः सातवें स्तरमान की या सम- तुल्य परीक्षा उत्तीर्ण । केसी मान्यनाप्राप्त तकनीकी संस्थान में 12 मास का प्रशीतन मैकेनिक या समतुल्य गठ्यक्रम पूरा किया हो । किसी ख्यातिप्राप्त कर्म या संगठन में वातानुकूलन ग्रौर प्रशीतन इजीनियरी मे एक वर्ष तक प्रशिक्षता सेवा की हा । |

| | | | | | £2202 | 22 520. 5(1) |
|----------------------|----|---|--------------------|--|--|--|
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
| 111. ब ढई | 3 | 260-6-326-द०रो०- | ्र ेंबर्ग 3 | 35 वर्ष से नीचे | सर्विसमैन प्रक्षीतक, नुकूलन ग्रं तथा शीत रक्षण ग्रं प्रचालक के कुशल हैरि एक वर्ष वातानुकूल किसी ख्या क्षेत्र में हो । ग्रावश्यक: [| त श्रीर प्रशीतन के रूप में या जर प्रशीतकों, कक्ष बाता गैर लघु बातानुकूलन गार सयंद्रों के श्रनु के किन्छ में के सम्बद्ध के स्वाप्त के स्वाप्त के सम्बद्ध के स्वाप्त के सम्बद्ध के स्वाप्त के स्वाप्त में कम के स्वाप्त में कम स्वाप्त में स्वाप्त में इस का श्रनुभव की श्रनुभव का श्रनुभव का श्रनुभव का श्रनुभव |
| | | 8-350 ≅ ∘ | 72 | | (1) व्यवसाय चाहिए। (2) स्वतंत्र ब से कम 5 | से परिचित होना ढई के रूप में कम वर्षका व्यावहारिक ना चाहिए। |
| 112. फिटर (समुद्रीय) | 18 | 260-6-326-द•रो०-8- 350 ह० | वर्ग 3 | 35 वर्ष से नीचे | श्रावश्यक : 1. साक्षर हो : श्रीर श्रन्य के हथालने व तैरती हुई श्रीर साकेट उ श्रनुभव होना 2. उथले पानी लगाने की चाहिए। 3. श्रमिकों का उक्त कार्यों चलाने में स | ग्रौर विचों, पोन्ट्रन उत्पादक उपस्करों का, तटों ग्रौरजोड़ने पाइप लाइनों बाल बोड़ों को जोड़ने का |
| 8 लागू नहीं होता। | | 9 ारा जिसके नहों लागू सीधी भर्ती द्वारा | 10 नहीं होता | 11 स्थानान्तरण ऐसे मिस्त्रियों में से जो बाता- | 12 2 वर्ष ल | 13 ग् नहीं होता । |
| | | | | नुक्लन ग्रौर प्रशीतन का | | |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|-----------------|---|----------------|---|--------|------------------|
| लागू नहीं होता। | स्थानान्तरण द्वारा जिसके नहों सकने पर सीधी भर्ती द्वारा | लागू नहीं होता | स्थानान्तरण ऐसे मिस्त्रियों में से जो वाता- नुक्लन ग्रौर प्रशीतन का कार्ये कर रहे हैं। | 2 বর্ष | लागू नहीं होता । |
| नहीं | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर प्रोन्नति द्वारा ग्रौर दोनों के न हो सकने पर सोघी भर्ती द्वारा | ग्रचयन | स्थानान्तरणः ' पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के बढ़इयों में से। प्रोन्नतिः ऐसे सहायक बढ़इयों में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की हैं। | 2 বর্ष | लागू नहीं होता |
| नही | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर प्रोन्नति द्वारा श्रौर दोनों के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा | ग्रचयत | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्वारित कर्म स्थापन के फिटर (समुद्रीय) में से। प्रान्नति . ऐसे सहायक फिटरो (समुद्रीय) में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है। | 2 বর্ষ | लाग् नहीं |

भारत का राजपत्र : ग्रसाधारण

| 1 2 | 3 | 4 | | 5 6 | | 7 |
|---|-------------------------|---|-----------------------|--|--|---|
| 13. हस्के मोटर यान चालक | 24 | 260-6-326-इ०रो० 350 ६० | -8- वर्ग | 3 35 वर्ष | प्रकार 3 वर्ष हल्के चालन वांछनीय | /वेन/फोर्कलिंग्टिया उस की गाड़ी के चालन के कि पूर्व ग्रमुभव के साथ ही या भारी मोटर यान की ग्रमुफ्तप्ति |
| 1 द. लारी/बस चालक | 14 | 260-6-326-द०रो० 8-350 रु० | - वर्ग3 | 35 वर्ष से नीचे | चालव | : हो श्रौर लारी या बस कके रूप में लगभग 3 वर्ष नुभवहो। |
| 15. सहायक शावेल प्रचालव ग्रौर मिस्त्री | Б 3 | 260-6-326-द०से 350 रु० | o-8- वर्ग3 | 30 वर्ष से नीचे | मिस्स् विशि शाबेर ग्रनुरा | : शावेल प्रचालक या सहाबक ो के रूप में शाबेल मशीन प्टतः टाटा पी एण्ड एच त 655 बी के परिनिर्माण क्षण श्रौर प्रचालन में कम से एक वर्ष का श्रनुभव । |
| 116. कोल केन प्रचालक | 1 | 260-6-326-द०रोव 8-350 ह० | o- वर्ग3 | 35 वर्ष से नीचे | 60 न्यूमी डीज से च | हो श्रौर 30 बूम लम्बाई की से 80 ग्रग्व भ्रक्ति वाली टिक चल केनों के जो पूर्णतः ल से चलती है या बिजली ालती है, प्रचालन ग्रौर प्रयोग म से कम एक वर्षका श्रनु |
| 117. श्राटो बिजली मिस्त्नी | 1 | 260-6-326-द०रो 8-350 र ० | o- वर्ग3 | 30 वर्ष से नीचे | बेंज कार पक्ष | : हो और विभिन्न यानों जैसे ा भ्रीर लेलैण्ड लारी, जीप भ्रीर अन्य यानों के विद्युत की वायरिंग भ्रीर मरम्मत |
| 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| लागू नहीं होता | | द्वारा जिसके न हो सीधी भर्ती द्वारा। | लागू नहीं होता | स्थानान्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्मस्थापन के जीप चालकों में से | 2 বর্ष | लागु नहीं होता। |
| लागू नहीं होता | | द्वारा जिसके न हो सीधी भर्ती द्वारा | लागू नहीं होता | स्थानान्तरणः पत्तन के निर्धारित कर्मस्थापन केलारी/बसचालकों मेंसे। | 2 वर्ष | लागु नहीं होता । |
| बागू नहीं होता | | ा द्वारा, जिसके न हो र सीधी भर्ती द्वारा । | प्रचयत | स्थानान्तरणं: पत्तन के निर्धारित कर्मस्थापन के सहायक शावेल प्रचालक और मिस्त्रियों में से। | 2 वर्ष | लागू नहीं होता। |
| सागू नहीं होता | स्थानान्तरण सकने परः | ा द्वारा जिसके न हो सीधी भर्ती द्वारा | लागू नहीं होता | स्थानान्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के कोल ऋेन प्रचालकों में से ! | 2 वर्ष | लागू नहीं होता । |
| बागू नहीं होता | | द्वारा जिसके नहों गर सीघी भर्तीद्वारा | लागू नहीं होता | स्थानान्त्ररण : पत्तन के निर्कारित कर्म ग्राटो बिजली मिस्रियों में से । | | लागू नहीं होता । |

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
|--------|------------------|-----------------------|--|---------|--|--|--|
| 118. | मैकेनिक | 8 | 260-6-326-द०रो०- । 8-350 ६० | वर्ग 3 | 35 वर्ष से नीचे | बसों श्रौर गाड़ियों के करने का श्रनुभव हो प्राप्त श्रौद्य | र बेंज, लेलैण्ड लारी/ शाबेल्स जैसी मोटर हथालने भ्रौर मरम्मत लगभग 5 वर्ष का या किसी मान्यता- गिक प्रशिक्षण संस्थान गाड़ी मैकेनिक प्रमाण- |
| 119. | वाय रमै न | 5 | 260-6-326-द०रो०-8- 350 ह० | वर्गे 3 | 35 वर्ष से नीचे | बंगलौर ह मैन परीक्ष टिप्पण : श्रनुज्ञापन बो गए वा रखने वाले व्यक्तियों | गैर विद्युत निरीक्षक, गि संचालित वायर- गि उत्तीर्ण की हो । इं द्वारा जारी किए परमैन का परिमट व्यक्तियों और जिन को वायर मैन के च्यानुभव हो अधिमान पेगा । |
| | 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| नही | | सकने पर | द्वारा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा श्रौर न हो सकने पर हिहारा। | श्रचयन | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के मैकेनिकों में से । प्रोन्नति: सहायक मैकेनिकों में से जिन्होंने इस श्रेणी में 5 वर्ष सेवा की है। | 2 वर्ष | लागू मही होता |
| नहीं | | हो सकने ग्रौर दोनो | ाद्वारा जिसके न पर प्रोन्नति द्वारा किन हो सकने भर्तीद्वारा । | अचयन | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्घारित कर्म स्थापन के वायर मैनों में से । प्रोन्नति: ऐसे सहायक वायरमैनों में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | 2 বর্ড | नागू नहीं होता |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
| 120. ल | इन मैंन | 2 | 260-6-326-द ्रो०-8 350 रु ० | वर्ग 3 | 35 वर्ष से नीचे | के बिल एस० व डी० प् वाली र प्रकार कण्डक्टर सुरक्षा सफाई, निर्माणों | हो श्रौर भूमिगत बिछाने जी० श्रो० का प्रतिष्ठापन करने, गि० श्रौर 4 स्तंभों गंरचना करने, विभिन्न श्रौर श्राकार, के तों श्रौर रीधियों, उपामों, धर्गतल पर स्तंभों की ऊंचाई, में से निकासी, नियमों के सम्बन्ध |

| [माग]]सण्ड 3(i)] | | भा रत का | राजपत्र . संस्थारण | 256/21 |
|----------------------|---|---------------------|--|--|
| | 3 4 | 5 | 6 | (2) सभी प्रकार के प्रपेक्षित प्रीजारों की जानकारी हीं प्रीर परीक्षण उपस्करों का उपयोग करने में बृटियों का पता लगान और उन्हें टीक करने में सक्षम हो। (3) उक्त प्रकार के कर्नव्यों का निर्वहन करने वाले किसी ख्याति प्राप्त संगटन में कम ने कम 3 बंधे की श्रवधि का प्रत्मसव। टिप्पण. |
| | | | | जाएगा जिनके पास किसी मान्यनात्राप्त व्यवसाय प्रशिक्षण संस्थान का व्यवसाय प्रमाणपत्र है। |
| 121 फिटर | 2 (1)- (5-32 (5-ছ ০ সী ১- ৪- .35 () দ্বত | वर्ग ४ | 35 वर्ष में नीलें | धावप्यक (1) किसी मान्यसाप्राप्त सम्भा हारा जारी किया गया फिटर का व्यवसाय प्रमाणपत्र हो । (2) फिटर के रूप में लगभग 5 वर्ष का ध्रनुभव हो । |
| 122 वैत्हर | 6 260-६-326-द०गे०- स- 350 र ० | त्रगं } | 3.5 वर्ष से सीचें | श्रावण्यकः माक्षर हो माथ ही बेरेडर के स्थवसाय में श्रीद्योगिक प्रशि- अण संस्थान का प्रसाणपत हो। वाधनीय व्यवसाय में कम से कम 6 मास की श्रवधि का व्यावहारिक श्रम्भव। |
| <u></u> | · | | | |
| <u>8</u> | भ्यानात्त्ररण द्वारा, जिसके न हो सकने पर प्रोन्नति द्वारा ग्रीर दोनो के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा । | 10 भ्रज्यन | ा। स्थानात्तरण पत्तन के निर्धारित कमं स्थापन के लाइन मैनो मे मे । प्रोक्ति ऐसे महायक लाइनमैनों में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | 12 <u>13</u> - 2 वर्ष लागू नहीं होता |
| स ष्ठी | स्थानास्तरण द्वारा शिसके न ही सकने पर प्रोझित द्वारा और दोनो के म हो सकले परसीधी मर्तीद्वारा । | भ्रंचयन | स्थानास्तरण पतन के निर्धारित कर्म स्थापन के फिटरों में से । प्रोप्तति ऐसे महायक फिटरों में से जिल्होने उस श्रेणी में । वर्षसेवाकी है ! | 2 वर्ष लागू नही होता |
| | स्थानान्तरण द्वारा जिसके स हो सकने पर प्रोक्षति द्वारा भौर दोनो के न हो सकने परसीधी भर्नीद्वारा । | भ्रज्यन | स्थानास्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के बेस्डरों में से । प्रोक्तनि . ऐसे वेस्डरों में से जिन्होंने उस श्रेणी में 5 वर्ष सेवा की है । | 2 वर्ष लागू नही होना |

| 256 | | 11115 | UAZETTE OF T | | | [(AK) II—3E(; 5(1)] |
|---------|---------------------|--------------------|--|---------|---|--|
| 1 | 2 | 3 | 4 | | , 6 | 7 |
| 123 | लो हार | 1 | | वर्ग उ | — 35 वर्ष से नीचे | स्रावश्यक साक्षर हो श्रीर लौहार ये सप मे कम से पम 3 वर्ष की स्रवधि तक कार्य करने का श्रवभयहो। टिप्पण लौहकर्म में प्रमाणपत्र रखन बान ब्यक्तियों का स्रिधमान दिया जाएगा। |
| 124 | मिलिंग मशीन प्रचालक | 2 | 260-6-32 6 द ०रो०-8- | वर्ग3 | 35 वर्ष मे नीचे | प्रावश्य नः |
| | | | 350 ছঃ | | | (1) मैद्रिकुलेशन या समतुरस उत्पीर्ण |
| | | | | | | (2) तजनीकी परीक्षा योष्टं से 2 वर्षीय पाठयत्रम का सणीन सिन्द्री ज्येष्ट प्रमाण- पत्र उनीर्ण किया हो । (3) निसी ख्यातिप्राप्त कर्मणाला मे लगभग 2 वर्ष तक सिलिंग मणीन प्रचालक क |
| | | | | | | (३) स्लाटिंग मंशीन लेख, ड्रिनिंग मंशीन घादि के प्रचालन श्रीर घन्रक्षण का घनुभव घौर ज्ञान हो । |
| 125 | मचागर | 1 | 260-6-32 6-व ०रो०-५- | खरी (| ⊀5 वर्ष से नीचे | माव श्यक |
| | | | 350 কং | | | (1) साक्षर हा साथ ही कपोला कलाई उपस्करों के प्रचालन श्रीर श्रनुरक्षण का श्रनुभव हा । (2) निम्नलिखिन में पूर्णत परि- चिन हो । (क) विद्यात प्रवनमन मंट्ठी का प्रचालन । (ख) लीह युक्त तथा श्रलौह युक्त पदार्थों की साथे- गरी और खलाई । |
| | | | <u> </u> | 10 | | 12 13 |
| मही | | हो सकते और दोनो | ह्यारा जिसके न पर प्रोक्रिति द्वारा । के न हो सकने प्रतिहास । | भ्रज्यन | स्थामास्तरण पसन के निर्धारित कर्म स्वापन के लौहारों में से । प्रोजनि ऐसे सहायक लौहार जिन्होंने उस श्रेणी में 5 वर्ष सेवा बी है । | |
| नहों | ŧ | हो सकने | द्वारा जिसके न पर प्रोन्निति द्वारा केन हो सकने तर्तीद्वारा । | भ्रमयत | स्थानास्तरण पत्तन के निर्धारित कमें स्थापन के मिलिंग मंकीन प्रचालको में से । प्रोप्ति ऐसे सहायक मंगील मिस्बी जिन्होंने उस श्रेणी में १ वर्ष सेवा की है । | 2 वय साग् नही होना |

भारत का राजाज अमाधारण

| [भाग][⊸-खण्ड 3(1)] | | भारत ग | काराजात्र असाधारण —————— | | |
|-----------------------------------|--|-------------------|---|--|--|
| 8 | | 10 | 11 | 12 | 13 |
| नहीं | स्थानात्परण द्वारा जिसके न हा सक्ने पर प्राक्षिति द्वारा भीर दाना के न हा सकन परसीधी भर्ती द्वारा । | धचयन | स्थानान्तरण पत्तन ने निर्धारित कम स्थापन के माचेगरों में से । प्राप्ति ऐसे महायक साचगरों में से जिन्हाने पत्तन में उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | | लाग् नहीं होला |
| 1 2 | 3 4 | 5 | 6 | | 7 |
| 26 मैंक् निक (अपकथक) | 9 '60-6-32(स्व्वाराज्य ह 350 फ्र | वर्ग ३ | ३० वर्ष मे नीच | के ६ सटो कारी (2) उक्त | हा ग्रीर पंत प्रस्यो स्तुरक्षण भीर पेत प्रस्य के समजका की जात- हो । क्षेत्र में कम में कम क्ष्य का श्रनुभव हा । |
| 27 प्रचामक (व्ययक्षक) | ৮U- 6-32h-द०ग० ५- | वर्ग उ | ३८ धय म नीच | मावयसक । | |
| . कर - चास्तार (ज्याचा चर्ची) | \$10 BC | | | (1) मालग् की की जालि की (2) स्वतह चला ग्रीर क्षेक् | |
| | | | | वछिनीय भग्रेजी का | काम हो। |
| 128 खराविया | 고60-6 3 <u>26</u> -록0학) | यग उ | उ⊳ अष से मीचे | वें भी (2) किसी णान म प्रानुभ (3) एच भशी | ्राम् टी० की खारा न का स्वतन्न रूप र ग करन में सक्षम होन |
| 8 | | 10 | 11 | | 13 |
| - — - — — — स्नागृनकी झोता | | धचयम | स्थामान्तरण पत्तन के निष्ठारित कमें स्थापन के मैकेनिका (ध्रपकर्षक) में में । प्राप्ति ऐसे सहायक मैकेनिक (ध्रप- कर्षक) जिल्हान उस श्रेणी में उथर्ष सेत्रा की है । | 2 वर्ष | लागु नहीं होता |
| | स्थानास्तरण द्वारा जिसक न ला हो सकने पर सीधी भर्नी द्वारा । | ागू नहीं हाता | स्थानान्तरण पसन क निर्धारित कमे स्थापन के प्रचालको (अपकर्षक) में से | .2 वय हे । | लागृ मही होता |

| 236/24 ——————————— | THE GAZETT | E OF INDIA: | EXTRAORDINART | [PA] | (T II—SEC. 3(1) |
|--|---|-------------------------|--|--|---|
| 8 | 9 | 10 | 11 | 1 2 | 13 |
| नही | स्थानान्तरण द्वारा जिसके हो सकने पर प्रोफ्निति द्व भीर दोनों के न हो स परसीधी भर्ती द्वारा । | न प्र चयन ।रा | स्थानारतरण पत्न के निर्धारित कर्म स्थापन के खरादियों में से । प्रोन्नति ऐसे सहायक खरादिए जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | <u>.</u> 2 तर्प | लागृ नहीं झोता |
| 1 2 | 3 4 | | | 7 | |
| 129. पेल्टर | 2 260-8-326 350 উ ০ | -चुठरोठ-४- वर्ग 3 | उ ठ वर्ष मे नीचे | तथ प्रव (2) याः तथ प्री पेटि भव (1) उ | क्षर हो श्रीर धर्मे । स्थानीय भाषा ग्रियोर श्रक्षर पढ़ ध्र ख सकता हो । तो की फुहार पेति । सामान्य फुहार पेति रसाइन बोर्डनथा सामार रसाइन बोर्डनथा सामार रसाइन बोर्डनथा सामार |
| 130 संपीडक प्रवालक भारी इयुटी याम भ | | -इ०रो०-8- वर्ग3 | 30 वर्ष से नीचे | इको कार्य रक्षण | ्टी ग्रनुकाप्ति पर सण् ग्रीर राक ड्रिक्षो प करने ग्रीर उनके ग्र का कम से कम ता ग्रनुभव होना चाहिए |
| 131. रोड रोलर चालक | 1 260-6-32৫ 350 ছ০ | दoरो०-8- वर्ग3 | उ ठ वर्ष से नीचे | मोटर सनुज्ञारि रोड | ो स्त्रीर उसके पास भी यान चलाने की व वन हो इसके साथ-स रोलर चालक के रूप ा 3 वर्ष का स्रनु |
| | | | | 12 | 13 |
| नहीं | 9 स्थानान्तरण द्वारा जिसके हो सकने पर प्रोफ्ति है धौर दोनों के न हो स पर सीधी भर्ती द्वारा । | | - 11 - स्थानान्तरणः पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के पेस्टरों में से । प्रोज्ञतिः ऐसे सहायक पेस्टरों में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | 2 बदं | ['] ' भागुनहीं होता |
| लागू नहीं ह ोसा | स्थानान्तरण द्वारा जिसके हो सकने परसीधी भर्ती ३ | | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के संपीडक प्रचालक भौर भारी ह्यूटी बाहुन चानको में से । | 2 वर्ष | लागृनहीं होला |
| लागू नहीं होता | स्थानासरज द्वारा जिसके हो सकने पर सीधी भर्ती द्व | • | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन केरोडरीलर चालको में से। | 2 वर्ष | त्यागू नही |

सारत का राजात अधायारण

| [भाग]]—साण्ड 3(1)] | | | मा रत | का राज्यत्र भ्रमाधारण | | 729.72 |
|-----------------------------------|------------------------|---|-------------------------|---|--|--|
| 1 2 | 3 | 4 | | -,, -,, -, | == | 7 |
| 132 दैक्टर चालक | 2 | 260° 6~ 326-ই০ 350 ক | गे०-४- द्रर्ग ४ | .35 अर्थ में नीचे | के क के श्रद पास | े और ट्रैक्टर चालक त्प मे सगभग ३ वर्ष तुभव के साथ उसके भारी मोटर यान चलाने धि चालन ग्रनुजप्ति हा । |
|) 33. प्रे चा लक (स्टोने क | गर) । | 260-6-126-40 350 Fo | रा⊳-8- वगे⊍ | ३५ वर्ष स तीले | भावस्थक साक्षर ह के प्र ३ वर टिप्पण ऍसे टर्या जाएंग के योडो र्स | |
| 134. रॉस्टेटनर श्रापन्टर | 1 | 210-4-250-২০ই 5-270 হ০ | गे०- वर्ग 4 | लागू सही होता | सागू नहीं ह | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| 135 द फ्तरी | J | 200+3-206-4-2 द० गें०-4-25 | | लागृ नहीं हाता | लागू नहीं ह | ् मा |
| 136 च गरामी ~ — — — | 1/ | 196-3-220-\$6 3-232*6 | | न्युनलम् 18 नर्षे प्रधिकतम् 25 वर्ष | मिदिल स्क् | ज्लास्तर उमीणं - — — — — — — — |
| | | ~ - ~ | 10 | 11 | 12 | 13 |
| लागू नहीं होता | | द्वारा जिसके न रसीधी भर्तीद्वारा | लागृ नहीं होता | स्थानास्तरण पत्तन के निर्धारित कमें स्थापन के ट्रैक्टर चालकों में से | 2 वर्ष | लागृ नहीं होता |
| नहीं | हो सकते श्रीर दोनों | द्वारा जिसके न पर प्रोमिति द्वारा के न हा सकने वर्तिद्वारा । | ध्रचयन | स्थानान्तरण: पनान के निर्धारित कर्म स्थापन के प्रकालकों (स्टोन कणर) में से । वार्क्तस्य: ऐसे महायक प्रकालक (स्टोन कक्षर) जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | 2 কর্ঘ | लागू नहीं होता |
| लागृनहीं होता | पोन्निति द्वारा | | प्रभयन | प्रोफ्नितिः दफ्तरीं की श्रेणी में जिसने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेत्रा की हैं। | 6 मॉम | लागू नहीं होता |
| सागृनही होता | प्राक्षिति,द्वारा | | भषयन | प्रोक्सति चपरासी की श्रेणी से जिसने उस श्रेणी में 3 जर्ब सेवा की हैं। | 6 माम | नागृनहीं होता |
| बाग् नह ि होता | | प्रिप्ती भर्ती द्वारा, स्थानास्त्रकण क्वारा | ला ग् नहीं हो ता | म्यानान्तरण: ऐसे झाहूकण/झाडूकण भीर श्रपमार्जक श्रीर चौकीदारो मे से जिन्होंने श्रपनी-अपनी श्रेणी मे 5 वर्ष मेवा की है भीर जिनके पाम सीधे भर्ती किए जाने वाले व्यक्तियों के लिए भवधारित शैक्षिक भईसाए नहीं है किन्तु जो हिन्दी, भंग्रेजी या श्रेतीय भाषा लिख भीर पढ़ सकते हैं, जिसका श्रव- धारण इस मावा में एक साधारण परीक्षण द्वारा किया आएना। | | नागृ नहीं होना |

| - | | | | | | ^_= |
|----------------------------|--------------------------------------|--|--------------------------------|--|--------------------------------------|--|
| 1 2 | 3 | 4 | | 5 6 | _ ~ | 7 |
| 137. मस्कर | 1.3 | 200-3-206-4-3 द० गे०-4-25 | | 1 ८ से 2 5 वर्ष के वीचा | सुगठित <i>व</i> उमीर | ारीरकेसाथ ग्राटबी स्तर र्ण |
| 138 संदेशवाहक | 2 | 196-3-220-₹° 3-232 <i>₹</i> ° | रो∘- वर्ग4 | 1 ६ ग्रींट 2 ठ वर्ष के बीच | भाठवा उन्हें कर्त | स्तर या उसके समतुष् ार्ण किया हो । साह व्य करने में शार्रः(रिक क टीक होन। चाहिए। |
| | | | | | | चलाना जानतः हो । |
| 139. श्रस्पताल परिचर | i | 196-3-22 দে ব ০ 3-232 হ ০ | रो०- वर्गे4 | न्यृतनम 18 वर्षे प्रशिकासम 25 वर्षे | मिडिल स | कृत्व उत्तीर्ण |
| 140 बेधमाला परिचर | 1 | 200-3-206-4-2 वंद सेंद्र-4-25 | | न्यृनतमा ≀ ८ वर्ष | | कुल स्लर उत्तीर्ण। का ज्ञान बांछनीय। |
| 141. सिगनल ज लामी | 5 | 196-3-220 -ኛ ፡ ን 3-232 ₹ ፡ | रो०- वर्ग4 | 25 वर्ष | भग्नेर्ज पढ़ उन विया कोड | : स्तर उमीर्ण होना चाहि। ते का ग्रष्ठा झान हो ग्रयीन श्रीर लिख यकता हो श्रद्धायियों को श्रीधमाः जाएगा जिन्हें श्रन्तर्राष्ट्रीय के वर्णासुकस श्रीर श्रंकानु चिक्को का जान है। |
| 1 42. डेक-है ^{एड} | 36 | 200-3-206-4-1 द०रो०-4-250 घ | | स्पृतसम् ३। वर्षे अधिकतम् ५० वर्षे | डेक-हैण्ड अनुभ | के समरूप हैसियत है ब |
| | | | | | - | |
| 8 | 4 | | 10 | 11 | 12 | 13 |
| — | इारा (ii) 25 प्रति द्वारा । वि | ारा स्थानसीक्षीभनी इस्त स्थानाक्षरण असके मही सकने मनीक्षारा। | लागृनहीं होता लागृनहीं होता | लाग, नहीं होता स्थानान्तरण पत्तन के ऐसे झाडूकण धीर भीकीदारों में से जिन्होंने अपनी-अपनी श्रेणी में 5 वर्ष सेवा की है भीर जो प्राथमिक रूप से साक्षर है भीर जो अंग्रेजी या हिन्दी अथवा कक्षड पढ़ सकने का सबूत दे सकते हैं। | 6 भास 6 माम | नागूनहीं होता लागूनहीं होता |
| लागू नहीं होता | मीबी भर्ती द्वा | रा | लागू नहीं होता | लागू नहीं हो ला | 6 मास | लागृनही होता |
| नहीं | | ≀रा जिसके न हो स्थानान्तरण/प्रसि- ।ारा । | लागूनहीं होता | स्थानान्तरण /प्रतिनियुक्ति : केन्द्रीय/राज्य सरकार के प्रन्य विभागों में समक्ष्य या समतुल्य श्रेणी में कार्यरत व्यक्ति (प्रतिनियुक्ति की प्रथिय सामान्यतः 3 वर्ष से प्रधिक नहीं होंगी) | ६ माम | लाग् मही होता |

सागृ महीं होता

पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के डेक-हैण्डों में से।

स्थाभान्तरण:

6 माम

6 माम

लागू नहीं होता

लागू नहीं होता

नाग् नहीं होता

स्थानान्तरण द्वारा जिसके ग हो। लागू महीं द्वीता सकने पर सीबी भर्ती द्वारा

लागू नहीं होता

लागू नहीं होता

मोबी मतीं द्वारा

| | 2 | 3 | 4 | š | 6 | | 7 |
|------------------------------|-------------------------------|---|---|--|--|---|--|
| 143 | फायरमैन | 26 | | | न्यूनतम 18 वर्षे स्रधिकतम 25 वर्ष | 2 कठोरश लिए सा 3 ग्रन्सिंग | तिद्यालय स्तर उतीर्ण गरीरिक व्यायाम करने वे रीरिक रूप से टीक हो मक इजन के झरिन शमय के उपयोग की जानकारी |
| 144. | मिस्बी | 1 | 196-3-220-द० र 3-232४० | नं∘- अर्ग4 | न्यूनतम 18 वर्षे ग्रिधिकतम 21 वर्षे | समक्ष्य हैसि ध्रनुभव। | ायत में एक वर्ष क। |
| 1 4 5. | सफाईवामा | 35 | 196-3-220-れの 32-232での | रो०- वर्ग4 | न्युनतम् 18 वर्षे प्रधिकतम् 25 वर्षे | समरूप हैरि श्रमु भवा | पयन में एक वर्ष क। । |
| 146 | प्रधान चौकीदार | 1 | 21(⊢4-250 - दぐ 5-270 す。 | रो०- वर्ग4. | 30 वर्ष से नीचे | - | ो भीर ग्रम्छा स्वास्य सवस्यक है। |
| 1 4 7. | चौकीदार | 33 | 196+3-220 - य० ⁻ 3-232 ४ ० | 7°0- ब र्ग4 | त्यूनशमः 18 वर्षे श्रधिकतमः 25 वर्षे | भ्रक्तास्य | |
| 148 | चुक्रेमार भ्रीर परिचर | 7 | 196-3-220-র ০র 3-232 ছ০ | ो०- वर्ग4 | ।8 झीर 2.5 वर्षके श्रीच | मिडिल स्तर | उनी र्ण |
| 149 | सक्रायक साचागर | 1 | 210-4-226-ছ০ৰ 4-250-ছ০ৰ্গা০- গ | | 21 में 35 वर्ष के बीच | ढलाई प्रज्वलिय भटठी रक्षण व (2) जीह साचेगरी पूर्ण का (3) जिन क्षण संस् है उनक वर्ष का | र हो साथ ही कपाल साधिको और तेल हैं त होने वाली झानसर के प्रचालन और धन् हा अनुभव । जीर घलोह ढलाई है । गलाने, ब्रध सवण क न । के पास श्रीबोगिक प्रणि थान का प्रमाणपक्ष नहीं की दशा में सगभग । |
| | | | | | | | की दशा में लगभगएन ो माचेगर के रूप के हैं। |
| | 8 | | 9 | 10 | | वर्ष क | ा साचेगर के रूप है |
| — लागृ • | 8 नहीं होता | सकते पर दीनों के | 9 द्वारा जिसके न हीं सीधी भर्ती द्वारा, न हो सकने पर पर स्थानान्तरण | | 11 स्थानान्तरणः परान के ऐसे भौकीवारों में से जिनके पास सीघे भर्ती किए जाने वाले श्रभ्यवियो के लिए विहित प्रहेताएं/स्तर हैं। | वर्ष क श्रमुभव | ा साचेगर के रूप है है। |
| लागृ • | नही होता | सकते पर दोनो के प्रतिनिय्क्ति | सीधी भर्तीद्वारा, न हो सकते पर : पर स्थानान्तरण | | स्थानान्तरणः परान के ऐसे भौकीवारों में से जिनके पास सीधे भर्ती किए जाने वाले श्रभ्यवियो के | वर्षं क ग्रमुभव 12 | ा साचेगर के रूप हैं। |
| - नर्ह | | सकते पर वीतो के प्रतिनियुक्ति द्वारा। सीधी भर्तीद्वार नीधी भर्ती द्वारा प्रोक्षतिद्वारा | सीधी भर्तीद्वारा, न हो सकने पर : पर स्थानान्तरण रा | लागूनही होना | स्थानान्तरणः पत्तन के ऐसे भौकीवारों में से जिनके पास सीघें भर्ती किए जाने वाले प्रभ्यवियो के लिए विहित भर्दुताएं/स्तर हैं। | वर्ष क प्रानुभव | ा साचेगर के सप है है। |
| न र्ह लागू प मह | | सकते पर वीतो के प्रतिनियुक्ति द्वारा। सीधी भर्ती द्वार प्रोच्चित द्वारा पर सीधी | सीधी भर्तीद्वाराः न हो मकने पर : पर स्थानान्तरण रा द्वारा जिसकेन हो सकन | लागू नहीं होता लागू नहीं होता लागू नहीं होता | स्थानान्तरणः पत्तन के ऐसे चौकीवारों में से जिनके पास सीधे भर्ती किए जाने वाले प्रभ्यवियों के लिए बिहित प्रह्ताणं/स्तर हैं। लागू नही होता श्रोप्तिन ऐसे चौकीवारों में से जिन्होने उस श्रेणी में सींच वर्ष सेवा | यर्ष क प्रानुभव 12 6 माम 6 माम 6 माम | ा माचेगर के सप हैं है। |
| नई लागू व मई काग् न | नहीं होता ो ही होता | सकते पर वीतो के प्रतिनियुक्ति द्वारा। सीधी भर्ती द्वार प्रोन्नति द्वारा पर सीधी | सीधी भर्ती द्वाराः न हो सकते पर पर स्थानान्तरण रा द्वारा जिसके न हो सकत भर्ती द्वारा द्वारा जिसके न हो सीधी भर्ती द्वारा। | लागू नहीं होता लागू नहीं होता लागू मही होता भच्यन | स्थानान्तरणः पत्तन के ऐसे भौकीवारों में से जिनके पास सीधे भर्ती किए जाने वाले प्रभ्यांचियों के लिए विहित भहुँताएं/स्तर हैं। लागू नही होता प्रोप्तिन ऐसे चौकीवारों में से जिन्होंने उस श्रेणों में तीन वर्ष सेवा की है स्थानान्तरण. | थर्ष क प्रानुभव - 12 6 माम 6 माम 6 माम 2 वर्ष | ा माचेगर के सप हैं हैं। |

| 256/28 | TH | HE GAZETTE OF I | NDIA | EXTRAORDINARY | [PART 1I—SEC. 3(i) | |
|--|---------|--|---------------|---|--|--|
| 1 2 | 3 | 4 | 5 | | | |
| 150 महायक बढ़ई | 3 | 210-4-226-य०सो०- 4-250-य०स०-5- 290 क | ——— वर्ग्य | 30 वर्ष से नीचे | आवस्यकः साक्षरं हो धीर स्थतंत्रं रूप में बर्द्ध के एक वर्ष के ब्यावहारिकः धतुभव के साथ व्यवसाय से परिचय होना वाहिए । | |
| 151. संद्रायक प्रचालक (स्टोन क्यार) | 1 | 210-4-226-द०गे०- 4-250-द०गे०-5- 290 म० | यर्ग + | 30 वर्ष से नीचे | भाष्यय हाना चाहर । श्रावस्थक: स्टोन अक्षार के प्रचालन श्रौर मरम्मत में 6 मास का पूर्व प्रन- श्रव होना चाहिए । टिप्पण : उन व्यक्तियों को श्रधिमान दिया जाएगा जिनके पास व्यवसाय स | |
| 152. सहायक मैकेनिक | 5 | 210-4-226-च्रुरो०- 4-257-च्रुरो०-5- 290 ५० | वर्ष 4 | 20 वर्ष में कंम | स्रावश्यकः साक्षर हो और बेन्ज, ले-लैंड लारियो या बसों, जीपों भौर कारो को हथालने भौर सरस्मस का कम से कम उ वर्ष का भ्रतुभव हो । या भ्राटोमोबाइल मैकनिक्लस मे भौजो- गिक प्रणिक्षण संस्थान को स्थावसायिक परीक्षण प्रमाणपत्न हो । | |
| | | | | | | |
| 8 | | 9 10 | | 11 | 1213 | |
| साग _् नही होगा | सक} पश | ब्रारा जिसके नहीं घचयन त्प्राप्तिकारा श्रीट नहीं सकने परमीधी त्रा । | | स्थानान्तरण पत्तन के निर्जारित कर्म स्थापन के सहायक बर्क्ड में से । प्रोक्तिः ऐसे सहायक (कर्मणाना) में से जिसने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है जिसके भानर्गन बक्ई/सहायक बक्ड के अधीन 6 सास नक कार्य करने का भ्रन्भव भी है। | 6 माम लागूनही होता | |
| जागू नही होना | सकते पर | द्वाराजिसकेन हो अजबन ग्प्रोक्सनिद्वारा और ग्राह्मो सकनेपर सिद्वारा। | , | स्थानान्तरण . पत्तन निर्धारित कर्म स्थापन के महायक प्रचालक (स्टोन कंशर) में से । प्रोक्षति ऐसे सहायक (कर्मणाला) में में जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है जिसके श्रंतर्गत 6 माम नैक प्रचालक (स्टोन कशर/सहायक प्रचालक स्टोन कशर) के स्रोत कार्य करने का सनु- | 6 माम नाग नहीं होना | |
| मही | सकने पर | ण द्वारा जिसके न हो अन्ययः प्रोक्ततिद्वारामीर दोनों सकने पर सीधी भर्ती | न | स्थानान्तरणः पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन में सहायक मैकेनिको में से: प्रोक्नतिः ऐसे महायकों (मोटरगाडी) में से जिन्होंने उम श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | 6 माम याग्नही हो ता | |

भारतं का राजपन्नः ससाधारण

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|---------------|-------|---|--|---------|----------------|--|
| 153. सहायक ला | इनमैन | 5 | 210-4-226-व ० रो०- 4-250-व ० रो०-5-290 र० | वर्ग 4 | 35 वर्षे से कम | धावस्थक: (1) साझर हो भौर उसे विजली के संभे पर चढ़ने का, विभिन्न प्रकार की शिरोपरि लाइन सामग्री का, बांधने, शैक्ल या पिन विद्युत रोधकों का, रोक क्लैम्प या श्रीकट लगाने, शिरो- परि सुधालकों को निकालने का |
| | | | | | | (2) लाइन कर्मकार के रूप में या वायर मैन के सहायक के रूप में या किसी ख्यातिप्राप्त संगठन में लाइनमैन के रूप में कम से कम 3 वर्ष की प्रविध का प्रमुमव प्रावश्यक होना चाहिए। |
| 154. सहायक फि | टए | 6 | 210-4-226-व•रो०- 4-250-व•रो०-5-290 क० | वर्गे 4 | 30 वर्ष से कम | ग्रावण्यकः (1) साक्षर हो ग्रीर उसके पास फिटर के रूप में ग्रीग्रोणिक प्रशिक्षण संस्थान का व्यवसायिक प्रमाण पक्ष हो । |
| | | | | | | (2) फिटर के रूप में लगमग 1 वर्षकों भनुभव । |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|------|---|---------------|---|-------|----------------|
| नहीं | स्थानान्तरण द्वारा, जिसके न हो सकने पर प्रोक्ति द्वारा घोट धोनों के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा ! | प्रश्वयन | स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के सहायक लाइनमैनों में से। प्रीक्षति: ऐसे कनिष्ठ लाइनमैनों में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है। | 6 मास | लागू नहीं होता |
| मही | स्थानान्तरण द्वारा, जिसके न हो सकने परप्रौन्नति द्वारा घौर दोनों के नहो सकने परसीधी भर्ती द्वारा। | ध ंचयन | स्थानान्तरणः पत्तन के निधारित कर्म स्थापन के सहायक फिटरों में से। प्रौन्नतिः ऐसे सहायकों (कर्मशासा) में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है जिसमें कर्म- शासा में किसी फिटर या सहायक फिटर के प्रधीन कार्य करने का 6 मास का अनुभव की सम्मिसित है। | 6 मास | लागू महीं होता |

| 1 2 | 3 4 | 5 | в | 7 |
|---------------------------|--|----------------|--|---|
| 155- महायक फिटर (| मसुद्री) 23 210-4-226-द्रुव 250-5-290 ₹ | | 30 वर्ष से कम | प्रावश्यक (1) साभार हो ग्रीर विभी, पाण्ट्रनों ग्रीर ग्रम्य उसी- लक्ष उपस्कर को हवालने का भनुभव हो तटीय ग्रीर प्लब्यान पात्रपलाइन बाल ग्रीर साकेट जोड़ों को जोड़ने का भनुभव ही। (2) उथले पानी में सैरमा ग्रीर गोसा लगाना जानता हो। बाछनीय: समुद्र में नाथ चलाने का शान हो। |
| । 56. सहायक वेल्डर | 3 210-4-236-व.०र 250-व.०रो०-5 ६० | | 30 वर्ष से कम | समुद्र म राज पंलार का कार हा । (1) साक्षर हो · मौर उसे बैहिडग (विद्युत/वैस वैहिडग) में व्यावसायिक प्रमाणपत्र प्राप्त हो । (2) किसी क्यातिप्राप्त कर्मशाला में 6 माम के लिए वैहडर के क्य में कार्य करने का भ्रमुभव होना जाहिए। |
| 157. सहायक लोहार | 1 210-4-226-द० 250-द०रो०-5 द० | | 30 वर्ष से कम | आवश्यकः साक्षर ही घौर लोहार के रूप में कम से कम एक वर्ष कार्य किया हो। |
| 8 | | 10 | | 12 13 |
| लागू नही होता | स्थानास्तरण द्वारा, जिसके न हो सकने पर प्रोन्निति द्वारा ग्रौर दोनो के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा | भ्र चयन | स्थानान्तरण . पत्तन के निर्धारित कर्म स्था- पत में सहायक फिटरों. (समुद्री) में से । प्रोन्नति : ऐसे सहायक (द्रैजर) में से जिक्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है । | 6 मास लागू नहीं होता |
| नहीं | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकते पर प्रोन्नति द्वारा भीर दोनों के न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | ग्र भयन | वयं सवा को है। स्थानितरण : पत्तन के निर्धारत कर्भ स्थापन के सहायक वैरुडर में से। प्रोन्नति : ऐसे सहायकों (कर्मणाला) में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेथा की है। इसमें कर्मणाला के किसी वेल्डर या सहायक वैरुडर के धन्नीन कार्य करने का 6 मास का धनुभव भी सम्मिलिस है। | 6 मास क्षागू नहीं होता |
| नहीं | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर प्रोन्निति द्वारा ग्रौर दोनों के न हो सकने परसोधी भर्ती द्वारा। | ग्रभयम | स्थानास्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के सहायक लोहारों में से । प्रोम्मित : ऐसे सहायकों (कर्मणाला) में से जिन्होंने उस श्रेणी मैं 3 वर्ष सेवा की है जिसमें कर्म- शाला में लोहार या सहायक लोहार के ध्रधीन कार्य करने का 6 मास का धनुभव भी सम्मिलित है। | 6 मास सागू नहीं हे |

भारत का राजपतः असाधारण

| 4 | 5 | 6 | | 7 |
|--|--------------|--|---------------------------------|---|
| 1 0-4-22 6- द०रो०-4- | वर्ग 4 | 30 वर्ष से कम | ग्रावश्यक | |
| 250-द॰रो॰-5-290 ६० | | | मिली विकास | र्श ेहा और उसके पास न निर्मा के रूप में श्रीद्यो ^ट जिसकान संस्थान का गप त हो। |
| | | | ें में ः रूप | ो ख्यातिप्राप्त कर्मशाला सहायक मशीन मिस्री के में कार्य करने का कम से एक वर्ष का ग्रनुभव हो। |
| <u>>226-द०री•-4-</u> | த <i>்</i> 4 | 30 वर्ष से कम | ग्रावश्यक | : |
| ्रं≉रो०-5-29€ | | | स्था | ार हो श्रीर अंग्रेजी श्रीर नीय भाषा में गिनर्त अक्षर पढ़ लिख सकत |
| | | | | ों ऋादि का पेंट करने का सव । |
| | | | | ारण पेंटिंग कार्य का भवा |
| | | | एक | ी ख्यातिप्राप्त कर्मशाला है वर्ष की ग्रवधि के लिए के रूप में कार्य किया |
| 210-4-226-द०रो०-4- | वर्ग4 | 35 वर्ष से कम | ग्राव <i>श्</i> यक | |
| 250-द०रो०-5-290 रु० | | | पंपों ^ह ग्रनुरक्ष | ग्रीर उसके पास रेत हे समंजन, प्रचालन ग्रीह ण का कम से कम एव हो ग्रंनुभव होना चाहिए |
| 10 | | 11 | 12 | 13 |
| ते न हो अचयन ते द्वारा और . हो सकने पर द्वारा । | | स्थानान्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के सहायक मशीन मिस्त्रियों में से । | 6 मास | लागू नहीं होता |
| | | प्रोन्नित : ऐसे सहायकों (कर्मशाला) में से जिन्होंने उस श्रेणी में 3 वर्ष सेवा की है जिसमें कर्मशाला में किसी मशीन मिस्नी/सहायक मशीन मिस्नी के ग्रधीन कार्य करने का 6 मास का ग्रनुभव भी सम्मि- | | |
| न हो लागू नह ारा । | हीं होता | लित है। स्थानान्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन | 6 मास | लागू नहीं होता |
| TXI T | | के सहायक पेंटरों में से | | |

में से ।

| - | - | 22 |
|---|---|----|
| | | 32 |

| 256/32 | THE | GAZETTE | OF INDIA | : EXTRAORDINARY | |
|------------------------------------|------------|---|---------------|---|--------------|
| 7 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | = |
| 161- Spiel Will er! | 4 : | 210-4-226-द०रो 25 0-द-रो०-5- | | 30 वर्ष से कम | |
| 162. वर्कमेट | 1 | 200-3-206-4-2 रो०-4-250 र | | 35 वर्ष से कम् | |
| 163- लस्कर भीर नावि | क 8 | 200-3-206-4-2 रो०-4-250 ह | | 35 वर्षे से कम | |
| 164. तेसं देने वाला | 2 | 200-3-206- द०रो०-4-256 | | 30 वर्ष से कम | आ |
| | | | 10 | 11 | |
| 8 | 9 | रा जिसके न हो | 10 ग्रचयन | 11 | 1 2 6 मास |
| नहीं | सकने पर | प्रोन्नति द्वारा केन हो सकने | ज प्रया | पत्तन के निर्धारित कर्म स्था- पन में सहायक खरादियों में से प्रोन्नित : ऐसे सहायकों (कर्मशाला) में से जिन्होंने उस श्रेणी में वर्ष सेवा की है। जिसमें कर्मशाला में किसी खरादिए/ सहायक खरादिए के प्रधीन कार्य करते हुए 6 मास सेवा की है। | ० मात |
| ष्मायु : महीं प्राहेताएं : हो । | सकने पर | रा जिसके न हो प्रोन्नति द्वारा के न हो सकने तींद्वारा। | अच्यन | स्थानान्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के वर्कमेटों में से प्रोन्नति : ऐसे खलासी श्रौर नाविकों में से जिन्होंने उस श्रेणी मे एक वर्ष सेवा की है। | 2 |
| सागू नहीं होता | | राजिसकेन हो ोधी भर्ती द्वारा। | लागू नही होता | स्थानान्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्म के लस्कर श्रीर ना | |

स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो लागू नहीं होता सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। लागू नहीं होता

स्थानान्तरण: पत्तन के निर्धारित कर्मस के तेल देने वालों में से

से।

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
|------------------------------|----|---|---------|-----------------|--|
| 165. रसोइया ग्रीर वैरा | ı | 200-3-206-4-234-व० र१०-4-250 ५० | वर्ग 4 | 35 वर्षेसे कम | श्रावश्यक (1) साक्षर ही और सुदृष्ट गरीर थाला हो। |
| | | | | | (2) हिन्दी या अंग्रेजी या करनाड़ का कार्यसाधक ज्ञान हो । |
| | | | | | (3) भारतीय व्यंजनां (शाकाहारी श्रीर मासाहारी मोजन) श्रीर पाझ्चास्य भोजन पकाने का लगभग 5 वर्ष का झेनुभव हों। |
| 166 सकाईवाला श्रीर झाङ्का | 5 | 196-3-220-হেংকী০-3- 232 হেং | થર્ગ 4. | 2.5 वर्ष में कम | द्यावश्यक इसी हैसियत में लगभग 6 मास का प्रसुभव। |
| 167ः मासी ग्रीर मजदूर | 37 | 196-3-220-द॰रो॰ 3- 232 ह॰ | वर्ग4 | 30 वर्ष में कम | श्रावश्यक : मृद्क शरीर हो श्रीर इसी प्रकार के कुणल कार्यका श्रमुक्षय हो । |
| | | | | | वास्त्रनीयइसी प्रकार की हैसियत में लगभग 6 मारा का श्रनुभव। |
| 168. सहायक (क्र्रैजर) | 15 | 196-3-220-द०रो०- <i>3</i> - 232 र ० | वर्ग 4 | 30 वर्ष से कम | भ्राथण्यक : (1) साक्षर हा श्रीर तेरना जानता हा श्रीर पार्ना में कार्य करन जानता हों। |
| | | | | | (2) लगर भीर पेंट्रन चलाने में समर्थ हो। |
| | | | | | (3) डैफ हैंड या ट्रेजर में सहायव के रूप में कार्य किया हो। |

| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
|-----------------|--|-------------------------|---|-------|----------------|
| नागू नहीं होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर सीधी मर्ती द्वारा। | खागू न हीं होता | स्थानान्तरण . पत्तन के निर्घारित कमंस्थापन के रसोइया भौर वैरा में से। | 6 मास | मागू नहीं होता |
| क्षागू मही होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | लागृनश्ची होता | स्थानास्परणः पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के सफाई बाले ग्रीर लाडूकणो से। | 6 माम | लागू नही होता |
| लागू नहीं होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सफने पर सीधी भर्ती द्वारा । | लागू नहीं होता | स्थानास्तरण : पत्तन के निर्धारित कर्म-स्थापन के मानी श्रौर मजदूर या निर्धारित कर्म स्थापन या निर्यामित स्थापन के जौकीदारो | ६ मास | यागू नही होता |
| कागू नही होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | लागू न हीं हो ता | स्थानास्तरण · पत्तन के निर्घारित कर्म स्थापन के महायकों (क्र्ज़र) में से। | 6 मास | लागू नहीं होता |

| 1 2 | 3 4 | 5 | 6 | 7 | |
|------------------------|--|-------------------------|---|---|---|
| । 69. सहायक (कर्मणाला) | 2 196-3-220-30 23230 | ज्यो०-3- यर्ग4 | 30 इपं से कम | कर्मशालाः लोहार <i>या</i> खपादिए स्टोन प्रेप | स्प में कार्य करने का |
| 170. सहायक (मोटर गःवी |) 1 196-3-220-ই 232 ই০ | ∍रो∘-3- वर्ग4 | 30 वर्ष गैकम | मावस्यकः . साक्षर ही भी मीर हर्ल्क मरस्मत क | र उसे भारी गाहियों मैटिंग गाहियों की रते में सहायक के रूप 2 वर्ष की पूर्व भनु |
| | | | | प्रशिक्षण स | श्यथमाय मे धौद्योगिक स्थानप्रमाणपत्न धारको मान दिया आएगा। |
| 171. क्लीमर | 8 196-3-220 -র ও 232 দ০ | ∍रो०-3- बर्ग | 4 2.5 वर्ष से कम | चलाना उ मारीर बाल टिप्पण मोट क्ष्प में पूर्व | सर हो भीर सक्कल गनना हो भीर स्वस्थ गरूपित हो। र गड़ी के क्लीनर व भिनुभव रक्कने नालेक दिया जाएगा। |
| 172. कृतिष्ठ लाइन मैन | । 196-3-220-द 232 ह० | ०रा०-₃⊁ वर्गेः | 1. 25 संबर्षसंक्रम | श्रावण्यक. (1) साक्षर हा विद्युत शिरोपरि लाइनो मे करने का 6 माम का भ्र हो। (2) स्त्रबे पर चढ़ना जानना | |
| 173 मर्जिसमैन | 4 196-3-220⊰ 232 ₹∘ | द ०रो०-3- वर्ग 4 | . ∠5 वर्ष स कम | श्रावण्यक . स भोटर गा गाड़ियों व | र प्रकृषा जानता हा सक्षर हो भ्रोर आरं इयो और हलकी मोट गि मर्विमिग श्रीर सका ग 2 वर्ष का श्रनुभ |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| | स्थानान्सरण द्वारा जिसके न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | | स्यानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के सहायकों (कर्मणाला) में से। | 6 मास | लागू नही होता |
| लागू मही होता | स्थानास्तरण द्वारा जिसके न हों सकने पर सीधी भर्ती द्वारा। | ** | स्थानान्तरण पत्नन के निर्धारित कर्म स्थापन क सहायकों (मोटर गाडी) में से । | 6 मास | लागू नही होता |
| लागृ नहीं होता | स्थानान्तरण द्वारा जिसके न ह मकन पर सीधी भर्ती द्वारा | • | स्थानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थापन के क्लीनरा में स । | ७ माम | लागू नहीं होसा |
| क्षागू नहीं होता | स्थानातरण द्वारा जिसके न हो सकने पर सीधी भर्ती द्वारा | ••• | स्थानान्तरण पत्तन के निर्घारित कमं स्थापन के कनिष्ठ लाइनमैनो मे मे । | ः माग | लागृ नहो हां ता |
| लागू नहीं होता | स्थानान्तरण द्वारा श्रिसके न ह सकने पर मीधी भर्ती द्वारा | | स्थानान्तरण पत्तन कं निर्धारित ७ में २थापत कें सर्विसमैनों में से । | 6 माम | लाग नहीं होता |

| 1 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 7 |
|----------------------------|---------|---|-----------------------|--|-----------------------|--|
| 74. खनन मेट | 1 | 200-3-206-4-23 रो०-4-250 ६० | | 30 वर्ष से कम | यम, 1961 जारी किये | तुत्पादक खान विनि- की धारा 12 के श्रधीन गये विधिमान्य मेट का धारक होना बार्ग्ए। |
| 175 राज के लिए मेंट | 1 | 200-3-206- 1-2 वर्षे०-4-250 | | 30 वर्ष से कथ | | ष्म क्षेत्र मं कम सं पर्पका ध्रमुक्षय होना |
| 176. राहायक वायरमैन | 6 | 210-4-226-द ः 250-द०रो०-5- | | ्र 30 वर्ष से कम | तार लग उसीर्ण हो | साशर हो फ्रौर विद्यु ाने में तकनीकी परीक्षा ना चाहिए। र्य अनुभव रखने वाले वो प्रधिमान दिया |
| 177 स्कोटकर्ता - — — | 1 | 196-3-220 -५० री 232 ६० | ro-3- वर्ग | 4 30 वर्ष से कम | 1961 की | पादक खान विनियम । धारा 12 के प्रधीन गण विधिमान्य म्फोटकर्ता का धारक होन। |
| 8 | | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| भ्रायु : नही भहेता : हो | सकने पर | द्वारा जिसके न हो प्रोन्मति द्वारा भौर न हो सकने परसीधी ा। | लागू नहीं होता | स्थानान्तरण : पत्तम के निर्धारित कर्म स्थापन के खनन मेटों मे से । प्रोन्तित ' ऐसे स्फोटकर्ताभ्रों में से जिन्हों उस श्रेणी में एक वर्ष सेवा की | ने | लागू नही होता |
| लागू नहीं होता | | द्वारा जिसके न हो :सीधी भर्ती द्वारा । | जागू नहीं होता | ≭थानाल्परण ' परतन के निर्धारित कर्म स्थापन के राज के लिए मेटों में से | | लागू नहीं होता |
| लागू नही होता | | द्वारा जिसकेन हो :सीधी मर्ती द्वारा । | धचयम | स्थानान्तरण पत्तन के निर्धारित कर्म स्थाप के सहायक वायरमैनों में मे | | लागू मही होता |
| लागू महीं होता | | द्वाराजिसकेम हो रसीधीभर्तीद्वारा। | लागू नष्टी होता | स्थानास्तरण . पत्तम के निर्धारित कमें स्थाप के स्फोटकर्ताधों मे से । | 6 मा स न | लागू नही होता |

सा० का० नि० 159 (घ): — केन्द्रीय सरकार, महा-पत्तन न्यास मधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 26 के साथ पठित धारा 126 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित विनियम बनानी है, श्रर्थात्:

- संक्षिप्त नाम श्रीर प्रारम्भ :--(1) इन बिनियमों का मंक्षिप्त नाम न्यू मंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी (ध्रध्यापन फीम की प्रतिपूर्ति) विनियम, 1980 है।
 - (2) ये 1 अप्रैल, 1980 को प्रवृत होने ।
- 2. लागू होता:—ये विनियम बोर्ड के उन सभी स्थायी स्थायीवत् श्रौर श्रस्थाई कर्मचारीयों को लागू होंगे जिन्होंने कम से कम 1 वर्ष सेवा की है श्रौर जिनका वैतन, जिसके श्रंतर्गत महंगाई वेतन, यदि कोई है, 1200 रु० प्रतिमास से श्रिधक नहीं है।
- 3. परिभाषाएं :---- इन विनियमों में जब तक कि संदर्भ से ग्रन्थथा श्रपेक्षित न हो,
 - (1) "बोर्ड" का वही श्रर्थ होगा जो महापत्तन न्यास श्रिधिनयम में है।
 - (2) "कर्मचारी" से बोर्ड का कर्मचारी श्रभिप्रेत है।
 - (3) 'बेतन' से ऐसा बेतन अभिन्नेत है जो मूल नियम 9(21)(क) में या बोर्ड द्वारा विरिचित तत्संबंधी विनियमों में यदि कोई है, इनमें से जो भी कर्म- चारी को लागू होते हों, परिभाषित है।
 - (4) 'स्थायी' 'स्थायीयत' ग्रीर 'ग्रस्थाई' के अर्थ वही होंगे जो केन्द्रीय सरकार के मूल नियमों में या बोर्ड द्वारा विरचित तत्संबंधी विनियमों में, यदि कोई है, जो भी कर्मचारी को लागू होंते हों, परिभाषित है।
- 4. पालता:—(i) भारत में मान्यताप्राप्त मिडिल और उच्च विद्यालय या उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा के लिए कर्मचारियों के बालकों की भ्रोर में संदेय या वास्तव में संदत्त प्रध्यापन फीस का कर्मचारियों को ग्राधिक से ग्रिधिक उस दर से संदाय किया जाएगा जो उस राज्य का जिसमें विद्यालय भ्रवस्थित है, मरकार द्वारा सरकारी विद्यालयों के लिए श्रनुमोवित है:

परन्तु जब सरकार या सहायता प्राप्त विद्यालय ऐसे किसी बालक से जिसका भाई या बहन भी उसी स्कूल में या उसी नगर में उसकी शाखा में किसी उच्चतर कक्षा में पढ़ रहा या रही है, रियायती दर पर फीम प्रभार करता है तो रियायती दर वह दर होगी जिस पर प्रतिपूर्ति के प्रयोजन के फीस संदेय है।

(ii) ऐसे किसी अधिकारी की दशा में जिसका बेतन किसी मास के किसी भाग के लिए 1200 ए० प्रतिमास से अधिक है तो प्रतिपूर्ति उस मास के लिए ही अनुजात की जाएगी यदि वह उस मास के कम से कम 15 दिन के लिए 1200 ए० प्रतिमास से अनिधिक बेतन केता है।

(iii) बोर्ड के पास प्रतिनियुक्ति पर राज्य सरकार मेवक/केन्द्रीय सरकार सेवक भी प्रपनी प्रतिनियुक्ति की प्रविध के लिए उस मास से जिसमें वे पत्तन सेवा प्रारंभ करते है उस मास तक जिसमें वे पत्तन सेवा छोड़ देते हैं, प्रतिपूर्ति के हकदार होंगे:

परन्तु यह प्रतिपूर्ति तभी भ्रनुज्ञेय होगी जब बोर्ड के प्रधीन सेवा 15 दिन से कम दिन की नहीं है।

(1V) राज्य सरकार/केन्द्रीय सरकार या भारत में विवेशी सेवा में प्रतिनियुक्ति कर्मचारी केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकार विदेशी नियोजक से प्रतिपूर्ति का दावा करने का पात्र होगा और इस बाबत प्रतिनियुक्ति के निबधनों में धावश्यक उपन्त्रंध किया जाएगा ।

टिप्पण: कोर्ड के किसी कर्मचारी की अन्य विभागों में प्रतिनियुक्ति पर प्रतिनियुक्ति के विद्यमान निवंधन ऐसे कर्म-चारियों की प्रतिपूर्ति मंजूर करने के लिए उधार लेने और देने वाले प्राधिकारियों के बीच भ्रापसी करार द्वारा समुचित रूप से पुनरीक्षित किए जाएंगे।

(V) जहां पृति और पत्नी, दोनों पत्तन सेवा में हैं, वहां भ्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति उसमें से केवल एक के लिए श्रनुक्रेय होगी परन्तु यह तब भ्रनुक्रेय नहीं होगी जब उनमें से किसी का वेतन 1200 रु० प्रतिमास से भ्रधिक है।

टिप्पण: यदि किसी कर्मधारी की पत्नी या उसका पति पत्तन से बाहर नियोजित है और वह श्रपने बालकों की बाबत उक्त नियोजक से ग्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति की सुविधा का हकदार है तो कर्मचारी को यह रियायत तद-नुसार कम कर दी जाएगी।

(vi) प्रतिपूर्ति किसी ऐसे कर्मचारी को अनुज्ञेय होगी जो कर्तव्यरत है या निलंबित है या छुट्टी पर है। जिसके प्रंतर्गत सेवा निवृक्ति पूर्व छुट्टी भी है। यह मृतक, सेवा निवृक्त या सेवा-मुक्त कर्मचारियों के बालकों की बाबत अनु-ज्ञेय नहीं होगी। यदि किसी शैक्षणिक वर्ष के मध्य में कोई कर्मचारी मर जाता है या पत्तन सेवा में नहीं रह जाता है तो भत्ता उस मास के अंत तक ही अनुज्ञेय होगा जिसमें यह घटना होती है।

स्पष्टीकरण: वेतन जिसके संदर्भ में रियायत दी जाएगी जब कर्मचारी निलंबित है या छुट्टी पर है, वह वेतन होगा जो उसे निलंबित करने के या छुट्टी पर जाने के समय भनु-क्षेय है।

- (vii) (क) प्रतिपूर्ति मिडिल, उच्च ग्रौर उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा ग्रौर तकनीकी तथा श्रम्य व्याव-सायिक विद्यालयों तस्संबंधी कक्षाम्रों तक सीमित होगी।
- (ख) भारत में विश्वविद्यालय पूर्व कक्षाम्रों या इंटर-मिडियट महाविद्यालयों की प्रथम वर्ष कक्षाम्रों में शिक्षा के लिए संदेय या वस्तुतः संदत्त घध्यापन फीस की भी प्रति-पूर्ति की जाएगी । परन्तु यह तब जब ऐसे बालक जिनकी

बाबत फीस की प्रतिपूर्ति का दावा किया जाता है, उच्चतर माध्यसिक विद्यालय, मैट्रिकुलेशन या समतुल्य परीक्षा उत्तीर्ण कर बुके हैं किन्तु उन्होंने उच्चतर माध्यमिक या समतुल्य परीक्षा उत्तीर्ण नही की है:

परन्तु यह स्रौर कि ऐसी शिक्षा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित महाविद्यालय में या विश्वविद्यालय में सम्बद्ध महा-विद्यालय में दी जाती है।

टिप्पण: ग्रध्यापन फीम की प्रतिपूर्ति के प्रयोजन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा जालित महाविद्यालय की सहायता पाने वाले विद्यालय के समकक्ष समझा जाएगा श्रीर वास्तव में संदत्त फीस की प्रतिपूर्ति की जाएगी। दूसरी श्रीर किसी विश्वविद्यालय में सबद्ध महाविद्यालय की, मान्यताप्राप्त सहायता म पाने वाली संस्था माना जाएगा श्रीर ऐसे महाविद्यालय में वास्तव में संदत्त श्रध्यापन फीस जिसकी प्रतिपूर्ति की जा सकेगी उससे श्रधिक नहीं होगी जो उस विश्वविद्यालय द्वारा जिससे वह सम्बद्ध है, विहित की गयी है।

स्पष्टीकरण: अध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति ऐसे प्रक्रम तक जो बालक को जिन्नर्षीय उपाधि पाठ्यक्रम म प्रवेश के लिए पाज बनती है, सभी कक्षाओं में अनुज्ञात की जाएगी, उवाहर-णार्थ, कर्नाटक में जहां सैकडरी स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम की 10 कक्षाएं होती हैं और विश्वविद्यालय पूर्व पाठ्यक्रम में दो कक्षाएं होती हैं, प्रतिपूर्ति 10 कक्षाओं और विश्वविद्यालय पूर्व की दो कक्षाओं, दोनों के लिए अनुजेय होगी । इसी प्रकार, राज्यों में जैसे उत्तर प्रवेश में जहां उपाधि पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष की होती हैं, प्रतिपूर्ति इंटरमिडियट कक्षाओं के प्रथम वर्ष तक सीमित होगी ।

(viii) विक्वविद्यालय पूर्व कक्षाच्यों में या इंटरिमिडियट महाविद्यालय या तकनीकी महाविद्यालय के प्रथम वर्ष की कक्षाच्यों में प्रध्ययन करने वाले कर्मचारियों के बालकों के लिए प्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति के लिए दावे की बाबत प्राचार्य से निम्नलिखित प्रमाणपन्न ग्रिभिप्राप्त किया जाना चाहिए और उन्हें प्रथम दावे के साथ और बाद में महाविद्यालय के प्रत्येक ग्रीक्षणिक वर्ष के ब्रारंभ में प्रस्तुत करना चाहिए।

"प्रमाणित किया जाता है कि महाविद्यालय/संस्थान विश्वविद्यालय/ बोर्ड द्वारा चालित से संबद्ध/से उसे मान्यता प्राप्त है"।

- (ix) पालीटेकनिकों की प्रथम वर्ष की कक्षायों में भ्रष्टययन कर रहे अपने बालकों के बारे में कर्मचारियों द्वारा संदत्त फीस की प्रतिपूर्ति उन्हें भ्रष्ट्यापन फीस की प्रतिपूर्ति की मंजूरी -के लिए विहित ग्राधारभूत शर्तों के ग्रधीन रहते हुए, की जाएगी।
- 5. प्रतिपूर्ति की शतेंं :— (i) प्रतिपूर्ति की रियायत सब ग्रनुज्ञेय होगी यदि बालक का नाम (क) ऐसे विद्यालय में जिसे उसे क्षेत्र के जिसमें विद्यालय है, सरकारी शैक्षणिक प्राधिकारी द्वारा मान्यताप्राप्त है, या (ख) ऐसे विद्यालय में जो किसी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित मैट्रिकुलेशन परीक्षा 1332 GI/80—17

के लिए विद्यार्थी तैयार करता है ग्रीर जो ऐसे विश्वविद्यालय से संबद्ध है या जिसे उसमे मान्यताप्राप्त है, या (ग) ऐसे विद्यालय मे जो केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोई, नई विल्ली मे संबद्ध है, वर्ज है।

टिप्पण : प्रतिपूर्ति स्कीम के प्रयोजन के लिए ऐसे मान्यता प्राप्त विद्यालयों को भी (जिनमें पिल्लिक स्कूल भी हैं) जो विद्यायियों को भारतीय विद्यालय प्रमाण-पन्न परीक्षा के लिए तैयार करते हैं, मान्यता प्राप्त सहायता न पाने वाला के प्रवर्ग में ग्राने वाला माना जाएगा । ग्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति के लिए ऐसे विद्यालयों की कक्षाग्रों की सरकारी विद्यालयों की कक्षाग्रों से समकक्षता उस क्षेत्र के जिसमें विद्यालय स्थित है, सरकारी शिक्षा प्राधिकारियों के परामर्श में विनिश्चित की जाएगी ।

(ii) (क) सहायता पाने बाले विद्यालयों में शिक्षा के लिए प्रतिपूर्ति की जाने वाली प्रध्यापन फीस इस संबंध में प्रधिकथित सभी अन्य शर्तों के अधीन रहते हुए उससे अधिक नहीं होगी जो उस राज्य की जिसमें विद्यालय स्थित है सरकार द्वारा तस्संबंधी कक्षाओं के लिए विहित की जाए।

स्पष्टीकरण विशेष प्रकार के राजकीय विद्यलयों में भी भ्रषात् पश्चिमी बंगाल में सरकार के प्रबन्धाधीन भ्रंगल भारतीय विधालय पंजाब में राजकीय भादर्श उच्च विद्यालय, भान्ध्र प्रदेश में विशेष राजकीय विद्यालय भौर भ्रन्य राज्यों में ऐसे ही विद्यालयों में शिक्षा के लिए भ्रष्ट्यापन फीस की पूतिपूर्ति उससे भ्रधिक नहीं होगी जो पारपरिक राजकीय विद्यालयों में तत्सम्बन्धी कक्षाभ्यों के लिए सरकार द्वारा विहित है।

- (ख) इंटरमिडिएट/तकनीकी महाविद्यालय के प्रथम वर्ष पाठ्यकम या विश्वविद्यालय पूर्व कक्षा के लिए प्रभारित ग्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति के लिए रक्षम उतने तक होगी जितनी तत्सम्बन्धी कक्षाग्रीं के लिए सरकारी महाविद्यालय हारा प्रभारित होती है।
- (ग) केन्द्रीय विद्यालयों की दशा में केन्द्रीय सरकार द्वारा ग्रनुमोदित भ्रष्ट्यापन फीस का मापमान, सम्बद्ध राज्य सरकार के सहायता पाने वाले विद्यालय द्वारा भ्रनुमोदित भ्रष्ट्यापन फीस के मापमान को ध्यान में नरखते द्वुए प्रतिपूर्ति का भाधार होगी।
- (घ) राष्ट्रीय शैक्षिक भ्रमुसंधान भौर प्रशिक्षण परिषद् द्वारा स्थापित संप्रदर्शन बहुउद्देश्य विद्यालयों को भी केन्द्रीय सरकार के विद्यालयों के समान माना जाएगा भौर भारत सरकार द्वारा भ्रनुमोदित श्रध्यापन फीस का मापमान राज्य सरकार के विद्यालयों के लिए राज्य प्राधिकारियो द्वारा भ्रनुमोदित फीस को ध्यान में न रखते हुए प्रितिपूर्ति का भ्राधार होगा।
- (४) ग्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति विश्वविद्यालयों द्वारा संचालित पत्नाचार पाठ्यकर्मों में प्रविष्टि बालकों की बाबत अनुज्ञेय हांगी क्योंकि प्रतिपूर्ति की मंजूरी के लिए विहित आधारिक णतौं की पूर्ति हो लाती है। वर्ग iii भीर वर्ग iv ग्रधिकारियों के मामले में ग्राहरण श्रधिकारियों ग्रीर वर्ग वर्ग

1 श्रीर 2 श्रिधिकारियों के मामले में विभागाध्यक्षों को विशेष रूप से श्रपना यह समाधान कर लेना चाहिए कि संस्थान भान्यता प्रदान करने से सम्बन्धित शर्ते जो विनियम 4(i) श्रीर 4(ii) से है, पूरी कर दी गयी हैं।

(च) ऐसे राज्यों में जहां शिक्षा नि:णुल्क है श्रीर राज्य सरकार द्वारा चालित विद्यालयों के लिए कोई फीस विहित नहीं की गयी है, सरकारी सहायता पाने वाले श्रीर मान्यताप्राप्त सहायता न पाने वाले विद्यालयों ग्रीर विभागीय विद्यालयों, उनको छोड़कर जो ग्रन्ध म्क श्रीर बिधा विद्यार्थियों के लिए हैं, द्वारा भी भारित फीस की प्रतिपूर्ति वास्तव में संदत्त देशें पर की जा सकती है किन्तु वह निम्नलिखत अधिकतम सीमा के श्रिधीन रहते हुए होगी।

| कक्षा 6) कक्षा 7 } | |
|------------------------|---------------------------------|
| कक्षा 7 } | 5 क० प्रतिमास दर से |
| कक्षा 8) | |
| फक्षा 9 | 6 क० प्रतिमास की दर से |
| कका 10 | 7 रु० प्रतिमास की दर से |
| च्छा 11 | 8 क ्रप्र तिमास की दर से |

हिप्पणः ऐसे राज्यों में जहां राजकीय विद्यालयों में तत्सम्बन्धी कक्षाद्यों में शिक्षा नि:शुल्क नहीं है तत्सम्बन्धी कक्षाद्यों में सहायता पाने वाले। मान्यताप्राप्त सहायता न पाने वाले। सान्यताप्राप्त सहायता न पाने वाले विद्यालयों में प्रध्ययन कर रहे वालों की बावत श्रध्यापन फीम की प्रतिपूर्ति श्रनुज्ञात करने के प्रयोजनों के लिए राजकीय विद्यालयों में वालकों के लिए प्रभारित दरें जहां लड़कों श्रौर लड़कियों के लिए पृथक दरें विहित हैं. मानक दरें मानी आएगी श्रौर तदनुसार विहित शर्तों के श्रधीन रहते हुए प्रतिपूर्ति उक्त सीमा तक लड़कियों की बाबत भी अनुज्ञेय होंगी।

- (iii) ऐसे पतन कर्मचारियों को जो शारीरिक रूप में अपंग/मानसिक रूप में मन्द हैं. बालकों की बाबत प्रभारित फीस की उनकी प्रतिपूर्ति निम्निलिखित और शतों के अधीन रहते हुए होगी, अर्थात् :---
 - (क) प्रभारित वास्तविक फीस या 20 रु प्रतिमास इन में से जो भी कम हो, श्रनुक्रोय होगी।
 - (ख) संस्था केन्द्रीय सरकार/राज्य सरकार या संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन द्वारा मान्यनाप्राप्त/ग्रमुमोदित सहायता पाती है।
 - (ग) अन्धे और अन्य विकलागों की दशा में जिस कक्षा में बालक अध्ययन कर रहा है वह सामान्य विद्यालयों में प्राथमिक/माध्यमिक या उच्चतर माध्यमिक के समरूप है।
 - (घ) भूक ग्रौर विधर बालकों की दशा में जिस कक्षा में बालक श्रध्ययन कर रहा है वह केन्द्रीय सरकार/ राज्य सरकार या संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन द्वारा ग्रनुमोदित है।

- (इ) मानसिक रूप मे मंद बालकों की दशा में कोई स्तर विहिंत नहीं किए गए हैं किन्तु प्रतिपूर्ति ग्रिधिक मे श्रिधिक 10 वर्ष तक श्रमुजात की जा मकेगी श्रीर उसके श्रागे के लिए (i) समाधानप्रद प्रति जो संस्था के प्रधान द्वारा प्रमाणित की गयी होगी श्रीर (ii) सामान्य प्रथा के श्रमुसार अन्तराल पर प्रोकृति अनुजात की जा सकेगी।
- (च) जब कभी विद्यार्थी की प्रगति समचित ग्रीचित्य जैसे (i) रूग्णना जोसक्षम चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा प्रमाणित होगी (ii) परिवार में कोई बड़ी दुखद घटना जैमे माता, पिता या संरक्षक की मृत्यु हो जाना या (iii) विद्यार्थी के नियंत्रण से परे कुछ ग्रन्य परिस्थितियों का होना के बिन समाधान प्रद नही है तो बोर्ड को पुनर्विलोकन करने का श्राधिकार न्त्रौर यदि मामले के गुणागुण देखने हुए गेमा करना आवश्यक तो प्रतिपूर्ति रोक दी जाएगी । समाधान प्रदरूप में प्रगति के बारे में जिसका उल्लेख ऊपर उप विनियम 5(iii) (ग) ग्रीर (च) मे किया गया है, समुचित प्रमाण पत्न संस्था के प्रधान से श्चर्धवार्षिक रूप से प्रतिवर्ष जनवरी ग्रीर जुलाई में प्राप्त किए जा सकोंगे।
- (iv) ऐसे मामलों में जहां ग्रध्यापन फीस ग्रग्निम रूप में प्रभारित की जाती है वहां तीन मास से ग्रनिधक ग्रविध के लिए उसके द्वारा किए गए सदाय के नुरन्त पश्चात पत्तन कर्मचारियों को प्रतिपूर्ति निम्नलिखित शर्तों के ग्रधीन रहते हुए श्रनुज्ञात की जाएगी ग्रथांत:—
 - (क) विद्यालय प्राधिकारियों को क्षेत्र के मैक्षिक प्राधिकारियों द्वारा उस प्रविध के लिए जिसके लिए फीस इस प्रकार प्रभारित की गयी हैं, प्राधिक रूप से फीस प्रभारित करने के लिए प्राधिकृत किया गया है।
 - (ख) ब्राहरण और संवितरण ब्रधिकारी यह देखने के समुचित पूर्वाविधानी बरतता है कि कर्मचारी ऐसी सम्पूर्ण ब्रवधि में जिसके लिए संदार की प्रतिपूर्ति पहले ही की जा चुकी है, प्रतिपूर्ति का हकधार बना रहता है।
 - (ग) पिछले बेतन प्रमाणपक्ष के प्ररूप में उसमें यह बताने के लिए अपरिवर्तनीय रूप से एक समुचित खण्ड स्थापित किया जाना चाहिए कि एक कार्यालय से किसी अन्य कार्यालय में स्थानान्तरण की दशा में या सवानिवृत्ति आदि की दशा में सम्बोधित प्रधिकारी की किस मास तक प्रतिपूर्ति की जा चुकी है, और
 - (घ) सम्बन्धित कर्मकारी से निम्नलिखित ग्राधारों पर वचनबन्ध प्राप्त किया जाना चाहिए:—— "मै वचनबन्ध करना हूं कि यदि मेरा बालक जिसके लिए प्रतिपूर्ति का दावा किया गया है ग्रीर जिसका ग्राग्रम

रूप में मदाय किया जा चुका है, विद्यार्थी नहीं रह जाता या किसी अन्य कारण से प्रतिपूर्ति मुझे अनुज्ञेय हो जाती है ता मैं प्रतिपूर्ति की गयी फीस की रकम वापस कर दूंगा।"

- (v) रियायत किसी कर्मचारी के धर्मज बालकों जिसमें स्रोतेले बालक श्रीर ऐसे दलक बालक भी हैं (जहां कर्मचारी की स्वीय विधि में के श्रधीन दलक ग्रहण को मान्यताप्राप्त है) जो कर्मचारी पर पूर्णतः श्राश्रिष्त है, की बाबत ही अनु-जैय होगी।
- (i) किसी बालक की बाबत एक ही कक्षा में दो गैक्षिक वर्ष से श्रधिक के लिए कोई प्रतिपूर्ति श्रनुश्चेय नहीं होगी।
- (ii) जहां किसी बालक को कोई सरकारी या गैर सरकारी छात्रवृत्ति या बोर्ड से कोई छात्र वृत्ति प्राप्त होती है और उसे विद्यालय कि अध्यापन फीस देनी पडती है ऐसे मामलों में जहां छात्रवृत्ति की रकम श्रध्यापन फीस से श्रधिक है वहां कोई प्रतिपूर्ति नहीं की जाएगी ऐसे मामलों में जहां छात्रवृत्ति की रकम श्रध्यापन फीस से कम है, वहां कर्मचारी को श्रनुत्रोंय सीमा तक श्रन्तर श्रनुज्ञान किया जा सकेगा।

टिप्पणः ऐसे मामलों में जहां विद्यार्थी को ग्रांशिक फीम माफी दे जाती है वहा वस्तुतः संदत्त ग्रध्यापन फीस ही प्रति-पूर्ति का भ्राधार होगी।

- (8) प्रतिपूर्ति अध्यापन फीस तक ही सीमित होगी। और उसके अन्तर्गत विशव फीसे जैंसे पुस्तकालय फीस, खेल फीस, पाठ्ययोत्तर कियाकलाप फीस आदि नहीं आएगी उन्हें कर्मचारी को स्वयं वहन करना होगा। किन्तु अध्यापन फीस में ऐसे विशेष के लिए जो नियमित स्कून पाठ्यकम में विषयों के रूप में पढ़ाए जाने हैं, फीम सम्मलित होगी। तदनुसार विज्ञान विषय के लिए प्रभारित फीम की प्रतिपूर्ति की जाएगी और इसी प्रकार संगीत के लिए भी यदि इसे विद्यालय के पाठ्यकम के एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। "प्रवेश फीस" की प्रतिपूर्ति नहीं की जा सकेगी।
- (9) इन वित्तियमों के प्रधीन प्रतिपूर्ति उन बालकों की बाबत प्रनुजेय नहीं होगी जिनके लिए बाल-शिक्षा भता का दावा किया जाना है।
- (10) इन विनियमों के निबन्धनों के खनुसार श्रध्यापन फींस की प्रतिपूर्ति के महे व्यय उसी लेखाणीर्ष को विश्वलनीय होगी जिसका कर्मचारी का वेमन श्रीर भसे विकलित किए जाते हैं ग्रीर पहले से ही खोले गए "बाल शिक्षा भत्ते" के शीर्षक में बुक किए जाएंगे। इन बिनियमों के श्रधीन प्रति-पूर्ति का दावा करने के लिए श्रनुसरण की जाने वाले प्रक्रिया इस विनियम के उपबान्ध I में दी गयी है
- (11) वर्ग 1 श्रीर 2 श्रधिकारियों द्वारा श्रध्यापन फीम की प्रतिपृत्ति का दावा वित्तीय सलाहकार श्रीर मुख्य लेखा श्रिष्टिकारी में किसी प्राधिकार के विमा किए जाएगा।

- (12) अध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति की आयकर से छूट के रूप में नहीं माना जा सकेगा।
- (13) पनन कर्मचारी को अध्यापन फीम की प्रतिपूर्ति के मद्दे रक्तम को मकान किराए की वसूली के प्रयोजन के लिए उपलब्धियों में सम्मिलन नहीं किया जाएगा।

उपायमध -- 1

श्रध्यापन फीम की प्रतिपूर्ति दावा करने के लिए श्रमुमरण की जाने वाली प्रक्रिया

- जब प्रध्यापन फीस का दावा किया जाए तब सम्ब-निधत कर्नवारी उपाबन्ध II में विए गए प्रारुप में जानकारी श्रीर प्रामाणपत्र देगा।
- 2. जहां फीस मासिक ग्राधार पर मदत की जाती है वहां श्रध्यापन फीम की प्रतिपूर्ति का दावा मास में एक बार से श्रधिक बार नहीं किया जाएगा। जहां फीम मासिक रूप में नहीं दी जाती है वह दावा तीन मास में एक बार किया जाएगा दोनों में से किसी भी मामले में श्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति का दावा बकाया के रूप में ही किया जाएगा ग्रौर न कि श्रिप्रम के रूप में किया जाएगा।

टिप्पणः ये दाये पृथक् वेसनबिल/प्ररूपों में किए जाएंगे श्रौर पत्तम कर्मकारी के मासिक वेतन श्रौर भक्तों के माथ नहीं किए जाएंगे।

- 3. श्रारम्भिक दावा करते समय श्रौर बाद में प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के श्रारम्भ में वह विद्यालय के प्राधानाध्यापक का इस बावत प्रमाण पत्र भी प्रस्तुत करेगा कि विद्यालय मान्यताप्राप्त है।
- 4. वर्ग 3 और 4 कर्मचारियों के मामले में धाहरण प्रधिकारी श्रौर वर्ग 1 श्रौर 2 के ममाले में प्राभागीय श्रधिकारी यह सत्यापित करेगा कि दावा की गयो प्रतिपूर्ति विहित शर्तों के श्रनुमार हैं श्रौर विशेष रूप से वह इसे उस क्षेत्र की सरकार द्वारा श्रनुमोदित श्रध्यापन फीम की दर के प्रति निर्देश में मत्यापित करेगा।
- 5. श्राहरण श्रधिकारी/प्रभागीय श्रधिकारी बिलों में यह भी प्रमाणित करेगा कि ऊपर 1 श्रीर 2 में उल्लिखित विधि ष्टियां श्रीर रसीद प्राप्त हो गयी है श्रीर यह कि दाना सत्या- पित कर दिया गया है। जहां प्रभागीय श्रधिकारी श्राहरण श्रधिकारी स्वय दावेदार है वहां वह श्रपने दावे की प्रपत्ने से अगले वरिष्ठ श्रधिकारी से सवीक्षा कराएगा श्रीर श्रीतहस्ताक्षर करवाएगा।
- 6. आहरण श्रधिकारी/प्रभागीय श्रधिकारी या अगले ज्येष्ठ श्रधिकारी को प्रत्येक पत्तन कर्मचारी की बाबन प्राप्त, स्वीकृत /नामंज्र श्रौर प्रतिपूर्ति किए गए दावो का समुचित श्रभिलेख रखना चाहिए श्रौर उन्हें पत्तन कर्मचारी द्वारा दिए गए प्रमाणपत्रों श्रौर जानकारी को, उनके द्वारा किए गए दावों के समर्थन में शक्षीणक प्राधिकारियों की रमीदें

ग्रौर प्रन्थ दस्तात्रेजों, यदि कोई है, के साथ वित्तीय मलाह-कार श्रौर मुख्य लेखा अधिकारी को उपलब्ध कराना चाहिए/ रखा लाने वाले श्रभिनेख उपबन्ध III में दिए गए प्रकल्प में होगा।

उपायन्धः II

प्ररूप

- पिछले वार्व की तारीखः
 प्रतिपूर्ति का दावा किया

 गया था

 गया था

 गया
 - वह भवधि जिससे वर्तमान दावा सम्बंधित है

बालक का विद्यालय जिसमें कक्षा जिसमें वास्तव में संदत्त पढ़ रहा है और नाम पढ रहा है मासिक श्रध्यापन विद्यालय की ग्रव-(रसीदें फीस स्थिति (यह भी संलग्न की जाएं) बताएं कि विद्यालय राजकीय है या सरकारी सहा-यता पाने वाला है)

1 2 3 4

2. 3.

3.

सरकारी छाल- श्रन्य स्रोतों से प्राप्त छाल- दावा की गयी प्रतिपूर्ति वृत्ति की रकम यृत्ति की रकम (श्रेष्ठणक यदि कोई हो ध्यान दें प्रध्यापन फीस प्राधिकारियों द्वारा मनुस्ते भिन्न पदों के लिए मोदित फीस तक ही विनिर्दिष्ट रूप से निश्चित सीमित होगी। छालवृत्ति का उल्लेख करना प्रावश्यक नहीं है।)

| 5 | | 6 | 7 | |
|----|-------------|---|---|--|
| _ | | | | |
| 1. | | | | |
| 2. | | | | |

1. प्रमाणित किया जाता है कि ऊपर वर्णित बालक जिसकी/जिनकी बाबत मध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति का दावा किया गया है, स्तंभ (2) में वर्णित विद्यालय (विद्यालयों) में जो मान्यताप्राप्त विद्यालय है/हैं, भध्ययन कर रहा है/है भीर यह कि प्रत्येक के सामने उपवर्णित भ्रध्यापन फीस वास्तव में दी गयी है।

प्रमाणित किया जाता है कि :-- मेरी पत्नी/मेरे पति पत्तन सेवा में नहीं है ।

मेरे पत्नी/मेरा पति पत्तन सेवा में है श्रीर यह कि जसके द्वारा कोई प्रतिपूर्ति का दावा नहीं किया जाएगा श्रीर यह कि जसका वेतन 1200 रु० प्रतिमास से श्रिधक नहीं है (जिसमें उसके द्वारा लिया गया महंगाई वेतन भी सम्मिलित है)। मेरी पत्नी/मेरा पति पत्तन के बाहर नियोजित नहीं है।

मेरी पत्नी/मेरा पित ' ' ' में नियोजित है श्रीर वह अपने बालकों की बाबत प्रध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति का/की हकदार नहीं है।

- 3. प्रमाणित किया जाता है कि ऊपर वर्णित बालकों में से कोई भी दो वर्ष से ग्रधिक ग्रविध के लिए एक कक्षा में नही पढ़ रहा है।
- 4. प्रमाणित किया जाता है कि ऊपर वर्णित बालकों की बाबत मैंने बाल शिक्षा भता का दावा नहीं किया है भौर नहीं करूंगा। (यदि लागून हो तो काट दें)।

तारीख

कर्मचारी के हस्ताक्षर

ग्रीर पदनाम

टिप्पण: 1. उपाबंध की मद सं० 3 में उल्लिखित प्रमाण-पत्न कर्मचारियों के उन बालकों की बाबत ग्राय-श्यक नहीं हैं जो राजकीय या नगरपालिका विद्यालयों में पढ़ रहे हैं।

> 2. इस विनियम के उपाबंध की मद 3 में निर्दिष्ट प्रमाणपत्न कर्मचारियों के उन बालकों की बाबत ग्रावश्यक नहीं है जो किसी पंचायत समिति या जिला परिषद् द्वारा चालित विद्यालयों में पढ़ रहे हैं।

उपायन्थ III

बालकों की अध्यापन फीस की प्रतिपूर्ति के लिए दावे का रिजस्टर

| कम सं० | नाम | पदनाम | व ह भव धि जिससे दावा सम्बंधित है |
|-------------------|--------------|--|---|
| 1 | 2 | 3 | |
| दावा की गई | धनुज्ञेय रकम | माहरण प्रधिकारी/ कार्यालय के प्रधान/ठीक प्रगले बरिष्ठ प्रधिकारी के तारीख सहित हस्ताक्षर | टिप्पणियां |
| 5 | 6 | 7 | 8 |

[नी॰ इंब्स्यू/पी ई एल-14/80]

अधिस्चना

सा० का० नि० 167(म्र) :--केन्द्रीय सरकार, महा-पत्तन न्यास प्रधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 28 के साथ पठित धारा 126 द्वारा प्रदत्त मस्तियों का प्रयोग करते हुए, निम्नलिखित विनियम बनार्ता है, श्रर्थात् :--

- संक्षिप्त नाम ग्रौर प्रारंभ :--(1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम नव मंगलौर पसन न्यास कर्मचारी (ग्रंश-वायी भविष्य निधि) विनियम, 1980 है।
 - (2) ये 1 अप्रैल, 1980 को प्रवृश्त होंगे।
- 2. परिभाषाए :--इन विनियमों में जब तक कि संदर्भ से भ्रन्यथा भ्रपेक्षित न हो, ---
 - (क) "लेखा भ्रधिकारी" से बोर्ड का विस्तीय सलाह-कार भौर मुख्य लेखा भ्रधिकारी भ्रभिनेत हैं।
 - (ख) ''बोई'', ''मध्यक्ष'' श्रीर "उपाध्यक्ष'' का वहीं भर्ष होगा जो महापत्तन न्यास मधिनियम, 1963 (1963 का 38) में उनका है।
 - (ग) "कर्मचारी" से बोर्ड का कर्मचारी प्रभिन्नेत है।
 - (घ) "वैतन" से मूल नियमों या बोर्ड द्वारा बनाए गए विनियमों, यदि कोई हैं, में यथापरिभाषित वैतन प्रभिन्नेत हैं, इनमें से जो कोई भी कर्मचारी को लागू हों।
 - (ङ) (i) "उपलब्धियो" से मूल नियम या बोर्ड द्वारा बनाए गए विनियमों में यदि कोई है, यथा-परिभाषित वेतन, छुट्टी वेतन, जीवन निर्वाह भत्ता श्रिभित्रंत है और इसके ग्रंतर्गत मंहगाई वेतन, महगाई भता, श्रतिरिक्त मंहगाई भता, विशेष मंहगाई भता, नगर प्रतिकर भता ग्रौर ग्रन्तरिम राहत है;
 - (ii) "उपलब्धियों" में ऊपर उत्शिखित पारिश्रमिक को छोड़कर सभी प्रकार के पारिश्रमिक सम्मिलत नहीं होंगे प्रयांत् मकान किराया भता, प्रतिकाल भता, गीर श्रतिकाल नार्य, राक्षि ग्रधिभार श्रान्तरायिक कार्य के लिए मनुकात भत्ता, रिववार, प्रवकाश दिन ग्रीर छुट्टी के दिन किए गए कार्य के लिए सामान्य मजदूरी के ग्रलाक्षा प्रतिरिक्त पारिश्रमिक, तैरते जलयान के प्रवेशण की फीस, मानदेय, सबारी राशन भता ग्रीर प्रोत्साहन बोनस की प्रकृति का कोई श्रन्य संवाय जो कार्य की उत्पादकता से जुड़ा न हो, मुदुम्ब भत्ता, बालक शिक्षा भत्ता, समृद्ध यात्रा भत्ता ग्रादि के रूप में किया गया कोई ग्रन्य संवाय,
 - (iii) भावानुपाती स्कीम के मधीन माने वाले कर्म-पारियों की बाबत "उपलब्धियों" के मंतर्गत उनके वास्त्रियक उपार्जन जिसके मंतर्गत भावानुपाती दर पर उपार्जन, प्रोत्साहन उपार्जन/प्रीमियम संदाय, परिणाम बारा संदाय स्कीम के स्थीन संदाय

भिक्रिय समय के लिए मजदूरी भौर हाजिरी रकम संदाय यदि कोई हैं जो बोर्ड द्वारा समय-समय पर नियत किए जाएं, किन्तु इसके श्रंतर्गत निम्न-लिखित नहीं होंगे :---

- (क) मात्रानुपाती दर पर उपार्जन में सम्मिलिक मकान किराये भन्ने के मुद्दे समस्त राणि,
- (ख) ऊपर (ii) मे निर्दिष्ट ग्रन्य भत्ते।
- (iv) परिणाम द्वारा संदाय स्कीम के प्रधीन प्राने वाले कर्मचारियों की बाबत "उपलब्धियों" के श्रंतर्गत उनके वास्तविक उपार्जन जिसके श्रंतर्गत प्रोत्साहन उपार्जन, प्रीमियम संवाय श्रीर परिणाम द्वारा संदाय स्कीम के श्रधीन किए गए कोई श्रन्य संदाय, यदि कोई है जो बोई द्वारा समय-समय पर नियत किए जाएं किन्तु इसके श्रन्तर्गत निम्न- लिखित नहीं होंगे:—
 - (क) मात्रानुपाती दर पर उपार्जन में सम्मिलित मकान किराया भत्ते के भद्दे समस्त राणि, और
 - (ख) ऊपर (ii) में निर्दिष्ट ग्रन्य भत्ते ।
- इस विनियम में मात्रानुपाती दर पर उपार्जन/प्रोत्साहन उपार्जन स्नादि पद जहां कही भी स्नाते हैं उस समय मे लागू/प्रभावी होंगे जब पत्तन भौर डाक विनियम पत्तन में प्रवृत्त होते हैं।
- (च) "कुटुम्ब" से अभिप्रेत है, --
 - (1) पुरुष प्रभिदाता की दशा में, श्रभिदाता की पत्नी या पत्नियां और बालक तथा प्रभि-दाता के किसी मृतक पुत्र की विधवा या विधवाएं और बालक :

परन्तु यदि ग्रिभदाता यह साबित कर देता है कि उसकी पत्नी उससे न्यायिक रूप से पृथक हो गई है या वह उस समुदाय की जिसकी कि वह है, रूढ़ि जन्य विधि के ग्रधीन उससे भरण पोषण प्राप्त करने की हकवार नहीं रह गई है, तो उसे तब से जब तक कि ग्रभिदाता लेखा ग्रधिकारी को बाद में लिखित रूप में यह सूचित नहीं कर देता है कि उसे उसी रूप में माना जाता रहेगा, यह समझा जाएगा कि वह उन मामलों में जिनका सम्बंध इन विनियमो से है, ग्रभिदाता के भुटुम्ब का मदस्य नहीं रह गई है।

(2) स्त्री भाभिदाता की दशा में श्राभिदाता का पति ग्रोर बालक तथा श्रभिदाता के किसी मृतक पुत्र की विधया या विधवाएं ग्रोर बालक:

परन्तु यदि कोई ग्राभिदाता लेखा ग्रधिकारी को लिखित रूप में सूचना देकर अपने पति की अपने कुटुम्ब से ग्रपबर्जित करने की ग्रपनी उच्छा व्यक्त करती है तो पित को जब तक कि श्रिभि-दाता बाद में वह सूचना लिखित रूप में रह नहीं कर देनी है यह समझा जाएगा कि वह उन मामलों में जिनका सम्बंध इन नियमों से हैं श्रिभि-दाता के कुटुम्ब का सदस्य नहीं रह गया है:

टिप्पण: "बालक" मे धमंज बालक श्रभिप्रेत है श्रीर इसके श्रंतर्गत जहां दत्तकग्रहण श्रभिदाता का शामित करने वाली स्वीय विधि द्वारा मान्यता-प्राप्त है, दत्तक बालक भी है।

- (छ) "निधि" से नव मंगलौर पत्तन न्यास कर्मचारी भंगदायी भविष्य निधि भ्रभिप्रेत है ,
- (ज) "छुट्टी" से बोर्ड द्वारा बनाए गए विनियमों के प्रधीन भ्रनुज्ञात की गई किसी भी प्रकार की छुट्टी भ्रभिप्रेत हैं ;
- (झ) "सेवा" से वह निरन्तर सेवा श्रभिप्रेत है, जिसके दौरान श्रभिदाता किसी ऐसे स्थायी पद पर ग्रपना धारणाधिकार या निलम्बित धारणाधिकार रखता है जिसका वोर्ड के राजस्व से सदाय किया जाता है किन्तु इसके श्रंतर्गत निम्नलिखित श्रवधिया भी हैं श्रथित :—
- (क) स्थानापन्न या भ्रस्थायी सेवा यदि उसके बाद की मेवा व्यवधान रहित स्थायी सेवा है, श्रार
- (स्त्र) जिसे बोर्ड साधारण या विशेष ग्रादेश द्वारा सेवा के रूप में गिने जाने की ग्रनुज्ञा दे।
- (ग) ''वर्ष'' से विस्त वर्ष ग्रभिप्रेत है।
- तिधि का गठन श्रीर प्रबंध—-िनिधि का प्रशासन बोर्ड करेगा।
 - 4. लागू होना---
 - (1) ये विनियम निम्नलिखित को लागू होंगै,—
 - (क) बोर्ड का ऐसा प्रत्येक गैर पेंशन भोगी कर्मचारी जो इन विनियमों के प्रारंभ मे पूर्व बोर्ड द्वारा प्रजासित ग्रंणदायी भविष्य निधि में ग्रिभिदाय कर रहा था, ग्रौर
 - (ख) कोई ऐसा कर्मचारी जो केन्द्रीय या राज्य सरकार या सरकार के स्वामित्वाधीन और नियंत्रणाधीन किसी निगमित निकाय से स्थानान्तरण पर ग्राया है ग्रीर जा उस सरकार या निकाय की ग्रंणधायी भविष्य निधि में ग्रभिदाय करता रहा है । इसके मामले में इस सरकार या निगमित निकाय की जहां से वह स्थानान्तरण पर ग्राया है निधि में उसके खाते का ग्रांतणिय ग्रध्यक्ष या विभागाध्यक्ष की मंजूरी से ग्रंतरित करके निधि में उसके खाते में जमा कर विया जाएगा।
- (2) बोर्ड अपने विचेक में किसी अन्य कर्मचारी को निधि में संदाय करने के लिए अनुजात कर सकता है।

5. नामनिर्देशन—(1) निधि में सम्मिलित होते समय ग्रिभदाता, लेखा अधिकारी के पास एक नामनिर्देशन पत्न भेजेगा वह रकम संदेय होने से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाने की दशा में या उस दशा में जब रकम संदेय तो है किन्तु दी नहीं गई है एक या अधिक व्यक्तियों को वह रकम प्राप्त करने का ग्रिधकार प्रदान करेगा जो निधि में ग्रिभदाता के नाम जमा हो:

परन्तु नामनिर्देशन करते समय यदि श्रभिदाता का कांई कुटुम्ब है तो नामनिर्देशन उसके कुटुम्ब के सदस्य या सदस्यों से भिन्न किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के पक्ष में नहीं किया जाएगा:---

परन्तु यह श्रौर भी कि श्रभिदाता द्वारा ऐसी किसी श्रन्य भविष्य निधि के सम्बंध में जिसमें वह निधि में सम्मिलित होने के पूर्व श्रभिदाय करता था किया गया नामनिर्देशन, यदि ऐसी अन्य निधि में उसके नाम जमा रकमें इस निधि को श्रंनरित कर दी गई हैं तो जब तक वह इस विनियम के श्रनुसार कोई नामनिर्देशन नहीं करता है, इन विनियमों के श्रनुसार सम्यक रूप में किया गया नामनिर्देशन समझा जाएगा।

- (2) यदि कोई अभिदाता उप विनियम (1) के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों का नामनिर्देशन करता है तो वह प्रत्येक नाम निर्देशिती को संदेय रकम या अंश उस नामनिर्देशन पत्र में इस रीति से विनिर्दिष्ट करेगा कि खाते में किसी भी समय उसके नाम जमा सम्पूर्ण रकम उसके अंतर्गत आ जाए।
- (3) प्रत्येक नामनिर्देशन इन विनियमो से संलग्न प्ररूपों मे मे किसी एक प्ररूप में होगा जो परिस्थितियों में उपयुक्त है।
- (4) ग्रिभिदाता लेखा ग्रिधिकारी को लिखिल रूप में सूचना भेजकर किसी भी ममय नामनिर्देशन रह कर सकता है। ग्रिभिदाता ऐसी मूचना के साथ या ग्रन्ग से एक ऐसा नाम-निर्देशन भेजेंगा जो इन विनियमों के उपबंधों के ग्रनुसार किया गया है।
- (5) श्रभिदाता श्रपने नामनिर्देशन में निम्नलिखित के लिए व्यवस्था कर सकेगा --
 - (क) किसी विनिर्दिष्ट नामनिर्देशिती के सम्बंध में यह कि अभिदाना से पूर्व उसकी मृत्यु हो जाने पर उस नाम निर्देशिती की दिया गया प्रधिकार ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों की संक्रांत हो जाएगा जो नाम-निर्देशिन में विनिर्दिष्ट किए जाएं परन्तु यदि अभिदाना के कुटुम्ब के अन्य सदस्य हैं तो उपर्युक्त अन्य व्यक्ति उसके कुटुम्ब का/के ही ऐसे अन्य सदस्य होगा/होंगे। जहा अभिदाना इस खंड के अधीन एक से अधिक व्यक्तियों को ऐसा अधिकार प्रदान करना है वहा वह ऐसे व्यक्तियों में से प्रस्के को संदाय रक्षम या अंश ऐसी रीति से विनिर्दिष्ट करेगा कि उसके अंतर्गत वह सम्पूर्ण रक्षम आ जाए जो किसी भी समय उसके नाम जमा है।

(ख) यह कि नामिन्दिंगन में विनिर्दिष्ट किसी ग्राक-स्मिकता के घटित होने पर नामिन्दिंगन ग्रिविध-मान्य हो जाएगा:

> परन्तु यदि नामनिर्देशन करने समय प्रिभ-दाना का कोई कुटुम्ब नहीं है तो वह नामनिर्देशन में इस बान का उपबंध करेगा कि यदि बाद मे उसका कुटुम्ब बस जाता है तो नामनिर्देशन प्रविधि-मान्य हो जाएगा:

परन्तु यह और भी कि यदि नामनिर्देशन करने समय अभिदाता के कुटुम्ब में केवल एक ही सदस्य है तो वह नामनिर्देशन में यह उपबंध करगा कि खड़ (क) के अधीन अनुकर्ता नामनिर्देशिती को प्रदन्त अधि-कार, बाद में उसके कुटुम्ब में कोई अन्य सदस्य आ जाने की दशा में अविधिमान्य हो जाएगा।

- (6) ऐसे नामिनर्देशिनी की मृत्यू के तुरन्त बाद जिसकी बाबत उपविनियम (5) के खंड (क) के उपबंध के प्रनुमार नामिनर्देशन में कोई व्यवस्था नहीं की गई है या ऐसी कोई घटना घट जाने पर जिसके कारण उपविनियम (5) के खंड (ख) या उसके परन्पुक के अनुसरण में वह नामिनर्देशन प्रविधिमान्य हो जाता है, श्रिभवाना नामिनर्देशन को रद्द करने हुए लेखा श्रिधकारी को लिखित रूप में एक मूचना भेजेंगा और उसके माथ इस विनियम के उपबंधों के अनुसार एक नया नामिनर्देशन पत्र भेजेंगा।
- (7) श्रभिदाता द्वारा किया गया प्रस्पेक नामनिर्देशन श्रौर उसे रह किए जाने की प्रस्पेक सूचना उस सीमा तक जिम मीमा तक वह विधिमान्य है उस तारीख को प्रभावी होगा जिसको वह लेखा श्रधिकारी को प्राप्त होती है।

टिप्पण-- इस विनियम में जब तक कि संदर्भ से श्रन्यथा श्रेपेक्षित न हो "ब्यक्ति" या "ब्यक्तियों" के श्रंतर्गत कोई कम्पनी या संगम या व्यक्ति निकाय है चाहे वह निगमित हो या नहीं।

- (6) भ्राभिदाता के लेखें:—प्रत्येक श्रभिदाता के नाम एक खाना खोला जाएगा जिसमें निम्नलिखित दर्शित किए जाएंगे ---
 - (i) उसके श्रभिदाय,
 - (ii) बोर्ड द्वारा विनियम II के प्रधीन उसके खाते में किए गए श्रंगदान,
 - (iii) बोर्ड द्वारा ध्रपने विनियमों या इस विषय पर किसी ध्रन्य भ्रादेश के श्रधीन भविष्य निधि में किया गया कोई विणेष भ्रंणदान,
 - (iv) प्रभिदायों पर विनियम 12 द्वारा यथा उपबंधित ब्याज.
 - (v) ग्रंशदानों पर विनियम 12 द्वारा यथा उपबंधित न्याज.

- (vi) निधि में से लिए गए उधार श्रीर किहाली गई रक्मे
- (7) ग्रिभिदाय की णार्ने ग्रीर दरे:—(1)प्रत्येक ग्रिभि-दाता, जब वह इयूटी पर है या ग्रन्थव सेवा पर है किन्तु निलम्बन की ग्रविध के दौरान नहीं, निधि में प्रतिमास ग्रिभि-दाय, करेगा

परन्तु निलम्बन के अधीन व्यतीन की गई अवधि के पश्चान् पुन: स्थापन पर अभिदाना का उम अवधि के लिए अनुजेय अभिदायों के बकाया की अधिकतम रकम से अनिधिक किमी रकम का एकमुण्य या किण्तों में सदाय करने के विकल्प की अनुजा दी जाएगी।

- (2) कोई अभिदाता, अपने विकल्प पर ऐसी छुट्टी के दौरान अभिदाय नहीं करेगा जिसमें उसे कोई छुट्टी बेतन नहीं प्राप्त होता या जिसमें उसे आधे बेतन पर आधे श्रीमत बेतन के बराबर या उससे कम छुट्टी बेतन प्राप्त होता है। वह अस्त्रीकृत छुट्टी पर होते हुए अपने विकल्प पर प्रिश्चाय कर सकता।
- (3) प्रभिद्याता उत्पर, उपविनियम (2) में निर्दिष्ट छुट्टी के दौरान प्रभिद्याय न करने के प्रपने चयन को निम्न-लिखिन रीति से सूचित करेगा, ग्रर्थात् :—
 - (क) यदि वह ऐसा प्रधिकारी है जो अपना बेतन बिल स्वयं लिखता है, तो छुड्डी पर जाने के पश्चात् लिखे गए अपने प्रथम बेतन बिल में श्रमिदायों महे कोई भी कटौती न करके;
 - (ख) यदि वह ऐसा श्रिधकारी नहीं है जो श्रपना वेतन बिल स्वयं लिखता है तो छुट्टी पर जाने से पूर्व कार्यालय के प्रधान को लिखित प्रज्ञापना भेज कर/ सम्यक् श्रौर समय पर प्रज्ञापना देने में श्रसफलता पर यह समझा जाएगा कि उसने श्रिषदाय करने का चयन किया है। इस उपविनियम के श्रधीन प्रज्ञापित श्रिभदाता का विकल्प श्रीतम होगा।
- (4) वह श्रीमदाता जिसने विनियम 21 के श्रधीन श्रीभदाय की रकम श्रीर उस पर ब्याज निकाल लिया है ऐसी निकासी के पश्चात् निधि में तब तक श्रीभदाय नहीं करेगा जब तक कि वह ड्यूटी पर वापस नहीं श्रा जाता है।
- 8. अभिवाय की दरें:—श्रभिदाय की रकम निम्नलिखित गतों के अधीन रहते हुए स्वयं अभिदाता द्वारा नियत की जाएगी, श्रथात्:—
 - (1) ग्रिभिदाय की रकम निम्नलिखित गर्तों के प्रधीन रहते हुए स्वयं प्रभिदाता द्वारा नियत की जाएगी, श्रयति:—-
 - (क) इसे पूरे-पूरे रुपयों में व्यक्त किया जाएगा;
 - (ख) वह इस प्रकार व्यक्त की गई कोई रकम हो सकती है जो उसकी उपलब्धियों के साढ़े भाठ प्रतिशत से कम नही होगी भौर उसकी उपलब्धियों से भ्रधिक नही होगी।

- (2) उप विनियम (1) के प्रयोजनो के लिए ग्र**भिदा**ता की उपलब्धिया:---
 - (क) ऐसे प्रभिदाता की दशा में जो पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को बोर्ड की सेवा में था वे उपलब्धियां होगी जिनके लिए वह उस तारीख को हकदार था: परन्तु:
 - (i) यदि अभिवाता उक्त नारीख को छुट्टी पर या और उसने ऐसी छुट्टी के दौरान अभि--दाय न करने का चयन किया था या उक्त तारीख को निलंबित था तो उसकी उप-लब्धिया वे उपलब्धियां होंगी जिसके लिए यह ड्यूटी पर वापस आने के पण्चात् पहले दिन हकदार था;
 - (ii) यदि श्रभिदाता उक्त तारीख को भारत से बाहर प्रतिनियुक्ति पर था या उक्त तारीख को खुट्टी पर था श्रौर तब से छुट्टी पर है श्रौर उसने ऐसी छुट्टी के दौरान श्रीभाशय करने का जयन किया है तो उसकी उपनिध्यां वे उपलब्धियां होंगी जिनके लिए वह तब हकदार होता जब वह भारत में इय्टी पर रहता;
 - (iii) यदि स्रभिदाता उक्त तारीख के पश्चात्-वर्ती दिन को प्रथम बार निधि में सम्मिलित हुम्रा था तो उसकी उपलब्धियां वे उप-लब्धियां होंगी जिसके लिए यह ऐसी पण्चात्-वर्ती तारीख को हकदार था;
 - (ख) ऐसे प्रभिदाता की दशा में जी पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को बोर्ड की सेवा में नहीं था वे उपलब्धियां होंगी जिनके लिए वह सेवा के प्रथम दिन हकदार था या यदि वह प्रपनी सेवा के प्रथम दिन के पण्चातवर्ती किसी तारीख को पहली बार निधि में सम्मिलित हुन्ना है तो वे उपलब्धियां होंगी जिनके लिए वह ऐसी पण्चातवर्ती तारीख को हकदारथा:

परन्तु यदि ग्रभिदाता की उपलब्धियां ऐसी हैं जो घटती बढ़ती रहती हैं तो उसकी गणना ऐसी रीति मे की जाएगी जो बोर्ड निर्दिष्ट करें।

- (3) म्राभिदाता प्रतिवर्ष भ्रपने मासिक मिभिदाय की रकम निश्चित किए जाने की प्रज्ञापना निम्नलिखित रीति से देगा:---
 - (क) यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को इ्यूटी पर था तो ऐसी कटौती द्वारा जो वह उस मास के अपने वेतन बिल में से इस निमित्त करता है;
 - (ख) यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को छुट्टी पर था भौर उसने ऐसी छुट्टी के दौरान भ्रभिदाय न करने का चयन किया था या वह उस तारीख को निसंभित था तो एमी कटौती द्वारा जो वह

- इ्यूटी पर वापस श्राने के पश्चात अपने प्रथम वेतन बिल में ने उस निमित्त करता है;
- (ग) यदि वह वर्ष के दौरान पहली बार बोर्ड की सेवा में भाया है या पहली बार निधि में सम्मिलित होता है तो ऐसी कटौती द्वारा जो वह उस मास के जिसके वौरान वह निधि में सम्मिलित होता है ग्रपने बेतन बिल में से इस निमित्त करता है;
- (म) यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को छुट्टी पर था बीर छुट्टी पर बना रहता है बीर उसने ऐसी छुट्टी के दौरान ब्रिश्चिय करने का चयन किया है तो ऐसी कटौती द्वारा जो वह उस मास के ब्रापने बेतन बिल में से इस निमित्त करता है;
- (ङ) यदि वह पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च को धम्यत सेवा में था तो उस रकम द्वारा जो उसने चालू वर्ष के धाप्रैल मास के धिभदाय मव्धे लेखा विभाग में जमा की है;
- (च) यदि उसकी उपलब्धियां उपविनियम (2) के परन्तुक में निद्धिट प्रकार की है तो ऐसी रीति से जो बोर्ड निर्दिष्ट करें।
- (4) इस प्रकार नियत अभिदाय की रकम:---
- (क) वर्ष के दौरान किसी भी समय एक बार घटाई जा सकेगी:
- (ख) वर्ष के दौरान दो बार बढ़ाई जा सकेगी; बा
- (ग) पूर्वोक्त रीति से घटाई या बढ़ाई जा सकेगी:

परन्तु यदि ग्रभिदाय की रकम इस प्रकार घटाई जाती है तो वह उपविनियम (1) द्वारा विहित न्यूनतम से कम नहीं होंगी:

परन्तु यह ग्रौर भी कि यदि भिषाताता कलैण्डर मास के एक भाग में वेतन रहित छुट्टी या भर्धवेतन या भर्ध श्रौसत वेतन पर छुट्टी पर है ग्रौर यदि उसने ऐसी छुट्टी के दौरान भिषाय न करने का चयन किया है तो ऐसे संवेय श्रीभदाय की रकम इ्यूटी पर विताए गए दिनों की संख्या के जिसमें ऊपर निर्दिष्ट प्रकार की छुट्टी से भिन्न छुट्टी यदि कोई हो, सम्मिलित है के भनुपात में होगी।

- 9. ग्रन्यत्न सेवा के लिए ग्रन्तरण या भारत से बाहर प्रतिनियुक्ति :—जब ग्रिभिदाता को ग्रन्यत्न सेवा के लिए ग्रन्तरित किया जाता है या भारत से बाहर प्रतिनियुक्ति पर भेजा जाता है तब वह निधि के विनियमों के ग्रधीन उसी रीति से बना रहेगा मानो उसे इस प्रकार श्रंतरित या प्रतिनियुक्ति पर भेजा ही नहीं गया है।
 - 10. भ्रभिदायों की वसूली :----
- (1) जब उपलिध्धियां भारत में ली जाती है तब उन उपलिध्धियों मध्य प्रभिदायों की भीर लिए गए धिप्रिमों की बसुली ऐसी उपलिध्ध्यों में से ही की जाएंगी।

(2) जब उपलब्धिया किसी मन्य सोत से ली जाती है तब स्रभिदाता पवनी देय रक्षमे पतिमास लेखा स्रधिकारी का भेजेगा

परन्तु राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार या सरकार के स्वामित्वाधीन या नियत्वणाधीन किसी निर्मामन निकास में प्रतिनियुक्त प्रभिद्यानाओं के मामले में श्रीभदाय ऐसे निकास द्वारा वसूल फिए जाएंगे और लेखा श्रीधकारी को भेजे जाएंगे।

- (3) जब कोई श्रभिदाता किसी वर्ष किसी मास या किन्ही माना के वौरान निधि में सदेय कुल रकम का श्रभिदाय करने में या उसमें व्यक्तिकम करना है तो उसकी वसूली श्रभिदाता की उपलिध्यों में से किश्तों में या श्रन्थथा ऐसी रीति में की जाएगी जो विनियम 13 के उपविनियम (2) के श्रधीन श्रपेक्षित विशेष कारणों में श्रियम स्वीकृत करने के लिए सक्षम श्राधिकारी निर्दिष्ट करे।
- 11. बोर्ड द्वारा अणदान:--(1) बोर्ड प्रतिवर्ष 31 मार्च से प्रत्येक अभिदाता के खाते में अंगदान करेगा:

परन्तु यदि कोई श्रिभिदाता वर्ष के दौरान सेवा छोड देता है या उसकी मृत्यु हो जाती है तो अंशदान पूर्वगामी वर्ष की समाप्ति और सेवा छाड़ने या मृत्यु हो जाने के बीच की अविध के लिए उसके खाते मे जमा किए आएंगे:

परन्तु यह आँर भी कि ऐसी किसी अविधि के लिए जिसके लिए अभिदाता को नियमों के अधीन निधि में अभिदाय न करने की अनुज्ञा दी गई है या वह निधि में अभिदाय नहीं करता है, कोई अंगदान संदेय नहीं होगा।

(2) अणदान, यथास्थिति उस वर्ष या उस श्रवधि के दौरान इयूटी पर ली गई अभिदाता की उपलब्धियो का 8 के प्रतिशत होगा या ऐसी दर पर होगा जो बोर्ड सरकार के अनुमोदन से समय-समय पर निकालें गए साधारण या विशेष श्रादेश द्वारा विहिन करें

परन्तु यदि श्रभिदत्त रक्षम श्रन्वेक्षा मे या श्रन्यथा विनियम 8 के उपिविनियम (1) के श्रधीन श्रभिदाता द्वारा मंदेय त्यूनतम श्रभिदाय में कम है श्रौर यदि जितना श्रभिदाय कम रह गया है वह श्रौर उस पर श्रोद्भूत ब्याज श्रभिदाता द्वारा ऐसे ममय के भीतर नही दे विधा जाता है जो विनियम 13 के उप विनियम (2) के श्रधीन श्रपेक्षित विशेष कारणों में श्रियम स्वीकृत करने के लिए सक्षम प्राधिकारी विनिर्दिष्ट करने तो, बोई ज्ञारा मंदेय श्रंणवान जब नक कि बोई किसी विशेष मामले में श्रन्यथा निदेश न दं श्रभिदाता द्वारा बस्तुत: दी गई रक्षम या बोई द्वारा मामान्यत: सदेय रक्षम के, इनमें में जो भी कम हो बराबर होगा।

(3) यदि कोई अभिदाता भारत में बाहर प्रतिनियुक्ति पर है तो वे उपलब्धियां जो वह तब लेता जब वह भारत में इयूटी पर होता इम विनियम के प्रयोजनों के लिए इयूटी पर ली गई उपलिधियां मानी आएंगी!

- (अ) परि कोर्न अभिवाता उ्यूटो के धौरान अभिराय का चयन करता है ता उसका छुट्टी बेतन इस विनियम के प्रयोजनों के लिए ड्यूटी पर ली गई उपलब्धिया समझा जाएगा ।
- (६) यदि कोई प्रभिक्षाता निलाबा की कियो प्रविधि की बाबन प्रभिष्टाया की उक्षाण से सदाय हरने देत चयन करता है ता उपलब्धिया में उपरत्वियों का बह भाग जो पुनः स्थापना पर उस श्रविध के लिए श्रमुकात किया जाए इस विनियम से प्रमानन के लिए श्रुटी पर ली गई उपलब्धिया समझा अर्गमा।
- (५) अस्थव सेवा की किया अवधि की बाबत सदेय किसी प्रभिदाय की रकम जब तक कि वह अस्पत रियोजक से बसूल ने की गई हो बोई द्वारा अभिदाना से बसूल की जाएगी।
- (7) सदेय अंशदान की रकम की निकटनम रुपए ने (पनास पैसे की अगला रुपसा गिना जाएगा) पूर्णीकित किया नगरगा।
- 12. व्याज (1) वोई निधि में किसी प्रभिदाता के खाने में ऐसी दर पर ब्याज जमा करेगा जो बोई ढ़ारा प्रति दर्ग प्रमाणित की जाए जो केन्द्रीय सरकार ढ़ारा अपने कर्मधारियों की माधारण भविष्य निधि या ग्रंणदायी भविष्य निधि के श्रभिदायों पर संदेय क्याज की विहित दरों में ग्राधिक नहीं होगी।
- (2) ब्याज प्रतिवर्ष 31 मार्च से निम्नलिखिन रीति में जमा किया जाएगा, प्रयीत्:—
 - (i) पूर्ववर्ती वर्ष की 31 मार्च को स्रिमदाता के नाम जमा रकम में से चालू वर्ष के दौरान निकाली गई रकमों को घटा कर बची शेष रकम पर बारह मास का ब्याज :
 - (ii) चाल् वर्ष के दौरान निकाली गई रक्तमों पर चाल् वर्भ की गहली अप्रैल में लेकर उस माम के जिसमे रक्ष निकाली गई थी पूर्ववर्ती मास के अन्तिम दिन तक का ब्याज;
 - (iii) पूर्वगामी वर्ष की 31 मार्च के पश्चात श्रिभिदाता के खात में जमा सभी रकमी पर जमा की तारीख से लेकर चाल वर्ष की 31 मार्च तक का क्याज;
 - (iv) ब्याज की कुल रक्तम विनियम 11 के उप विनियम (7) में उपबन्धित रीति में निकटतम रुपए में पूर्णांकित की जाएगी:

परन्तु जब किसी स्रिभदाता के नाम जमा रक्षम संदेय हो गई है तो उम पर ब्याज इस उप विनियम के प्रधीन यथास्थिति, केवल चालू वर्ष के प्रारंभ मे या जमा की तारीख से लेकर उस तारीख तक की ग्रवधि के लिए जमा किया जाएगा जिसको स्रिभदाना के नाम जमा रक्षम संदेय हुई है। (3) इस विनिधम के प्रयोजन के लिए, जमा की तारीख उपलब्धियों में में बसूली के मामले मे, उस माम का प्रथम दिन मानी जाएगी जिसमें वे बसूल की जाती है और श्रिभदाता इारा भेजी गई रकमों के मामले में उस माम का प्रथम दिन मानी जाएगी जिसमें वे प्राप्त हुई है, यदि लेखा श्रिधकारी ने उन्हें उस माम के पाचवें दिन के पूर्व प्राप्त किया है या यदि उस माम के पाचवें दिन को या उसके पश्चात् प्राप्त किया है तो अगले उत्तरवर्ती मामका प्रथम दिन मानी जाएगी:

परन्तृ यदि किसी ग्रिभिदाता का वेतन या छुट्टी बेतन या भतों को लेने में विलम्ब हुन्ना है ग्रौर परिणामतः निधि मद्धे उसके ग्रिभिदाय की वसूली में विलम्ब हुन्ना है तो ऐसे ग्रिभिदायों पर ब्याज उस मास से संदेय होगा जिसमें ग्रिभिदाना का वेतन या छुट्टी वेतन देय हो गया था भने ही वस्तुतः वह किसी भी रूप में लिया गया था:

परन्तु यह श्रीर भी कि विनियम 10 के उप विनियम (2) के परन्तुक के श्रनुसार भेजी गई रकम के मामले में जमा की तारीख माम का प्रथम दिन समझी जाएगी यदि वह सेखा श्रिधिकारी को उस माम के पन्द्रहवे दिन से पूर्व श्राप्त होती है:

परन्तु यह और कि जहा किसी मास की उपलब्धिया उसी मास के श्रांतिक कार्य दिवस को ली जाती है श्रोर मिवतरित की जाती है वहां जमा की तारीख उसके श्रभिदायों की बसूली के मामले में उत्तरवर्ती मास का प्रथम दिन मानी जाएगी।

(4) विनियम 24 के अधीन सदत्त की जाने वाली किसी रकम के अतिरिक्त उस पर ब्याज उस मास के जिसमें संदाय किया जाता है ठीक पूर्वगामी मास की समाप्ति तक या उस मास के पश्चात् जिसमें यह रकम संदेय हो गई थी छठे मास की समाप्ति तक इसमें से जो भी अवधि कम हो, के लिए उस व्यक्ति को संदेय होगी जिसे ऐसी रकम संदत्त की जानी है:

परन्तु कोई भी क्याज उस तारीख के बाद की जिसे लेखा प्रधिकारी ने उस व्यक्ति (या उसके प्रभिक्ती) को ऐसी तारीख के रूप में प्रजापित किया है जिस तारीख को वह नकद संदाय करने के लिए तैयार है या यदि वह चेक सं संदाय करना है तो उस तारीख के बाद की, जिसको उस व्यक्ति के नाम का चैक डाक द्वारा भेजा जाता है, किसी अवधि के लिए संदन्त नहीं किया जाएगा:

परन्तु यह और भी कि जहां सरकार के स्वामित्वाधीन या उसके नियत्नण में किसी निगमित निकाय में प्रतिनियुक्त अभिदाता आगे जल कर ऐसे निगमित निकाय में किसी भूतलक्षी तारीख से आमेलित कर लिया जाता है, वहा अभिदाता के निधि संग्रहों पर ज्याज की गणना करने के प्रयोजनों के लिए आमेलन की वावत आदेण जारी करने की तारीख वह समझी जाएगी जिस तारीख को अभिदाता के खाते में अमा रकम संदेय हो जाती है तथाणि यह इस गर्न

के ग्रधीन कि ग्रामेलन की तारीख में ग्रारम्भ हो कर ग्रीर श्रामेलन श्रादेश जारी होने की तारीख को समाप्त होने वाली श्रवधि के बीच श्रमिदाय के रूप में वस्ल की गई रकम को केवल इस विनियम के ग्रधीन ब्याज लगाने के प्रयोजन के लिए ही निधि में श्रमिदाय समझा जाएगा।

- (5) यदि ग्रिभिदाता लेखा ग्रिधकारी को यह सूचन। देता है कि वह ब्याज नहीं लेना चाहता है, तो ब्याज उसके खाते में नहीं जमा किया जाएगा किन्तु यदि वह बाद में ब्याज की माग करता है तो उमें उम वर्ष की जिसमें वह मांग करता है, पहली ग्रिप्रैल में जमा किया जाएगा।
- (6) ऐसी रकमों पर ब्याज जो विनियम 20 या विनियम 21 के अधीन निधि में अभिदाना के नाम फिर से जमा कर दी जाती हैं ऐसी दर से जो इस विनियम के उप विनियम (i) के अधीन विहिन की जाएं और जहां तक सम्भव हो इस विनियम में विहित रीति से संगणित किया जाएगा।

टिप्पण:—छह माम की अवधि के आगे एक वर्ष की अवधि तक के निधि प्रतिशेष पर ब्याज का संदाय लेखा कार्यालय के प्रधान द्वारा अपना यह वैयक्तिक समाधान करने के पश्चात प्राधिकृत किया जा सकेगा कि संदाय करने में विलम्ब प्रभिदाता के नियंत्रण के बाहर की परिस्थितियों के कारण हुआ था और ऐसे प्रस्थेक मामले में इस विषय में प्रणासनिक विलम्ब का पूर्ण रूप से अन्वेषण किया जाएगा और यदि कोई कार्रवाई अपेक्षिस हो की जाएगी।

13. निधि में से अग्रिम:——(1) समुचित मंजूरी कर्ता प्राधिकारी, किसी अभिदाना ऐसा अग्रिम दिए जाने की जो पूर्ण रुपयों में हो आर उसके तीन मास के बेतन की रकम में या निधि में उसके नाम जमा अभिदायों और उन पर ब्याज की आधी रकम में, इनमें में जो भी कम हो, अधिक न हो, निम्नलिखित एक या अधिक प्रयोजनों के लिए मंजूरी दे सकेगा, अर्थात्:——

- (क) ग्रिभिदाता ग्रौर उसके कुटुम्ब के सदस्यो या उस पर वस्तुतः ग्राश्चित किसी व्यक्ति की रुग्णता, प्रसवावस्था या निःशक्तता के सम्बन्ध मे व्यय (जिनके प्रन्तर्गत जहा कही श्रावण्यक हो, याझा व्यय भी है) का संदाय करना ;
- (ख) अभिदाता और उसके कुटुम्ब के सदस्यों या उस पर वस्तुत: श्राश्रित किसी व्यक्ति की उच्चतर शिक्षा के व्ययो की. जिनके श्रन्तर्गत जहा कही श्रावण्यक है, यावा व्यय भी है निम्नलिखित मामलों में पूर्ति करना ग्रर्थान्:—
- (i) हाई स्कूल स्तर के आगे गैक्षणिक तकनीकी.
 वृत्तिक या व्यावसायिक पाठ्यक्रमो की भारत से बाहर शिक्षा प्राप्त करना ;

- (ii) हाई स्कूल स्तर के आगे भारत मे चिकित्सा सम्बन्धी डजीनियरी या अन्य तकनीकी या विशिष्ट पाठ्यक्रम परन्तु यह तब जब कि पाठ्यक्रम तीन वर्ष से कम के लिए न हा ,
- (ग) भ्राभिवाता की प्रास्थित के उपयुक्त मापमान पर एसे बाध्यकर व्यथों का सदाय करना जो श्रीभिवाता का रुढिगत प्रथा के भ्रनुसार उसके अपने या उसके बालका या वस्तुतः उस पर ब्राधित श्रन्य व्यक्ति की सगाइयो, विवाहो, श्रस्येष्टि या भ्रन्य कर्मों के सम्बन्ध मे करने पड़े.

परन्तु वास्तविक रूप स आश्रित होने की शर्त किमी श्रभिदाता के पुत्र या पुत्री के मामल म लाग नहीं होगी

परस्तु सह ग्रीर कि वास्तविक रूप स ग्राध्रित हान की गर्न ग्राभिदाता के माता-पिता के ग्रस्तिम सस्कार के व्यय के लिए ग्रापेक्षित ग्राग्रिम के मामले में लागू नहीं होगी।

(घ) अभिदाता द्वारा श्रपने शामकीय कर्तव्यो का पालन करने में उसके द्वारा किए गए या किए गए तार्त्पाचित किसी कार्य के लिए उसके विरद्ध लगाए किन्ही आरावों के सम्बन्ध में श्रपनी स्थिति को त्यायसगत ठहराने की दृष्टि में अभिदाता द्वारा सस्थित विश्विक कार्यवाहियों के व्यय की पूर्ति करना ऐसी दशा में श्रमिम किसी श्रन्य स्नात में उसी प्रयोजन के लिए श्रनुकेय किसी अग्रिम के श्रनिश्वित उपलब्ध हागा:

> परन्तु इस खण्ड के अर्धान अग्रिम ऐसं अभि-दाता का अनुज्ञेय नहीं होगा जा वह किसी अभि-कथित गासकीय श्रवचार के सम्बन्ध में किसी त्याया-लय में विधिक कार्यवाहिया सम्थित करता है या किसी विभागीय जाच में अपनी प्रतिरक्षा के लिए विधि व्यवसायी नियुक्त करता है।

- (ड) ग्रपने निवास के लिए किसी प्लाट या गृह या फ्लैट के मिश्रमार्ण की लागत की पूर्ति करना या किसी राज्य श्रावासन बोर्ड या किसी गृह निर्माण महकारी मासाइटी द्वारा प्लाट या फ्लैट के श्रावन्टन के लिए कोई सदाय करना।
- (2) ग्रध्यक्ष. विशेष परिस्थितियों में या ग्रस्यिधिक क्ष्य कें माममें में किसी ग्रिभिदाता को उप विनियम (i) में बर्णित कारणों में भिन्न किसी कारण में ग्रीग्रम सदाय करने की स्वीकृति द मकतो है।
- (3) उप विनियम (1) में दी गई मीमा ने अधिक या जब तक किसी पूर्वतन ग्राग्रिम की भ्रान्तिम किस्त का प्रतिमदाय न कर दिया जाए, सिवाय विशेष कारणों के जिन्हें लेखबाइ किया जाएगा कोई अग्रिम मंजर नहीं किया जाएगा

- - ----- ---- -- - - - - - - - ----- परन्तु प्राग्रम निधि मे प्रभिदाता के नाम जमा प्रभिदायो और उन पर ब्याज की रकम में किसी भी दशा में ग्रिधिक नहीं होगा।

टिप्पण ---

- (1) इस विनियम के प्रयाजन के लिए बेतन के अन्तर्गत महगाई बेतन जहा अनुभेष हो, भी है,
- (2) अभिदाता को विनियम 13 के उप विनियम (1) के सद (ख) के अधीन प्रत्येक छह मास में एक बार अग्रिम लने की अनुज्ञा दी जाएगी।
- (3) अग्रिम मजूर किए जाने के पश्चात् उन मामलो म जिनमे विनियम 24 के उप विनियम (3) के खण्ड (ii) के अधीन अतिम मदाय के लिए ब्रावेदन लेखा अधिकारी को भेजा गया था रकम लेखा प्रधिकारी के प्राधिकार में निकाली जाएगी।
- (4) जहा किसी पूत्र अग्निम की अन्तिम किस्त का सदाय करने में पूर्व उप विनियम (3) के अधीन काइ प्राप्त मजूर किया गया है, जहा पूर्व अग्निम का अतिशेष इस प्रकार मजूर किए गए अग्निम में जोड दिया जाएगा और वसूली के लिए किस्ते समेकित रकम के प्रतिनिर्देश से नियत की जाएगी।
- 14. अग्रिमा की बसूली (1) अग्रिम अभिदाता स उतनी समान मासिक किस्तो में बसूल किया जाएगा जितनी मजूरी-कर्ता प्राधिकारी निर्दिष्ट करे, किन्तु उनकी सख्या जब तक अभिदाता ऐसा चयन न कर बारह से कम और चौबीम से अधिक नहीं होगी। ऐसे विशेष मामनों में जहां अग्रिम की रकम विनयम 13 के उप विनयम (3) क अधीम अभिदाता के तीन मास के बेतन से अधिक है बहा मजूरीकर्ता प्राधिकारी ऐसी किस्ता की सख्या चौबीम से अधिक नियत कर मकता है किस्तु किसी भी दशा में किस्तो की सख्या छत्तीम से अधिक नहीं हागी। अभिदाता इन विनयमों द्वारा विहित किस्तों से कम किस्तों में अपने विकल्प पर अग्रिम का प्रतिमदाय वर सकता है। प्रत्येक किस्त पूरे-पूरे रुपयों में होगी और यदि आवश्यक हो, तो उस प्रकार की किस्तों को नियत करने के लिए अग्रिम की रकम को बढ़ाया था घटाया जा सकता है।
- (2) वसूली, ग्रिभिदायों की वसूली सम्बन्धी विनियम 10 में उपबन्धित रीति में की जाएगी और जिस मास में ग्रिप्रिम लिया गया ह उसके ठीक पण्चातवर्ती मास का वेतन दिए जाने के साथ साथ आरम्भ हा जाएगी।

वसूली, श्रभिदाता की सहमति के बिना, उस दशा में नहीं की जाएगी जब उसे जीवन निर्वाह अनुदान मिल रहा है या व किमी कलण्डर मास में दस दिन या उससे अधिक के लिए छुट्टी पर है और छुट्टी की उस अवधि के लिए उसे या तो काई छुट्टी बेनन नहीं मिल रहा है या यथास्थिति, श्राधे श्रीमत बेनन के बराबर या उसम कम छुट्टी बेनन मिल रहा है । मजूरी कर्ना प्राधिकारी मजूर किए गए किमी श्रम्भि बेनन की यसूली के दौरान श्रमिदाना की निखित प्रार्थना पर श्रभिदाना के किमी श्रम्भि की यसूली का मुल्नवी कर राजन श्रीम्म की यसूली का मुल्नवी कर राजन है।

- (3) यदि किसी श्रभिदाता को कोई श्रग्रिम दिया गया है श्रीर उसने श्रिम ने लिया है श्रीर तत्पश्चात् श्रीप्रम को उसका पूरा प्रतिमदाय होने से पूर्व अननुज्ञान कर दिया जाता है तो लिया गया सम्पूर्ण श्रीप्रम पा उसका श्रितिशेष श्रिभिदाता द्वारा निधि मे नत्काल प्रतिसेदत्त कर दिया जाएगा या उसमे व्यतिक्रम होने पर लेखा श्रधिकारी यह श्रादेण करेगा कि उस श्रभिदाता की उपलब्धियों में से एक मुण्त या बारह से अनिधक उत्ती मासिक किस्तों में कटौती कर के वसूल कर लिया जाए जो विनियम 13 के उपविनियम (3) के अधीन श्रपेक्षित विशेष कारणा में श्रीप्रम स्वीकृत करने के लिए सक्षम प्राधिकारी निविष्ट करे।
- (4) इस विनियम के ब्राधीन की गई बसूलिया जैसे ही वे की जाती हैं निधि में ग्राभिवाता के खाने में जमा की जाएगी।
- 15. श्रिप्रमों का गलत उपयोग:——इन विनियमों में किसी वात के होते हुए भी यदि मंजूरीकर्ता प्राधिकारी का समाधान हो जाता है कि विनियम 13 के श्रधीन निधि में से श्रिप्रम के रूप में लिए गए धन को उस प्रयोजन से जिसके लिए धन निकालने की मंजूरी दी गई थी भिन्न किसी प्रयोजन के लिए उपयोग में लाया गया है तो संबंधित रकम निधि में श्रिष्टाता द्वारा तुरन्त प्रतिसंदक्त की जाएगी श्रौर ऐसा करने में व्यतिश्रम होने पर यह श्रादेश दिया जाएगा कि उन्हें श्रिभदाता की उपलब्धियों में से भने ही वह छुट्टी पर हो एकमुख्त कटौती कर के बसूल किया जाए। यदि प्रतिसंदत्त की जाने वाली कुल रकम श्रिष्टाता की मासिक उपलब्धियों के श्राधे से श्रिष्टक है तो बसूली उसकी उपलब्धियों के श्रधीण की मासिक किस्तों में तब तक की जाएगी जब तक वह पूरी रकम का प्रतिसंदाय निष्टी कर देता है।

टिप्पण:--इस विनियम में "उपलब्धियो" के अन्तर्गत जीवन निवाह अनुदान नहीं है।

- 16. निधि में में रकम निकालना: —(1) रकम की निकासी इसमें विनिर्धिष्ट शर्तों के प्रधीन रहत हुए विनियम 13 के उपविनियम (3) के ग्राधीन विशेष कारणों से प्रशिम स्वीकृत करने के लिए संक्षम प्राधिकारियों द्वारा श्रिभिदाता की बीम वर्ष की सेवा पूरी हो जाने के पश्चात् (जिसके प्रन्तर्गत खड़ित सेवाकाल, यदि कोई हो, भी है) किसी भी भमय या श्रिधवर्षिता पर उमकी सेवा निवृत्ति की तारीख से पूर्व दम वर्ष के भीतर, इनमें से जो भी पहले हो, निधि में ग्रिभिदाता के नाम जमा श्रिभिदायों भीर उन पर ब्याज की रकम में से निम्नलिखित एक या श्रिधिक प्रयोजनों के लिए मंजूर की जा सकेंगी. श्रिथित;——

- (i) हाईस्कूल स्तर के आगे शैक्षणिक नकनीकी वृत्तिक या व्यावसायिक पाठ्यक्रम की भारत से बाहर शिक्षा प्राप्त करने के लिए धीर
- (ii) हाईस्कूल स्तर के यागे भारत में चिकित्सा संबंधी इंजीनियरी ग्रथवा श्रन्य तकनीकी या विशिष्ट पाठ्यक्रम के लिए,
- (ख) श्रभिदाता या उसके पुत्रों या पुत्रियों के आँग उस पर वस्तुतः श्राक्षित किसी श्रन्य महिला नानेदार की सगाई/विवाह के सम्बन्ध में व्यय की पूर्ति के लिए;
- (ग) श्रभिदाता, उसके कुटुम्ब के सदस्यों या उस पर वस्तुत: श्राश्रित किसी व्यक्ति की रुग्णता के सम्बन्ध में व्यय की (जिसके धन्तर्गत जहां कहीं श्रावश्यक हो, यात्रा व्यय भी हैं) पूर्ति के लिए।
- (2) श्रिभिदाता की सेवा के 15 वर्ष पूरे हो जाने के पण्चात् (जिसमें खण्डित सेवाकाल, यदि कोई हो, भी हैं) या श्रिधिविधिता पर उसकी सेवा निवृत्ति की तारीख से पूर्व दस वर्ष इसमें से जो भी पूर्वतर हो, निधि में श्रिभिदाता के नाम जमा रक्तम में ने निकासी निम्नलिखित एक या प्रधिक प्रयोजनों के लिए मंजूर की जा सकेगी, श्रथित्:—
 - (क) श्रपने निवास के लिए कोई उपयुक्त गृह निर्माण करने या प्राप्त करने के लिए या पहले से निर्मित प्लैट जिसमें भूमि का दाम भी है;
 - (ख) अपने निवास के लिए कोई उपयुक्त गृह निर्याण करने या प्राप्त करने या पहले से निर्मित फ्लैट प्राप्त करने के लिए प्रभिव्यक्त रूप में लिए गए किसी उधार मद्दे किसी बकाया रकम का प्रति-संदाय करने के लिए;
 - (ग) अपने निवास के लिए गृह निर्माण करने के लिए कोई भूमि कय करने के लिए या इस प्रयोजन के लिए अभिष्यक्त रूप से लिए गए किसी उधार महें बकाया रह गई किसी रकम का प्रतिसंदाय करने के लिए;
 - (घ) किसी ऐसे गृह या फ्लैट के जिस पर अभिदाता का पहले से स्वामित्व है या जिसे उसने अजित किया है पुनर्निर्माण के लिए या उसमें परिवर्धन अथवा परिवर्तन करने के लिए,
 - (ङ) कर्तव्य स्थान से भिन्न किसी स्थान पर ग्रिभदाता के पैतृक गृह का नधीकरण करने के लिए या उसमे परिवर्धन या परिवर्तन करने के लिए ग्रथवा उसे सही दशा में रखने के लिए ग्रथवा कर्तव्य के स्थान में भिन्न किसी स्थान पर सरकार से उधार लेकर निर्मित गृह के लिए;
 - (च) थ्रण्ड (ग) के प्रधीन क्रथ की गई भूमि पर गृह् निर्माण करने के लिए,

(छ) ग्राभदाता की सवा निवृत्ति की तारीख से पूर्व छह् मास के भोतर फार्म के निए भूमि या कारोबार के परिसर ग्रथवा दोनों का ग्रर्जन करने के लिए।

टिप्पण---(1) वह ग्रभिदाना जिसने बोर्ड या राज्य सरकार की गृह निर्माण के प्रयोजना के लिए भ्रम्भिस देन के लिए स्कीम के अधीन कोई अग्रिम लिया है या जिसे किसी ग्रन्थ मरकारी स्रोत स इस पावत कोई सहायता ग्रन्जात की गर्ड है उपविनियम (2) के खण्ड (क), (ग), (घ) श्रीर (च) के ग्रधीन उनमे विनिर्दिष्ट प्रयोजना के लिए ग्रौर उपरोक्त स्कीम के श्रधीन लिए गए किसी उधार का प्रतिसदाय करन के प्रयोजन के लिए भी विनियम 17 के उपविनियम (1) के परन्तुक मे विनिर्दिष्ट सीमा के <mark>श्रधीन रहते हुए श्र</mark>न्तिम रूप से रकम की निकासी की मजूरी का पात होगा। यदि ग्रिभिदाता का उसके कर्तव्य के स्थान से भिन्न किसी स्थान पर कोई पैतृक गृह है या उसने सरकार से लिए गए उधार की सहायता से ऐसे स्थान पर कोई गृह निर्माण किया है तो वह ग्रपने कर्तव्य के स्थान पर अन्य गृह के लिए भूमि ऋय करने के लिए या श्रन्य गृह का निर्माण करने के लिए या पहले स निर्मित फ्लैंट लेने के लिए उपविनियम (2) के खण्ड (क), (ग) और (च) के अधीन भ्रन्तिम रूप से रकम की निकासी की मजूरी का पात्र होगा।

- (2) उपविनियम (1) के उपखण्ड (क), (घ), (इ) या (च) के अधीन रक्षम की निकासी केवल तब मजूर की जाएगी जब अभिदाता निर्मित किए जाने वाले गृह का नक्णा या की जाने वाने परिवर्धनों या परिवर्तनों का नक्णा उस क्षेत्र के जहां भूमि या गृह स्थित है स्थानीय नगरपालिक निकाय के सम्यक अनुमोदन सहित और केवल उन दणाओं में जहां नक्णों का वास्तव में अनुमोदन कराना पड़ना है, प्रस्तुत कर देता है।
- (3) उपिविनियम (2) के खण्ड (ख) के अधीन निकासी के लिए मजूर की गई रकम उपिविनियम 2 के खण्ड (क) के अधीन पहले पहले निकाली गई रकम महित जिसमे से पहले निकाली गई रकम महित जिसमे से पहले निकाली गई रकम घटा दी जाएगी आवेदन की नारीख की अतिलेख के 3/4 म अधिव नहीं होगा। वह फार्मूला जिसका अनुसरण किया आएगा वह इस प्रकार है (उस नारीख को विद्यमान अतिलेख का 3/1 धन संबंधित गृह के लिए पूर्व निकासी/निकासियों को रकम) जिसमें से पहले निकाली गई रकम/रकमें घटा दी जाएगी।
- (1) उपिविनियम (2) के खण्ड (क) या (घ) के ब्राघीन रकम की निकासी उस दशा में अनुज्ञात की जाएगी जहां गृष्ठ के लिए भूमि या गृह पत्नी या पित के नाम में हैं परन्तु यह तब जब कि पत्नी या पित ग्रिभिदाता द्वारा किए गए नाम निर्देशन म भीवष्य निधि का धन प्राप्त करने के लिए प्रथम नामनिर्देशितों है।
- () विनियम) । ४ अधीन एउ ही प्रयोजन के लिए केवर एक निकासी प्रत्जात की जाएगी। किला विभिन्न

वालको क विवाह/शिक्षा के लिए या विभिन्न समयो पर रुग्णता का एक ही प्रयोजन नहीं माना जाएगा। उपविनियम (2) के खण्ड (क) या (च) के श्रधीन दूसरी या पश्चात्वर्ती निकासी उसी गृह को पूरा करन के लिए टिप्पण (3) मे श्रधिकथिन सीमा तक अनुज्ञात की जाएगी।

- (6) विनियम 16 के श्रधीन कोई निकासी मजूर नहीं की जाएगी गदि उसी प्रयोजन के लिए श्रीर उसी समय कोई प्रयिम विनियम 13 के श्रधीन मजूर किया जा रहा है।
- (3) प्रभिदाला मेवा के 28 वर्ष पूरा कर लेने के प्रश्नात या ग्रधिविधता पर उसकी सवा निवृत्ति की नारीख में पूर्व 3 वर्ष के भीतर निधि में उसके नाम जमा रकम में म माटर बार कथ करने के लिए या इस प्रयाजन के लिए पहले ही लिए गए उधार का प्रतिसंदाय करने के लिए पित्रामी विम्नलिखित गर्ती के ग्रधीन रहते हुए मजूर की जाएगी, ग्रथीन
 - (1) यभिदान। का बैतन 1,000 म० या अधिक है,
 - (ii) निकासा की रकम 12,000 रुविक या ग्रिमिदाना क खाने में जमा रकम के एक चौथाई तक या कार की वास्तिविक कीमत इनमें में जो भी कम हो तक सीमित है, ग्रीर
 - (111) ऐसी निकामो केवल एक ही बार अनुजात की जाएगी। दूसरी मोटर कार खरीदने के लिए निकासी की देशा में केन्द्रीय सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए कार्यपालक अनुदेशों से यथा अनुप्रित साधारण विस्तीय नियम 1963 के अध्याय 14 के उपबन्धा के अधीन मोटर कार यग्निम अनुभ्रेय नहीं होगा।

17 रकम निकालने का गर्ते ——(1) निधि मे श्रिभिदाता के नाम जमा रकम मे से विनियम 16 में विनिदिष्ट एक या अधिक प्रयोजनों के लिए उसके द्वारा किसी भी एक समय निकाली गई कोई रकम निधि में श्रिभिदाता के नाम जमा श्रिभिदाय और उस पर ब्याज की रक्षम के श्राधे में या छह मास के वेतन में इनम में जा भी कम हा साधारणत्या श्रिधिक नहीं होगी नथापि मजूरीकर्ता प्राधिकारी इस सीमा में श्रिधिक किन्तु निधि में श्रिभिदाता के नाम जमा श्रिभदायो श्रीर उन पर ब्याज की रक्षम के नीन चौथाई तक रक्षम निकालने की मजूरी (i) वह उद्देण्य जिसके लिए धन निकाला जा रहा है (ii) श्रिभदाता की प्रास्थिति और (iii) निधि में श्रीभदाता के नाम जमा श्रीभदाय और उन पर ब्याज की रक्षम

परन्तु निकाला नाने वाली प्राधकतम रकम किमी भी दणा मे 1,25,000 ६० या मामिक वैतन के 75 गुने से इनमें मे जो भी कम हो श्रधिक नहीं होगी

परन्तु यह और भी नि ऐस ग्रिभदाता की देशा में जिसने पट निर्माण के प्रयोजनाथ स्प्रिम दिए जाने को बाई ता राज्य सरवार की स्कीम के श्रधीन कोई श्रम्भि निया है या जिमे किनी यन्य सरकारी स्रोत से इस निमित्त कोई महायता अनुजात की गई है। इस उपविनियम के अधीन निकाली गई रकम पूर्वोक्त स्कीम के अधीन लिए गए अग्रिम की रकम या किसी अन्य सरकारी स्रोत से ली गई महायता महित 1,25,000 के से या मासिक बैतन के 75 गुने से इनमें से जो भी कम हो अधिक नहीं होगी।

टिप्पग (1) अभिदाता को विनियम 16 के उपविनियम (1) के खण्ड (क) के अधीन प्रत्येक छह माम में एक बार एकम निकालने की अनुजा दी जाएगी। ऐसी प्रत्येक निकासी का विनियम 17 के उपविनियम (1) के अलग प्रयोजन के लिए निकासी माना जाएगा।

- (2) उन दगाश्रों में जिनमें श्रीभदाना द्वारा कय की गर्छ किसी भूमि या गृह के लिए या गृह निर्माण सहकारी सीमाइटो या उसके समरूप श्रीभकरण द्वारा निर्मित गृह या राज्य स्नावास निगम के माध्यम से क्रय किए गए या निर्मित किसी गृह या पलैट के लिए किस्तों में संदाय किया जाना है, उसे जब कभी उससे किसी किस्त के सदाय की श्रपेक्षा की जाती है रकम निकालने की श्रनुका दी जाएगी। ऐसा प्रत्येक सदाय नियम 17 के उपविनियम (1) के प्रयोजनों के लिए प्रदाय माना जाएगा।
- (3) उप दणा में, जिसमें मजूरीकर्ना प्राधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि निधि में अभिदाता के नाम जमा रक्त अपर्याप्त है और वह रक्तम निकालन से अन्यथा प्रपत्ती अपेक्षाओं की पूर्ति करने में असमर्थ है विनियम 19 के अधीन किसी बीमा पालिमी या पालिमियों के विन पोषण के लिए निधि में अभिदाता द्वारा पहले ही निकाली गई रक्तम इस उपिवियम में अधिकथित सीमा के प्रयोजनों के लिए निधि में उसके नाम जमा वास्तविक रक्तम के अतिरिक्त रक्तम के ख्रित जा मकेगी, अनुजेय निकासी की रक्तम इस प्रकार अवधारित कर दिए जान के पश्चात:—
 - (i) यदि इस प्रकार अवधारित रकम विनियम 19 के अधीन बीमा पालिमी। या पालिमियों के बिल पोषण के लिए निधि म से पहले ही निकाली गई रकम से अधिक हैं तो इस प्रकार निकाली गई रकम का अन्तिम रूप में निकाली गई रकम माना जाएगा और इस प्रकार मानी गई रकम और अनुशेय निकासी की रकम से यदि कोई अन्तर है तो उसे नकद सदल किया जा सकेगा, और
 - (ii) यदि इस प्रकार शबधारित रक्षम विनियम 19 के अधीन अपना किसी बीमा पालिसी या पालिसियों के विल्पोषण के लिए निधि में से पहले ही निकाली गई रक्षम से अधिक नही हैं तो इस प्रकार निकाली गई रक्षम उपिबिनियम (1) में विनिविष्ट सीमा के होते हुए भी श्रेतिम रूप भे रक्षम की निकासी के रूप में सार्ग जा मकेगी।

उक्त प्रयोजन के लिए लेखा अधिकारी पालिमी या पालिमियों को यथास्थिति, अभिवाता या अभिवाता धौर उसके संयुक्त बीमाकृत व्यक्ति को पुन. समनुदिष्ट करेगा और उसे अभिवाता के हवाले करेगा जो तब उसका उपयोग इस प्रयोजन के लिए करने के लिए स्वतब होगा जिसके लिए उसे निर्मोचित किया गया है।

- (2) ऐसा श्रिभदाता जिसे विनियम 16 के अधीन निधि में से धन निकामी की अनुजा दो गई है युक्तियुक्त श्रवधि के भीतर जो मंजूरोकर्ना प्राधिकारी का यह समाधान करेगा कि जिस प्रयोजन के लिए धन निकाला गया था उसका उसी प्रयोजन के लिए उपयोग किया गया श्रीर यदि वह ऐसा करने में श्रमकल रहता है तो इस प्रकार निकाला गया सम्पूर्ण धन या उसका वह भाग जो उन प्रयोजनों के लिए जिसके लिए वह निकाला गया था उपयोग मे नहीं लाया गया है श्रभिदाता द्वारा निधि मे तुरन्न प्रतिमदत्त कर दिया जाएगा श्रौर ऐसा संदाय करने में व्यक्तिक्रम होने पर मंजूरी-कर्ना प्राधिकारी यह श्रादेण करेगा कि निकाली गई रक्षम एक मुण्त या उतनी मासिक किस्तों में जिननी मंजूरीकर्ता प्राधिकारी निदेश दे श्रभिदाता की उपलब्धियों में से कटौती कर के वसूल की जाए।
- (3) (क) यदि श्रिभिदाना जिसे निधि में उसके नाम जमा श्रिभिदाय और उस पर ब्याज की रकम में में विनियम 16 के उपविनिथम (2) के खण्ड (क), (ख), (ग), (घ), (ङ) या (च) के अधीन धन निकालने की अनुजा दी गई है इस प्रकार निकाले गए धन में निर्मित या श्रिजित किए गए गृह या कथ की गई भूमि में कब्जे में, विकथ, वन्धक (बोर्ड को किए गए बंधक से भिन्न) दान, विनिथम द्वारा या अन्यथा बोर्ड की पूर्व श्रनुजा के बिना विलय नहीं होगा:

परन्तु ऐसी अनुजा निम्नलिखित के लिए आवश्यक नहीं होगी----

- (i) किसो गृह या गृह भूमि को तीन वर्ष से ग्रनधिक की किसी ग्रवधि के लिए पट्टे पर देना,
- (ii) किसी प्रावासन बोर्ड, राष्ट्रीयकृत बैंक, जीवन बीमा निगम या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्वाधीन या नियवणाधीन किसी अन्य निगम के पक्ष में जो नए गृह का सम्मिर्माण करने के लिए या विद्यमान गृह में परिवर्तन या परिवर्धन करने के लिए ऋण देता है, उसे बंधक रखना।
- (ख) अभिदाता प्रतिवर्ष दिसम्बर के 31व दिन तक ऐसी घोषणा प्रस्तृत करेगा कि यथास्थिति, गृह या गृह-भूमि यथापूर्वोक्त उसके तकों पे बना हुआ है या उसे बधक एखा गया है या अन्यथा अन्तरित किया गया है या किराए पर दिया गया है और यदि ऐसी अपेक्षा की जाए तो वह विकय बधक या पट्टे के मूल बिलेख को और ऐसे दस्तावेजों का भी जिन पर संपत्ति पर उसका हुक आधारित है इस निमित्त मजूरीकर्ना प्राधिकारी द्वारा बिनिदिष्ट तारीख को गा उससे पूर्व उस प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत करेगा।

(ग) यदि भ्रपनी सेवा निवृत्ति से पूर्व किसी समय भ्रभिदाना बांड से पूर्व भ्रनुजा प्राप्त किए बिना गृह या गृह भृमि का कब्जा बिलग कर देना है ता वह निधि से से श्रपने द्वारा इस प्रकार निकाली गृई रकम का निधि से नुरत एकमृष्य प्रतिसंदाय करेगा और ऐस प्रतिसदाय से व्यतिक्रम होने पर मज्रिकर्ना प्राधिकारी उस सामले से श्रभ्याबेदन करने के लिए श्रभिदाना का युक्तियुक्त श्रवसर देने के पश्चान उक्त रक्षम को श्रभिदाना की उपलब्धियों में सेया ना एक मुख्य या उतनी मासिक किस्तों से जिननी वह श्रवधारित करें वस्ल करवाएगा।

टिप्पण—ऐसे अभिदाना से जिसने बोर्ड या सरकार से उधार लिया है और उसके बदले से गृह या गृह-भूमि बोर्ड या सरकार को बंधक कर दी है निस्नलिखित प्रभाव की घोषणा प्रस्तृत करने की अपेक्षा की जाएगी, अर्थात् .—

"मैं यह प्रमाणित करता हू कि वह गृह या गृह-भूमि जिसके निर्माण के लिए या जिसके फ्रर्जन के लिए मैंने भविष्य निधि से श्रंतिम निकासी की है में रे कब्जे मे बना है किन्तु बोर्ड/सरकार के पास बधक है।"

18. किमी अग्निम का निकासी में संपरिवर्तन—(1) काई अभिदाता जिसने विनियम 16 में विनिद्धिष्ट किसी भी प्रयोजन के लिए विनियम 13 के अधीन कोई अग्निम लिया है या लेने वाला है. यदि वह विनियम 16 और 17 में विनिद्धिष्ट शर्तों को पूरा करता है, स्वविवेकानुसार मजूरीकर्ता प्राधिकारी के साध्यम से लेखा अधिकारी को सम्बोधित अपने निखित अनुरोध द्वारा उस अग्निम के सबंध में अपने अतिशेष को अंतिम का से रकम की निकामी में संपरिवर्तिन कर सकेगा।

- टिप्पण . (।) जब मज्रीकर्ता प्राधिकारी द्वारा लेखा भ्रधिकारी को सपरिवर्तन के लिए कोई भ्रावेदन भ्रम्नेषित किया जाता है तो मज्रीकर्ता प्राधिकारी कार्यालय के प्रधान से बेतन बिल से बसूली रोकने के लिए श्रनुरोध कर सकता है,
- (2) विनियम 17 के उपविनियम (1) के प्रयोजनों के लिए संपरिवर्तन के समय अभिदाता के खाते में जमा अभिदाय की उस पर ब्याज सहित रकम धन अग्निम की बकाया रकम को अतिणेष के रूप में लिया जाएगा। प्रत्येक निकासी को पृथक माना जाएगा और वहीं सिद्धात एक में अधिक संपरिवर्तनों में लागू होगा।
- 19 बीमा पालिसिया महें संदाय—विनियम 4 में निर्विष्ट श्रिमदाता जो इन विनियमों के प्रारंभ से पूर्व जीवन बीमा की पालिसियों के लिए पूर्णत या ग्रंशत: अभिदाया प्रतिस्थापित कराते रहे है या निधि में में ऐसे सदाय के लिए रकम की निकासी कराते रहे है वे ऐसा करते रहने के लिए अनुज्ञात किए जाएंगे। ऐसे सदाय केन्द्रीय मरकार के अशदायी भविष्य निधि नियम (भारत) 1962 के उपबन्धों से नियंदित होंगे और श्रिभाता उन्हीं निबंधनों प्रौर शर्तों के अधीन यथावश्यक परिवर्तनों सहित सुविधाओं का उपयोग करते रहेंगे;

परन्त् ऐसे श्रिभिदाताश्रो को निधि में देय श्रिभिदाय के प्रतिस्थापन के लिए या नई पालिसियों की बावत सदाय करने के लिए निधि में स रक्तम निसालने के लिए श्रनुझान नहीं किया जरण्या।

20. निधि में सचित रकम को श्रितम रूप में निकासना जब कोई श्रिभदाता मेवा छोड़ देना है तब निधि में उसके खाते में जमा रकम विनियम 23 के श्रिधीन किसी कटीनी के श्रिधीन रहते हुए, उसे मदेय हो जाएगी.

परन्तु ऐसा अभिदाता जिसे सेवा से पदच्युत कर दिया गया है और बाद में उसे सेवा मे पुन:स्थापित कर लिया जाता है यदि बोर्ड उससे बैसा करने की अपेक्षा करे, ता वह इस विनियम के अनुसार निधि में उसे सदन की गई कोई भी रकम विनियम 12 में उपबंधित दर में उस पर ब्याज सहित विनियम 21 के परन्तुक में उपबंधित रीति में प्रतिसंदत्त करेगा। इस प्रकार प्रतिसदत्त रकम निधि में उसके खाने में जमा की जाएगी और वह भाग जो उसके अभिदायों और उन पर ब्याज का द्योतक है और वह भाग जो बोर्ड के अंगदान और उस पर ब्याज का द्योतक है विनियम 6 में उपबंधित रीति में लखे में लिया जाएगा।

स्पष्टीकरण (1) ऐसे अभिदाता के बारे में जिस अस्वीकृत छुट्टी सजूर की गई है यह माना जाएगा कि उसने अपनी सेवा निवृत्ति की तारीख से या सेवा बढाए जान की अबिध की समाप्ति से सेवा छोड़ दी है।

ऐसे श्रभिदाना के बारे में, जो सविदा पर नियुक्त किए गए व्यक्ति या ऐसे व्यक्ति से भिन्न है, जिसे सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् सेवा व्यवधान सहित या रहित पुन. नियोजित कर लिया गया है यह नहीं समझा जाएगा कि उसने सेवा छोड दी हैं जब उसे सेवा में व्यवधान के बिना राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार या निगमित निकाय के अधीन विसी नए पद पर (जहा उसे दूसरे भविष्य निधि नियम लागू होते हैं) श्रपने पर्व पद से कोई सम्बन्ध न रखने हुए अनित्त कर दिया जाता है। ऐसे मामले में उसका श्रभिदाय और नियोजिक का अभदान उन पर ब्याज सहित केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या निगमित निकाय के श्रधीन नए खाते में अतिरित कर दिए जाक्से यिद केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या निगमित निकाय उसके अभिदायो, नियोजिक के स्रंगदान और व्याज को श्रतरित करने की स्रनुमित दे देता है।

टिप्पण — स्थानान्तरण के सम्बन्ध मे यह समझा जाना चाहिए कि उसके अनर्गत सवा में ऐसा पदस्याग भी मिम्मिलत है जो केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या निगमित निकास के अधीन नियुक्ति यहण करने के लिए व्यवधान के बिना आर्रेर अध्यक्ष की समुचित अनुजा में किया जाए। ऐसे मामलों में जहाँ सेवा में व्यवधान हुआ है वहा व्यवधान अन्यव स्थानान्तरण पर कार्यभार ग्रहण करने के लिए अनुजात समय तक ही सीमिन होगा।

(iii) जन कोई श्रभिवाता जो मंतिटा पर तियुक्त किए, गए व्यक्ति से या ऐसे व्यक्ति से भिन्न है जिसे सेवा से निवृत्त होने के पण्चात् सेवा में पुन: नियोजित किया जाता है. तेवा से व्यवप्रान के बिना सरकारके स्वामित्वाधीन या सासाइटी रिजस्ट्रीकरण अधिनियस. 1860 के अधीन रिजस्ट्रीकृत किसी स्वायस संगठन के श्रधीन सेवा में स्थानान्तरित कर दिया जाता है, तब अभिदायों की रकम और बोर्ड का श्रंणदान उस पर ब्याज सहित उसे सदस्त नहीं किया जाएगा बिल्क उस निकाय की सहस्ति से उस निकाय के श्रधीन उसके नए भविष्य निधि खाते में श्रंतरित कर दिया जाएगा।

स्थानान्तरण के प्रन्तर्गत सेवा में ऐसा पदत्याग भी मिस्मिलत है जो सरकार के स्वामित्वाधीन या नियंत्रणाधीन किसी निगमित निकाय या सांसाइटी रिजस्ट्रीकरण अधिन्यम 1860 (1860 का 21) के अधीन रिजस्ट्रीकृत किसी स्वायत्त संगठन के अधीन नियुक्ति ग्रहण करने के लिए व्यवधान के बिना और अध्यक्ष की समुचित अनुजा से किया जाए। नए पद का कार्यभार ग्रहण करने में लगा समय मेवा में व्यवधान नहीं माना जाएगा यदि वह एक पद में दूसरे पर जाने के लिए किसी कर्मचारी का प्रनृजेय कार्यभार ग्रहण समय में अधिक नहीं होता:

परन्तु यह श्रौर भी कि किसी लोक उद्यम के श्रधीन सेवा के लिए विकल्प देने वाले किसी श्रीभदाता के श्रभिदायों श्रौर बोर्ड के अंशदान की उन पर ब्याज सहित रकम, यदि वह वैमा चाहें श्रौर यदि संबंधित उद्यम भी ऐसे श्रंतरण के लिए सहमत हैं तो उपक्रम के श्रधीन उसके नए भविष्य निधि खाते में श्रंतरित कर दी जाएगी। किन्तु यदि श्रभिदाता श्रंतरण नहीं चाहता है या संबंधित उद्यम की भविष्य निधि नहीं है तो पर्वो-क्त रकम श्रभिदाता को वापम कर दी जाएगी।

छंटनी के तुरन्त पश्चात् बोर्ड के प्रधीन नियोजन के मामले में भी यही बात लागु होगी।

- 21. श्रमिदाता की सेवा निवृत्ति .-- जब कोई श्रभिदाता---
- (क) सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर चला गया है या यदि वह प्रायकाण विभाग में नियोजित है तो अवकाण का मिला-कर सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर चला गया है, या
- (ख) जिसे छुट्टी पर रहते हुए सेवा निवृत्त होने की अनुज्ञा दे वी गई है या जिसे सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी ने क्रामे की सेवा के लिए ध्रयोग्य घोषित कर दिया है,

तो निधि में उसके नाम जमा श्रिभिदायों की रक्षम धीर उस पर ध्याज ग्रिभिदाता को, इस निमित्त उसके द्वारा लेखा ग्रिधि-कारी को किए गए श्रावेदन पर मंदेय हो जाएगा.

परन्तु यदि श्रभिदाना कर्तब्ध पर वापम श्रा जाता है श्रार बोर्ड द्वारा ऐसा करने की श्रपंक्षा की जाए तो अपने खाते में जमा किए जाने के लिए वह रक्षम या उसका कार्ड भाग जो उसे इस विनियम के अनुसार निधि में से सदत्त किया गया था विनियम 12 में उपबंधित दर से उस पर ब्याज गहित नकद या प्रतिभृतियों में भ्रथवा भागतः नकद श्रीर भागतः प्रतिभृतियों में किस्तों में या भ्रग्यथा उसकी उपलब्धियों में से वस्त्र कर के या भ्रग्य प्रकार से जो विनियम 13 के उपविनियम (2) के श्रधीन भ्रपेक्षित्व विशेष कारणों से श्रिप्रम स्वीकृत नरने के लिए सक्षम प्राधिकारी निदिष्ट करें, निधि में प्रति-संदम्म करेगा।

- 22. अभिदाता की मृत्यु पर प्रिक्रवा:—विनियम 2.3 के अधीन किसी कटौती के अधीन रहते हुए, अभिदाता के नाम जमा रकम के संदेय हो जाने से पूर्व या यदि रकम मंदेय हो गई है तो संदाय किए जाने में पूर्व, उसकी मृत्यु हो जाने पर
 - (i) जब अभिदाना कोई कुटुम्ब छोड़ना है तब,--
 - (क) यदि उसके कुटुम्ब के किसी सदस्य या किन्ही सदस्यों के पक्ष में विनियम 5 के उपबन्धों के अनुसार अभिदाता द्वारा किया गया कोई नाम निर्देशन विद्यमान है तो निधि में उसके नाम जमा रक्षम या उसका वह भाग जिससे नाम निर्देशन संबंधित है, उसके नाम निर्देशन में विनिद्धिती या नाम निर्देशितियों को नाम निर्देशन में विनिद्धिट अनुपात में सदेय हो जाएगा;
 - (ख) यदि प्रभिदाता के कुटुम्ब के किसी सदस्य या किन्ही सदस्यों के पक्ष में ऐसा कोई नाम निर्देशन विद्यमान नहीं है या यदि ऐसा नाम निर्देशन निधि में उसके नाम जमा रकम के किसी एक भाग से संबंधित है तो, यथास्थित, सम्पूर्ण रकम या उसका वह भाग जिसमें नाम निर्देशन संबंधित नहीं है उसके कुटुम्ब के किसी सवस्य या सदस्यों ने भिन्न किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के नाम में किए गए नात्य-र्थित किसी नामनिर्देशन के होते हुए भी उसके कुटुम्ब के सदस्यों को बरावर-वरावर ग्रंशों में सदेय हा जाएगा:

परन्तु यदि उसके कुटुम्ब का खण्ड (1),(2),(3) और (4) में विनिर्दिष्ट सदस्यों में भिन्न कोई सदस्य है तो निम्निचिंदत को कोई भी श्रण मंदेय नहीं होगा।

- (1) वे पुत्र जिन्होंने वयस्कता प्राप्त कर सी है .
- (2) मृतक पुत्न के वे पुत्न जिन्होंने वयस्कता प्राप्त कर नी है ;
- (3) विवाहित पुत्रियां जिनके पति जीवित हैं
- (4) मृतक पुत्र की विवाहित पुत्रियां जिनके पनि जीवित है;

परन्तु यह और कि मृतक पुत्र की विधवा या विधवाएं और उसका या उस के बालक अपने मध्य अकेला वहीं ग्रंण, बराबर भागों में प्राप्त करेंगे जो भ्रंण उस पुत्र ने तब प्राप्त किया होता जब वह श्रभिदाता का उत्तरजीवी होता और उसे प्रथम परन्तुक के खण्ड (1) के उपबधा में छुट-प्राप्त होता।

टिप्पण: किसी ग्रभिदाता के कुटुम्ब के किसी मबस्य को इन विनियमों के ग्रधीन संदेय कोई भी रकम भविष्य निधि भ्रधिनियम, 1925 (1925 का 19) की धारा 3 की उप-धारा (2) के भ्रधीन उस मदस्य में निहित हो जाती है।

- (ii) जब श्रभिदाता कोई कुटुम्ब नहीं छोड़ता है तब यदि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के पक्ष में वि-नियम 5 के उपबन्धों के श्रनुसार उसके द्वारा किया गया नाम निर्देशन विद्यमान है तो निधि में उसके नाम जमा रकम या उसका वह भाग जिससे नाम निर्देशन सबधित है नाम निर्देशन में विनिर्दिष्ट श्रनुपात में उमके नाम निर्देशिती या नाम निर्देशितियों को संदेय हो जाएगा।
- टिप्पण (1) यदि कोई नाम निर्देशिती भविष्य निधि ग्रिधिनियम, 1925 (1925 का 19) की धारा 2 कें खण्ड (ग) में परिभाषित ग्रिभिदाता पर ग्राश्रित है तो रकम उस ग्रिधिनियम की धारा 3 की उप-धारा (2) के ग्रिधीन ऐसे नाम निर्देशिती में निहित हो आती है।
- (2) यदि श्रभिदाता कोई कुटुम्ब नहीं छोड़ता है ग्रौर विनियम 5 के उपबंधों के श्रनुसार उसके द्वारा किया गया कोई नामनिर्देशन भी विद्यमान नहीं है या यदि ऐसा नामनिर्देशन निधि में उसके नाम जमा रकम के केवल एक भाग से संबंधित है तो भविष्य निधि ग्रधिनियम, 1925 (1925 का 19) की धारा 4 की उपधारा (1) के खण्ड (ख) ग्रौर खण्ड (ङ) के उपखण्ड (ii) के सुसंगत उपबन्ध संपूर्ण रकम को या उसके उस भाग को जिससे नाम निर्देशन संबंधित नहीं है, लागू होंगे।

23. कटौतियां :—इस शर्त के श्रधीन रहते हुए कि ऐसी कोई भी कटौती नहीं की जाएगी जिसमे कि निधि में श्रभिदाता के नाम जमा रकम का उस निधि में संदाय किए जाने सेपूर्व उसमें से बोर्ड द्वारा विनियम 11 श्रौर विनियम 12 के श्रधीन किए गए श्रंशदान श्रौर छस पर ब्याज की रकम से श्रधिक रकम निकाली जाए,—

- (क) बोर्ड यह निदेश दे सकेगा कि ---
- (i) यदि अभिदाता को श्रवचार, दिवालियापन या श्रदक्षता के कारण सेवा से पदच्युत किया गया है तो उन सभी रकमों की जो ऐसे श्रंशदान श्रौर क्याज की द्योतक हैं,

उसमें से कटौती करके बोर्ड को संदाय किया जाए:

परन्तु जहां बोर्ड का यह समाधान हो जाता है कि इस प्रकार की कटौती से श्रभिदाता को श्रसाधारण कष्ट होगा, जो वह आदेश द्वारा ऐसी कटौती में से उस श्रभिदाय श्रौर ब्याज की रकम के, जो श्रभिदाता को उस दशा में संदेय होती जब यह चिकित्सीय कारणों से सेवा निवृत्त हुशा होता तो तिहाई से श्रनधिक रकम तक की छट दे सकेगा:

परन्तु यह और भी कि यदि पवच्युति का ऐसा कोई भाषेश बाद में रह कर दिया जाता है तो इस प्रकार काटी गई रकम 1332 GI/80--19 सेवा में उसके फिर से प्रतिस्थापित किए जाने पर निधि में उसके नाम फिर से जमा कर दी आएगी।

- (ii) यदि ग्रिभिवाता उस रूप में ग्रपनी सेवा के ग्रारंभ से पांच वर्ष के भीतर सेवा से त्यागपत्र दे देता है या मृत्यु या ग्रधिवर्षिता से या सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी द्वारा यह घोषणा किए जाने से कि वह ग्रागे सेवा करने के ग्रयोग्य है या वह उत्सादित किए जाने ग्रथवा स्थापन में कभी कर दिए जाने से भिन्न किसी कारण से बोर्ड के ग्रधीन कर्मचारी नहीं रह जाता है तो उन सभी रकमों का जो ऐसी सभी रकमों ग्रौर ब्याज की खोतक हैं उसमें से कटौती कर के बोर्ड को संदाय किया जाए।
- (ख) बोर्ड यह निदेश दे सकेगा कि श्रभिदाता द्वारा बोर्ड के प्रति उपगत किसी दायित्व के श्रधीन देय किसी रकम की उसमें संकटौती कर के बोर्ड को संदाय किया आए।
- टिप्पण (1) इस विनियम के खण्ड (क) के उपखण्ड (ii) के प्रयोजन के लिए—
 - (क) पांच वर्ष की ग्रवधि की गणना बोर्ड के ग्रधीन श्रभिदाता की निरंतर सेवा के प्रारंभ से की जाएगी।
 - (ख) केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार या किसी निग-मित निकाय के म्रधीन या सोसाइटी रिजस्ट्रीकरण म्रधिनियम, 1860 (1860 का 21) के म्रधीन रिजस्ट्रीकृत किसी स्वायत्त संगठन के म्रधीन व्यवधान के बिना उपयुक्त प्राधिकारी की समुचित म्रनुका से नियुक्ति प्राप्त करने के लिए सेवा से दिया गया त्यागपत्न बोर्ड की सेवा से त्यागपत्न नहीं माना जाएगा।
 - (2) इस विनियम के प्रधीन बोर्ड की शक्तियों का प्रयोग, इस विनियम के खण्ड (ख) में निर्दिष्ट रकम की बाबत पत्तन के कर्मचारियों के सभी प्रवर्गों की बाबत उनसे भिन्न जो महापत्तन न्यास प्रधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 24 की उपधारा (1) के खण्ड (क) में निर्दिष्ट पद धारण करने वाले कर्मचारी हैं, श्रध्यक्ष द्वारा भी किया जा सकेगा।
- 24. निधि में रकम का संदाय करने की रीति:—(1) जब निधि में प्रभिदाता के नाम जमा कोई रकम या विनियम 23 के प्रधीन की गई कटौती के पण्चात् उसका प्रतिशेष संदेय हो जाता है तब लेखा प्रधिकारी का प्रपना यह समाधान कर लेने के पण्चात् कि जब उस विनियम के प्रधीन ऐसी कोई कटौती करने का निदेश नहीं दिया गया है, यथास्थिति, प्ररूप V या प्ररूप Vi (इन विनियमों से उपाबद्ध) में उप-विनियम (3) में यथा उपबंधित इम निमित्त लिखित प्रावेवन प्राप्त होने पर संदाय करे।

(2) यदि ऐसा व्यक्ति जिसे इन विनियमों के प्रधीन कोई रक्ष्म या पालिसी संदत्त, समनुदिष्ट या पुनःसमनुदिष्ट या परिदत्त की जानी है, ऐसा पागल है जिसकी सम्पदा के लिए भारतीय पागलपन प्रधिनियम, 1912 (1912 का 4) के अधीन इस निमित्त कोई प्रबंधक नियुक्त किया गया है, तो संदाय पुनः समनुदेशन या परिदान ऐसे प्रबंधक को ही किया जाएगा न कि पागल को:

परन्तु यदि कोई प्रबंधक नियुक्त नहीं किया जाता है श्रीर जिस व्यक्ति को रकम संदेय है उसे किसी मजिस्ट्रेट द्वारा पागल प्रमाणित किया जाता है तो कलक्टर के श्रादेशों के श्रधीन संवाय, भारतीय पागलपन श्रधिनियम, 1912 (1912 का 4) की धारा 95 की उपधारा (1) के उपबन्धों के श्रनुसार उस व्यक्ति को किया जाएगा जिसके भारसाधन में ऐसा पागल है और लेखा श्रधिकारी ऐसे पागल के भारसाधक व्यक्ति को उतनी ही रकम का संवाय करेगा जितनी बह ठीक समझता है श्रीर श्रधिगेष, यदि कोई हो, या उसका ऐसा भाग, जो वह ठीक समझता है, पागल के कुटुम्ब के ऐसे सदस्यों के भरण-पोषण के लिए दिया जाएगा जो भरण-पोषण के लिए उस पर श्राश्रित है।

- (3) निकाली गई रकमों का संदाय केवल भारत में ही किया जाएगा। जिन व्यक्तियों को रकमे संदेय हैं वे भारत में संदाय प्राप्त करने के श्रपने प्रबंध स्वयं करेंगे। संदाय का दावा करने के लिए अभिदाता द्वारा निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी, अर्थात:—
 - (i) निधि में से रकम निकालने के लिए आवेदन करने में अभिदाता को समर्थ बनाने के लिए कार्यालय का प्रधान प्रत्येक अभिदाता को आवक्यक प्ररूप या तो उस तारीख से एक वर्ष पूर्व जिसको अभिदाता अधिविषता की आयु प्राप्त करता है या उसकी प्रत्याशित सेवानिवृत्ति की तारीख से एक वर्ष पूर्व, यदि वह पहले हो, इन अनुदेशों के साथ भेजेगा कि उन्हें सम्यक् रूप से भरकर प्रभिदाता हारा प्ररूपों की प्राप्त की तारीख से एक मास की श्रवधि के भीतर लौटा दिया जाना चाहिए। अभिदाता निधि की रकम के संदाय के लिए आवेदन कार्यालय या विभाग के प्रधान के माध्यम से लेखा अधिकारी को वेगा। आवेदन—
 - (क) निधि में उसके नाम जमा पड़ी रकम के लिए जो उसकी ग्रधिवर्षिता की तारीख या उसकी सेवा निवृत्ति की प्रत्याशित तारीख के एक वर्ष पूर्व समाप्त होने वाले वर्ष के लेखा विवरण में उपर्वाशित है, या
 - (ख) ऐसे मामलों में, जिसमें लेखा विवरण प्रभिदाता ने प्राप्त नही किया हो, उसके खाता-लेखा में उपदर्शित रकम के लिए दिया जाएगा।

- (ii) कार्यालय का प्रधान/विभाग का प्रधान श्रावेदन लेखा ग्रिधिकारी को भेजेगा जिसमें लिए गए ग्रिप्रमों ग्रीर ऐसे ग्रिप्रमों के प्रति जो तब भी चालू हों की गई बर्गूलियों ग्रीर प्रत्येक अग्रिम की बाबन श्रभी बसूल की जाने वाली किस्तों की संख्या उपदिश्वत करेगा श्रीर श्रभिदाता द्वारा की गई निकासियों को भी, यदि कोई हो, उपदिश्वत करेगा।
- (iii) लेखा अधिकारी खाता-लेखा से सत्यापन करने के पश्चात् आवेदन में उपदिशित रकम के लिए अधि-विधिता की तारीख से कम से कम एक मास पूर्व एक प्राधिकारपत्न जारी करेगा किन्तु वह श्रधि-विधिता की तारीख पर संदेय होगी।
- (iv) लेखा अधिकारी को श्रंतिम संदाय के लिए श्रावेदन अग्नेषित करने के पण्चात् अग्निम/निकासी मंजूर की जा सकती है किन्तु अग्निम/निकासी सम्बद्ध लेखा श्रधिकारी के प्राधिकार पर ही ली जा सकेगी जो मंजूरीकर्ता प्राधिकारी की मंजूरी प्राप्त होने पर यथासंभव शीद्य उसकी ध्यवस्था करेगा।
- (v) संदाय के लिए द्वितीय प्राधिकार पत्न भ्रधिवर्षिता के पश्चान् यथासंभव भी द्वा जारी किया जाएगा। यह खण्ड (i) के श्रधीन दिए गए आवेदन में वर्णित रकम के बाद श्रभिदाता द्वारा किए गए अभिदायों धन उन अग्निमों के प्रति किस्तों के, जो प्रथम आवेदन के समय चालू थी, प्रतिदाय से संबंधित होगा।

टिप्पण:--जब अभिदाता के नाम जमा रकम विनियम 20, 21 या 22 के श्रधीन संदेय हो गई है तो लेखा श्रधिकारी उप-विनियम (3) में उपदर्शित रीति से रकम का त्रन्त संदाय प्राधिकृत करेगा।

25. पेंशन वाली मेत्रा में स्थानान्तरण पर प्रक्रिया:——(1) यदि कोई श्रभिदाता विकल्प दिए जाने पर पेंशन स्कीम में सम्मिलित होने की तारीख से पेंशन-म्कीम द्वारा नियंद्रित होने के विकल्प का चयन करना है, तो वह——

- (i) निधि में श्रभिदाय करना बन्द कर देगा;
- (ii) निधि में उसके खाते में जमा बोई के ग्रंशदान की रकम ब्याज सहित बोर्ड की प्रतिमंदत्त कर दी जाएगी;
- (iii) निधि में उसके नाम जमा श्रिभिदायों की रकम उस पर ब्याज सिहत सामान्य भिविष्य निधि में उसके खाते में श्रन्तरित करदी जाएगी, जिसमें उसके बाद बह उस निधि के नियमों के श्रगुसार श्रिभिदाय करेगा; श्रीर
- (iv) तब वह उस पेंशन मेवा के लिए जो उसने स्थायी ग्रन्तरण की तारीख से पूर्व की थी केन्द्रीय सरकार

के कर्मचारियों को लागू होने वाले पेंशन नियमों के स्रधीन श्रनुक्तेय विस्तार तक गणना के लिए हक्कार होगा।

26. श्रभिदाय के संदाय के समय खाते के संख्यांक का बताया जाना:—उपलब्धियों में से कटौती करके या नकद ग्रभिदाय का भारत में संदाय करते समय ग्रभिदाता निधि में श्रमने खाने का वह संख्यांक बताएगा जो लेखा ग्रधिकारी द्वारा उसे पहले ही संस्चित किया गया है।

27. अभिदाना को लेखें का वार्षिक विवरण दिया जाना—-(1) प्रतिवर्ष 31 मार्च के परवात् यथासंभव शोध लेखा अधिकारी प्रत्येक अभिदाना की निधि में उसके लेखें का एक विवरण भेजेंगा, जिसमें उस वर्ष की पहली अप्रैल को उसका आरम्भिक अनिशेष, वर्ष के दौरान जमा की गई या निकाली गई कुल रकम, उस वर्ष 31 मार्च को जमा किए गए ब्याज की कुल रकम और उस तारीख को अतिम अतिशेष दिखाया जाएगा। लेखा अधिकारी लेखा विवरण के साथ यह प्रश्न संलग्न करेगा कि क्या शिभदाना—-

- (i) विनियम 5 के फ्रधीन किए गए किसी नामनिर्देशन में कोई परिवर्तन करना चाहना है या नहीं;
- (ii) ऐसे किसी मामले में जहां उमने दिनियम 5 के उपविनियम (1) के प्रथम परन्तुक के श्रधीन श्रपने कुटुम्ब के किसी सदस्य के पक्ष में कोई नामनिर्देशन नहीं किया है, उमने कोई कुटुम्ब प्राप्त किया है या नहीं।
- (2) अभिदाताओं को वार्षिक विवरण की णुद्धता के बारे में श्रपना समाधान करना चाहिए श्रौर गलतियां विवरण की प्राप्ति की तारीख से तीन मास के भीतर लेखा श्रधिकारी के ध्यान में लाई जानी चाहिएं।

28. व्यप्टिक मामलों में विनियमों के उपबन्धों का शिथिल किया जाना :—जब बोर्ड का यह समाधान हो जाना है कि इन विनियमों में में किसी विनियम के प्रवर्तन में किसी प्रभिदाता को ग्रमम्यक कष्ट हो रहा है या होना संभाव्य है, तो वह इन विनियमों में किसी बात के होते हुए भी उस ग्रभिदाता के मामले में ऐसी रीति से कार्रवाई कर सकेगा जो उसे न्यायोचित श्रौर साम्यापूर्ण प्रतीत हो।

29. निर्वचन :---यदि इन विनियमां के निर्वचन के सम्बन्ध मे कोई प्रश्न उठता है तो वह विनिश्चय के लिए बोर्ड की निर्दिण्ट किया जाएगा जो उसका विनिश्चय करेगा।

प्रकृप 1

[विनियम 5 का उपविनियम (3) देखिए]

जब ग्रभिदाता कुटुम्ब वाला है श्रौर वह उसके एक सदस्य को नामनिर्दिण्ट करना चाहता है: मैं निधि में मेरे नाम जमा रकम के मन्देय होने से पूर्व या ऐसी दशा मे जब वह संदेय हो चुकी है, िकन्तु दी नहीं गई है मेरी मृत्यु हो जानें की दशा में उक्त रकम प्राप्त करने के लिए नीचे वर्णित व्यक्ति को, जो नव मंगलौर पत्तन न्याम कर्मचारी (श्रंशदायी भविष्य निधि) विनियम के विनियम 2 में यथापरिभाषित मेरे कुटुम्ब का सदस्य है, नाम निर्विष्ट करता हूं।

नाम निर्देशितीका श्रभिदाता के श्राकस्मिक-ऐसे व्यक्ति/ नाम और पता माथ नाते-व्यक्तियों यदि ताएं जिनके दारी होने पर नाम कोई हों के निर्देशन नाम, पते स्रवधिमान्य श्रौर नातेदारी हो जाएगा जिन्हें नाम-निर्देशिती का श्रधिकार उस दशा संकान्त हो जाएगा जब उनकी मृत्यु श्रभि-से वाता पूर्व हो जाए ।

प्राज 19 के ' ' ' के ' ' ' ' ' दिन ' ' ' ' ' में हस्ताक्षरित ।

हस्ताक्षर के दो साक्षी

श्रभिदाता के हस्ताक्षर

1.

2.

प्रइप 2

[विनियम 5 का उपविनियम (3) देखिए]

जब प्रभिदाता का कुटुम्ब है प्रौर वह उसके एक से श्रधिक सदस्यों को नामनिर्दिष्ट करना चाहता है:

मैं, निधि में मेरे नाम जमा रकम के संदेय होने से पूब या ऐसी दशा मे जब वह संदेय हो चुकी है किन्तु संदत्त नहीं की गई है मेरी मृत्यु हो जाने पर उक्त रकम प्राप्त करने के लिए नीचे विणित व्यक्तियों को, जो नव मंगलोर पत्तन न्यास कर्मचारी (ग्रंशदायी भविष्य निधि) विनियम के विनियम 2 में यथापरिभाषित मेरे कुट्रम्ब के सदस्य हैं नाम निर्दिष्ट करता हूं भीर यह निदेश देता हूं कि उक्त रकम उक्त व्यक्तियों के बीच

नीचे उनके नामो के सामने दी गई रीति से वितरित की जाएगी।

नाम निर्देशिती भ्रभिदाता श्रायु सचयों भ्राक-ऐसे व्यक्ति/ का नाम और की व्यक्तियों के साथ स्मिक-पता । यदि नातेदारी ताएं के रकम याश्रंश जिनके कोई हो होने नाम, पते जो श्रीर नाते-प्रत्येक पर दारी जिन्हें को नाम संदत्त निर्देशन नाम निर्दें-किया अवधि शिती का जाना मान्य हो भ्रधिकार है जाएगा उस दशा में संऋमित हो जाएगा जब उनकी मृत्यु ग्रभिदाता से पूर्व

जाने पर उक्त रकम प्राप्त करने के लिए नीचे वर्णित व्यक्ति को नाम निर्दिष्ट करता हूं।

नाम निर्देशिती का श्रभिदाता भ्रायु *श्राकस्मिकताएं ऐसे व्यक्ति/ के साथ नाम श्रीर पता जिनके होने व्यक्तियो नातेदारी पर नामनिर्दे-के यदिकोई शन श्रवि-हों, नाम धिमान्य हो भौर पते, आएगा। नातेदारी जिन्हें नाम निर्देशिती श्रधि-का कार उस दशा में संकान्त हो जाएगा जब उनकी मृत्यु श्रभिदाता से पूर्व हो आए ।

भाज 198''' के ''''' के '''' के '''' दिन'''' '

मभिदाता के हस्ताक्षर

जाए ।

हस्ताक्षर के दो साक्षी

1.

2.

टिप्पण:—यह स्तंभ इस प्रकार भरा जाना चाहिए जिससे उसके प्रन्तर्गत वह सम्पूर्ण रकम म्राजाए जो निधि में भ्रभिदाता के नाम किसी भी समय जमा हो।

प्ररूप 3

[विनियम 5 का उपविनियम (3) देखिए]

जब ग्रभिदाता का कुटुम्ब नहीं है श्रौर वह एक व्यक्ति को नाम निर्विष्ट करना चाहता है।

मैं, जिसका नव मंगलोर पत्तन न्यास कर्मचारी (श्रंशदायी भिष्य निधि) विनियम के विनियम 2 के श्रधीन यथा परिभाषित कुटुम्ब नही है, निधि मे मेरे नाम जमा रकम संदेय हो चुकी है किन्तु संदक्ष नही की गई है, मेरी मृत्यु हो

माज 198 '''' के •'''' के विन ''' में हस्ताक्षरित

हस्ताक्षर के दो साक्षी

म्रभिदाता के हस्ताक्षर

1.

2.

* टिप्पण:—जहां ऐसा कोई श्रभिदाता जिसका कोई कुटुम्ब नहीं है कोई नाम निर्देशन करता है वहा वह इस स्तम्भ में यह विनिर्विष्ट करेगा कि बाद में उसका कुटुम्ब हो जाने पर नामनिर्देशन श्रविधिमान्य हो जाएगा।

प्ररूप 4

[विनियम 5 का उपविनियम (3) देखिए]

जब श्रभिदाता का कोई कुटुम्ब नही है श्रौर वह एक से श्रधिक व्यक्तियों को नाम निर्दिष्ट करना चाहता है।

मैं, जिसका नय मंगलीर पत्तन न्यास कर्मंचारी (ग्रंशदायी भिविष्य निधि) विनियम के विनियम 2 के ग्रधीन यथा परि-भाषित कुटुम्ब नहीं हैं, निधि में मेरे नाम जमा रकम के संदेय होने से पूर्व या ऐसी दशा में जब वह संदेय हो चुकी है किन्तु संदत्त नहीं की गई हैं, मेरी मृत्यु हो जाने पर, उक्त रकम प्राप्त करने के लिए नीचे विणत व्यक्तियों को नाम निद्धिट करता हूं और यह निदेश देना हूं कि उक्त रकम

उक्त व्यक्तियों के बीच नीचे उनके नामों के सामने दी गई रीति से, वितरित की जाएगी।

ग्रभि-ग्राय्* संचयों की श्राकस्मिकताएं ऐसे व्यक्ति/ नाम निर्दे- दाता के जिनके होने व्यक्तियो के, रकम या शिती भ्रंश जो पर नाम निर्दे- यदि कोई हो, साथ नातेवारी प्रत्येक को शन श्रवधि नाम, पते श्रीर का संदत्त किया मान्य हो नातेदारी जिन्हे नाम जाएगा** जाना है नाम निर्देशिनी ग्रधि∽ कार उस दशा में संक्षात हो जाएगा जब उनकी मृत्यु श्रभिदाता से पूर्व हो जाए

भ्राज 198 · · · के · • • के · · · दिन · · · · · · ·

में हस्ताक्षरित

हस्ताक्षर के दो साक्षी

श्रभिदाता के हस्ताक्षर

1.

2.

*टियण:—यह स्तंभ इस प्रकार भरा जाना चाहिए जिसमे उसके ग्रन्तर्गत वह सम्पूर्ण रकम श्रा जाए जो निधि में ग्रिभिदाता के नाम किसी भी समय जमा हो।

**िटप्पण:--जहां ऐसा कोई श्रिभदाता जिसका कुटुम्ब नही है कोई नाम निर्देशन करता है वहां वह इस स्तम्भ में यह निर्दिष्ट करेगा कि बाद में उसका कुटुम्ब हो जाने पर नाम निर्देशन श्रिविधिमान्य हो जाएगा।

प्रकृप 5

(श्रेणी I श्रीर II के श्रधिकारियों के लिए <math>) [विनियम 24 का उपविनियम (1)देखिए]

साधारण/म्रंगदायी भविष्य निधि खाते में म्रातिगोषों का म्रन्तिम संदाय करने के लिए निगमित निकायों/म्रन्य सरकारो को भ्रन्तरण के लिए म्रावेदन का प्ररूप

सेवा में.

विसीय मलाहकार थ्रौर मुख्य लेखा अधिकारी नव मंगलौर पत्तन न्यास कार्यालय/विभाग के प्रधान के माध्यम से

महोदय,

 की सेवा मे सेवोन्मुक्स/पदच्युत कर दिया गया हूं/स्थाई रूप से स्थानान्तरित कर दिया गया हूं/मैंने श्रन्तिम रूप से त्याग-पत्न दे दिया है/सेवा से त्यागपत्न दे दिया है और मेरा त्याग-पत्न के पूर्वाह्न/श्रपराह्म से मंजूर कर लिया गया है । मैं तारीख के पूलाह्म/श्रपराह्म से की सेवा मे श्रा गया था।

- 2. मेरा भविष्य निधि खाता सं० '''' है। मै अपने कार्यालय के माध्यम से मंदाय लेना चाहता हूं।
- मेरे हस्ताक्षर के दो नमूने जिन्हे अन्य श्रेणी I अधिकारी ने अनुप्रमाणित किया है सलग्न है।

भाग]

(उस समय भरा जाए जब ग्रन्तिम संदाय के लिए ग्रावेदन मेवा निवृति से एक वर्ष पूर्व प्रस्तुत किया जाता है)

- 4. निवेदन है कि मेरे सा०भ०नि०/ग्र०भ०नि० खाते मे जमा ... रु० जो कि वर्ष के लिए मुझे जारी किए गए ग्रीर ग्राप द्वारा रखे गए मेरे खाता-लेखा में यथादिशत संलग्न लेखा विवरण में उपदर्शित है कृपया मेरे कार्यालय के माध्यम मे संदत्त करने की व्यवस्था करें।

श्रस्थायी रकम निकासी

स्थायी रकम निकासी

1.

2.

3.

4.

- 6. प्रमाणित किया जाता है कि मैने जीवन बीमा पालि-सियों के वित्तपोषण के लिए प्रपने भ०नि० खाते से निम्न-लिखित रक्षमें निकाली हैं:--
 - 1.
 - 2.
 - 3.
- 7. प्रमाणित किया जाता है कि भविष्य निधि ग्रातिशेष की प्रथम किश्त का संदाय करने के पश्चात् भाग II में पश्चात्-वर्ती किश्तों के संदाय के लिए मैं सेवानिवृत्त होने पर तुरन्त ग्रावेदन करूंगा।

ग्रिभिदाता के हस्ताक्षर नाम ग्रीर पता

कार्यांक्षय/विभाग के प्रधान का प्रमाणपञ्ज

प्रमाणित किया जाता है कि उक्त जानकारी को इस कार्यालय में रखे गए प्रभिनेख से सत्यापित कर लिया गया है ग्रीर वह ठीक है।

कार्यालय/विभाग के प्रधान के हस्ताक्षर

भाग II

श्रन्तिम संदाय के लिए श्रापको भेजे गए मेरे प्रावेदन के ग्रनुकम में मेरा यह निवेदन है कि मेरे भविष्य निधि खाते में ग्रतिशेष मुझे संदत्त किया जाए।

प्रमाणित किया जाता है उसके खाते से जीवन बीमा पालिसी के वित पोषण के लिए निम्नलिखित रक्षमें निकाली गई थी।

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

कार्यालय के प्रधान के हस्ताक्षर

भाग 🛚

भावति अतिगोष के अन्तिम संवाय के लिए तारीखः ... के भ्रपने पूर्व श्रावेदन के श्रनुक्रम में, मैं निवेदन करता हूं कि मेरे खाते में जमा रकम विनियमों के प्रधीन उस पर देय ब्याज महित मुझे मंदत्त की जाए।

निवेदन है कि मेरे खाते का सम्पूर्ण रकम विनियमो के ग्रधीन देय उम पर ब्थाज महित मुझे संदत्त की जाए/···· को प्रन्तरित कर दी जाए।

हस्ताक्षर

नाम भ्रोर पता

(कार्यालयों के प्रधानों के उपयोग के लिए)

वित्तीय सलाहकार श्रीर मुख्य लखा श्रधिकारी, नव मंगलीर पत्तन न्यास को भ्रावश्यक कार्रवाई के लिए पृष्ठांकन सं ० · · · · · · · के अनकम में श्रग्नेषित ।

2. वह ग्रन्तिम रूप स भेवा निवृत्त हो गया है/गई है ॰॰॰॰॰। मान के लिए सेवा निवृति पूर्व छुट्टी पर जाएगा/ जाएगी। पत्तनं न्यास की सेवा से सेवोन्मुक्त/पदच्युत कर दिया गया है/कर दो गई है भा को स्थायी रूप से स्थानान्तरित कर दिथा गया है/कर दी गई है, उसने ग्रन्तिम मः सं पत्तन न्याम की सेवा से त्यागात्र दे दिया है भीर उनका त्थागपत्र तारीख ''''' ' · · · पूर्वाह्म/ग्रपराह्म से स्वीकृत कर लिया गया है। उसने ····के पूर्वाहा/ग्रपराहा से · · · · · की सेवा में क्राया या/ग्राई थी।

ग्रन्तिम निधि कटौती उस कार्यालय के बिल सं० ' ' ' तारीख ···· दारा की गई थी इसमे से कटौती की रकम ॰॰॰॰॰॰ भौर श्रम्भिम महे प्रतिदाय की रकम॰॰॰ मृ० थी।

4. प्रभाणित किया जाता है कि उसके सेवा छोडने/ सेवा निवृति पूर्व छुट्टी पर जाने की तारीख या उसके बादसे ठीक पूर्ववर्ती 12 मास के दौरान उसके भविष्य िधि खाते में उसे कोई श्रस्थायी प्रग्रिम या कोई श्रन्तिम निकासी मंजूर नहीं की गई थी।

प्रमाणित किया जाता है कि उनके सेवा छोड़ने/सेवा निवृति पूर्व छुट्टी पर जाने की ताराख था उसके पश्चात ने ठोक पूर्ववर्ती 12 मास के दौरान उसके भविष्य निधि खाते से निम्नलिखित श्रस्थायी अग्रिम/श्रन्तिम निकासी मंजूर की गई थी। श्रग्रिम/निकासी की

रकम

तारीख

वाउचर सं०

- 1.
- 2.
- 3.
- प्रमाणित किया जाता है कि उसके सेवा छोड़ने/सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर जाने की तारीख या उसके पक्ष्चात् से ठीक पूर्ववर्ती 12 मास के दौरान उसके भविष्य निधि खाते से बीमा के प्रीमियम के संदाय या नई पालिसी के ऋय के लिए रकम की कोई निकासी नही की गई/निम्नलिखित

रकमे.निकाली गई।

तारीख

वाउचर सं०

1.

रकम

- 2.
- *6. यह प्रमाणित किया जाता है कि पत्तन द्वारा वसूली के लिए कोई भी मांग शोध्य नहीं है/निम्नलिखित मांगें शोध्य

** 7. प्रमाणित किया जाता है कि उसने केन्द्रीय सरकार के भ्रधीन या राज्य सरकार के भ्रधीत था राज्य के स्वामित्या-धीन या नियत्नणाधीन किसी निर्मामत निकाप में कोई नियुक्ति ग्रष्टण करने के लिए श्रध्यक्ष/पत्तन न्यास बोर्ड की पूर्व भ्रनज्ञा से पत्तन की सेवा में त्याग पत्न नहीं दिया है।

कार्यालय/विभाग के प्रधान के हस्ताक्षर

*प्रमाणपन्न सं० 6 ग्रशदायी भविष्य निधि के मामले मे ही प्रस्तुत किया जाएगा। **यदि ग्रावश्यक न हो तो काट दें।

प्ररूप 6

(श्रणी 3 भीर 4 के कर्मचारियों के लिए) [विनियम 24 का उपविनियम (1) देखिए]

साधारण/श्रंशदायी भविष्य निधि खती में श्रतिशेषों के श्रंतिम संदाय के लिए निगप्तित निकाया/अन्य सरकारो की भ्रंतरण के लिए भ्रावेदन का प्ररूप

सेवा में,

वित्तीय सलाहकार श्रॉर मुख्य लेखा श्रधिकारी नव मंगलीर पत्तन न्यास

कार्यालय के प्रधान के गाध्यम से

महोदय,

मैं, सेवा निवृत्त होने वाला हं/सेवा निवृत्त हो गया हूं/

गर्तन न्याम की सेवा से सेवोन्मुक्त/पदच्युत कर दिया गया हूं/
हं/मैंने श्रंतिम रूप से त्यागपत्न दे दिया है/सेवा से त्यागपत्न दे दिया है/श्रौर मेरा त्यागपत्न गया है।

श्रंपराहुन से मंजूर कर लिया गया है।

मैं तारीख ' ' ' के पूर्वाहन/श्रपराह् न से ' ' ' ' ' ' ' ' की सेवा में घ्राया था।

- मैं भ्रपने कार्यालय के माध्यम में संदाय लेना चाहता हूं।

भाग---I

(उस समय भरा जाए जब भ्रंतिम संदाय के लिए भ्रावेदन सेवा निवृत्ति से एक वर्ष पूर्व प्रस्तुत किया जाता है)

- 4. निवेदन है कि मेरे सा० भ० नि०/ग्रं०भ०नि० के खाते में जमा र ६० जो कि वर्ष रा के लिए मुझे जारी किए गए श्रीर ग्राप द्वारा रखे गए मेरे खाता-लेखा में यथादर्णित संलग्न लेखा विवरण में उपदर्शित है, कृपया मेरे कार्यालय के माध्यम से प्रथम किस्त के रूप में ग्रंतिम संदाय करने की व्यवस्था करें।
- निम्नलिखित जीवन बीमा पालिसियां मेरे भविष्य निधि खाते से वित्त पोषित की जा रही थी :---

पालिसी सं० कं०का नाम बीमा की गई रकम

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

6. मैं अपने भविष्य निधि म्रितिशेष के प्रथम किस्त के संदाय के पश्चात् सेवा निवृत्ति के ठीक बाद भाग II के प्ररूप में पश्चात्वर्ती किस्तों के संदाय के लिए भावेदन करूंगा।

भवदीय,

स्थान :

हस्ताक्ष र

तारीख:

नाम पता

(कार्यालयों के प्रधानों के उपयोग के लिए) विस्तीय सलाहकार और मुख्य लेखा ग्रीधकारी नव मंगलौर पस्तन न्यास का ग्रावश्यक कार्रवाई के लिए ग्रिग्रेषित

- 2. श्री/श्रीमती/कुमारी ''' 'का भविष्य निधि खाता (उन्हें वर्षानुवर्ष भेजे गण विवरणों द्वारा यथा सत्या-पित) सं० '''' है।
- वह पत्तन न्यास की सेवा मे : : : को सेवा-निवृत्त होने वाला/वाली है।
- 4. प्रमाणित किया जाता है कि उन्होंने निम्निर्लिखत श्रिप्रिम लिए हैं जिनकी बाबत '''रु० की '''' किस्ते श्रभी भी वसूल की जानी है श्रीर निधि के खाते में जमा की जानी हैं। उन्हें मंजूर की गई श्रीतम रकम निकासी के विवरण भी नीचे उपदर्शित किए गए है।

श्रस्थाई श्रग्निम श्रांतिम निकासी

- 1.
- 2.
- 3.

4

- 5. ''''मास कें'''' ह० के मेरे वेतन बिल से जो ता०''' को भुनाया गया'''' ह० ('''' कपए) की रकम की श्रंतिम बार भविष्य निधि श्रभिदाय ग्रीर श्रीग्रमों के महे कटौती की गई।
- 6. मैं प्रमाणित करता हूं कि मैंने सेवा छोड़ने की तारीख से ठीक पूर्ववर्ती 12 मास के दौरान भविष्य निधि खाते से न तो कोई अस्थायी अग्रिम लिया है और न ही कोई अंतिम निकासी की है।

या

मेरे सेवा छोड़ने/सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर जाने की तारीख या उसके पश्चात् 12 मास के दौरान मेरे भविष्य निधि खाते में मेरे द्वारा लिए गए श्रस्थायी अग्निमों/ग्रंतिम निकासियों के विवरण नीचे दिए गए हैं।

श्रम्भिम की रकम तारीख

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

7. मैं प्रमाणित करता हूं कि मेरे सेवा छोड़ने/सेवा नि-वृत्ति पूर्व छुट्टी पर जाने की तारीख से या उसके पण्चात् ठीक पूर्ववर्ती 12 मास के दौरान प्रपने भविष्य निधि खाते से बीमा के प्रीमियम के संदाय या नई पालिसी के ऋय के लिए कोई रकम नही निकाली गई। निम्नलिखिन रकमे निकाली गई:

रकम तारीख

- 1.
- 2.
- 3.

8. मेरे भविष्य निधि से वित्त पोषित जीवन बीमा पालिसियों की विशिष्टिया जो श्रापके द्वारा दी जानी है, नीचे दी गई है:——

पालिसी सं० कं० का नाम बीमा की गई रकम

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

भवदीय

स्यानः

हस्ताक्षर

तारीखः

नाम-पता

कार्यालय/विभाग के प्रधान का प्रमाणपत्न पृष्ठांकन सं० ः ः ः ः तारीखः ः ः ः के भनुक्रम में भ्रभ्रेषित।

1(क) मेरे कार्यालय के ग्राभिलेखों के प्रतिनिर्देश से सम्यकरूप से सत्यापन के पश्चात् यह प्रमाणित किया जाता है कि उसके सेवा छोड़ने/सेवा निशृत्ति पूर्व छुट्टी पर जाने की तारीख से या तत्पश्चात् ठीक पूर्ववर्ती 12 मास के दौरान प्रार्थी को उसके भविष्य निधि खाते से कोई भी भ्रस्थायी ग्राग्निम/म्रांतिम श्राग्निम मंजूर नहीं किया गया।

या

2. मेरे कार्यालय में रखे गए श्रिभलेखों से सम्यक् सत्या-पन करने के पश्चात् यह प्रमाणित किया जाता है कि श्रावेदक द्वारा सेवा छोड़ने/सेवा निवृत्ति पूर्व छुट्टी पर जाने की तारीख या उसके पश्चात् ठीक पूर्ववर्ती 12 मास के धौरान उसके भविष्य निधि खाते से निम्नलिखित श्रस्थायी श्रग्निम/श्रंतिम निकासी मंजूर की गई थी श्रौर उसने ली थी।

> म्रग्रिम/रकम नि- तारीख वाउचर सं० कासी कीरकम

- 1.
- 2.
- *3. प्रमाणित किया जाता है कि पत्तन द्वारा बसूली के लिए कोई भी मांग शोध्य नहीं है। निम्नलिखित मांग शोध्य है।
- ** 4. प्रमाणित किया जाता है कि उसने केन्द्रीय सरकार के श्रन्य विभाग में या राज्य के स्वामित्वाधीन या नियंत्रणा-धीन किसी निगमित निकाय के भ्रधीन नियुक्ति ग्रहण करने के लिए अध्यक्ष/पत्तन न्यास बोर्ड की पूर्व ग्रनुमित से पत्तन की सेवा से स्थागपत्न नही दिया है।

कार्यालय/विभाग के प्रधान के हस्ताक्षर

*प्रमाणपक्ष सं० 3 केवल भ्रंशदायी भविष्य निधि के मामले मे ही प्रस्तुत किया जाएगा।

**यदि श्रावश्यक न हो तो काट दे।

[स॰ पी॰डब्ल्यू॰/पी॰ ई॰ एल॰-16/80] दिनेश कुमार जैन, संयुक्त सचित्र